बेस्ट सेलर

लोकप्रिय लेखक

प्रकाश भारती

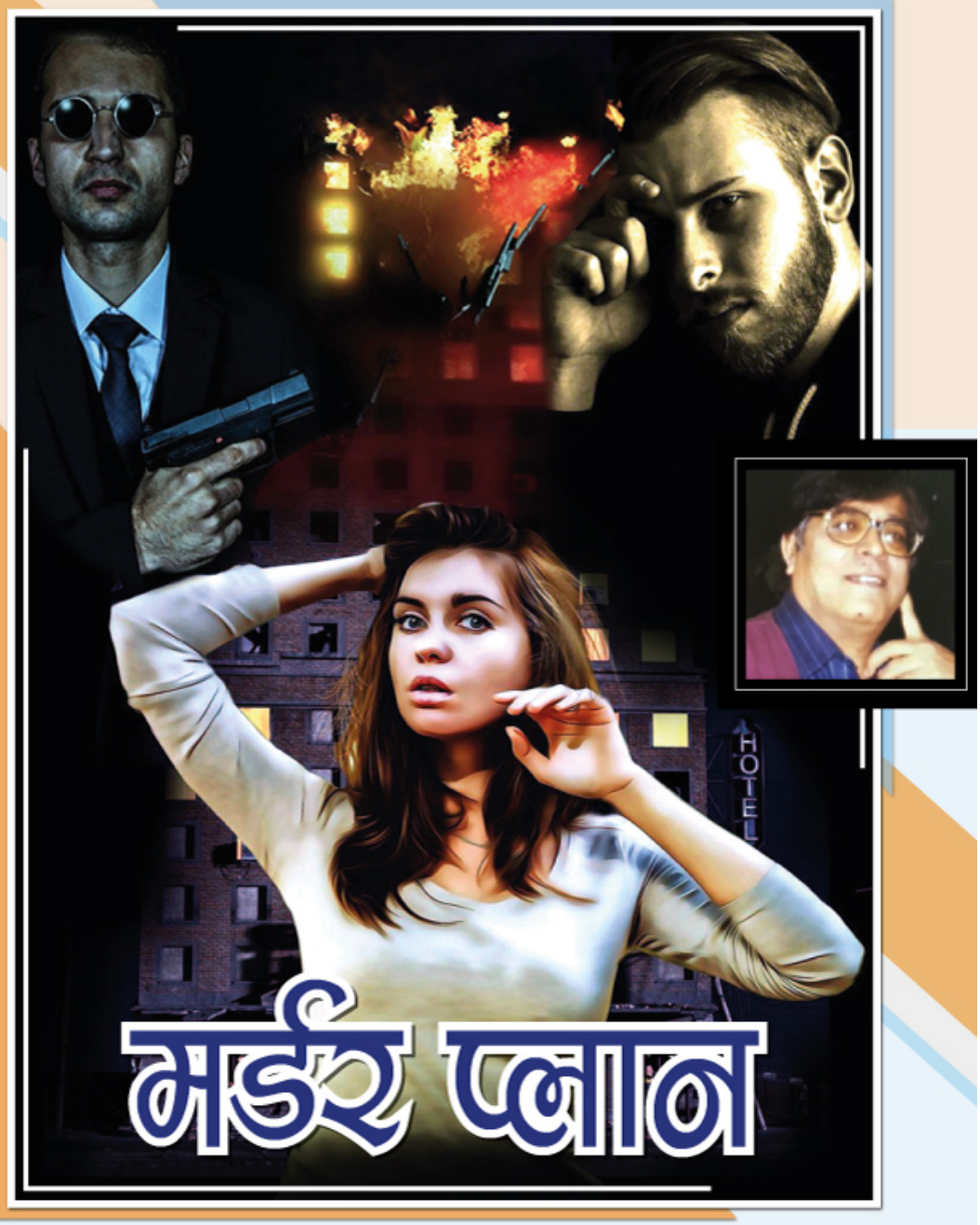


मर्डर प्लान

बेस्ट सेलर

लोकप्रिय लेखक

प्रकाश भारती



मर्डर प्लान

असलान रीड्स

के द्वारा प्रकाशन

असलान बिजनेस सॉल्यूशंस की एक इकाई

बोरिवली, मुंबई, महाराष्ट्र, इंडिया

ईमैल : hello@aslanbiz.com ; वेबसाइट : www.aslanreads.com

कॉपीराइट © 1998 प्रकाश भारती द्वारा

इस पुस्तक की कहानियाँ काल्पनिक है। इनका किसी के जीवन या किसी पात्र से कोई संबंध नहीं है। यह केवल मनोरंजन मात्र के लिए लिखी गई है।
अत: लेखक एवं प्रकाशक इनके लिए जिम्मेदार नहीं है।

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमती के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुन: प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है।
यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मर्डर प्लान

पुलिस जीप एक चारमंजिला इमारत के सम्मुख पहुँचकर रुकी | इन्स्पेक्टर बलराज कनवर और उसके मातहतों के साथ मैं यानी प्रकाश भारती भी जीप से उतरा | मेरी वहां

गैरजरुरी मौजूदगी बलराज की मुझ पर खास महेरबानी की वजह से थी | वह कुशल, मेहनती और ईमानदार पुलिस अफसर होने के साथ मेरा अच्छा दोस्त भी था |

इमारत के बन्द दरवाज़े के सामने एक अधेड़ आदमी खड़ा सिगरेट फूंक रहा था | उसके चेहरे पर भय, चिन्ता और व्याकुलता के मिले-जुले भाव थे |

उसने सिगरेट फेंककर बूट के तले से कुचल दी | -"इन्स्पेक्टर साहब |" मिमियाता-सा बोला –"सज्जन कुमार बवेजा की हत्या कर दी गई है | बड़े ही खौफनाक ढंग से जान ली गई है बेचारे की |"

-"लाश कहाँ है ?" बलराज ने पूछा |

-"ऊपर उसी के फ़्लैट में |"

-"फ़्लैट खुला है ?"

-"नहीं | मेरे पास फ़्लैट की चाबी है |"

-"तुम्हारे पास ?"

-"मेरे पास इमारत के तमाम फ्लैटों की डुप्लीकेट चाबियाँ हैं |

-"तुम्हारी तारीफ़ ?"

-"मेरा नाम मुरारीलाल है | मैंने ही आप लोगों को फोन पर हत्या की सूचना दी थी |" [–"ओह, आई सी | चलो लाश दिखाओ |"] [मुरारीलाल ने पलटकर जेब से चाबियों का एक गुच्छा निकाला | प्रत्येक चाबी पर नंबर खुदा हुआ था | उसने सबसे ज्यादा लम्बी चाबी अलग करके की-होल में फंसाकर घुमा दी |] [-"आइए |" वह दरवाजा खोलकर बोला | बलराज ने अपने साथ आए एक पुलिसमैन को प्रवेश-द्वार पर छोड़ दिया | बाकी सब मुरारीलाल के पीछे इमारत में दाखिल हो गए |]

सीढियां चढ़ने के बाद हम दूसरी मंजिल पर पहुंचे।

मुरारीलाल एक बन्द दरवाजे के सामने रुका, जिस पर पीतल की खूबसूरत नेम प्लेट लगी थी-सज्जन कुमार बवेजा।

मुरारीलाल हाथ में पकड़े गुच्छे में चाबी छांट चुका था, लेकिन उसने ताला खोलने का कोई उपक्रम नहीं किया। बस सूनी आंखों से नेम प्लेट को ताकने लगा।

-"बेचारा बड़ा ही खामोश किस्म का सलीकेदार और बढ़िया आदमी था।" वह यूं बोला मानो मर्सिया पढ़ रहा था-"कभी जरा-सी भी परेशानी नहीं दी। हर काम अपने एक

खास ढंग से करता था। ऐसा वक्त का पाबन्द और उसूलों वाला आदमी मिलना मुश्किल है।''

बलराज ने उसके हाथ से चाबियों का गुच्छा खींचकर फ्लैट का ताला खोला।

-''अन्दर चलो।'' वह दरवाजा खोलकर बोला।

मुरारीलाल सहित हम सब जिस कमरे में दाखिल हुए, वो खूबसूरत ड्राइंगरूम के अनुरूप सजा था। हर चीज साफ-सुथरी और अपनी सही जगह पर मौजूद थी। वहां रहने वाला निश्चय ही सुरुचिपूर्ण आदमी था। उस कमरे में लाश का तो कहीं कोई चिन्ह नहीं था। अलबत्ता एक डीलक्स सोफासैट सारे सैटअप से अलग, जरूर था। सोफासैट एकदम नया था, जबकि अन्य फर्नीचर समेत बाकी तमाम चीजें पुरानी और काफी इस्तेमाल की हुई नजर आ रही

-''यह नया सोफासैट उसने कुछ दिन पहले ही खरीदा था।'' मुरारीलाल बोला- ''अगर उस बेचारे को पता होता, उसका ऐसा खौफनाक अन्त होने वाला था तो उसने यह नहीं खरीदना था, लेकिन ऐसी बातों का भला पहले से पता कहाँ लगता है?''

-''तुमने बताया था उसकी हत्या कर दी गई है।'' बलराज ने उसे टोका- ''लेकिन लाश तो कहीं नजर नहीं आ रही। लाश कहां है?''

--''अन्दर पलंग पर।''

हम सब इंगित दरवाजे पर पहुंचे। अन्दर झांका।

वो कमरा बेडरूम था। ड्राइंगरूम की तरह वहां भी प्रत्येक चीज साफ-सुथरी और व्यवस्थित थी। पलंग पर पड़ी लाश के अलावा किसी चीज को असंगत नहीं कहा जा सकता था। किसी प्रकार के संघर्ष, मार-पीट या छीना-झपटी का कहीं कोई चिन्ह तक नहीं था।

लेकिन लाश.....सचमुच खौफनाक थी।

करवट के बल पड़ी वो लाश एक मजबूत जिस्म के कद्दावर आदमी की थी। उसके शरीर पर ग्रे कलर का शानदार सूट मैचिंग टाई और सिल्क की सफेद शर्ट थी। पैरों में चमड़े के काले चमकीले जूते । कमीज और टाई पर सूखे खून के दाग नजर आ रहे थे। शानदार सूट कहीं-कहीं से गन्दा और फटा हआ था लेकिन शेष स्थानों पर साफ और नया था। उन स्थानों पर कोट और पैंट की क्रीज तक सही-सलामत थी।

कुल मिलाकर लाश एक ऐसे आदमी की थी, जिसकी उम्र पैंतीस साल के लगभग थी। जो तगड़ा,तंदुरुस्त ओर हर मामले में सलीकेदार था। उसके बदन पर जगह-जगह

मौजूद निशान उस पिटाई की कहानी कह रहे थे.जो मरने से पहले उसकी की गई थी। चेहरा, खरोंचों से भरा था, होठ बुरी तरह कटे ओर एक कान फटा हुआ था। सर पर जगह-जगह चोटों के निशान थे।

उसकी कलाइयां पीठ के पीछे आपस में बंधी थीं। दोनों टखने परस्पर एक-दूसरे के साथ बंधे थे। वह पलंग के साथ भी बंधा हुआ था। इस काम के लिए चमड़े की नई बैल्टें इस्तेमाल की गई थी, लेकिन.जिसने भी उसे पलंग के साथ इतनी मजबूती से बांधा था, उसे प्रत्यक्षतः इतनी चिन्ता जरूर रही थी कि चमड़े की पेटियां मृतक की कलाइयों और टखनों में गड़कर जख्य न कर दें, क्योंकि मजबूती से कसी उन पेटियों के इर्द-गिर्द पूरी गोलाई में कोई नरम रोएंदार चीज लिपटी हुई थी।

-"यह क्या है?" मैंने पूछा।

बलराज बंधे हाथों को गौर से देख रहा था। उसने उस रोएंदार चीज को हौले से छुआ।

-"मेमने की नर्म ऊन है।" वह बोला। उसके लहजे में ऐसा पुट था मानो या तो खुद उसे अपनी इस बात पर विश्वास नहीं था या फिर उस ऊन की मौजूदगी से वह सोच में पड़ गया था।

—"अजीब बात है।" मैं बोला- "इसे बैल्टों में लगाने की क्या तुक थी।"

-"इसने मुझे भी चकरा दिया है।" बलराज विचारपूर्वक बोला-"जरूर इसकी कोई तगड़ी वजह होनी चाहिये । इस बारे में थोड़ी सरखपाई करनी पड़ेगी।" वह लाश का बारीकी से निरीक्षण करने लगा।

उसकी निगाहें लाश के सर पर केन्द्रित थीं। खोपड़ी पर कई जगह कटने और गूमड़ उभरे होने के निशान थे।

बलराज लाश के दाएं कान के पीछे उभरे गूमड़ और कटाव को झुककर बड़े गौर से देख रहा था।

मैंने भी उस ओर तवज्जो दी। वे दोनों निशान सर में लगी अन्य चोटों के निशानों के मुकाबले कुछ हल्के नजर आ रहे थे।

-"इसकी पिटाई के दौरान इस पर जितने प्रहार किए गए।" मैं बोला--"उनमें से यही दोनों हल्के नजर आते हैं।"

"ऐसी बात है? " बलराज ने पूछा।

-"नहीं है, इसके चेहरे को देखो।"

-"देख रहा हूं।"

बलराज ने कहा तो नहीं, लेकिन उसके लहजे से जाहिर था वह मेरी बात से सहमत नहीं था। इसलिए मैं चुप हो गया।

उसकी निगाहें लाश के चेहरे परे यूं गड़ी हुई थीं मानो वह उस घातक पिटाई की सिलसिलेवार कल्पना कर रहा था, जिसने मृतक की जान ली थी।

-"यह सब बड़ा ही अजीब है।" अन्त में वह बोला-"शवपरीक्षा करने वाले डॉक्टर मुलगांवकर के लिए भी यह दिलचस्प केस साबित होगा। इस आदमी की मृत्यु का अनुमानित समय निर्धारित करने में भी उसे दिक्कत आ सकती है। मसलन,कान के पीछे चोट के जिस निशान. को तुम देख रहे हो इससे यह जाहिर नहीं होता इस जगह हल्का वार किया गया था।"

-"फिर क्या जाहिर होता है?"

-"यही कि इसके सर पर आई यह चोट सबसे पुरानी है और इसे भरने यानी ठीक होने का काफी समय मिल गया था।"

बलराज की काबलियत और सूझ-बूझ का मैं प्रशंसक रहा हूं। लेकिन उसकी यह बात मुझे बचकाना लगी। मैंने गौर से लाश को देखा फिर, उसकी ओर देखने लगा।

-"तुम्हारा मतलब है यह चोट इसके मरने के बाद भरी है। यानी अब लाशों के जख्म भी भरने लगे?"

-"नहीं,माई डियर भारती। लाशों के जख्म नहीं भरा करते। इसीलिए तो कान के पीछे वाली इस चोट में मेरी दिलचस्पी है। डॉक्टर मुलगांवकर से इस बारे में खासतौर पर बातें करनी होगी।"

मैं कुछ नहीं समझ सका।

वह पुनः लाश के चेहरे की ओर आकर्षित हो गया। इस बार उसकी निगाहें नाक पर केन्द्रित थीं। वह इस ढंग से नाक का निरीक्षण कर रहा था मानो जिन्दगी में पहली बार किसी की नाक देख रहा था।

मुझे नाक में कोई खास बात नजर नहीं आ सकी। चेहरे के अन्य भागों की भांति नाक पर बेरहमी से की गई पिटाई के निशान मौजूद थे। दोनों नथुनों पर सूखा खून जमा हुआ था। ऊपर वाले होठ पर भी खून की पपड़ी-सी जमी थी।

बलराज नाक का मुआयना कर चुका तो, रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

-“तुम फोन करके फोटोग्राफर, फिंगर प्रिंट्स वालों और एम्बुलेंस को बुलाओ।" वह अपने साथ आए सब-इन्सपेक्टर अश्विनी शर्मा से बोला।

फोनं वहीं पलंग के पास पड़ी छोटी-सी मेज पर मौजूद था। अश्विनी शर्मा ने आगे बढ़कर रिसीवर उठा लिया।

बलराज ने मेरी ओर देखा।

-“लाश के नथुनों पर जमी चीज को देख रहे हो?"

-“हां।” मैंने तपाक से जवाब दिया-“खून है।”

-“गौर से देखो और यह सोचते हुए देखो कि सिर्फ खून नहीं हो सकता।”

- मैं पुनः चकराया, लेकिन बोला कुछ नहीं। मैंने गौर से देखा ओर यह सोचने की कोशिश की कि नाक पर खून के अलावा कुछ और भी था। इसके बावजूद खून के अलावा मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया.फिर भी मैं लाश की नाक पर निगाहें जमाए रहा, शायद खून के अलावा कुछ और नजर आ जाए।

-“क्या बात है, अश्विनी?” बलराज अपने सब-इन्सपेक्टर से पूछ रहा था-“तुम अभी तक रिसीवर उठाए खड़े हो ।”

-“इसमें डायलटोन नहीं है सर!” अश्विनी ने जवाब दिया।

-“तार कटी हुई है?”

अश्विनी ने तार खींची, साकेट में लगे तारों के ज्वाइंट्स का मुआयना किया। कहीं कोई नुक्स नहीं था।

-“मुझे तो कहीं कोई खराबी नजर नहीं आ रही।” वह बोला-“लगता है लाइन में पीछे से ही कोई नुक्स है, जिसकी वजह से यह डैड हो गया है।”

-“ठीक है। तुम नीचे जाकर कहीं से फोन कर दो।” बलराज ने कहा-“और सुनो, इस फोन का नम्बर नोट कर लो। इसकी भी कम्पलेंट कर देना।”

अश्विनी शर्मा बाहर निकल गया।

-“कुछ नजर आया?” बलराज ने मुझसे पूछा।

-“नहीं।” मैंने मायूसी से कहा।

उसने मेरे कंधे पकड़कर मुझे तनिक बायीं ओर हटाया और मेरी गर्दन एक खास एंगिल पर घुमा दी।

-“अब देखो । पहले तुम गलत एंगिल से देख रहे थे, क्योंकि रोशनी सीधी उसी पर पड़ रही है।” उसने कहा,फिर तनिक रुककर बोला-“तुमने सिर्फ दोनों नथुनों के सिरों पर ध्यान देना है। मामूली-से रंगहीन और हल्के चमकीले-से निशान नजर आएंगे।”

मैंने गौर से देखा तो, सचमुच दिखाई दे गया।

-“हां, दीख रहा है।” मैं बोला-“अगर तुम इस ढंग से नहीं दिखातें तो यह मुझे हरगिज नजर नहीं आना था। क्या है यह?”

-“तुम्हारे सवाल का सही जवाब तो, लेबोरेटरी वाले ही दे सकते हैं। वैसे मेरा ख्याल है कि यह किसी कलरलैस वार्निश के दाग हैं।”

मैं मन ही मन बलराज की तारीफ किए बगैर नहीं रह सका। बारीक दाग वार्निश के से ही थे. लेकिन नथुनों पर वानिश के उन दागों की कोई वजह मेरी समझ में नहीं आ सकी।

--“यह फर्नीचर पर इस्तेमाल की जाने वाली वार्निश है?” मैंने पूछा।

--“हां,बशर्ते कि और किसी किस्म की वार्निश न होती हो।” बलराज ने कहा-“आओ.बाहर वाले कमरे में चलते हैं।” और बेडरूम से निकल गया।

मुरारीलाल,एक अन्य कांस्टेबल और मैंने भी उसका अनुकरण किया।

--“मुरारीलाल।” बलराज बोला-“अब मैं तुमसे चन्द सवाल पूछना चाहता हूं।”

-“पूछिए।” मुरारीलाल मरे से स्वर में बोला।

-“इस फ्लैट में कौन रहता था ?”

मुरारीलाल के चेहरे पर ऐसे भाव प्रगट हुए मानो इन्सपेक्टर ने कोई बेवकूफाना सवाल किया था।

-“आपने दरवाजे पर लगी नेम प्लेट नहीं देखी थी?” उसने पूछा।

-“देखी थी, फिर भी मैं तुमसे पूछ रहा हूं यहां कौन रहता। था?"

-“सज्जन कुमार बवेजा।”

-“अन्दर जिस आदमी की लाश पड़ी है उसे तुम जानते थे?”

-“जी हां । वही तो यहां रहता था।”

–“यानी तुमलाश को पहचानते हो और इस बात की शिनाख्त करते हो यह सज्जन कुमार बवेजा की ही लाश है ?”

-"जी हां।"

-"गुड । यह फ्लेट इस आदमी का अपना था या वह यहां किराएदार था ?"

-"इस इमारत में सभी किराएदार हैं । ये फ्लैट खासतौर से उन व्यक्तियों के लिए हैं,जो बारोजगार और अविवाहित हैं। हालांकि अविवाहित कोई शर्त नहीं है, लेकिन आमतौर पर ऐसे ही व्यक्ति यहां रहते हैं। वे सब सुबह अपने काम पर चले जाते हैं। शाम को वापस लौटते हैं।

-"मृतक भी यहां अकेला रहता था ?"

-"जी हां।"

-"काम क्या करता था ? मेरा मतलब उसके रोजगार से है ?"

-"यह मुझे नहीं मालूम।"

-"तुमने बताया था यहां के तमाम फ्लैटों की चाबियां तुम्हारे पास हैं। क्या तुम इस इमारत के मालिक हो?"

-"जी नहीं। इसका और इसके आस-पास वाली पांच अन्य इमारतों का मालिक सेठ चिम्मन दास है । मैं इन तमाम इमारतों की देख-भाल और किराए की वसूलयाबी करता हूं।"

-"मृतक को तुम सिर्फ इसीलिए जानते थे, वह किराएदार था या उसके साथ तुम्हारे दोस्ताना ताल्लुकात भी थे ?"

-"मैं उसे एक बढ़िया किराएदार और खुशमिजाज आदमी के तौर पर ही जानता था।"

-"किराएदारों के जाते वक्त हमेशा उनकी डुप्लीकेट चाबियां साथ रखते हो या ऐसा सिर्फ आज ही किया था ?"

-"मैं हमेशा साथ रखता हूं।"

-"कोई खास वजह ?"

-"दरअसल ये सभी इमारतें पुरानी हैं और इनमें आएदिन वाटर पाइप लीक या इलेक्ट्रिक शार्ट-सर्किट की घटनाएं होती रहती हैं। कई बार लोगों की लापरवाही से उनकी कुकिंग गैस भी खुली छूट चुकी है। इसीलिए एहतियातन चाबियां मुझे साथ रखनी पड़ती हैं।

-"आज इस फ्लैट में क्या था ?" वाटर-लीकेज,शार्ट सर्किट, या गैस खुली रह गई थी ?"

-"यहां ऐसा कुछ नहीं था। मैं इरादतन बवेजा साहब के पास आया था।"

- "वजह?"

-"दरअसल, अगर किसी और किराएदार की बात होती तो.. मैंने परवाह नहीं करनी थी ।" मुरारीलाल हिचकिचाता-सा बोला - "लेकिन मामला क्योंकि बवेजा साहब का था इसलिए मजबूरन मुझे आना पड़ा।"

-"क्या मामला था ?"

-"बवेजा साहब कैसे आदमी थे, मैं आपको बता चुका हूं। मुझे यह कहते हुए खुद पर शर्म आ रही है कि मैं बवेजा साहब की नीयत पर शक कर बैठा था।" मुरारीलाल शर्मिन्दगी भरे लहजे में बोला-"बवेजा साहब पैसे के मामले में भी बिल्कुल खरे थे। उनके अलावा हर किराएदार महीने की दस तारीख तक किराया देता है लेकिन हर महीने की पहली तारीख को उनका किराए की रकम का चैक मेरे पास पहुंच जाया करता था। इस दफा मुझे लगा कि वह किराया दिए बगैर फ्लैट छोड़कर जा चुके हैं।"

- "लेकिन आज तो तीन ही तारीख है।" बलराज बोला-"क्या तुम अपने अच्छे किराएदारों को दो-चार दिन की भी मौहलत नहीं देते?"

-"जहां तक बवेजा साहब का सवाल था, उन्हें तो मैं महीने भर की मौहलत भी दे सकता था, लेकिन इस बारे में उनका कुछ न कहना और हमेशा की तरह पहली तारीख को चैक न भेजना मुझे बेहद अजीब लगा-फिर, आज सुबह विमला ने कुछ ऐसी बातें बताईं मुझे वाकई किसी गड़बड़ के आसार नजर आने लगे और मैं यहां आए बगैर न रह सका लेकिन, यहां आने पर जो नजारा दिखाई दिया, उसकी तो मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।"

-"विमला कौन है ?"

-"वह इन फ्लैटों में सफाई वगैरा करने आती है। उसने बताया ठीक दो हफ्ते पहले बवेजा साहब द्वारा भेजा गया एक लिफाफा उसे मिला था। लिफाफे में खत के अलावा तीन सौ रुपए भी थे। खत में लिखा था विमला अगले दिन से काम पर न आए और वे रुपये उसकी पूरे महीने की तनख्वाह थी। वह आज सुबह मेरे पास आई और बवेजा साहब के फ्लैट की जगह किसी और फ्लैट में काम दिलाने को कहा। विमला की इस बात ने मुझे बवेजा साहब पर शक करने और यहां आने पर मजबूर कर दिया।"

-“दो हफ्ते पहले।” बलराज विचारपूर्वक बोला-“इस बीच वह मृतक से मिली थी ?”

-“नहीं। उसने सोचा बवेजा साहब फ्लैट छोड़कर चले गए थे।”

-“पिछले दो हफ्तों में तुम मृतक से मिले थे ?”

-“नहीं।”

-“इस बीच तुम्हारा परिचित कोई और उससे मिला था ?”

-“पता नहीं।”

तभी सब-इन्सपेक्टर अश्विनी शर्मा फ्लैट में दाखिल हुआ।

-“फोन कर आए?” बलराज ने पूछा।

-“यस सर। वे लोग आते ही होंगे।”

-“और इस फोन की कम्पलेंट कर दी ?”.

-“यस सर। लेकिन उससे कोई फायदा नहीं होगा।”

-“क्यों ?”

-“इस इलाके के टेलीफोन एक्सचेंज में मेरा एक परिचित है। कम्पलेंट करने के बाद मैंने जल्दी नुक्स दूर कराने की नीयत से उसे फोन किया तो, उसने बताया यह फोन कट चुका है।”

-“कट चुका है ?” बिल न देने की वजह से ?"

-“नो सर। पिछले महीने की बीस तारीख को मृतक ने दरख्वास्त दी थी उसका फोन अस्थायी रूप से काट दिया जाए।”

-“पिछले महीने की बीस तारीख यानी बीस मार्च को?” -“यस सर।”

-“यानी ठीक दो हफ्ते पहले ?”

अश्विनी शर्मा ने उंगलियों पर हिसाब लगाया।

-“राइट, सर। आज पूरे दो हफ्ते हो गए।”

बलराज कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला-“तुम लाश देख चुके हो, अश्विनी ?” तुम्हारे विचार से मृतक की मृत्यु कब हुई होगी ?”

-"जहां तक मैं समझता हूं उसे देर हो चुकी है,सर।" अश्विनी हिचकिचाता-सा बोला-"लाश पूरी तरह अकड़ चुकी है, लेकिन अभी उससे बदबू आनी शुरू नहीं हुई है। मेरा ख्याल है उसकी मौत कम-से-कम दो दिन पहले हुई होगी।"

-"और ज्यादा से ज्यादा कितने दिन हुए होंगे ?"

-"करीब तीन दिन।"

-"यानी दो हफ्ते नहीं हुए हो सकते?"

-"बिल्कुल नहीं। इस मौसम में चार दिन में ही लाश सडने लगती है।" अश्विनी ने जवाब दिया-"ऐसा लगता है मृतक दोहफ्ते पहले यहां से कहीं चला गया था ओर दो-तीन दिन पहले ही वापस लौटा था। बस तभी उसकी जान ले ली गई। उसे फोन रीकनेक्ट कराने का मौका ही नहीं मिल सका।"

-"मैं समझता हूं यहां से जाते वक्त उसका जल्दी वापस लौटने का कोई इरादा नहीं रहा होगा।" मैंने अपना मत व्यक्त किया-"अगर ऐसा होता तो उसने अपना फोन डिस्कनेक्ट नहीं कराना था। सफाई करने आने वाली औरत को काम पर आने से मना करने की बात तो समझ आती है। मृतक नहीं चाहता था वह रोज-रोज आकर बेकार धक्के खाए, लेकिन फोन डिस्कनेक्ट कराने की क्या तुक थी? इस तरह उसे फायदा तो कुछ नहीं होना था, रीकनेक्ट कराने के झंझट में पैसा और वक्त और लगना था।"

-"तुम्हारी बात में दम है, भारती ।" बलराज मुस्कराया "और इस लिहाज से है कि टेलीफोन डिस्कनेक्ट कराना निहायत जरूरी था। उसी तरह जैसे सफाई करने वाली को हटाना जरूरी था।"

-"क्या मतलब?" मैंने पूछा।.

बलराज पुन: मुस्कराया।

-"तुमने भी लाश देखी थी।" वह बोला-"मृतक के बाएं हाथ पर ध्यान दिया था ?"

मैंने मृतक के हाथों पर खास ध्यान नहीं दिया था सिवाय इस बात के कि वे मृतक की पीठ पर आपस में बंधे हए थे। एक-दूसरी पर कसी कलाइयों की उस स्थिति में बंधे हाथों को एक निगाह में देखकर यह फर्क करना भी मुश्किल था कि उनमें दायां हाथ कोन-सा और बायां कौन-सा।

-"नहीं। क्या खास बात थी उसमें ?"

-"आओ, बताता हूं। लाश एक बार फिर देखनी पड़ेगी।"

हम सब पुन: बेडरूम में आ गए।

बलराज ने मृतक के बाएं हाथ की ओर इशारा किया। इस दफा, क्योंकि मेरी पूरी तवज्जो लाश के हाथों पर थी इसलिए दोनों हाथों में फर्क नजर आ गया। फर्क इतना साफ था उस तरफ पहले भी मेरा ध्यान जाना चाहिए था। बाएं हाथ की उंगलियों के अगले सिरे तनिक झुलसे हुए थे और नाखूनों के नीचे सूखा खून जमा था। पहली उंगली में नाखून के नीचे पतली छोटी-सी तीली गड़ी थी जिसका सिरा काला-सा था।

मुरारीलाल सिर से पांव तक कांप गया।

-"वह तीली-सी क्या है ?" उसने जल्दी-जल्दी थूक निगलते हुए पूछा।

-"मृतक बवेजा की कनपटी पर किसी कठोर चीज से प्रहार करके इसे बेहोश कर दिया गया था।" बलराज ने कहा-'फिर इसे पलंग पर डालकर इन पेटियों से इसकी मुश्क कस दी गई और फिर इसे बेरहमी से पीटा गया । पिटाई एक दफा नहीं बार-बार की गई थी। उसे एक हफ्ते से भी ज्यादा तक यातनाएं दी गई थीं। जिनमें सिर्फ पिटाई ही शामिल नहीं थी। उसके बाएं हाथ की उंगलियों में नाखूनों के नीचे दांत कुरेदने वाली तीलियां गड़ाई जाती रही थीं और उन्हें जलाया जाता रहा था। यातनाएं देने वाले नहीं चाहते होंगे उनके इस काम में किसी प्रकार का व्यवधान पैदा हो। शायद इसीलिए टेलीफोन डिस्कनेक्ट कर दिया गया था और विमला नामक सफाई करने आने वाली औरत काम से हटा दी गई थी।"

इससे पहले कि मैं इस बारे में कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता, फ्लैट के बाहर कदमों की आहट सुनाई दी, फिर फोटोग्राफर ओर एम्बुलेंस वाले भीतर दाखिल हुए।

लाश की विभिन्न कोणों से फोटुएं लेने के बाद उसे उठवा दिया गया।

बलराज ने शव-परीक्षा करने वाले डॉक्टर मुलगांवकर के नाम, मृतक की नाक पर लगे वार्निश के दाग की जांच सम्बन्धी नोट भी लिख दिया।

इस काम से फारिग होने के वाद बलराज मुरारीलाल से मुखातिब हुआ।

-"विमला कहां मिलेगी ?"

-"वह रघुबरपुरे में रहती है।"

-"तुमने उसका घर देखा है ?"

-"जी हां।"

बलराज ने अश्विनी शर्मा को जरूरी हिदायतें देने के बाद मेरी ओर देखा।

-"विमला के घर चलोगे भारती ?".

-"जरूर।"

बलराज,मुरारीलाल और में फ़्लैट से निकले। सीढियों द्वारा नीचे पहंचे। इमारत से बाहर आकर जीप में सवार हुए और रघुवरपुरे की ओर रवाना हो गए।

***

वो एक पुराना और खस्ता हालत का मकान था, जिसके गली की ओर खुलने वाले एक कमरे में विमला रहती थी।

बलराज के संकेत पर मुरारीलाल ने दस्तक दी।

चंद क्षणोपरांत जिस औरत ने दरवाजा खोला, उसकी उम्र करीब पैंतालीस वर्ष थी। सांवला रंग, छरहरा जिस्म और चेहरे पर बुद्धिमानी ओर गम्भीरता के स्पष्ट भाव । बलराज की वर्दी पर निगाह पड़ते ही वह चौंकी फिर मुरारीलाल को देखकर तनिक आश्वस्त प्रतीत हुई और फिर सर का पल्लू ठीक किया।

-"कहिए।" वह बोली।

-"इन्सपेक्टर साहब तुमसे कुछ बातें करना चाहते हैं, विमला।" मुरारीलाल ने कहा।

विमला सकुचाती-सी दरवाजे से अलग हट गयी ।

-"आइए।" वह संकोचपूर्वक बोली।

हम तीनों भीतर दाखिल हो गए।

कमरा बड़ा ओर एकदम साफ-सुथरा था। हरएक चीज साफ और बड़े ही व्यवस्थित ढंग से रखी थी। जाहिर था विमला मेहनती और सफाई-पसन्द औरत होने के साथ-साथ कुशल गृहिणी भी थी।

उसने पलंग के नीचे से तीन छोटी-छोटी मुढ़िया निकालकर रख दीं।

–"बैठिए।"

हम बैठ गए।

मुरारीलाल ने विमला को संक्षेप में बताया सज्जन कुमार ववेजा की हत्या कर दी गई थी और इन्सपेक्टर उसी सिलसिले में उससे पूछताछ करने आया था।

विमला गहन आश्चर्य एवं अविश्वासपूर्वक मुरारीलाल को ताकने लगी। वह देर तक खामोश रही फिर, गहरी सांस ली।

-"आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं, इन्सपेक्टर साहब ?" अंत में वह बोली।

बलराज ने आरम्भ में वही सवाल किए, जिन्हें वह पहले ही मुरारीलाल से पूछ चुका था।

विमला और मुरारीलाल के जवाबों में काफी हद तक समानता थी। उसके कथनानुसार भी मृतक बवेजा खामोश किस्म का सलीकेदार, मिलनसार और बहुत बढ़िया आदमी था।

-"वह काम क्या करता था ?" बलराज ने पूछा।

-"पता नहीं।" विमला ने जवाब दिया-"लेकिन उसका रहन-सहन ठाठदार था। शाह तबीयत वाला आदमी था। हर मामले मे उसकी पसन्द ऊंची थी। इन तमाम बातों से लगता था उसका धंधा, जो भी था काफी कमाई वाला था।"

-"उसके किसी परिचित को जानती हो ?"

-"नहीं।"

-"तुम वहां किस वक्त काम पर जाती थीं ?"

-"में उस इमारत में सुबह दस बजे पहुंचती थी। पहले बवेजा के फ्लैट में काम करती थी फिर तीन दूसरे फ्लैटों में।"

-"वापस कितने बजे आती थीं ?"

-"जब बवेजा के यहां भी काम करती थी तो. दो बज जाते थे। आजकल सिर्फ तीन फ्लैटों में काम करती हूं। इसलिए वहां एक बजे तक मेरा काम खत्म हो जाता है।"

बलराज कुछ देर चुप बैठा रहा।

-"बवेजा के पास आने-जाने वालों के बारे में कुछ बता सकती हो ?" अन्त में उसने पूछा।

-"नहीं। मैंने कभी किसी को आते-जाते नहीं देखा।"

-"तुम्हारा मतलब है उसके यहां कोई नहीं आता था ?"

-"नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है।" विमला ने इस ढंग से जवाब दिया मानों इन्सपेक्टर उसे झूठी साबित करना चाहता था- "मैंने कहा था किसी को आते-जाते नहीं देखा।"

-"तुम कहना चाहती हो, उसके पास लोग आते थे ?"

-"जी हां।"

-"तुम्हें कैसे पता ?"

-"मैं वहां सुबह के वक्त काम करने जाती थी। कई बार नोट किया था डस्टबिन में सिगरेट के इतने टोटे और राख होती थी कि कोई भी आदमी अकेला इतनी सिगरेटें नहीं पी सकता। किचन में शराब और सोडे की खाली बोतलें इतनी होती थीं अकेले आदमी के लिए उन सबको पी पाना नामुमकिन है।"

-"यानी वह पार्टियां देता था ?"

-"जी हां।"

-"ऐसा अक्सर होता रहता था या कभी-कभी ?"

-"हफ्ते में दो-तीन बार होता था।"

-"उन पार्टियों में सिर्फ आदमी आते थे या औरतें भी आती थी ?"

-"यह मैं कैसे बता सकती है ?"

-"में मदद करता हूं।" बलराज ने कहा-"याद करने की कोशिश करो सिगरेट के जो टोटे डस्टबिन में पड़े होते थे उन पर कभी लाल निशान नोट किए थे तुमने ?"

-"आपका मतलब है लिपस्टिक के निशान ?"

-"हां,देखे थे तुमने?"

-"अक्सर देखती थी।"

-"गुड आखिरी दफा ऐसी पार्टी कब हुई थी ?"

-"दो हफ्ते से तो मैं वहां गई नहीं।" विमला सोचती हुई बोली उससे दो या तीन दिन पहले हुई थी।"

-"शराब और सोडे को जो खाली बोतलें तुम देखा करती थी उनसे कभी अंदाजा लगाने की कोशिश नहीं की कि पार्टी में अंदाजन कितने व्यक्ति रहे होंगे ?"

-"नहीं।"

-"वैसे ऐसा कोई अंदाजा तुम लगा सकती हो ?"

-"नहीं।"

-"तुम बवेजा के यहाँ, कभी शाम को या रात में भी गई थी ?"

-"नहीं।"

-"बवेजा अकेला रहता था। उसने अपनी जाती जिदगी के बारे में तुम्हें कभी कुछ नहीं बताया ?"

-"मैं बता चुकी है वह खामोश किस्म का आदमी था। नपी-तुली सिर्फ उतनी ही बातें करता था. जितनी कि जरूरी होती थी।"

बलराज कुछ देर चुप रहा, फिर पूछा-"बवेजा ने तुम्हें काम से हटाने के लिए चिट्ठी भेजी थी ?"

--"मैं बता चुकी हूं लिफाफे में चिट्ठी और तीन सौ रुपये थे" विमला ने कहा- "फिर आप दोबारा क्यों पूछ रहे हैं ? देखिए, इन्सपेक्टर साहब मैं एक मेहनतकश और ईमानदार औरत हूँ । झूठ से मुझे सरबत नफरत है। आप अगर एक ही सवाल एक हजार बार भी करेंगे तो भी मैं वही जवाब दूंगी.जो पहली बार दे चुकी हूं।"

-"मैं तुम्हें झूठी नहीं समझ रहा हूं। मैं जानना चाहता हूं वो चिट्ठी तुम्हारे पास है ?"

-"नहीं। क्यों ?"

-"मैं उसे देखना चाहता था।"

-"मुझे अफसोस है उसे मैंने तभी फाड़कर फेंक दिया था।"

-"और लिफाफा ?"

-"वो भी फाड़ दिया।"

- "लिफाफा डाक से आया था ?"

- "नहीं।"

-"कोई खुद देने आया था ?"

-"आया तो कोई जरूर होगा-लेकिन मैंने उसे नहीं देखा। मैं सुबह ही घर से निकल जाती हूं और दोपहर बाद या शाम को वापस लौटती हूं। उस दिन जब मैं घर पहुंची तो लिफाफा मुझे अन्दर पड़ा मिला था। कोई दरवाजे की झिरी से उसे अन्दर डाल गया था। उस पर डाक टिकट नहीं लगे थे।"

बलराज पुनः कुछ देर चुप रहा, फिर पूछा-"बवेजा ने उससे पहले भी कभी तुम्हें चिट्ठी लिखी थी ?"

-"नहीं।"

-"तुमने बवेजा के यहां कितना अर्सा काम किया था ?"

-"करीब दो साल।"

-"उन दो सालों में वह बराबर अपने फ्लैट में ही रहा था, बाहर भी जाया करता था ?"

-"सिर्फ एक बार तीन हफ्ते के लिए कहीं गया था।"

-"तीन हफ्तों की अपनी उस गैर-मौजूदगी में उसने तुम्हें भी छुट्टी दे दी थी ?"

-"नहीं । जाने से पहले उसने पूरे महीने की तनख्वाह पेशगी दी थी और मुझसे कहा था रोज आकर सफाई करती रहूं। वह नहीं चाहता था बन्द फ्लैट में हर चीज पर धूल जम जाए।"

-"इस बार जब उसने चिट्ठी भेजकर तुम्हें काम पर आने से मना कर दिया, तुम्हें अजीब नहीं लगा ?"

-"लगा था।"

-"तो फिर तुमने यह मुनासिब नहीं समझा, उसके पास जाकर इस बारे में बातें करो ?"

-"मैं एक शाम उसके फ्लैट पर गई थी-लेकिन न तो मुझे खिड़कियों से रोशनी बाहर आती दिखाई दी और न ही डोरबेल के जवाब में दरवाजा खुला। मैं समझ गई या तो वह लम्बे अर्से के लिए कहीं बाहर चला गया था या फिर फ्लैट छोड़ दिया था।"

-"यह कब की बात है ?"

-"उसकी चिट्ठी मिलने के दो दिन बाद की ।"

-"तुम दोबारा नहीं गयी ?"

-"नहीं।"

-"इस बारे में किसी से पूछताछ भी नहीं की ?"

-"नहीं क्योंकि उस शाम उसके फ्लेट पर जाने के बाद मझे यकीन हो गया था वह शहर से बाहर चला गया था, अगर यहीं रहता तो उसने मुझे हरगिज नहीं निकालना था। वह मेरे काम से पूरी तरह सन्तुष्ट था।"

विमला से पूछताछ के दौरान मैं खामोश बैठा ध्यानपूर्वक सुनता रहा था। अचानक मुझे कुछ याद आया तो, मैं चुप नहीं रह सका।

-"बवेजा के फ्लैट में एक नया डीलक्स सोफासैट है।" मैंने विमला से पूछा---"बता सकती हो वो उसने कब खरीदा था ?"

विमला ने असमंजसतापूर्वक मेरी ओर देखा।

-"क्या ?"

बलराज ने तारीफी निगाहों से मेरी ओर देखा, फिर मेरा सवाल दोहरा दिया।

-"नया सोफासैट ?" विमला ने पलकें झपकाई-"लेकिन मैंने तो कोई नया फर्नीचर नहीं देखा। ड्राइंगरूम में टेपेस्टरी का एक सोफासैट था जो पुराना होने के बावजूद भी अच्छा और नया लगता था-क्योंकि वह अपनी हर चीज के रख-रखाव का बड़ा पूरा ध्यान रखने वाला आदमी था।"

-"तुम यकीनी तौर पर कह सकती हो वहां टेपेस्टरी का सोफासैट था ?" बलराज ने पूछा ।

-"में शर्त बद सकती हूं। दावे के साथ कह सकती हूं।" विमला जोरदार स्वर में बोली-"उस फ्लैट को एक-एक चीज मुझे उसी तरह याद है जैसे घर की चीजें याद रहती हैं।"

बलराज खड़ा हो गया।

-"क्या तुम हमारे साथ बवेजा के फ्लैट में चलने ओर एक बार उस सोफे को देखने का कष्ट करोगी ?"

-"इसमें कष्ट जैसी कोई बात नहीं है । मुझे बस इतना करना पड़ेगा चाबी पड़ौसिन को दे जाऊं, ताकि पीछे मेरे पति काम से लौटें तो, उन्हें परेशान न होना पड़े।"

***

विमला सहित हम जीप द्वारा वापस लौटे।

बवेजा के फ्लैट में घुसते ही विमला की निगाह सोफासैट पर पड़ी और उसने साफ इन्कार कर दिया, वो सोफासैट पहले कभी वहां नहीं देखा था।

-"अगर मैं इसे अब अपनी आंखों से नहीं देख रही होती तो, मुझे यकीन भी न आता यह यहां है।" वह दृढ स्वर में बोली-"आप खुद देख सकते हैं यह बिल्कुल बेमेल है। बाकी फर्नीचर से जरा भी मैच नहीं कर रहा है। इसके अलावा आपको पूरे फ्लैट में हर चीज मैचिंग नजर आयेगी। इस सोफे को यहां, देखने के बाद भी मुझे यकीन नहीं आ रहा है इसे बवेजा साहब ने ही खरीदा था।

इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं थी सोफासैट पिछले दो हफ्तों के दौरान खरीदा गया था।

बलराज ने विमला का शुक्रिया अदा किया और उसे पुलिस जीप द्वारा वापस उसके घर भेज दिया।

विमला द्वारा दी गई इस जानकारी से बलराज इतना खुश नजर आया मानो विमला ने उसे हत्यारे का नाम पता बता दिया था।

-"थैंक्यू वैरी मच बॉस।" वह मुझसे बोला। दोस्तों के साथ बातचीत के दौरान उन्हें बॉस' कहकर सम्बोधित करना बलराज की खास आदत थी-"फॉर आस्किंग हर एबाउट दिस सोफा । आई हैड कम्प्लीटली फॉरगॉटन दिस प्वाइंट।"

-"इट हैज गिविन यू सम क्लू?" मैंने जानना चाहा।

-"ओह, यस । ए वैरी सोलिड क्लू ।"

-"टेल मी आलसो।"

-"वेट लैट दी टाइम कम एण्ड यू विल नो इट यूअरसेल्फ।"

में समझ गया वह टाल रहा था। इसलिए मैंने भी जिद नहीं की।

इस तमाम चक्करबाजी में शाम हो गई थी। इमारत में रहने वाले किराएदार वापस लौटने शुरू हो गए थे। मृतक बवेजा के बगल वाले फ़्लैट से आती आहटें इस बात का संकेत थीं, फ्लैट खाली नहीं था।

बलराज ने वहीं से पूछताछ शुरू करने का फैसला किया, लेकिन पहले उसने मृतक के फ्लैट में फिंगर प्रिंट्स लेने वालों को हिदायतें दी वहां मौजूद प्रत्येक चीज से प्रिंट्स लिए जाएं। अपने एस. आई. अश्विनी को निर्देश दिया प्रिंट्स उतर चुकने के बाद किस तरह फ्लैट की बारीकी से तलाशी लेनी थी।

फिर मैं और बलराज बगल वाले फ़्लैट पर पहुंचे।

डोरबैल की आवाज के जवाब में दरवाजा खोलकर एक युवती प्रगट हुई।

हम दोनों ठगे-से खड़े रह गए।

वह इन्तिहाई खूबसूरत थी। औसत कद वाले उसके जिस्म की रंगत केसर मिले दूध जैसी थी। बाल घने और एकदम स्याह काले, गोल चेहरे पर घनी पलकों से ढकी आंखें बडीं और काली थीं। नाक लम्बी ओर सुतवां। मेकअप के नाम पर बस पतले और भरे-भरे होठों पर लिपस्टिक की एक हल्की-सी परत मौजूद थी। वह काले रंग का तनिक लोकट गले

वाला रेशमी गाउन पहले थी, जो उसके उरोजों, पतली कमर और पुष्ट-सुडौल नितम्बों पर इतना कसा हुआ था कि उसके उभारों की वास्तविक स्थिति का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता था। उसकी लम्बी उंगलियों के नाखूनों पर लिपस्टिक से मैच करती हुई सुर्ख नेल पालिश लगी थी।

करीब चौबीस-वर्षीया उस युवती के मोहक सौंदर्य में हर वो चीज अपने सही अनुपात में मौजूद थी,जो किसी भी पुरुष की धड़कनें तेज करके उसे दिल थामने पर मजबूर कर सकती थी।

वह तनिक मुस्कराई । मोती जैसे सफेद खूबसूरत दांत चमकने लगे और गुलाबी गालों में छोटे-छोटे गड्ढे पैदा हो गए।

-"आइये।" दरवाजे से अलग हटती हुई बोली। उसकी आवाज भी उतनी ही मोहक थी जितनी कि वह खुद थी-"मेरा नाम नीरा मलकानी है।"

बलराज और मैं भीतर दाखिल हुए।

उसका फ्लैट भी मृतक बवेजा के फ्लैट के अनुरूप था, लेकिन बवेजा के फ्लैट में चीजों के रख-रखाव में जो सलीका और व्यवस्था थी, उसका वहां सरासर अभाव था। सोफे के कुशन अपनी जगह पर नहीं थे। बड़ी-सी सैंटर टेबल पर रखी दो राखदानियों में सिगरेटों के टुकड़े ऊपर तक भरे थे। कारपेट पर भी सिगरेट की राख गिरी नजर आ रही थी। मेज पर कई खाली गिलास मोजूद थे। उनके किनारों पर लगे लिपस्टिक के दागों से जाहिर था या तो वे तमाम गिलास अकेली नीरा ने इस्तेमाल किए थे या फिर उसकी सहेलियों ने।

नीरा का बलराज की वर्दी देखकर न चौंकना इस बात का सबूत था, वह जानती थी हम क्यों उसके पास आए थे। इमारत में पुलिस की मौजूदगी और बवेजा के फ्लैट में पुलिस की चहल-पहले से इस बात का अंदाजा लगा लेना मामूली बात थी कोई भारी गड़बड़ हो गई थी।

-"तशरीफ रखिए।" दरवाजा बन्द करके सोफे की ओर इशारा करती हुई बोली।

-"थैक्यू।"

बलराज और मैं सोफे पर बैठ गए।

नीरा हमारे सामने एक सोफाचेयर के पास आ खड़ी हुई। उसने बैठने का कोई उपक्रम नहीं किया।

-"आप लोग बवेजा के बारे में मुझसे कुछ पूछने आए हैं ?" नीरा ने कहा । उसके कहने का ढंग ऐस था मानो वह पूछने की बजाय हमें बता रही थी हम किसलिए आए थे।

-“हां।” बलराज ने कहा-“आपको पता है उसकी हत्या कर दी गई है ?”

-“ऊपर आती बार सुना तो था।” नीरा लापरवाही से बोली-“लेकिन यकीन नहीं आया।”

-“क्यों ?”

-“वह प्रिंस चार्मिंग था। भला उसकी हत्या कोई क्यों करना चाहेगा ?”

-“वह आपका नेक्स्ट डोर नेबर था।” बलराज ने उसकी बात पर ध्यान न देकर पूछा-“आप तो उसे अच्छी तरह जानती होंगी ?"

-“नहीं।” नीरा मुंह बनाकर बोली-“वह प्रिंस चार्मिंग जरूर था लेकिन अपने तक ही सीमित रहने वाला,बड़ा ही खामोश किस्म का आदमी था।”

-“यानी आप उसे अच्छी तरह नहीं जानती थीं ?”

नीरा ने गहरी सांस ली। सोफाचेयर की पुश्त पर हाथ रखे तनिक आगे झुक गई।

-“मैंने उसे जानने की बड़ी कोशिश की थी।” वह बोली-“लेकिन या तो उसमें दिल नाम की कोई चीज नहीं थी या फिर मुझ जैसी लड़कियों से उसे परहेज था। यकीन मानिए, इन्सपेक्टर-पूरे दो महीने तक हर मुमकिन कोशिश की थी -लेकिन प्रिंस चार्मिंग ने मुझमें जरा-सी भी दिलचस्पी नहीं ली। आखिरकार मुझे कोशिश करनी ही बन्द कर देनी पड़ी।”

-“यह कोशिश आपने कब की थी ?”

-“कोई डेढ़ साल पहले जब मैं यहां नई-नई आयी थी।”

-“अच्छी तरह न सही, आप उसे जानती तो थीं ?”

-“सीढ़ियों में आते-जाते हम एक-दूसरे को ‘हैलो’ कह दिया करते थे। बस इतना ही जानती थी।”

-“आप नौकरी करती हैं ?”

-“मैं ‘स्मिथ एण्ड जान्सन’ में स्टेनो हूं।”

-“नौकरी के अलावा और क्या करती हो.?”

-“मॉडलिंग करती हूं, पार्टियों में जाती हूं, फोटोग्राफी और साइकलिंग का शौक है और मनपसन्द मर्दो से दोस्ती करना भी अच्छा लगता है।” नीरा बड़ी बेबाकी के साथ एक ही सांस में कह गई।

बलराज मुस्कराया।

-"अपकी इतनी खूबियों के बावजूद बवेजा ने आपमें दिलचस्पी नहीं ली। यह वाकई आपके साथ ज्यादती थी उसकी।"

-"ये तमाम खूबियां तो बाद की है, सबसे बड़ी खूबी तो मैं अपने आपमें खुद हूं इन्सपेक्टर।" नीरा चहकती हुई बोली-"अपनी खूबसूरती और मर्दो पर उसके असर से मैं पूरी तरह वाकिफ हूं लेकिन प्रिंस चार्मिंग के मामले में मेरी यह खूबी बिल्कुल बेसअर साबित हुई।" फिर तनिक रुककर पूछा-"क्या सचमुच उसकी हत्या कर दी गई है?"

- "हां।"

नीरा तुरन्त गम्भीर नजर आने लगी।

-"कब ? कैसे ?"

-"पहले टॉर्चर किया गया, फिर उसकी जान ले ली गई।" नीरा ने अविश्वासपूर्वक बलराज को घूरा।

-"नामुमकिन।" वह बोली-"मेरे और उसके फ्लैट के बीच में सिर्फ एक दीवार है। इतना सब-कुछ हुआ होता तो, मुझे भी कुछ तो पता चलना ही था।"

-"इतना संब-कुछ हुआ था और कई दिन तक होता रहा था।"

-"उसी के फ्लैट में ?"

-"हां।"

नीरा धीरे से सोफाचेयर पर बैठ गई।

-"लेकिन उसका फ्लैट तो बन्द रहता था ? वह कहीं बाहर गया हुआ लगता था ?"

-"आपने उसे आखिरी दफा कब देखा था ?"

नीरा की आंखें सिकुड़ गयीं।

-"करीब तीन हफ्ते पहले।"

-"अंदाजन नहीं, सही बताओ ?"

-"आप तो ऐसे पूछ रहे हैं मानो मैं हर उस दिन कैलेण्डर पर निशान लगा दिया करती थी, जब वह सीढ़ियों में मुझे मिलता था।"

-"आखिर आपके लिए वह प्रिंस चार्मिंग था। उससे 'हैलो' करना आपके लिए खास अहमियत रखता होगा। याद करने की कोशिश करो, आखिरी दफा उससे कब 'हैलो' की थी ?"

-"सारी, यह ऐसी बात नहीं है, जो याद करने से याद आ सके।"

-"मैं आपकी मदद करता हूं।" बलराज ने कहा-"पिछले दो हफ्तों में कभी मुलाकात हुई थी उससे ?"

-"नहीं।"

-"यकीनी तौर पर कह सकती हो ?"

-"बिल्कुल।"

-"वजह ?"

-"बताती हूं।" नीरा ने कहा-"ठीक दो हफ्ते पहले मैंने यहीं एक पार्टी दी थी। अचानक मुझे ऐसा लगा व्हिस्की कम पड़ सकती थी। उस वक्त तक तमाम वाइन शॉप बन्द हो चुकी थीं । मैं व्हिस्की की एक बोतल उधार मांगने की नीयत से अपने पड़ौसी के फ्लैट पर चली गई। फ़्लैट बन्द था और घण्टी बजाने पर भी कोई जवाब नहीं मिला, इसलिए मैंने एक छोटा-सा नोट लिखकर उसके दरवाजे के नीचे से अन्दर खिसका दिया था। उसके बाद से मैंने उसे नहीं देखा । उस रात के बाद से तो मैं खासतौर पर ध्यान रखती थी वह मिले तो अपने नोट के बारे में बातें करूं-लेकिन वह मिला ही नहीं।"

-"अपने उस नोट में आपने क्या लिखा था ?"

-"वही औपचारिक बातें । मैंने अपने यहां पार्टी का हवाला दिया था । व्हिस्की कम पड़ जाने का अंदेशा जाहिर किया था। वह जैसे ही घर पहंचे व्हिस्की की बोतल लेकर मेरे यहां आ जाए, अगर उसके पास व्हिस्की न हो तो, भी उसके आने से मुझे खुशी होगी।"

-"उस नोट का भी कोई जवाब नहीं दिया ? "

-"नहीं।"

-"इसका मतलब आपने पिछले दो हफ्तों में उसे नहीं देखा।"

-"अपने यहां हुई उस पार्टी से पहले ही किसी रोज उसे देखा था ?"

- "इन दो हफ्तों में आपने उसके फ्लैट पर जाकर उससे मिलने की कोशिश नहीं की ?"

-"नहीं, अलबत्ता मैंने यह जरूर नोट किया, इन दिनों वह दिखाई नहीं दे रहा था, फिर धीरे-धीरे समझ गई कहीं बाहर गया हुआ था।"

-"ऐसा समझने की कोई खास वजह थी ?"

-“यहां की दीवारें इतनी पतली हैं एक फ्लैट में होने वाली आहटें और आवाजें दूसरी ओर आसानी से सुनी जा सकती हैं-लेकिन इस दौरान उसके फ्लैट में चलने-फिरने की आहटें या बोलने की आवाजें मुझे कभी सुनाई नहीं दी और न ही फ्लैट में रोशनी दिखाई दी। इसका सीधा-सा मतलब था वह अपने फ्लैट में नहीं था।”

-“उसकी डाक के बारे में बता सकती हो ?”

नीरा खड़ी हो गई।

-“आप लोग ड्रिंक लेंगे ?” उसने पूछा।

-“नो थैंक्यू।” बलराज ने जवाब दिया।

-“श्योर ?”

-“क्वाइट श्योर । आई डोन्ट ड्रिंक ऑन ड्यूटी।”

- “एण्ड यू ?" नीरा ने मुझसे पूछा।

मैं पलभर हिचकिचाया,फिर सिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

-“नो, थैक्यू ।”

नीरा ने पुन: बलराज की ओर देखा।

-“मे आई टेक वन ऑन यूअर ड्यूटी ?”

-“यस गो एहेड ।”

नीरा ने मेज पर रखे गिलासों पर निगाह डाली । वह यूं देख रही थी मानो तय करना चाहती थी, उन झूठे गिलासों में से कौन-सा उठाए--लेकिन वे सब एक ही जैसे थे। उसने एक गिलास उठाया और अन्दर चली गई।

-“मृतक की जिन्दगी के आखिरी दिनों के बारे में मालूमात हासिल करना बड़ा मुश्किल साबित हो रहा है।” में धीरे से बोला।

बलराज ने सहमतिसूचक सिर हिलाया, फिर पूछा-“इस लड़की के बारे में क्या ख्याल है ?”.

-“एकदम लाजवाब और पूरी हंगामाखेज है।”

बलराज ने आंखें निकालकर मुझे घूरा।

-“मैंने लड़की की बातों के बारे में तुम्हारा ख्याल पूछा था।”

-"मुझे तो यह सच बोलती नजर आई है।"

-"क्योंकि बकौल तुम्हारे यह लाजवाब और हंगामाखेज है।"

-"नहीं।"

-"फिर ?"

-"इसलिए कि यह सब-कुछ बड़े बेबाक ढंग से बता रही है।"

-"यह इसका त्रिया-चरित्र भी हो सकता है ?"

नभी नीरा कमरे में दाखिल हुई। उसके हाथ में व्हिस्की का आधे से ज्यादा भरा गिलास था। गिलास में आइस क्यूब्स भी पड़ी थीं. लेकिन व्हिस्की के पटियाला पैग की रंगत से साफ जाहिर था, उसमें पानी नहीं मिला हुआ था।

नीरा सोफाचेयर पर बैठ गई। दो तगड़े घूंट लेने के बाद उसने गिलास मेज पर रख दिया।

-"यस; इन्सपेक्टर!"

-"बवेजा की डाक आती थी ?" बलराज ने पूछा। .

-"हां।"

-"उसकी डाक के बारे में कुछ बता सकती हो ?"

नीरा के चहर पर नाखुशी भर भाव पैदा हो गए।

-"आप समझते हैं में पड़ोसियों की डाक खोलकर पढ़ा करती हूं ?"

-"नहीं। मैंने देखा है इस इमारत में सीढ़ियों के नीचे लैटर बॉक्स लगे हैं । फ्लैटों की तरह आपके और बवेजा के लेटर वॉक्सेज भी एक-दूसरे की बगल में लगे होंगे। मैं समझता हूं जब आप अपनी डाक निकालती होंगी तो बगल वाले लैटर बॉक्स पर भी निगाह जरूर पड़ती होगी। क्या आपने उसके लैटर बॉक्स में चिट्ठियां देखी थी ?"

-"आपकी बात बिल्कुल सही है। मैं अपनी डाक निकालते वक्त यही करती हूं लेकिन उसके लैटर बॉक्स में इन दिनों कोई चिट्ठी नजर नहीं आई।" नीरा ने कहा, फिर अपना गिलास उठाकर खाली करने के बाद बोली--"इस बात ने भी मुझे समझने पर मजबूर कर दिया. वह शहर से बाहर चला गया था। उसने पोस्ट ऑफिस को हिदायत दे दी होगी उसकी डाक इस पते पर डिलीवर न की जाए।"

उसी क्षण डोरबैल की आवाज फ्लैट में गूंज गई।

नीरा गिलास रखकर खड़ी हो गई।

उसने आगे बढ़कर दरवाजा खोला, फिर फौरन ही दोबारा बन्द कर देना चाहा, लेकिन कामयाब नहीं हो सकी।

बाहर से दरवाजे में पैर अड़ा दिया गया लगता था।

-"में मसरूफ हूं। मेरे पास कुछ लोग बैठे हुए हैं।" नीरा ने कहा। उसके सर्द लहजे में सतर्कता का पुट था।

-"नीरा !" बाहर से ऊंचे तेज नारी स्वर में याचनापूर्वक कहा गया-"प्लीज, नीरा । मुझे अन्दर आने दो। मैं तुमसे जरूरी बातें करना चाहती हूं ।"

बोलने वाली के लहजे में ऐसा कुछ था मानो वह किसी मुसीबत में थी और शरण लेने आई थी।

-"फिर किसी वक्त आना।" नीरा झिडककर बोली-"मेरे पास कुछ लोग बैठे हैं।"

-"मुझे टालो मत, नीरा ।" बाहर से गिड़गिड़ाती-सी आवाज उभरी--"तुम जानती हो फिर कोई वक्त नहीं आएगा। प्लीज मुझे अन्दर आने दो।"

-"पागलपन मत करो।" नीरा के स्वर में दृढ़ता थी-"घर जाओ। में फ्री होते ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी।"

-"नहीं ! मैं नहीं जा सकती।"

बाहर से आर्तनाद-सा किया गया. फिर वो आवाज घुटी-सी चीख में बदल गई,मानो बोलने वाली एकाएक बहुत ज्यादा भयभीत हो गई थी।

-"बेवकूफों, होश में आओ।" नीरा कड़वाहट-भरे लहजे में बोली-"मेरे बगलं वाले पड़ोसी प्रिंस चार्मिंग की हत्या कर दी गई है। मेरे घर में पुलिस मौजूद है और मैं इतनी ज्यादा परेशान हूं सारी रात सो नहीं सकूँगी। ऊपर से तुम लोग बेहूदगी मचाने आ पहुंचे, आगर तुम्हारा. आना इतना ही जरूरी है तो आओ, मरो। अन्दर आ जाओ।

मैंने नोट किया नीरा के उन शब्दों में अन्दर आने की ढकी-छुपी इजाजत तो जरूर थी, लेकिन उसके लहजे से जाहिर था आगंतुकों के आगमन से वह जरा भी खुश नहीं थी।

नीरा ने अभी भी दरवाजा पूरा नहीं खोला था। शायद उसे उम्मीद थी आगंतुक वापस लौट जाएंगे।

-"हमारी वजह से अपने मेहमानों को बाहर मत खड़ा रखो, मिस मलकानी।" बलराज बोला-"उन्हें अन्दर आने दो। हम आपका ज्यादा वक्त नहीं लेंगे।"

दरवाजा पकड़े खड़ी नीरा ने पलटकर हमारी ओर देखा।

-"इन्सपेक्टर बलराज कनवर।" वह अपेक्षाकृत ऊंची आवाज में बोली-"मेरा ख्याल था अपनी पूछताछ के दौरान आप किसी किस्म की दखलन्दाजी पसन्द नहीं करेंगे, लेकिन अगर आपको दो शराबियों के आने से एतराज नहीं है तो, मुझे क्यों एतराज होने लगा।"

उसने दरवाजा खोल दिया।

एक लड़की कंधे पर पर्स लटकाए, लड़खड़ाती-सी भीतर दाखिल हुई। उसकी सांसें उखड़ी हुई थीं,चेहरा सफेद और आंखों में दहशत के भाव थे।

उसके पीछे एक नौजवान भी अन्दर आ गया।

आगंतुकों के चेहरे-मोहरे या हाव-भाव से ऐसा बिल्कुल भी नहीं लग रहा था वे पिए हुए थे, लेकिन उन दोनों में किसी प्रकार की समानता भी नजर नहीं आ रही थी।

वे दोनों मुझे उस किस्म के जरा भी प्रतीत नहीं हुए जिनके नीरा मलकानी के यहां आने की मैं अपेक्षा कर सकता था। वे आपस में जितने बेमेल थे, उससे कहीं ज्यादा बेमेल नीरा के लिए थे।

लड़की की उम्र करीब बाईस साल थी। खुला मेहुंआ रंग, औसत से कुछ कम कद, तनिक मांसल जिस्म, कंधों तक कटे बाल और परेशान-सा मासूम चेहरा। पजामा सूट पहने उस लड़की को खूबसूरत कहा जा सकता था। उसके आकर्षण का केन्द्र उसके चेहरे का सलोनापन था। दुनियादारी के मामले में अनुभवहीन नजर आने वाली वह लडकी ऐसी लगती थी मानो किसी स्कूली छात्रा को गलती से बालिगों की दुनिया में धकेल दिया गया था।

इसके विपरीत वह नौजवान ऐसा लगता था मानो उसका जवानी का दौर गुजर चुका था। मेरे विचार से उसकी उम्र पच्चीस साल होनी चाहिए थी, मगर उसके मामले में उम्र का सवाल गौण था। उसका कद करीब साढ़े पांच फुट था। वह जीन्स और टी-शर्ट पहने था। ये दोनों चीजें उसके मजबूत जिस्म पर इतनी तंग थीं मानो उन्हें उस पर मढ़ दिया गया था। चौड़ा-चकला सीना और बाहों की पुष्ट मछलियां उसके शक्तिशाली होने का सबूत थे। उसकी चाल-ढाल से चुस्ती-फुर्ती झलक रही थी। उसका रंग गोरा था और चेहरे-मोहरे से वह और चाहे जो भी लगता हो,मगर शरीफ बिल्कुल नहीं लगता था। उसकी मोटी गर्दन तनी हुई थी। कुल मिलाकर वह एक ऐसा नौजवान नजर आता था,जो खुद को हर मामले में तजुर्बेकार और हर किस्म की स्थिति से निपटने में सक्षम समझता था।

मैंने बलराज की ओर देखा यह जानने के लिए कि नवागंतुकों की उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी।

वह बड़ी ही हिकारत-भरी निगाहों से नौजवान को घूर रहा था।

-"तुम गलत जगह आ पहुंचे हो,विनोद ।" बलराज नाखुशी भरे लहजे में बोला।

-"हैलो, इन्सपेक्टर।" नौजवान बोला-"काफी लम्बे अर्से के बाद मुलाकात हो रही है।"

नीरा दरवाजा बन्द करके पलटी।

-"आप दोनों एक-दूसरे को जानते हैं ?" उसने इस ढंग से पछा मानो किसी मेजबान को यह जानकर खुशी हुई थी कि उसका पूर्व-परिचित उसके दूसरे परिचित को पहले से जानता था और उसे उनका परिचय कराने की जहमत नहीं उठानी पड़ने वाली थी।

बलराज ने नीरा की ओर ध्यान न देकर उस लडकी की ओर देखा जो अभी-अभी आई थीं।

-"यह बदमाश तुम्हें परेशान कर रहा था ?" उसने पूछा।

लड़की का परेशान चेहरा तमतमा गया। वह कुछ नहीं बोली।

नौजवान जिसे बलराज ने विनोद कहकर सम्बोधित किया था, मुस्कराया।

-"मुझे गिरफ्तार कर लो,इन्सपेक्टर । वह बोला-"मैंने इस लड़की को जबरदस्ती किस किया है और इसे तीन चिकोटियां भी काटी हैं।"

बलराज ने सिर से पांव तक विनोद को घूरा।

-"मैं देख रहा हूं तुम बिल्कुल भी नहीं बदले,विनोद।" वह बोला-"वैसे मुझे उम्मीद भी नहीं थी तुम कभी बदलोगे। बाई दी वे.तुम्हारी टूटी बाहों का क्या हाल है ?"

-"ठीक है।" विनोद कड़वे स्वर में बोला-"अपने उस गुनाह की सजा में भुगत चुका हूं। में देख रहा हूं आप भी तरक्की पाकर इन्सपेक्टर बन चुके हैं।"

-"तुम क्या करते हो आजकल ? काफी खुशहाल नजर आ रहे हो ?"

-"कारें बेचता हूं।" विनोद सीना फुलाकर बोला।

-"अच्छा !" और वे कारें आती कहां से हैं ?"

विनोद ने भौंहे चढ़ाई।

-"क्या मतलब ?"

-"मैं तुम्हारी नस-नस से वाकिफ हूं, विनोद । इसलिए कह सकता हूं कि कारें चोरी की नहीं होती होंगी, क्योंकि चोरी की कारों का धंधा करने और कानून की पकड़ से बने रहने की काबलियत तुममें नहीं है । तुम सिर्फ ऐसे काम कर सकते हो, जिनमें जिस्मानी ताकत इस्तेमाल होती है।"

-"यह क्या मजाक है ?" विनोद ने कहा,फिर अपनी टी-शर्ट का कालर झटकता हुआ बोला-"बड़ी गर्मी है। कम से कम खिड़की तो खोल देनी चाहिए थी नीरा।"

नीरा कुछ नहीं बोली।

विनोद अपने खास अंदाज में चलता हुआ खिड़की के पास पहुंचा। पर्दा खिसकाकर उसने खिड़की खोल दी। वह खिड़की की ग्रिल पर हाथ रखे यूं खड़ा हो गया मानो ताजी हवा अपने फेफड़ों में भर रहा था।

-"इस कमरे में आप लोगों को गर्मी और घुटन महसूस नहीं हो रही थी ?" वह बोला।

-"आज की तारीख में यह सारी इमारत गर्म है।" बलराज कटु स्वर में बोला-"और तुम जैसे आदमी के लिए तो यह इमारत शहर की सबसे ज्यादा गर्म जगह है। तुम इस वक्त भट्टी में खड़े हो।"

-"लेकिन मैं जलूंगा नहीं, इन्सपेक्टर ।" विनोद पलटकर बोला।

-"यह आदमी अक्सर यहां आता है, मिस मलकानी ?" बलराज ने पूछा।

-"हां।" नीरा ने जवाब दिया, फिर तनिक रुककर बोली-"पार्टियों में आया करता है।"

-"पिछली दफा कब आया था ?"

-"करीब हफ्ता भर पहले।" नीरा ने कहा, फिर विनोद से पूछा-"एक हफ्ता ही हुआ होगा न ?"

-"एकाध दिन कम ज्यादा होगा।" विनोद लापरवाही से बोला।

-"पार्टी कहां थी?" बलराज ने पूछा।

-"क्या मतलब?" नीरा ने असमंजसतापूर्वक पूछा।

-"पार्टी यहां थी या बगल वाले फ्लैट में?"

–"मैं आपको बता चुकी हूं प्रिंस चार्मिंग से मेरा कभी कोई वास्ता नहीं रहा।"

बलराज इस जवाब से सन्तुष्ट प्रतीत नहीं हुआ।

-"सीधा जवाब दो।" उसने शुष्क स्वर में पूछा-"पार्टी यहां थी या बगल वाले फ्लैट में ?"

नीरा ने बलराज को ओर इस ढंग से देखा जैसे कोई शरीफ शहरी किसी पुलिसमैन की ज्यादती से इतना ज्यादा तंग आ गया था कि, उसकी सहन-शक्ति जबाब दे गई थी।

-"यहां थी।" वह झल्लाकर बोली-"मेरी समझ में नहीं आता आप क्यों बार-बार उसके साथ मेरा रिश्ता जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं ? मेरे बगल वाले पड़ौसी की हत्या कर दी गई तो,में इसमें क्या कर सकती हूं ? उसके बारे में में जो कुछ जानती थी आपको बता दिया और आप मुझसे क्या चाहते हैं ?"

इससे पहले कि बलराज जवाब देता फ्लैट में एक बार फिर डोरबैल की आवाज गूंज गई।

नीरा पांव पटकती हुई दरवाजे पर पहुंची।

दरवाजा खोलकर वह पीछे हटी और लड़की की ओर पलटकर बोली-"खुश हो जाओ। तुम्हारा राकेश आ गया है।"

आगंतुक भीतर दाखिल हुआ और दरवाजा बन्द कर दिया।

-"सॉरी.नीरा।" वह बोला-"मैं जानता हूं तुम्हें हमारी वजह से परेशानी हो रही होगी।"

-"मेरी परेशानी को गोली मारो।" नीरा बोली-"मेहरबानी करके अपनी इस छोकरी को यहां से ले जाओ। कहीं और जाकर इसके साथ रोमांस करो।"

नवागंतुक दूसरी लड़की से मुखातिब हुआ।

-"तुम नादान और बेवकूफ हो।" वह नम्र स्वर में बोला -"फिर भी मैं तुमसे प्यार करता हूं। तुम सिर्फ मेरी हो। आओ, अब यहां से चलते हैं। बेचारी नीरा को ज्यादा परेशान करना ठीक नहीं।"

उस लड़की का चेहरा खिल उठा। आंखों में ऐसी चमक उभरी मानो नवागंतुक के इन शब्दों ने उसे जीवन-दान दे दिया था।

मुझे यूं लगा मानो लड़की दौड़कर नवागंतुक की बाहों में समा जाने वाली थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

लड़की की आंखों में जितनी तेजी से चमक उभरी थी उतनी ही तेजी से वो गायब हो गई । उसने चिन्तित निगाहों से उस नौजवान की ओर देखा,जिसे बलराज ने विनोद कहकर सम्बोधित किया था ।

विनोद भी धूर्ततापूर्वक मुस्कराता हुआ उसी लड़की को देख रहा था। उसकी मुस्कराहट ठीक वैसी ही थी जैसे कोई भेड़िया अपने शिकार को सामने पाकर गुर्राने लगता है।

मुझे लगा लड़की विनोद से डर रही थी,इतना ज्यादा डर रही थी अपने हिमायती के आ पहुंचने के बाद भी आश्वस्त नहीं हो पा रही थी कि वह सुरक्षित थी।

नवागुंतक यानी राकेश ने लड़की की निगाहों का अनुसरण किया और कड़ी निगाहों से विनोद की ओर देखा।

विनोद ने फौरन लड़की की ओर से निगाहें हटा लीं और फर्श को ताकने लगा।

मुझे यह बात बड़ी अजीब लगी। मैं समझ नहीं सका राकेश किस किस्म का आदमी था, जिसकी एक ही निगाह ने विनोद नामक दरिन्दे को विचलित कर दिया था।

वह अच्छा-खासा पढ़ा-लिखा और सम्भ्रांत नजर आने वाला युवक था। वह खूबसूरत नहीं था, लेकिन उसके व्यक्तित्व में अपना अलग आकर्षण था। उसके हाव-भाव से अधिकार-भावना प्रगट होती थी और ऐसा लगता था उसमें दूसरों पर हावी होने की विशेष क्षमता थी।

उसकी इस क्षमता का प्रभाव मैंने लड़की पर तो नोट किया था, लेकिन उसके और विनोद के बीच जो कुछ होते देखा था उसे मैं राकेश की क्षमता मानने को तैयार नहीं था।

वो रहस्यमय था।

राकेश की एक ही निगाह ने विनोद को खूंखार जानवर से पालतू में तब्दील कर दिया था, जबकि जिस्मानी तौर पर विनोद के मुकाबले में वह आधा भी नहीं था।

राकेश ने बड़े प्यार से लड़की के कंधे पर हाथ रखा।

-“घबराओ मत, रीटा।” वह मीठे स्वर में बोला-“डरने की कोई बात नहीं। सब ठीक है।”

उस लड़की यानी रीटा ने इस ढंग से उसकी ओर देखा मानो पूछ रही थी वह बिल्कुल सच कह रहा था।

-“शाबास ।” नीरा ने नारा-सा लगाया-“इसी का नाम प्यार है।”

राकेश हँस पड़ा।

रीटा एक संक्षिप्त पल के लिए क्रोधित नजर आई, लेकिन अपने कंधे पर पड़ते राकेश के हाथ के अधिकार एवं स्नेहपूर्ण दबाव के कारण तुरंत ही सामान्य हो गई।

-"हम तुम्हें और ज्यादा परेशान नहीं करेंगे, नीरा।" राकेश ने कहा, फिर विनोद की ओर पलटकर सर्द लहजे में बोला-"तुम पागल तो नहीं हो । खामखाह नीरा को परेशान करने आ गए । बहुत हो गया, अब तुम यहां से चलते बनो।"

विनोद ने अपने कंधे झटकाए।

-"तुम बेकार मुझ पर बिगड़ रहे हो, राकेश ।"

-"जाते हो या नहीं ?"

-"जा रहा हूं।"

विनोद दरवाजे की ओर बढ़ा।

-"ठहरो।" बलराज ने उसे टोका-"तुम अभी नहीं जा सकते।"

विनोद फौरन ठिठक गया।

राकेश ने बलराज की ओर देखा । मानो उसे पहली बार उसकी उपस्थिति का पता चला था।

-"यह हमारा जाती मामला है,इन्सपेक्टर।" वह बोला-"मैं इससे निपट सकता हूं।"

बलराज ने सर हिला दिया।

-"तुम्हारे जाती मामले से मुझे कोई मतलब नहीं है।" उसने कहा-"मुझे सिर्फ विनोद से मतलब है।"

राकेश कुछ नहीं बोला,मगर उसके चेहरे पर साफ-साफ लिखा था वह मन ही मन ताव खा रहा था।

मैंने महसूस किया अचानक एक अन्जाना तनाव कमरे के माहौल में व्याप्त हो गया था।

चन्द क्षण खामोशी छायी रही,फिर नीरा स्थिति को सम्हालने की कोशिश करती हुई सफाई देने के अन्दाज में बोली-"इन्सपेक्टर बलराज कनवर से मिलो,राकेश। मेरे बगल,वाले पड़ौसी की हत्या कर दी गई है। इन्सपेक्टर साहब उसकी तफ्तीश करने आए हैं। मैं देख रही हूं इन्सपेक्टर को तुम्हारे इस दोस्त के बारे में... ।" उसने विनोद की ओर

इशारा किया--"कुछ ऐसी बातों की जानकारी है, जिन्हें अच्छा नहीं कहा जा सकता। मैं यकीनी तौर पर तो नहीं कह सकती,मगर ऐसा लगता है मुझे भी इस झमेले में फंसा दिया गया है और यह मुझे कतई पसन्द नहीं है।"

राकेश के चेहरे पर एक पल के लिए खीज भरे भाव उत्पन्न हुए, फिर मुस्करा दिया।

ओह, कितनी अजीब बात है। मैंने नीचे पुलिस जीपें खड़ी देखी थीं।" उसने कहा-"इमारत में भी पुलिस की चहल-पहल नजर आई थी, लेकिन इस तरफ ध्यान नहीं दिया।" फिर बलराज की ओर पलट गया-"बात दरअसल यह है मेरा समूचा ध्यान अपनी गर्ल फ्रेंड पर केन्द्रित था। आप समझ रहे हैं न इन्सपेक्टर ? जब किसी आदमी के दिलोदिमाग पर उसकी महबूबा छाई हो तो, उस आदमी का ध्यान दूसरी किसी बात की ओर जाता ही नहीं। ऐसी ही हालत मेरी भी थी।" वह तनिक रुका,फिर बोला-"विनोद की गुज़िश्ता जिन्दगी के बारे में मैं भी सब-कुछ जानता हूं । विनोद के बारे में जो कुछ आप सोच रहे हैं उसके लिए आपको दोष नहीं दिया जा सकता, लेकिन मैं गारन्टी करता हूं विनोद के बारे में अब आप अपना नजरिया बदल सकते हैं । यह अब पहले जैसा नहीं रहा।"

विनोद अभी तक भी दरवाजे की ओर मुंह किए ठिठका खड़ा था। उसके खड़े होने का अन्दाजा ऐसा था मानो जो कुछ उसके बारे में कहा जा रहा था, उससे उसे कोई सरोकार नहीं था।

- "पुलिस के नजरिए किसी गारंटी करने पर नहीं, तथ्यों के आधार पर बनते-बदलते हैं।" बलराज ने कहा-"और अभी तक ऐसा कोई तथ्य मेरे सामने नहीं आया है, मैं विनोद के बारे में अपना नजरिया बदल सकूं।"

-"आप किन तथ्यों की बात कर रहे हैं, इन्सपेक्टर ?" राकेश ने पूछा।

-"उनकी जो बगल वाले फ्लैट से प्राप्त हुए हैं और विनोद की इस इमारत में मौजूदगी।" बलराज ने कहा-"मृतक बवेजा के सर पर प्रहार करके उसे बेहोश किया गया था. फिर उसकी पिटाई की गई थी,अगर उसे एक ही दफा में पीट-पीट कर मार डाला गया होता तो, बात कुछ और होती, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसे बार-बार पीटा गया था। पिटाई का सिलसिला कई दिनों तक चला और तब तक चला जब तक कि उसने दम नहीं तोड़ दिया। इससे भी बड़ी बात यह थी उसे निर्दयतापूर्ण ढंग से यातनाएं दी गई थीं। उसकी उंगलियों के नाखूनों के नीचे लकड़ी की तीलियां गड़ी हुई थी और उंगलियों के सिरे झुलसे हुए थे।" बलराज की निगाहें राकेश पर टिकी थीं-"क्योंकि तुम्हारा दोस्त पहले भी इस किस्म की हरकत कर चुका है इसलिए इसकी यहां मौजूदगी पर गौर करना जरूरी हो गया है।"

-"विनोद के उस किस्से की जानकारी मुझे भी है इन्सपेक्टर, लेकिन उन दिनों इसकी उम्र मुश्किल से पंद्रह साल थी। उस हादसे को गुजरे एक अर्सा बीत चुका है। कानून ने उसकी जो सजा सुनाई थी उसे भी विनोद भुगत चुका है। अब यह एक समझदार नौजवान और शरीफ शहरी है। लड़कपन में जो कुछ इसने किया था उसकी वजह से इसके बारे में जिंदगी भर के लिए राय कायम कर लेना इसके साथ नाइंसाफी है।"

-"तुम शायद नहीं जानते, इसकी उस हरकत के बाद इसे गिरफ्तार करने को गए पुलिस दल के साथ मैं भी था। गिरफ्तारी के वक्त इसने वैसा ही प्रतिरोध किया था जैसे कोई पेशेवर अपराधी करता है। मजबूरन एक पुलिसमैन को इस पर डंडे का इस्तेमाल करना पड़ा।"

-"जानता हूं । इसकी दोनों कलाईयां टूट गई थीं।"

-"और यह भी जानते हो,जिस लड़की पर इसने अत्याचार किया था वह इससे भी कम उम्र की थी ? इसने जलती हुई सिगरेट् से उसके नंगे तलुवे जलाये थे ?"

-"जानता हूं । विनोद ने ही मुझे बताया था ।"

-"लेकिन तुम यह नहीं जानते, अगर विनोद उस वक्त कमसिन न होता तो जज ने इसे कम से कम दस साल की सजा सुनानी थी।"

-"यानी जज को इसकी कमसिनी पर रहम आ गया था ?"

-"नहीं। इसकी उम्र को मद्देनजर रखते हुए जज इसे ज्यादा बड़ी सजा नहीं दे सकता था ।"

नीरा बड़े ध्यान से यह तमाम वार्तालाप सुन रही थी। अचानक वह राकेश की ओर पलटी।

-"मैं जान सकती हूं आखिर यह सब क्या है ?" उसने कटुता भरे स्वर में पूछा-"तुम एक ऐसे आदमी के हिमायती और सरपरस्त बने हुए हो, जो घिनौना अपराध कर चुका है। इससे भी बड़ी बात हैं इस बारे में मुझे कभी कुछ नहीं बताया गया। तुम मेरे दोस्त हो, लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि तुम हर ऐरे-गैरे सजायाफ्ता मुजरिम को पकड़कर मेरे घर में ले आओ ।"

-"तुम गलत. समझ रही हो, नीरा।" राकेश नम्रतापूर्वक बोला-"यह उसूल का सवाल है और इस बात को खुले दिमाग से सोचने और इंसानी नजरिए से देखने की जरूरत है।"

-"अपने उसूल अपने पास ही रखो ।" नीरा पूर्ववत् स्वर में बोली-"गलत किस्म के लोगों से मुझे सख्त नफरत है। आइन्दा किसी को मेरे पास लाने से पहले अच्छी तरह ठोक-बजाकर देख लेना, जिसे तुम मेरे पास ला रहे हो वह कोई गलत आदमी न हो। जहां तक खुले दिमाग वाली बात है तुम अच्छी तरह जानते हो कि में तंग दिमाग औरत नहीं हूं, लेकिन हर बात को देखने और सोचने-समझने का मेरा अपना नजरिया है। इसीलिए बेहतर होगा अपना नजरिया समझाने की बजाय मेरा नजरिया समझने की कोशिश करो। मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं है। तुम किसे अपना दोस्त बनाते हो या किसके हिमायती और सरपरस्त बनते हो। बस इतना याद रखो कोई भी गलत आदमी तुम्हारे साथ मेरे फ्लैट में न घुसने पाए।"

राकेश ने सर हिलाकर सहमति दी।

- "इस बारे में तुमसे बाद में बातें करूंगा।" वह अधीरतापूर्वक बोला-"मुझे यकीन है तुम भी मुझसे सहमत हो जाओगी।" वह बलराज की ओर पलट गया-"इन्सपेक्टर, नीरा ने आपको मेरा परिचय नहीं दिया। मेरा नाम राकेश मोहन है । मैं पुरानी कारें बेचने का धंधा करता हूं। मेरा ऑफिस कम गैराज जवाहर नगर में है।" उसने रीटा का कंधा थपथपाया-"यह मेरी गर्ल फ्रेंड है रीटा खरे।" वह तनिक रुका, फिर बोला-"इस इमारत में एक आदमी की हत्या हुई और आप तफ्तीश करने आए हैं। आपको यहां रहने वालों और यहां आने-जाने वालों से पूछताछ करने का पूरा हक है, लेकिन में देख रहा हूं हम लोगों की यहां मौजूदगी की वजह से नीरा को भारी असुविधा और गलत-फहमी हो रही है जबकि इस बेचारी का किसी भी बात से कोई लेना-देना नहीं है। इसीलिए बेहतर होगा आप किसी दूसरी जगह चलकर विनोद से पूछताछ करें।"

बलराज ने उपहासपूर्वक उसकी ओर देखा।

-"दूसरी जगह यानी जहां हत्या हुई थी ?"

-"आपने बताया है हत्या बगल वाले फ्लैट में हुई थी।"

बलराज ने बीच की दीवार की ओर इशारा किया।

-"इस दीवार से एकदम दूसरी ओर ।"

-"इससे क्या फर्क पड़ता है।" राकेश ने कहा-"आखिर इस फ्लैट में किसी ने तो रहना ही था। नीरा की बदकिस्मती है वह इस फ्लैट में रहती है।"

-"नीरा की बदकिस्मती यह नहीं है।"

-"फिर...?"

-"तुम्हारी गर्ल फ्रेंड यानी रीटा का इस तरह भागते हुए यहां पहुंचना, मानो इसके पीछे सैकडों भूत एक साथ लग गए थे। रीटा जब भीतर दाखिल हुई यह बेहद डरी हुई थी। इसकी सांसें उखड़ी हुई थीं, चेहरा सफेद था और आंखों में दहशत थी। इसकी हालत ऐसी थी मानो इसे कत्लगाह में ले जाया जा रहा था और यह किसी तरह खुद को छुड़ाकर भाग आई थी। यह अकेली नहीं थी। विनोद इसके पीछे लगा हुआ था। इन दोनों के आने से पहले नीरा एक अच्छे शहरी की भांति हमसे सहयोग कर रही थी, लेकिन इनके आते ही वह खुद भी उखड़ गई।"

-"पड़ौस में हुई हत्या का समाचार, पुलिस द्वारा इस बारे में पूछताछ और ऊपर से अनपेक्षित रूप से दोस्तों का आ पहुंचना, ये तमाम बातें मिलकर किसी को भी परेशान कर सकती हैं । इसमें नीरा बेचारी का क्या कसूर है।"

-"इस दीवार के दूसरी ओर जिस तरह यातनाएं देकर बवेजा की जान ली गई, थी, उसे सिर्फ एक ही नाम दिया जा सकता है, सेडिस्टिक किलिंग।" बलराज राकेश के कथन को नजर अन्दाज करता हुआ बोला-"और विनोद एक सैडिस्ट है। इसीलिए विनोद की इस फ्लैट में मौजूदगी ने नीरा को सैडिस्टिक किलिंग और एक सैडिस्ट के बीच का लिंक बना दिया है।"

राकेश ने मुंह बिसूर दिया।

-"आपने तो विनोद पर जिंदगी भर के लिए ठप्पा लगा दिया है।"

-"यह ठप्पा उसने खुद ही अपने आप पर लगा लिया है।"

-"जिंदगी भर के लिए ?"

-"हां।"

-"लेकिन क्या इसे नये सिरे से जिंदगी शुरू करने का हक नहीं है ? क्या इसे दूसरा मौका नहीं मिलेगा ?"

प्रत्यक्षतः वार्तालाप का रुख जुर्म और सजा की सामाजिक दृष्टिकोण से चर्चा की ओर बदल गया था। बलराज में इस विषय पर घन्टों जोरदार बहस करने की क्षमता थी, लेकिन इस चर्चा से जल्दी ही कोई नतीजा निकलेगा ऐसा नहीं लग रहा था, फिर भी मैं धैर्यपूर्वक बैठा सुनता रहा।

-"विनोद को नए सिरे से शुरूआत करने का हक मिला और दूसरा मौका भी इसे मिला।" बलराज गम्भीरतापूर्वक बोला-"इसकी कमसिनी को मद्देनजर रखते

हुए जज ने जो सजा सुनाई थी उसका असली मकसद इसे ये दोनों चीजें प्रदान करना ही था। उससे कोई फर्क नहीं पड़ता जज के फैसले के उस वक्त या अब मेरी जाती राय क्या थी। फर्क इस बात से पड़ता है नए सिरे से शुरूआत करने का कोन क्या मतलब निकालता है।''

-''आप ऐसा समझते हैं इन्सपेक्टर ?'' राकेश ने पूछा-''जब कि इस गई-गुजरी बात को भुला देना ही हर लिहाज से ठीक है। विनोद ने जो पागलपन किया था उसकी सजा भुगतकर वह कर्जा चुका है।''

-''नहीं. असल में ऐसा नहीं है।'' बलराज सर हिलाता हुआ बोला-''यह सिर्फ इस लिहाज से ठीक है कि तुम्हें यह इसी ढंग से पसन्द है। इसे नए सिरे से शुरूआत नहीं कहा जा सकता। इसे फिर से किसी दूसरे किस्म की नई शुरूआत कहा जाएगा।''

-''मैं आपसे सहमत नहीं हूं इन्सपेक्टर।'' राकेश दृढ़तापूर्वक बोला।

-''इसका मतलब तुम असलियत को नकार रहे हो ।'' बलराज ने कहा-''लेकिन मैं इस बारे में बहस नहीं करूंगा, क्योंकि बात विनोद की है इसलिए इसी तक रहने दो। विनोद को समाज ने मौका दिया था, लेकिन इसने खुद ही अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारकर मौका गंवा दिया, फिर इसे दूसरा मौका मिला, मगर इसमें बड़ा भारी फर्क था,क्योंकि दूसरा मौका एक दूसरे विनोद को मिला-''उस विनोद को मिला जो अपना पहला मौका गंवा चुका था-एक मासूम लड़की को बहका-फुसलाकर सुनसान पार्क में एक कोने में ले जाकर पेड़ से बांधने के बाद बेरहमी से उसकी पिटाई करके और जलती सिगरेट से उसके तलुवे झुलसाकर।''

-''इस सबकी जानकारी मुझे भी है ।'' राकेश बोला।

बलराज ने उसके हस्तक्षेप की ओर ध्यान नहीं दिया।

-''संयोगवश हम मौके पर पहुंच गए।'' वह कहता गया-''लडकी को हॉस्पिटल भिजवा दिया गया। डॉक्टरों ने उसे बचा लिया। उसकी चिकित्सा करके उसे ठीक कर दिया गया। इस तरह उस लड़की को भी दूसरा मौका मिल गया, लेकिन दूसरा मौका जिस लड़की को मिला वह पहले वाली लड़की नहीं थी। वह वो लड़की थी जिसे पेड़ से बांधकर यातनाएं दी गयी थीं। वो घटना उस लड़की की जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गई है और हमेशा बनी रहेगी। वह चाहकर भी उसे खुद से जुदा नहीं कर सकेगी। इसी तरह वो घटना और उसका नतीजा विनोद के

साथ जिंदगी भर के लिए चिपककर रह गए हैं। जिस तरह वह लड़की पहले वाली सामान्य लड़की नहीं रह गई है, उसी तरह विनोद भी असामान्य बन चुका है।"

-"आपका नजरिया बहुत कठोर है।" राकेश ने कहा।

-"यह मेरा नजरिया नहीं,कठोर हकीकत है।" बलराज बोला

-"फिर उस पर निगाहें जमाकर पूछा-"अब मैं तुम लोगों को यहां नाटकीय मौजूदगी के बारे में जानना चाहता हूं।"

राकेश के चेहरे पर असमंजसतापूर्ण भाव प्रगट हो गए।

-"नाटकीय मौजूदगी ?"

-"हां, पहले तुम्हारी गर्ल फ्रेंड यानी रीटा नामक यह लड़की यूं यहां दाखिल हुई मानो सैकड़ों भूत एक साथ इसके पीछे खड़े हुए थे। फिर विनोद....।"

-"आपको गलतफहमी हुई थी, इन्सपेक्टर।" राकेश बात काटता हुआ बोला-"रीटा डरी हुई नहीं थी। हां यह बेहद परेशान जरूर थी।"

बलराज ने उसे घूरा।

-"जिस वक्त रीटा इस फ्लैट में दाखिल हुई तुम यहां थे ?"

-"नहीं।"

- "फिर तुम्हें कैसे पता यह डरी हुई न होकर परेशान थी ?"

राकेश हँसा।

-"आप रीटा से ही पूछ लीजिए।" वह बोला,फिर स्नेहपूर्वक रीटा का कन्धा थपथपाकर पूछा "बताओ डार्लिंग ! जब तुम यहां दाखिल हुई क्या तुम बहुत ज्यादा डरी हुई थी ?"

-"हां, राकेश।" रीटा धीमी आवाज में बोली।

-"यह इतनी भोली है डरने और परेशान होने में भी फर्क नहीं कर सकती।" राकेश ने कहा।

-"तुम चुप रहो !" बलराज शुष्क स्वर में बोला-"रीटा को बताने दो।" फिर रीटा से पूछा-"तुम किस लिए डरी थीं ?"

राकेश मुस्कराया।

-"यह अपनी जबान से असलियत कबूल नहीं करेगी इन्सपेक्टर।" वह बोला-"आप समझते हैं, यह आपको बताएगी कि एक मामूली बात को लेकर मेरे साथ झगड़ा कर बैठी थी, फिर उसी गुस्से में मुझे चिढ़ाने की गरज से यह विनोद के साथ चली आई,जबकि विनोद का साथ इसे जरा भी पसन्द नहीं है । इसे विनोद के नाम तक से एलर्जी है, लेकिन गुस्से में यह सब भूल गई। उस वक्त इसका इकलौता मकसद मेरे मन में ईर्ष्या पैदा करना था। इसने सोचा था मैं इसे रोकूंगा, इसकी खुशामद करूंगा और विनोद के साथ जाने से रोकने की कोशिश करूंगा, मगर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया, फिर जब इसका गुस्सा ठंडा पड़ा और इसने खुद को विनाद के साथ पाया तो, इसे अपनी भूल का अहसास हुआ। इसकी उम्मीद के मुताबिक जब मैं इसके पीछे-पीछे दौड़ा नहीं आया तो,यह बौखला गई और विनोद से साथ छुड़ाने के लिए यहां दौड़ी चली आयी। यही है सारी कहानी। अब आप खुद समझ सकते हैं यह डरी हुई थी या परेशान थी।"

नीरा ने, जो बड़ी देर से खामोश खड़ी थी, उबासी ली और लापरवाही से बोली-"ऐसे मजाक हम लोगों में आएदिन होते रहते हैं। मुझे तो ऐसा करने में बहत मजा आता है।"

बलराज रीटा की ओर देख रहा था। उसकी निगाहों से जाहिर था, वह यह सब रीटा के मुंह से सुनना चाहता था।

राकेश ने बड़े प्यार से रीटा की पीठ पर हाथ फिराया।

-"अब जब बात खुल ही गई है तो तुम खुद भी क्यों नहीं बता देती,डार्लिंग!" वह बोला।

रीटा ने सहमी निगाहों से एक बार विनोद की ओर देखा, फिर उसके होठों पर फीकी-सी मुस्कान तैर गई।

-"राकेश ठीक कहता है। यही बात थी।" वह धीमे स्वर में बोली-"मैं सचमुच बेहद परेशान थी। डरने की तो कोई बात ही नहीं थी। मुझ पर सिर्फ राकेश का अधिकार है। इसे मनाने के लिए न आता देखकर और खुद को विनोद के साथ अकेली पाकर मैं यहां भाग आयी थी।"

राकेश मुस्कराया।

-"छोटी-मोटी बातें तो होती ही रहती हैं, लेकिन तुम पर हमेशा मेरा ही हक रहेगा,बेबी। तुम सिर्फ मेरी ही रहोगी।"

बलराज ने गहरी सांस ली। उसके चेहरे के भावों से जाहिर था इन सबसे संतुष्ट नहीं था, लेकिन रीटा द्वारा कबूल किए जाने के बाद इस मामले में कुछ कर भी नहीं सकता था। उसने राकेश की ओर देखा।

-"ठीक है, मैं मान लेता हूं, तुम सच कह रहे हो।" वह बोला-"अब विनोद के बारे में बताओ, यह सिर्फ तुम्हारा दोस्त है या और भी कुछ ?"

राकेश निश्चिततापूर्वक मुस्कराया।

-"विनोद मेरी फर्म में काम भी करता है।"

-"क्या काम करता है ?"

-"सेल्समैन है।"

-"बढ़िया सेल्समैन है ?"

-"बहुत बढ़िया । इसने कभी किसी कस्टमर को हाथ से नहीं निकलने दिया।"

-"यह कस्टमर्स के घरों पर जाकर भी उनसे मिलता है ?"

-"ऐसा भी करना पड़ता है।"

-"क्या सज्जन कुमार बवेजा के पास कार थी ?"

राकेश ने पलकें झपकाई।

–"सज्जन कुमार बवेजा ? वह कौन हैं ?"

बलराज की निगाहें उसके चेहरे पर जमी थीं।

-"है नहीं था। वह आदमी,जो बगल वाले फ्लैट में रहता था और जिसे यातनाएं देकर मार डाला गया था।"

-"सॉरी,मैं नहीं जानता उसके पास कार थी या नहीं।"

-"वह कार खरीदना चाहता था ?"

-"पता नहीं।"

-"यानी बवेजा तुम्हारा कस्टमर नहीं था ?"

-"नहीं।"

-"इसका मतलब विनोद उसके फ्लैट में किसी और काम से गया था ?"

राकेश चौंका।

-"क्या मतलब ?"

-"विनोद बवेजा के फ्लैट में किसलिए गया था ?"

राकेश के चेहरे पर गहन असमंजसतापूर्ण भाव थे।

-"मेरी जानकारी में विनोद कभी उसके फ्लैट में नहीं गया।"वह ठोस स्वर में बोला-"बाई दी वे आप यह किस आधार पर पूछ रहे हैं ?"

-"मेरे पूछने का आधार तुम्हें भी मालूम है।"

राकेश मुस्कराया।

-"ओह,आई सी।" वह बोला-"ठीक है। बकौल आपके बगल वाले फ्लैट में हुई हत्या सैडिस्टिक किलिंग है और विनोद,जो कि आपके विचार से सैडिस्टिक है, यहां मौजूद है। हालांकि इन बातों का आपस में कोई ताल्लुक नहीं है, फिर भी मैं मान लेता हूं कि इनका आपस में ताल्लुक है। यानी विनोद ने हत्या की हो सकती है। इतना ही नहीं सैडिस्टिक होने की वजह से इसे बड़ा पूरा लुत्फ भी आया होगा ऐसा करने में। इस हद तक आपकी इस बात को मैं भी मान लेता हूं, मगर दिक्कत यह है किसी बात को सिर्फ मान लेने से ही वो बात सही साबित नहीं हो जाती। कम से कम कानून की निगाह से तो बिल्कुल नहीं।"

-"साफ-साफ बताओ। तुम कहना क्या चाहते हो ?"

राकेश की मुस्कराहट गहरी हो गई।

-"विनोद का इस हत्या से रिश्ता जोड़ने के लिए यह साबित करना जरूरी है कि विनोद उस फ्लैट में आया था।"

बलराज मुस्कराया।

-"क्या इसे साबित नहीं किया जा सकता ?" उसने उपहासपूर्वक पूछा।

-"बिल्कुल नहीं।"

-"क्यों ?"

-"इसलिए कि यह बिल्कुल बेबुनियाद बात है।"

-"तुम यकीनी तौर पर कैसे कह सकते हो ?"

-"उस फ्लैट में जाने के लिए इस इमारत में दाखिल होना जरूरी है और इस इमारत में विनोद कभी अकेला नहीं आया। इसके साथ या तो मैं रहा हूं या मैं और रीटा या फिर नीरा । हां,कभी-कभी दो-चार मिनट के लिए विनोद जरूर अकेला यहां रहा है, जैसे कि वह आज रहा था।"

-"तुम इस बात को अदालत में शपथपूर्वक भी कह सकते हो ?"

-"मैं अकेला ही नहीं रीटा और नीरा भी कह सकती हैं।" राकेश ठोस स्वर में बोला-"मेरा दावा है इस इमारत में आपको एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जो यह कह दे उसने विनोद को इस इमारत में अकेले देखा था।"

बलराज कुछ नहीं बोला। बस चुनौतीपूर्ण निगाहों से उसे घूरता रहा।

राकेश के इस दावे से बलराज किस नतीजे पर पहुंचा मैं नहीं जानता, लेकिन मैंने साफ महसूस किया राकेश ने अनायास ही विनोद को ठोस एलीबी प्रदान कर दी थी, क्योंकि मृतक बवेजा के फ्लैट में अभी ऐसा कोई चिन्ह नहीं मिला था, जो विनोद की वहां मौजूदगी को साबित कर सके । इसलिए सजायाफ्ता मुजरिम और सैडिस्ट विनोद को गिरफ्तार करने के बारे में सोचना तो दरकिनार रहा,बलराज फिलहाल उसके साथ सख्ती से भी पेश नहीं आ सकता था।

-"मुमकिन है तुम्हारा दावा उतना ही दमदार हो जितना तुम जाहिर कर रहे हो, लेकिन मैं इससे जरा भी प्रभावित नहीं हुआ हूं।" बलराज नपे-तुले ढंग से बोला-"तुम्हारी इस बात से विनोद के बारे में भी मेरी राय बदलने वाली नहीं है।"

-"यानी आपको विनोद पर अभी भी शक है ?"

बलराज रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

-"किस बात का ?"

राकेश चकरा गया।

-"बगल वाले फ्लैट में हुई हत्या करने का।"

-"मैंने तुमसे कब कहा मुझे विनोद पर शक है ?"

राकेश ने जवाब नहीं दिया।

-"तुम रहते कहां हो ?" बलराज ने पूछा।

राकेश ने पता बता दिया।

-"और विनोद ?"

-"वह भी मेरे साथ रहता है।"

-"तुम्हारी गैराज कहां है ?"

राकेश ने बता दिया।

-"गुड।" बलराज बोला-"तुम या विनोद कहीं बाहर जाने वाले तो नहीं हो ?"

-"फिलहाल तो ऐसा कोई प्रोग्राम नहीं है।"

-"अगर प्रोग्राम बने तो भी कैंसिल कर देना।"

-"क्यों ?"

-"इसलिए कि पुलिस को तुम्हारी जरूरत पड़ सकती है।"

-"मेरी या विनोद की ?"

-"दोनों की।"

-"ठीक है।" राकेश ने कहा, फिर लापरवाही से बोला-"वैसे मुझे यकीन है आपको मेरी तो क्या विनोद की भी जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि विनोद कभी उस फ्लैट में नहीं गया, इसलिए उसका वहां मौजूद होना साबित नहीं कर सकते।"

-"ये सब बाद की बातें हैं। तुम दोनों वैसा ही करोगे जैसा मैंने कहा है।"

-"कब तक ?"

-"कम से कम एक हफ्ता।"

बलराज ने उठकर नीरा को धन्यवाद दिया और दरवाजे की ओर बढा।

मैंने भी उसका अनुकरण किया।

वह विनोद के पास ठिठका।

-"तुमने सुन लिया मैंने क्या कहा है ?"

-"हाँ ।" विनोद भौंहें चढ़ाकर बोला।

उन चारों को वहीं छोड़कर हम बाहर आ गए।

नीरा के फ्लैट से निकलने के बाद बलराज ने इमारत में रहने वाले हर एक व्यक्ति से पूछताछ की। प्रत्येक ने एक ही जैसे घिसे-पिटे जवाब दिए।

किसी ने कोई असाधारण बात नहीं देखी-सुनी थी।

आस-पास किसी संदेहजनक व्यक्ति को नहीं देखा था।

मृतक बवेजा को करीब दो हफ्ते से नहीं देखा । इस दौरान उसका फ्लैट बंद था। किसी ने भी न तो उसके फ्लैट में रोशनी देखी थी और न ही वहां से कोई आहट सुनी थी।

मृतक बवेजा के साथ उन सबके ताल्लुकात औपचारिक दुआ-सलाम तक ही सीमित थे। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं था, उन्हें बवेजा से किसी किस्म की कोई शिकायत थी या वे जान-बूझ कर उसे अवायड करते थे। इसकी सीधी-सी वजह थी वे सब नौकरीपेशा लोग थे। सुबह को काम पर जाकर शाम को वापस लौटते और अपनी-अपनी पर्सनल लाइफ में व्यस्त रहते थे। पड़ौसियों के बारे में आमतौर पर राय भी पड़ौसियों से घनिष्टता स्थापित करना दूसरों को अपनी प्राइवेसी में दखल देने की इजाजत देना है। पडौसी वक्त-बेवक्त आकर असुविधा पहुंचाने के अलावा कुछ नहीं करते।

सबने स्वीकार किया बवेजा सम्पन्न नजर आने वाला आदमी था, लेकिन यह कोई नहीं बता सका कि काम क्या करता था।

इस तमाम पूछताछ से मुझे तो बोरीयत महसूस होने लगी थी, लेकिन बलराज के चेहरे पर शिकन तक नहीं थी। उसके उत्साह में कोई कमी नहीं आई।

अंत में हम पहले खंड पर स्थित उस फ्लैट में पहंचे जो बवेजा के फ्लैट के एकदम नीचे था।

उस फ्लैट में रहने वाली लड़की का नाम मालती शर्मा था। करीब पच्चीस-वर्षीया मालती खूबसूरत और शक्ल-सूरत से ही होशियार नजर आती थी। उसके फ्लैट की हालत से जाहिर था वह सलीका-पसन्द थी।

वहां उसी का हमउम्र एक युवक भी मौजूद था। औसत कद, स्वस्थ शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व । वह भी बुद्धिमान और होनहार प्रतीत होता था।

उन दोनों की जोड़ी मुझे पहली ही निगाह में पसन्द आ गई।

बलराज ने सामान्य ढंग से पूछताछ शुरू की।

युवक का नाम सुधीर चौधरी था। वह अक्सर मालती के पास आता रहता था।

बलराज के सवालों के जवाब उन दोनों ने ही दिए।

मैंने नोट किया वे सोच-समझकर सतर्कतापूर्वक जवाब दे रहे थें।

उन्होंने भी कोई असाधारण चीज नहीं देखी।

कोई असाधारण बात नहीं सुनी।

किसी अजनबी या सन्देहजनक व्यक्ति को इमारत में नोट नहीं किया।

ऊपर वाले फ्लैट से कोई आहट नहीं सुनी थी।

बलराज ने छत की ओर संकेत किया जहां से बवेजा के फ्लैट में फिंगर प्रिंट्स वालों के चलने-फिरने की आहटें और बात-चीत करने की धीमी आवाजें आ रही थीं।

-"ऊपर वाले फ्लैट में कब से पूरी खामोशी छायी हुई है ?"

उसने पूछा।

मालती ने छत की ओर देखा।

-"ठीक दो हफ्ते बाद आज पहली बार ऊपर से आहटें सुनाई दे रहीं हैं।" उसने जवाब दिया।

-"ठीक दो हफ्ते बाद ?" बलराज ने पूछा।

-"जी हां।" मालती ने कहा-"आज से ठीक दो हफ्ते पहले मैंने नोट किया था ऊपर पूरी खामोशी छाई हुई थी। आज सुबह तक भी कोई आवाज सुनाई नहीं दी थी। इस अरसे में इस शाम पहली दफा आहटें सुनाई दी हैं।"

-"यकीनी तौर पर कह रही हो ?"

-"बिल्कुल।"

-"पूरे चौदह दिन हो गए। तेरह या पन्द्रह नहीं ?"

मालती मुस्कराई।

-"अगर एक हफ्ते में सात दिन होते हैं तो यकीनन पूरे चौदह दिन हो गए।"

बलराज मुस्कराया।

-"मैं इस बात पर इसलिए जोर दे रहा हूं, क्योंकि आमतौर से इन मामलों में लोग-बाग ऐसे दावे करना तो दूर रहा सही वक्त तक नहीं बता पाते । मैं जानना चाहता हूं ऐसी क्या खास बात थी, जो तुम्हें यह इतनी अच्छी तरह याद रह गया कि दावा तक कर सको।"

-“हमने ऊपर वाले फ्लैट की खामोशी को इंज्वाय किया है।” युवक यानी सुधीर चौधरी हस्तक्षेप करते हुआ बोला-“हम एक-एक दिन गिनते रहे हैं। जब हफ्ता गुजर गया तो हमने सोचा वह दो हफ्ते के लिए कहीं चला गया है। पिछली रात मैं और मालती सोच रहे थे क्या वह तीसरा हफ्ता भी बाहर ही गुजारेगा, फिर जब आज शाम तुम यहां आए तो इमारत में पुलिस की चहल-पहल नोट की थी और अब आपके सवालों के जवाब दे रहे हैं,क्योंकि आपकी पूछताछ का विषय ऊपर वाला फ्लैट है इसलिए हम सोच रहे हैं वह आदमी वापस आ गया है,लेकिन हमारा अनुमान गलत भी हो सकता है। कहीं ऐसा तो नहीं वह वापस नहीं लौटा है और आप यह जानने आए हैं वह कहां गया है ?”

-“वह वापस आ गया।” बलराज बोला।

मालती और सुधीर ने एक-दूसरे की ओर देखा,फिर मालती ने कुछ कहना चाहा, लेकिन उससे पहले ही सुधीर बोल पड़ा।

-“बुरा मत मानिए, इन्सपेक्टर। आप लोगों की इस इमारत में तादाद और आपकी दिलचस्पी देखकर मैं जानना चाहता हूं क्या आप उसे अपने विभाग के खर्चे पर फिर कहीं भेजना चाहते हैं ?”

सुधीर के स्वर में उपहास का स्पष्ट पुट था।

-“तुम यह क्यों पूछ रहे हो ?” बलराज ने पूछा।

सुधीर हँसा।

-“मैं इस देश का नागरिक हूं। इस शहर का शरीफ शहरी हूं। आप लोग सरकारी आदमी हैं। यानी आपकी तनख्वाह दूसरे खर्चो वगैरा का भार जनता पर ही पड़ता है। उस जनता की मैं भी एक इकाई हूं। इस नाते अपने पैसे का दुरुपयोग होते मैं नहीं देखना चाहता।

सुधीर ने यह बात किसी आदर्शवादी नेता के ढंग से कही थी, लेकिन उसके लहजे से साफ जाहिर था उसे बवेजा से नफरत नहीं तो कम से कम चिढ़ जरूर थी।

मालती ने भौहें चढाकर उसे घूरा।

-“सुधीर।” वह बोली-“तुम हर जगह लैक्चर मत झाड़ा करो।"

बलराज मुस्कराया।

मैं समझ गया। उसे अपने अगले सवालों के लिए तगड़ी लीड मिल गई थी।

-“तुम उसे जानते थे ?” बलराज ने पूछा।

-“सिर्फ इतना कि वह आदमी ऊपर रहता था।” सुधीर जल्दी से बोला-“उसकी शक्ल-सूरत और कद-बुत के अलावा इतनी जानकारी और हे वह अपने कमरे के फर्श पर चहलकदमी किया करता है।”

-“लेकिन पिछले दो हफ्तों में उसने चहलकदमी नहीं की ?”

- यहां नहीं तो कहीं और करता रहा होगा।”

-“तुम भी यहीं रहते हो ?”

-“नहीं। मैं यहां से तीन ब्लाक दूर रहता हूं। दो-तीन दिन के अन्दर मालती भी मेरे साथ वहीं रहने लगेगी।” सुधीर ने कहा, पलभर हिचकिचाया फिर मालती की ओर देखता हुआ बोला-“या फिर हम दोनों यहीं रहा करेंगे, क्यों मालती ?”

मालती ने जवाब नहीं दिया।

उसने सिर झुका लिया । शर्म से उसके गाल सुर्ख हो गए थे।

-“लेकिन तुम्हारी बातों से लगता है कि तुम यहीं रहते हो।” बलराज बोला।

सुधीर हँसा।

-“आपका अंदाजा सही है। मेरी हर सुबह और हर शाम यहाँ गुजरती है ।” वह बोला- “हम दोनों जल्दी ही शादी करने वाले हैं.।

-“इन्सपेक्टर को तुम्हारी इन बातों से कोई मतलब नहीं है।” मालती मे कहा फिर बलराज से पूछा - “मैं जान सकती हूं आप ऊपर फ्लैट में रहने वाले आदमी के बारे में किसलिएं पूछताछ कर रहे हैं?”

बलराज ने बारी-बारी से उन दोनों को देखा, फिर मालती से पूछा--“तुम दोनों साथ-साथ यहां आए हो ?”

-“जी हां।”

-“कितनी देर हो गई ?”

-“आपके आने से मुश्किल से पांच मिनट पहले।”

-“तुम्हें नहीं मालूम तुम्हारे ऊपर वाले फ्लैट में क्या हुआ है ?”

-“नहीं।” मालती ने असमंजसतापूर्वक कहा।

-"तुमने किसी से यह भी नहीं पूछा इस इमारत में पुलिस क्यों मौजूद है ?"

-"नहीं।"

-"कोई खास वजह ?"

-"पहली बात तो हमें इमारत में रहने वाला कोई व्यक्ति दिखायी ही नहीं दिया। दूसरे आदतन में और सुधीर दोनों ही उन बातों से कोई मतलब नहीं रखते, जिनका हमसे मतलब न हो ।"

-"इसका मतलब तुम नहीं जानते तुम्हारे फ्लैट के ऊपर रहने वाले आदमी की हत्या कर दी गई है ?"

-"क्या ?" मालती एकदम उछल पड़ी। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। उसके हाथ सोफाचेयर की बाजुओं पर कस गए।

सुधीर मुस्कराया। उसका चेहरा यूं चमक रहा था मानो कोई बड़ी भारी खुशखबरी सुन ली थी।

-"वाह !" क्या बढ़िया खबर सुनाई है, इन्सपेक्टर !

मालती की आंखों में आंसू छलक आए।

-"प्लीज सुधीर नहीं।"

मैंने बलराज पर निगाह डाली । एकाएक उसका चेहरा कठोर हो गया था।

-"उसे बड़ी बेरहमी से सिलसिलेवार यातनाएं दी गई थीं।" वह सपाट स्वर में बोला-"और यातनाएं देने वाला अपने काम में माहिर था।"

-"दैट्स हॉरीबिल!" मालती फुसफुसाई।

-"नो इट्स वंडरफुल।" सुधीर चहकता हुआ-सा बोला।

बलराज की निगाहें सुधीर पर केन्द्रित थीं।

-"अगर किसी की हत्या का समाचार सुनने के बाद खुश होना तुम्हारी आदत है तो, मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा, जितना चाहो खुशियां मना सकते हो।" वह बोला-"लेकिन इस वक्त मेरे लिए यह जानना जरूरी है तुम इतने खुश क्यों हो ? खासतौर से उस सूरत में जबकि तुम कह चुके हो उस आदमी को नहीं जानते थे।

-"मुझे उस कमीने से नफरत थी ।"

-"क्यों ?"

-"माफ कीजिए, वजह मैं आपको नहीं बता सकूंगा। यह मेरा जाती मामला है।"

-"लेकिन वजह जानना मेरे लिए जरूरी है।"

सुधीर ने सिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

-"सॉरी, इन्सपेक्टर।"

-"उस आदमी की हत्या की जा चुकी है । उसके हत्यारे का पता लगाना मेरा फर्ज है।" बलराज तीव्र स्वर में बोला-"तुमने कुछ ही देर पहले एक शरीफ शहरी होने का दावा किया था। उस नाते कानून की मदद करना क्या तुम्हारा फर्ज नहीं है ?"

सुधीर के होठों पर कड़वी मुस्कराहट थी।

-"मैं आपकी मदद नहीं कर सकता,इन्सपेक्टर।" वह कटुता से पगे स्वर में बोला--"मैं खुद उसके हत्यारे को ढूंढकर उसे शानदार पार्टी देना चाहता हूं, जबकि आप उसके हत्यारे को पकड़कर फांसी पर लटकवाने का इरादा रखते होंगे। उसने काबिले-तारीफ काम किया है. इन्सपेक्टर । सज्जन कुमार बवेजा की मौत का मुझे एक ही अफसोस है उस हरामखोर की हत्या खुद मैंने नहीं की। मैं उसकी गर्दन तोड देने का ख्वाहिशमन्द था-लेकिन अब कभी मौका नहीं मिलेगा।"

-"तुम ऐसा क्यों करना चाहते थे ? आखिर उसने ऐसा कौन-सा गुनाह किया था, जो तुम इस हद तक उससे नफरत कर बैठे ?"

-"उसका यही अंजाम होना चाहिए था। वह आसान मौत का हकदार नहीं था, बल्कि तड़पा-तड़पा कर मारे जाने के काबिल ही था।" सुधीर ने कहा-"आप सैकिंड फ्लोर पर बवेजा के पड़ोसियों से मिल चुके हैं ?"

बलराज ने सिर हिलाकर हामी भर दी।

-"हां ।"

-"तब तो आप नीरा मलकानी से भी मिले होंगे। उसकी एक बात मुझे अच्छी तरह याद है। वह बवेजा को प्रिंस चार्मिंग कहा करती थी। मेरे विचार से उसका यह टाइटिल बवेजा पर जरा भी फिट नहीं बैठता। मेरे विचार से अब यह कहना ज्यादा मुनासिब होगा-कुत्ते का पिल्ला कुत्ते की मौत ही मारा गया।"

-"देखो मिस्टर, यह ड्रामेबाजी छोड़ो।" बलराज कड़े स्वर में बोला-"यह मर्डर केस है । बवेजा की हत्या अचानक जोश में आकर नहीं की गई थी। टॉर्चर करके

बड़ी क्रूरता से उसकी जान ली गई है.यानी सैडिस्टिक मर्डर। ऐसा करने वाला जो भी रहा हो,साफ जाहिर है वह बवेजा से बेहद नफरत करता था और तुम खुद कबूल कर चुके हो उससे नफरत करते थे।"

-"मैं अब भी कहता हूं मुझे उस जलील आदमी से नफरत थी। मैंने कभी किसी दूसरे आदमी से नफरत नहीं की और मुझे यकीन है उससे भी दुनिया का दूसरा कोई आदमी इतनी नफरत नहीं करता होगा।"

-"लेकिन क्यों ?"

-"वह था ही इस काबिल।"

-"तुम पहले आदमी हो जिसने ऐसा कहा है, वरना हर किसी ने उसकी तारीफ की है।"

-"इसका मतलब आपने सही आदमियों से बातें नहीं की।"

-"पता बता दो, अब बातें कर लूंगा।"

-"सुधीर फिजूल बकवास कर रहा है, इन्सपेक्टर ।" मालती हस्तक्षेप करती हुई बोली-"हम बवेजा के बारे में ऐसा कुछ नहीं जानते जिससे आपको मदद मिल सके । अलबत्ता मैं इतना जरूर कहूंगी वह बहुत ही नीच और कमीना था ।"

-"साफ-साफ बताओ।"

-"आप जानते हैं उसका पेशा क्या था ?"

-"नहीं।"

-"वह दल्ला था।" सुधीर कड़े स्वर में बोला-"लड़कियां सप्लाई करता था।"

-"तुम्हारे पास इसका कोई सबूत है ?"

-"हां।"

-"क्या है ?"

-"उस हरामखोर ने मालती को फंसाने की कोशिश की थी।"

-"कब ?"

-"करीब एक महीना पहले।" सुधीर सख्त लहजे में बोला-"जब मालती ने मुझे यह बात बताई तो, मेरा रोम-रोम गुस्से से कांप उठा। मैं फौरन ऊपर जाकर उस हरामजादे की जान ले लेना चाहता था। मैं नहीं जानता उसके हत्यारे ने किस ढंग से

उसकी जान ली, लेकिन आप यकीन मानिए, इन्सपेक्टर अगर मालती ने अपने प्यार का वास्ता देकर मुझे रोक न लिया होता तो, मैंने उस कमीने की तिक्का-बोटी कर डालनी थी। उसे ऐसी मौत मारना था, उसकी रूह तक कांप उठती ।''

-''तुमने क्या करना था इससे मुझे कोई मतलब नहीं।'' बलराज संक्षिप्त स्वर में बोला-''मेरी दिलचस्पी सिर्फ इस बात में है तुमने क्या किया और मृतक के बारे में तुम क्या जानते हो ?''

-''मुझे अफसोस है, मैंने कुछ नहीं किया।'' सुधीर पूर्ववत् लहजे में बोला-''खुद पर बड़ी शर्म आ रही है उस कमीने का थोबड़ा तक न तोड़ सका ।''

-''तुम बवेजा के बारे में क्या जानते हो ?''

-''सिर्फ यही कि मुझे उससे नफरत थी।''

-''तुमने बताया है, उसने मालती को फंसाने की कोशिश की थी। इससे तुम्हारा क्या मतलब है?''

-''मैं बताती हूं, इन्सपेक्टर। मालती पुनः हस्तक्षेप करती हुई बोली-''देखने में बवेजा बड़ा मिलनसार और शिष्ट आदमी था। इमारत में आते-जाते उससे अक्सर मेरी मुलाकात हो जाती थी। वह मुस्कराकर नमस्ते करता और में जवाब दे दिया करती थी। इससे ज्यादा हम लोगों में कभी कोई बात नहीं हुई, लेकिन करीब एक महीना पहले एक शाम इमारत के बाहर उसने मुझे रोका और बातचीत करने लगा। औपचारिक बातों के बाद वह मुझे बताने लगा सही ताल्लुकात होने पर कोई लड़की कितना ज्यादा पैसा कमा सकती है। उसने 'सही ताल्लुकात' पर कुछ इस ढंग से और इतना ज्यादा जोर दिया था, मैं समझने पर मजबूर हो गई - वह कहना चाह रहा था मेरे लिए बहुत - कुछ कर सकता था, लेकिन जल्दी ही मेरा भ्रम टूट गया । उसने बताया सही, सम्पन्न और पहुंच वाले लोगों से मिलवाने के लिए वह मुझे किसी पार्टी में ले जाना चाहता था।'' अचानक मालती का चेहरा कठोर हो गया और स्वर में कड़वाहट आ गई –''उसने मुझे खुलासा तौर पर बताया पार्टी किस किस्म की थी और मैंने वहां क्या करना था। उसका सीधा इशारा धनी लोगों का दिल बहलाकर जिस्म-फरोशी करने की ओर था, सुनकर मेरा रोम-रोम गुस्से से कांप उठा। मेरा जी चाहा उस कमीने का मुंह नोंच लूं, फिर मैंने सोचा इस तरह तमाशा बनना अक्लमंदी नहीं थी। मैं फौरन वहां से चली आई।''

-''और यह बात तुमने सुधीर को बता दी ?''

-''मैं बताना तो नहीं चाहती थी।''

-"फिर भी तुमने बताया ?"

मालती से सहमतिसूचक सिर हिला दिया।

-"मुझे बताना ही पड़ा।" वह बोली-"क्योंकि मैं और सुधीर शादी करने का फैसला कर चुके थे। शादी के बाद हमारा इरादा इसी फ्लैट में रहने का था, क्योंकि सुधीर के फ्लैट के मुकाबले यहां के कमरे ज्यादा बड़े हैं, लेकिन बवेजा से हुई बातों के बाद मुझे यह ठीक नहीं लगा। सच्ची बात तो यह है, उस आदमी ने अजीब-सा डर मेरे दिल में बैठा दिया था। उसके मौजूद रहते मुझे इस इमारत में रहना गंवारा नहीं था। जल्दी से जल्दी शादी करके यहां से चले जाने में ही कुशलता दिखाई दी। दोबारा कभी बवेजा से बातें करना तो दूर रहा, मैं उसकी शक्ल तक नहीं देखना चाहती थी, इसीलिए मुझे सुधीर को बताना पड़ा और सुनते ही यह गुस्से में आपे से बाहर हो गया।"

-"लेकिन इस बारे में इसने किया कुछ नहीं ?"

-"नहीं।"

-"तुम जल्दी से जल्दी शादी करके यहां से चली जाना चाहती थी तो, तुमने अभी तक भी शादी क्यों नहीं की ?" बलराज ने पूछा-"जहां तक मैं समझता हूं तुम लोगों ने पण्डित से मुहूर्त निकलवाने के चक्कर में पड़ने की बजाय अपनी सहूलियत के मुताबिक कोर्ट मैरिज करनी है।"

जवाब में उन दोनों ने जो कहानी सुनाई उसकी विश्वसनीयता में मुझे शक की कोई गुंजाइश दिखाई नहीं दी। उनके कहने का ढंग जरा भी सन्देहजनक नहीं था। उनके द्वारा बताई गई वजह भी माकूल थी।

उनके मुताबिक बुनियादी तौर पर मालती हिंसा के सख्त खिलाफ थी। किसी प्रकार के स्कैंडल में पड़ना भी उसे गंवारा नहीं था जबकि बवेजा के साथ मारामारी करने में उसकी अपनी बदनामी भी होनी थी, इसीलिए उसने सुधीर को समझा-बुझाकर और कसम देकर मार-कुटाई करने से रोक दिया और सुधीर को मजबूरन बात माननी पड़ी।

जल्दी शादी करने में भी यही पेचीदगी थी। वे रजिस्ट्रार ऑफ मैरिज के यहां एप्लाई कर चुके थे और उनकी शादी की तारीख निश्चित हो चुकी थी, जिसके बारे में वे अपने करीबी दोस्तों को बता चुके थे, अगर शादी की तारीख बदली जाती तो, उन्हें वजह भी बतानी पड़ती, जबकि मालती किसी प्रकार की सफाई देकर लोगों को नाहक बातें बनाने का मौका देना नहीं चाहती थी।

-"मैंने अगले ही दिन से एहतियात बरतनी शुरू कर दी।" अन्त में सुधीर ने कहा-"इमारत में आते-जाते वक्त मैं बराबर मालती के साथ रहता हूं। हर शाम में इसे घर पहुंचाता हूं और जब तक इसके सोने का टाइम होता है, मैं यही रहता हूं। पहले यह प्रवेश-द्वार को अन्दर से सिर्फ सिटकनी लगाती थी लेकिन उस घटना के बाद से अन्दर ताला भी लगाने लगी है। बाहर भी दोहरे ताले का इन्तजाम कर दिया गया है। रात में सोने के बाद यह सुबह उसी वक्त दरवाजा खोलती है जब मैं आकर दस्तक देता हूं।"

-"मैंने सोचा चंद हफ्तों की ही तो बात है. इसी तरह काट लूंगी। मालती ने कहा-"यहां आते-जाते वक्त सुधीर हमेशा मेरे साथ होता था और इसकी वजह से बवेजा मेरे पास फटकने की भी जुर्रत नहीं करता था ।"

-"जिस पार्टी में बवेजा तुम्हें ले जाना चाहता था ।" बलराज ने पूछा-"उसके बारे में उसने कुछ नहीं बताया पार्टी कहां होनी थी और उसमें किस-किस ने आना था ?"

-"उसने सिर्फ इतना कहा था वहां छ-सात लड़कियां होंगी और करीब एक दर्जन मोटी गांठ वाले आदमी होंगे।"

-"किसी का नाम नहीं बताया ?"

-"नहीं।"

-"वो जगह भी नहीं जहां पार्टी होनी थी ?"

-"नहीं।"

-"बवेजा के प्रस्ताव को इस ढंग से ठुकराकर तुमने ठीक नहीं किया।"

-"तो क्या इसे पार्टी में चले जाना चाहिए था ?" सुधीर ने झगड़ालू स्वर में पूछा।

-"प्लीज, सुधीर ! टेक इट ईजी।" मालती ने कहा, फिर बलराज से बोली-"मैं जानती हूं कि मुझे तुरन्त पुलिस के पास जाना चाहिए था।"

-"तो फिर गई क्यों नहीं ?"

-"बवेजा ने जो कुछ मुझसे कहा था उसे अजनबियों के सामने अपनी जुबान से दोहराना मेरे वश की बात नहीं थी। उस वक्त मैंने इस बात को दबाना ही मुनासिब समझा । शर्म और संकोच के कारण मैं पुलिस के पास नहीं जा सकी। बवेजा की बातों को सुधीर के सामने भी मैं बड़ी मुश्किल से ही दोहरा पाई थी।"

-"आखिर अब भी तो तुमने यह सब बताया है ?"

-"इस वक्त बात दूसरी है।" मालती ने कहा-अब बवेजा मर चुका है।"

- "यानी अब तुम्हें किसी स्कैंडल का डर नहीं है ?"

-"हां।"

-"काश तुमने यह सब पुलिस को पहले बना दिया होता।"

-"तभी क्या हो जाना था ?" सुधीरने पूछा।

बलराज ने उसे घूरा । उसे वे लोग कतई पसन्द नहीं थे जो पलिस के पास जाने से इसलिए बचते थे, पुलिस उनकी कोई मदद नहीं कर पाएगी।

-"हमने एक्शन लेना था ।" वह बोला।

-"क्या ?"

-"मालती को पार्टी में भेजते, फिर ऐन वक्त पर हम खुद पहुंचकर छापा मार देते। इस तरह वहां मौजूद लड़कियों के बयानो के आधार पर बवेजा को रंगे हाथों पकड़ा जा सकता था ।"

सुधीर ने पुलिस की कार्यप्रणाली के बारे में बाकायदा बहस छेड़ दी तो मालती को उसे चुप कराना पड़ा।

बलराज ने मालती को धन्यवाद दिया और हम बाहर आ गये।

हम वापस मृतक बवेजा के फ्लैट में पहुंचे। वहां कई दिलचस्प बातें हमारा इन्तजार कर रही थीं।

फिंगर प्रिंट्स वालों का काम खत्म हो चुका था।

एस. आई. अश्विनी कुमार शर्मा ने बताया पूरे फ्लैट में कहीं भी किसी की उंगलियों के निशान नहीं मिले थे। हर चीज को सावधानी और बड़ी बारीकी से साफ किया जा चुका था।

मुझे यह सुनकर ताज्जुब हुआ, लेकिन इससे भी ज्यादा ताज्जुब यह देखकर हुआ बलराज पूर्णतया सामान्य था। उसके चेहरे पर अजीब-सी मुस्कराहट थी।

-"मैं जानता था ऐसा ही कुछ होगा ।" वह लापरवाही से बोला।

-"क्या मतलब ?" अनायास ही मेरे मुंह से निकल गया "तुम्हें इल्हाम हुआ था ?"

-“नहीं. माई डियर भारती ।” बलराज बोला-“यह बड़ी मामूली-सी बात है। मृतक बवेजा की लाश की हालत से जाहिर था उसके जिस्म से काफी खून निकला, लेकिन उसके कपड़ों के अलावा कहीं भी हमें खून की एक बूंद तक दिखाई नहीं दी। इसका सीधा-सा मतलब है यहां बड़ी बारीकी के साथ मुकम्मल तौर पर सफाई की गई थी।”

मुझे मन ही मन स्वयं पर खीज आ गई, इतनी सीधी-सी बात भी मेरे भेजे में क्यों नहीं आ सकी।

अश्विनी शर्मा ने सहमतिसूचक सिर हिलाया।

-“आप बिल्कुल ठीक कहते हैं, सर ।” वह बोला-“यहां कहीं खून की एक बूंद तो दूर बूंद का दाग तक भी नहीं मिला । मेरा ख्याल है, बवेजा को कहीं और टॉर्चर किया गया था और जब वह मर चुका या मरने वाला था तब उसे यहां लाया गया था।”

-“अपना ख्याल मत बताओ, सुपरमैन।” बलराज ने कहा। अश्विनी शर्मा के भारी बदन की वजह से बलराज मजाक में उसे सुपरमैन कहा करता था-“फाइंडिंग्स की रिपोर्ट दो।”

-“राइट, सर।” अश्विनी शर्मा बोला-“कहीं ऐसा भी कोई निशान नहीं मिला जिससे समझा जा सके खून को धोकर साफ कर दिया गया था।

बलराज ने सहमतिसूचक सिर हिलाया।

-“खून को धोया नहीं गया।”

-“ऐसा भी नहीं लगता किसी और तरीके से खून साफ कर दिया गया था।”

-“किसी दूसरे तरीके के बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। इसके लिए हमें इन्तजार करना होगा।”

-“राइट सर ।”

-“आगे बोलो ।”

-“दूसरा प्वाइंट है धूल। अजीब बात है, यहां उतनी धूल नहीं जमी है जितनी कि जमनी चाहिए थी।”

-“यह भी मानते हुए कि पिछले दो दिनों में यहां मुकम्मल तौर पर सफाई की गई थी ?”

-"यस, सर ।"

-"यही होना भी चाहिए था। बाकी तमाम बातें इसी ओर संकेत करती हैं ।"

अश्विनी शर्मा ने असमंजसतापूर्वक उसकी ओर देखा।

-"फिर भी यहां धूल तो जमा मिलनी ही चाहिए थी, सर। मेरी समझ में नहीं आता फ्लैट में नाम-मात्र को ही धूल क्यों जमी ?"

बलराज ने चन्द क्षण सोचा,फिर पूछा-"यहां वैक्यूम क्लीनर है ?"

-"यस, सर। हम उसे चैक कर चुके हैं। उसकी वो थैली खाली है जिसमें धूल इकटठा होती है। वैसे भी वो पुराने मॉडल का बहुत ही हल्के सक्शन वाला क्लीनर है। उससे सिर्फ ऊपर-ऊपर की धूल निकाली जा सकती है. लेकिन यहां कारपेट से पूरी गहराई स धूल निकाली गई है, जिसके लिए बेहतर किस्म का क्लीनर दरकार है।"

-"तुम यकीनी तौर पर कह सकते हो जो क्लीनर यहां मौजूद है उससे इतनी गहराई से धूल नहीं खींची जा सकती ?"

-"यस सर।"

बलराज ने कुछ नहीं कहा । वह विचारपूर्ण ढंग से बेडरूम में चहलकदमी करने लगा।

–"खिड़कियों की चौखटें चैक की थीं ?" अचानक उसने पूछा।

-"यस सर। वहां भी न तो फिंगर प्रिंट्स मिले और न ही धूल।"

-"और कुछ ?"

-"कुछ नहीं।"

-"कीलों के सूराख भी नहीं ?"

बलराज का यह सवाल मुझे बड़ा ही अटपटा लगा।

अश्विनी शर्मा ने भी गावदी की तरह पलकें झपकाईं। वह मन ही मन खुद को कोस रहा था इन्सपेक्टर द्वारा पूछे जाने से पहले उसने खुद ही क्यों नहीं इस बारे में बता दिया।

-"वे तो बहुत हैं, सर ।" वह मरी-सी आवाज में बोला।

बलराज मुस्कराता हुआ एक खिड़की के पास पहुंचा।

मैं भी खिड़की के पास जा खड़ा हुआ।

बलराज ने पर्दा एक तरफ खिसका दिया और चौखट का मुआयना करने लगा।

लकड़ी की चौखट पर सैकड़ों सूराख थे। उनकी गहराई से साफ जाहिर था वहां गड़ाई गई कीलें बहुत ही छोटी-छोटी थीं। अनुमानत: वो सूराख ऐसे थे जैसे कि आमतौर पर ड्राइंग-बोर्ड पर बन जाया करते हैं। सूराख चौखट के चारों हिस्सों पर थे।

–"फ्लैट की तमाम खिड़कियों की चौखटों पर ऐसे ही सूराख हैं ?" बलराज ने पूछा।

-"यस सर।" अश्विनी शर्मा ने जवाब दिया।

-"और तुम इसे कुछ नहीं कहते हो ?"

-"मैंने समझा आप फिंगर प्रिंट्स और धूल के बारे में पूछ रहे थे, सर,क्योंकि हम उन्हीं के बारे में बातें कर रहे थे।"

बलराज ने उसकी बात पर ध्यान न देकर मेरी ओर देखा।

-"तुम्हें याद है इस इमारत में रहने वाले तमाम लोगों ने बताया था पिछले दो हफ्तों में उन्होंने यहां कोई रोशनी नहीं देखी।" वह बोला-"उसका राज अब खुल गया है, खिड़कियों की चौखटों में मौजूद सूराख इस बात के सबूत हैं हर रात खिड़कियों को मोटे काले कपड़े से ढक दिया जाता था ताकि अंदर की रोशनी बाहर न जा सके, फिर सुबह होने से पहले ही वो कपड़े उतार लिए जाते थे ताकि किसी वजह से वे बाहर सड़क से दिखाई न दे जाएं । इन सूराखों की तादाद से जाहिर है काला कपड़ा कई रातों तक लगाया और उतारा जाता रहा था।"

बलराज का यह रहस्योद्घाटन तर्क-संगत था-लेकिन पूरी बात अभी मेरी समझ से बाहर थी।

-"रोशनी के बारे में तो यह तथ्य समझ में आ गया।" मैंने कहा-"लेकिन आहट के बारे में क्या कहते हो ? यहां किसी प्रकार की आहट भी तो नहीं सुनी गई थी ?"

बलराज के चेहरे पर गहन विचारपूर्ण भाव थे।

-"जो आदमी रोशनी,खून के दाग, फिंगर प्रिंट्स और धूल का इतना पक्का इंतजाम कर सकता है, उसने आहट का भी ऐसा ही मुकम्मल इन्तजाम किया

होगा।" वह बोला-"इस मामले में सबसे बड़ी बात यह है हर एंगिल बेहद दिमाग खपाई चाहता है। यहां आहट न होने देने के दर्जनों तरीके हो सकते हैं. लेकिन ऐसा कोई तरीका नहीं हो सकता, जिसका चिन्ह पीछे न छूटे।" उसने अश्विनी की ओर देखा-"तुमने पलंग अच्छी तरह चैक किया था ?"

-"यस सर।"

-"कोई खास बात ?"

-"नो सर।"

-"इन्सपेक्टर।" फिंगर प्रिंट्स वालों का इंचार्ज कीमतीलाल हिचकिचाता-सा बोला-"हो सकता है मेरा अंदाजा गलत हो, लेकिनं इस बारे में मैं भी कुछ अर्ज करना चाहता हूं।"

-"जरूर।" बलराज प्रोत्साहन देता हआ बोला-"बोलो, क्या कहना चाहते हो ?"

-"मेरा अनुमान है पलंग के चारों पाये बड़ी मजबूती के साथ फर्श के साथ फंसे हुए थे।"

बलराज का चेहरा खुशी से चमकने लगा।

-"गुड ।" वह चहकता हुआ बोला-"चलो हमें भी दिखाओ।"

बलराज और कीमतीलाल के पीछे अश्विनी और मैं भी बेडरूम में आ गए।

कीमलीलाल ने दिखाया, पलंग के चारों पायों में से प्रत्येक पर फर्श से करीब दो इंच ऊपर चार बहुत ही छोटे-छोटे वृत्त मौजूद थे। उन स्थानों पर प्रत्येक पाये का रंग और लकड़ी शेष पाये के रंग और लकड़ी से तनिक भिन्न थी। इसी प्रकार हर एक पाये के इर्द-गिर्द फर्श पर भी चार बहुत छोटे-छोटे वृत्त मौजूद थे। ये चारों वृत्त भी प्रत्येक पाये से करीब दो इंच के फासले पर थे।

-"ये वृत्त लोहे के ब्रेकेटों से बने हैं।" कीमतीलाल ने जानकारी दी-"ब्रेकेटों को पलंग के पायों के साथ कसकर उन्हें फर्श पर कस दिया गया था। ब्रेकेटों को हटाने के बाद पेचों के सुराखों में वुड फिलर (लकड़ी के छेद,दरार वगैरा को भरने के काम में लाया जाने वाला पदार्थ) भरके ऊपर से पालिश कर दी गई थी। इसीलिए इन वृत्ताकार स्थानों पर लकडी और पालिश शेष पायों की लकडी और पालिश से थोड़ी अलग नजर आ रही है । यह काम बड़ी सफाई और होशियारी से किया गया था, इन्सपेक्टर।" बलराज ने प्रशंसापूर्वक उसकी ओर देखा।

-"तुमने यह सब कैसे भांप लिया, कीमतीलाल?"

-"फिंगर प्रिंट्स सैक्शन में आने से पहले मैं लेबोरेटरी में काम कर चुका हूं।" कीमतीलाल ने जवाब दिया।

बलराज ने मेरे कंधे पर हाथ रख लिया।

-"समझे, भारती साहब।" वह बोला-"बवेजा का मर्डर निहायत सफाई और होशियारी के साथ किया गया था। बस इसमें एक ही कमी है, अगर वो न होती तो इसे यकीनन परफैक्ट क्राइम का दर्जा दिया जा सकता था।"

-"क्या कमी है ?" मैं पूछे बगैर न रह सका।

-"हत्यारे की योजना एकदम फुलप्रूफ थी,लेकिन ऐसा लगता है, किसी आकस्मिक दुर्घटना की वजह से उस मूल योजना पर पूरे तौर पर अमल नहीं किया जा सका । दुर्घटना क्या थी ? कैसे हुई ? इसका पता लगाने में इतनी सिर-खपाई करनी पड़ेगी कि दिमाग की चूलें हिल जाएंगी। अलबत्ता यह निश्चित रूप से सही है जिस किसी ने भी यह योजना बनाई थी वह खुद उस दुर्घटना के लिए जिम्मेदार नहीं हो सकता। वह इतना दूरदर्शी, सुलझा हुआ और चौकस आदमी रहा होगा कि दुर्घटना को टाल सकता था, अगर ऐसा हो गया होता तो जिंदगी भर सिर पटकते रहने के बावजूद हाथ कुछ नहीं लगना था।" बलराज मुस्कराया-"मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है इतना वैल प्लांड मर्डर केस पहले कभी न तो मेरे सामने आया है और न ही ऐसे किसी केस के बारे में सुना है।" उसने मेरा कंधा दबाया-"तुम जासूसी उपन्यास लिखते हो। क्या तुमने अपने किसी उपन्यास में ऐसे मर्डर की कल्पना की है, या अपने किसी हमपेशा के लिखे उपन्यास में ऐसे मर्डर के बारे में पढ़ा है ?"

- "सच्चाई जानना चाहते हो ?" मैंने पूछा।

-"हां।"

-"असलियत यह है में चकराकर रह गया हूं ।" मैंने बेहिचक कहा-"मेरी समझ में बिल्कुल भी नहीं आया तुम कहना क्या चाहते हो ?"

बलराज हँसा।

-"बस इतना समझ लो कि अभी तस्वीर अधूरी नजर आ रही है।" उसने गोल-मोल जवाब दिया-"दो-तीन बातें और है, उनके साफ होते ही तस्वीर पूरी नजर आ जाएगी।"

वह पन्द्रह-बीस मिनट और फ्लैट में ठहरा,फिर उसने अश्विनी शर्मा को हिदायतें दी कि वहां मौजूद बवेजा की प्रत्येक चीज की बारीकी से जांच की जाए।

-"आओ,बॉस । अन्त में वह अपने विशिष्ट अन्दाज में मुझसे बोला-"अब डॉक्टर मुलगांवकर के पास चलते हैं ।"

मैं चुपचाप उसके साथ फ्लैट से बाहर आ गया।

मैंने साफ नोट किया उसके चेहरे पर संतुष्टिपूर्ण भाव थे। मानो संचमुच उसे तस्वीर पूरी नजर आने लगी थी,जबकि मुझे तस्वीर तो क्या तस्वीर का रंग और कागज तक भी नजर नहीं आ रहे थे।

शव परीक्षा करने वाले डॉक्टर मलगांवकर की उम्र करीब पैंतालीस वर्ष थी। साफ गेहुंआ रंग, औसत से कुछ कम क़द, भारी बदन और आंखों पर मोटे शीशों वाली ऐनक । शव परीक्षा के दौरान निहायत बारीक और मामूली बातें भी उसकी निगाहों से छुपी नहीं रह पाती थीं।

प्रत्येक रहस्य की तह में पहुंचने के बाद उसे एक खास वक्त तक अपने तक ही सीमित रखने की आदत और अनोखी सूझ-बूझ का वजह से अगर इन्सपेक्टर बलराज कनवर को शरलक होम्स कहा जाए तो बाल की खाल निकालने में मुलगांवकर भी डॉ० वाटसन से कम नहीं था।

हम मोर्ग के पास बने मुलगांवकर के ऑफिस में बैठे थे। वह बवेजा की लाश का पोस्टमार्टम कर चुका था।

-"बलराज !" मुलगांवकर ने एकदम सीधी बात की-"मुझे अच्छी तरह याद है, ऐसा केस पहले कभी मेरे सामने नहीं आया।"

बलराज मुस्कराया।

-"अच्छा !" क्या खास बात है इसमें ?"

-"पुलिस विभाग में बतौर डॉक्टर अपनी करीब बीस साल की नौकरी में मैं हर तरह की मौत के शिकार हुए लोगों की लाशें देख चुका हूं। उनमें टॉर्चर करके मारे गए लोग भी शामिल थे,लेकिन ऐसी लाश पहले कभी नहीं देखी। अपने नुक्ताए-नजर से मैं उस आदमी की हत्या को बेहिचक 'मर्सी किलिंग' कह सकता हूं।"

मैंने डॉक्टर की बात पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। मृतक, बवेजा की लाश को मैं देख चुका था। मैंने सोचा डॉक्टर मजाक कर रहा था क्योंकि उसकी लाश में

खौफनाक होने के अलावा और कोई खास बात कम से कम मेरे विचार में तो नहीं थी।

लेकिन बलराज पर इस बात की सरासर अलग प्रतिक्रिया हुई। वह एकदम चौंक गया।

-"मर्सी किलिंग ?" उसने डॉक्टर को घूरते हुए कहा-"यानी मृतक बवेजा मृत्यु पीड़ा से छटपटा रहा था और उसे इससे निजात दिलाने के लिए किसी ने उसे आसान और पीड़ारहित मौत दे दी थी ?"

डॉक्टर ने सहमतिसूचक सिर हिलाया।

-"हां ! उसे सिलसिलेवार कई दिनों तक टॉर्चर किया जाता रहा था।" वह बोला-"हालांकि मैं प्रेक्टिकल आदमी हूं। मेरे काम में अनुमानों के लिए कोई जगह नहीं है, लेकिन इस मामले में मैं सोचने पर मजबूर हूं, उस आदमी की हत्या के लिए कोई पागल डॉक्टर तो जिम्मेदार नहीं था।"

-"लाश की हालत और प्राप्त एवीडेंसेज के आधार पर मेरा अनुमान है यह किसी 'सैडिस्ट' का मास्टरपीस कारनामा है।" बलराज ने कहा-"बाई दी वे, क्या तुम मेरी इस बात से सहमत हो मृतक को सिर्फ उतनी यातनाएं दी गई थीं, जितनी कि उसे नुकसान पहुंचाए बगैर दी जा सकती थीं ?"

-"यह तो इस पर निर्भर है यातनाओं से तुम्हारा आशय क्या है और नुकसान से क्या है ।" डॉक्टर सावधानीपूर्वक बोला।

इन्सपेक्टर बलराज ने परिभाषाएं दीं। यातनाओं से उसका वास्तविक आशय था-पीड़ा और नुकसान से आशय था-जिस्मानी नुकसान। दोनों बातों में यह फर्क तो सही था, लेकिन इस फर्क को स्वीकारने में मेरे सामने बड़ी भारी दुविधा थी। सबसे ज्यादा परेशानी इस तथ्य से थी कि बवेजा मर चुका था। मैं प्रतिवाद करना चाहता था। मौत सबसे बड़ा जिस्मानी नुकसान होता है। कोई भी व्यक्ति इस नुकसान के मुकाबले में दूसरा बुरे से बुरा जिस्मानी नुकसान भी सह सकता है, मगर मुझे चुप ही रहना पड़ा, क्योंकि जाहिर था इन्सपेक्टर और डॉक्टर टॉर्चर को मर्डर से अलग मुद्दा समझ रहे थे और उस वक्त वे टॉर्चर के बारे में बातें कर रहे थे, जिसे बवेजा लगातार कई दिनों तक सहता रहा था और जिससे उसे तभी निजात मिली जब उस पर रहम करके उस मार दिया गया - यानी बकौल डॉक्टर-मर्सी किलिंग। इस सिलसिले में उन्होंने एक बार भी हत्या का जिक्र तक नहीं किया।

बलराज द्वारा प्रगट किए गए इस फर्क पर उन्होंने हर पहलू से पूरी बारीकी तक विचार-विमर्श किया। अन्त में जो तस्वीर उन्होंने पेश की वो इस प्रकार थी- सज्जन कुमार बवेजा को लगातार कई दिनों तक असहनीय शारीरिक पीड़ा पहुंचाई गई थी। उसे विभिन्न तरीकों से टॉर्चर किया गया था, लेकिन अलग-अलग होने के बावजूद तमाम तरीकों में एक बात कॉमन थी। तमाम यातनाएं इस ढंग से दी गई थीं कि शरीर को कोई स्थायी नुकसान न पहुंचे। मसलन कोई हड्डी न टूटे या ऐसा कोई जख्म न हो जाए जिसे भरने में बहुत ज्यादा वक्त लगे या फिर कोई अंग हमेशा के लिए बेकार न हो जाए।

-"मान लो बवेजा एक हफ्ता और जिन्दा रहता।" बलराज ने कहा-"उस एक हफ्ते में बवेजा को और टॉर्चर करने की बजाय उसे सही उपचार दिया जाता और फिर उसकी हत्या कर दी जाती उस सूरत में क्या उसकी शव परीक्षा से यह पता लग सकता था हत्या करने से पहले उसे इस तरह टॉर्चर किया गया था ?"

-"नहीं।" डॉक्टर ने जवाब दिया-"मृतक की हत्या करने से पहले उसे टॉर्चर किया गया था। मौजूदा केस में यह मैं इस आधार पर कह रहा हूं क्योंकि मृतक के शव पर जख्म और जख्मों के ताजा निशान मौजूद थे और वे इसलिए मौजूद थे,क्योंकि जख्मों को भरने का वक्त नहीं मिल सका।"

बलराज ने सिर हिलाकर सहमति दी।

-"ठीक है। उसकी मृत्यु कब हुई थी ?"

-"करीब अड़तालीस घंटे पहले।"

बलराज ने डॉक्टर की सहायता से हिसाब लगाया।

सज्जन कुमार बवेजा को दो हफ्ते से किसी ने नहीं देखा था। उसकी लाश पर सबसे पुराना जो जख्म का निशान था डॉक्टर के मुताबिक उसे मृतक की मौत से पहले भरने में दस-बारह दिन लगे होने चाहिएं थे और सबसे ताजा जख्म बवेजा को मरने से छह-सात दिन पहले होना चाहिए था।

हालांकि उन दोनों बातों के समय के बारे में डॉक्टर निश्चित रूप से कोई दावा नहीं कर सका, लेकिन उसने कहा मृतक के शव पर ऐसा कोई जख्म नहीं था, जो काफी हद तक भर नहीं गया था

और उसके मुताबिक उस किस्म के जख्मों को भरने में कम से कम करीब छह दिन जरूर लगने थे।

बलराज के चेहरे पर संतुष्टिपूर्ण भाव थे।

-"बवेजा पर उसके फ्लैट में ही हमला किया गया था।" वह बोला-"पहला वार उसके सिर पर किया गया था, जिसने उसे बेहोश कर दिया फिर उसके हाथ-पैर बांध दिए गए।"

- "और उसका मुंह भी बन्द कर दिया गया।" डॉक्टर ने टोका।

-"हां ।" बलराज ने सहमति दी- "ऐसा करना जरूरी था।"

-"जरूरी था या नहीं यह तुम्हारे सोचने की बात है।" डॉक्टर बोला-"मेरे पास इस बात का बाकायदा सबूत है । मुझे उसके होठों पर ओर मुंह के आस-पास एडहेसिव-टेप चिपकाए जाने के निशान मिले हैं। में दावे से कह सकता हूं उसका मुंह बन्द रखने के लिए टेप इस्तेमाल किया गया था। इतना ही नहीं टेप कई बार उतारा और चिपकाया गया था।" वह मुस्कराया--"ऐसा कोई भी लक्षण नहीं मिला है जिससे समझा जाये मृतक भूखा रहा था। वह नियमित रूप से खाता-पीता रहा था। इसलिए मैं समझता हूं उसे खिलाने-पिलाने के लिए ही टेप उतारा जाता रहा होगा।" उसने इन्सपेक्टर की ओर देखा-"खिलाने-पिलाने के दौरान उसे चीखने-चिल्लाने से कैसे रोका गया होगा,यह सोचना तुम्हारी सरदर्दी है।"

"इस तथ्य के अलावा कि बवेजा को खिलाया-पिलाया जाता रहा था और मुंह पर टेप चिपका रहने की हालत में किसी को खिलाया-पिलाया नहीं जा सकता।" बलराज ने पूछा- "तुम्हारे पास और क्या सबूत है कि उसके मुंह पर बार-बार टेंप चिपकाया और उतारा गया था ?"

-"अगर तुम्हें कभी ऐसी चोट लगी है, जिस पर कई बार एडहेसिव टेप चिपकाया ओर उतारा गया हो तो, तुमनें नोट किया होगा जिस्म के किसी भी हिस्से पर चिपकाया गया टेप उतारा जाने पर अपना निशान जरूर छोड़ता है।" डॉक्टर ने इस ढंग से बताना शुरू किया मानो कोई टीचर क्लासरूम में लेक्चर दे रहा था-"टेप पर लगे गम का कुछ अंश त्वचा पर छूट जाता है। इतना ही नहीं त्वचा की ऊपरी सतह भी आंशिक रूप से प्रभावित होती हैं, अगर उन निशानों को साफ न किया जाए तो, वे दो-एक दिन तो शरीर पर मौजूद रहते हैं, लेकिन मृतक बवेजा के मुंह से जब आखिरी दफा टेप उतारा गया तो, सावधानीपूर्वक सफाई करके उसके मुंह से टेप द्वारा छोड़े गए निशानों को मिटा दिया गया था। इसके बावजूद मेरी पेशवर ओर तजुर्बेकार आंखों ने इस बात को फिर भी भांप ही लिया, उसके मुह पर बार-बार टेप चिपकाया और उतारा गया था।"

-"इसका मतलब हुआ।" बलराज ने कहा-"बवेजा के हाथ-पैर बांधने और मुंह पर टेप चिपकाए जाने के बाद उसे कितनी यातनाएं दी गई थीं। उसके चेहरे और बाएं हाथ की

हालत से यह साफ जाहिर था।" उसने डॉक्टर की ओर देखा- "उसके दाएं हाथ पर भी किसी प्रकार की यातना का कोई चिन्ह था, मुझे तो ऐसा कुछ नजर नहीं आया था।"

-"नहीं।" डॉक्टर ने जवाब दिया।

-"यानी उसका दायां हाथ बिल्कुल सही हालत में था ?

-"हाँ।"

बलराज मुस्कराया।

-"गुड एन्ड परफेक्ट ।" वह बोला-"यह बात मेरी थ्यौरी पर भी पूरी तरह फिट बैठती है । बवेजा को तीन-चार दिन तक टॉर्चर किया जाता रहा था। इस ढग से कि उसके शरीर पर ऐसा कोई जख्म न आए, जिसे भरने में ज्यादा वक्त लगे और जख्म का निशान बाकी रह जाए, लेकिन टॉर्चर करने की प्रक्रिया में बवेजा के दाएं हाथ को बिल्कुल अलग रखा गया। यानी यातनाएं देने वाले ने उसके दाएं हाथ को जान-बूझ कर कोई नुकसान नहीं पहुंचाया।" उसने डॉक्टर से पूछा-"ठीक है ?"

-"हां ।" डॉक्टर ने कहा-"इस सिलसिले में मृतक के हाथ-पैर बांधे जाने के बारे में भी में कुछ कहना चाहता हूं। उसे चमडे की पेटियों से बांधा जाना तो, एक मामूली बात थी,लेकिन चमड़ की पेटियों में मेमने की ऊन की पैडिंग लगाना निहायत गैर-मामूली बात है। इससे मुझे एक बार फिर कहना पड़ता है यह आम आदमी का नहीं बल्कि किसी पागल डॉक्टर का काम था । तुम बताओ बलराज, आखिर इसकी क्या तुक थी ? मृतक को टॉर्चर तो खूब किया गया, लेकिन टॉर्चर करने वाला नहीं चाहता था बंधनों से मृतक को कोई कष्ट हो। क्या यह अजीब नहीं लगता ? या तुम समझते हो टॉर्चर करने वाला कोई ऐसा सैडिस्ट था जो मृतक को टॉर्चर के अलावा अन्य किसी तरीके से पीड़ा नहीं पहुंचने देना चाहता था या फिर तुम इसे महज इत्तफाक समझते हो ?

बलराज के चेहरे पर विचारपूर्ण भाव थे।

-"नहीं।" वह बोला-"मैं समझता हूं यह सारा सिलसिला वैल प्लान्ड था, लेकिन प्लान में कोई ऐसी गड़बड़ हो गई थी,जिसकी वजह से बवेजा की इतनी जल्दी हत्या कर दी गई। जबकि मूल योजना में उसे तब तक जिन्दा रखना शामिल रहा होगा जब तक कि टॉर्चर के बाद उसके ज़ख्म मुकम्मल तौर पर ठीक नहीं हो जाते। पूरी तरह जख्म भरने से पहले उसकी हत्या नहीं की जानी थी। नतीजा यह होता जब उसकी लाश बरामद होती तो, लाश पर ऐसा कोई भी चिन्ह नहीं मिलता, जिसकी वजह से सोचा जाता उसे टॉर्चर किया गया था।"

-"गलत ।" डॉक्टर ने ठोस स्वर में प्रतिवाद किया-"तुम्हारी थ्यौरी तथ्यों से मेल नहीं खाती।"

-"क्यों ? कैसे नहीं मेल खाती ?" बलराज ने कहा "सीधी-सी बात है। टॉर्चर करने वाला जब ठीक समझे अपने शिकार को टॉर्चर करना बन्द कर सकता है, लेकिन टॉर्चर के शिकार के जिस्म पर आए टॉर्चर के निशानों को आसानी से या एक ही दिन में नहीं मिटाया जा सकता। बवेजा ने अपने जख्म भरने तक जिन्दा रहना था और उस दौरान उसे उसके फ्लैट में ही रखा जाना था। पूरी तरह जख्म भरने के बाद उसकी हत्या कर दी जानी थी, फिर जब उसकी लाश बरामद होती तो, हम यह नहीं जान सकते थे उसे टॉर्चर किया गया था। उस सूरत में अगर हमें लाश पर ऐसे चिन्ह मिलते जिनसे जाहिर होता मरने से पहले हफ्तों तक बवेजा को हाथ-पैर बांधकर रखा गया था तो हत्यारे का टॉर्चर के निशानों को छुपाने का मकसद पूरा नहीं होना था। इसीलिए चमड़े को पेटियों पर मेमने की ऊन की पेडिंग दी गई थी ताकि बवेजा को बांधकर रखे जाने का कोई चिन्ह न मिल सके क्योंकि पैडिंग न होने की दशा में कसकर बंधी चमड़े की पेटियों ने कलाइयों और टखनों पर भी निश्चित रूप से जख्म कर देने थे और उन जख्मों को भरने का वक्त बिल्कुल नहीं मिलना था,क्योंकि बवेजा के जिस्म पर टॉर्चर द्वारा आए जख्मों के भरने के इन्तजार के दौरान भी उसे बांधकर ही रखा जाना था ।"

-"इसीलिए तो मैं कहता हूं तुम्हारी थ्यौरी तथ्यों से मेल नहीं खाती।" डॉक्टर ने पुनः प्रतिवाद किया-"मृतक के जख्म भरने के इन्तजार के दौरान उसे बांधकर रखना जितना जरूरी था उतना ही जरूरी था-उसका मुंह बन्द रखना। यानी उसके मुंह पर टेप चिपकाकर रखना और जिस तरह उसे बांधे रखने के निशानों को नहीं मिटाया जा सकता था, उसी तरह उसके मुंह पर बार-बार टेप चिपकाने और उतारने के निशानों को भी पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता था। अब सवाल यह उठता है जब उसके मुंह पर टेप चिपकाकर मुंह बन्द रखने के निशान हर हालत में पाए ही जाने थे तो बांधकर रखने के निशानों को इस तरह छुपाने की कोशिश क्या की गई?"

-"तुम्हारा सवाल जोरदार है डॉक्टर।" बलराज बोला-"इसके जवाब से कम-से कम तुम्हारा यह विचार तो गलत हो ही जाता है कि हत्यारा कोई पागल डॉक्टर था।"

-"चलो मान लेता हूं यह किसी बेहद तजुर्बेकार पेशेवर अपराधी का काम था ।"

बलराज मुस्कराया।

-मेरे कहने भर से क्यों मानते हो ?" वह बोला-"तथ्यों पर गौर करो, अगर हत्यारा कोई डॉक्टर होता तो, तुम्हारी तरह उसे भी इस बात की जानकारी जरूर होनी थी कि टेप

के निशानों को पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता, लेकिन हालात से जाहिर है उसे इस बात की जानकारी नहीं थी। इसका मतलब हत्यारा एक आम आदमी था।''

मैं बलराज की इस बात से सहमत नहीं था और इस दफा चुप नहीं रह सका।

-''मैं एक आम आदमी हूं।'' मैंने कहा-''यह ठीक है लेखक होने के नाते मेरा सामान्य ज्ञान कुछ ज्यादा हो सकता है, लेकिन मैडिकल साइंस की ज्यादा जानकारी मुझे नहीं है। मैं मामूली कट्स के लिए 'बैंड एड' इस्तेमाल करता रहता हूं, इसलिए जानता हूं एडहेसिव टेप चमड़ी पर निशान छोड़ देता है। मेरे कहने का मतलब है टेप का चमड़ी पर निशान छोड़ना एक ऐसी बात है जिसकी जानकारी अधिकांश साधारण लोगों को होती है।''

-''तुम्हारी बात काफी हद तक ठीक है, भारती ।'' बलराज ने सहमति जताते हुए कहा-''तुम बैंड एड इस्तेमाल करते रहे हो तो तुमने यह भी किया होगा। बैंड एड लगाकर अपनी जरूरत के मुताबिक दो-चार दिन बाद जब तुमने उसे उतारा होगा तो एकदम से ही उतार फेंका होगा। तुम ही नहीं आमतौर से लोग यही किया करते हैं, लेकिन हत्यारे ने साधारण व्यक्ति होते हुए भी हर काम को एक अलग और खास ढंग से अंजाम दिया है।''

-''मानना पड़ेगा हत्यारा बड़ा ही प्रोफेशनल था।'' डॉक्टर ने कहा- ''उसने टेप के चिन्ह मिटाने के लिए बेंजीन का प्रयोग किया था और अपनी ओर से पूरी कोशिश की थी कि कोई चिन्ह बाकी न रहने पाए, लेकिन उससे चूक हो ही गई,चिन्ह छूट गए और वे मेरी निगाहों में छुपे नहीं रह सके।''

सहसा बिजली की भांति मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा।

-''उससे एक और भी चूक हो गई थी।'' मैं बोला-''बवेजा के दोनों नथुनों पर भी चिन्ह छूट गए थे। बलराज ने उन्हें देखा था और मुझे भी दिखाया था।

डॉक्टर ने मुझे घूरा।

-''टेप के चिन्ह ।''

-''किसी ऐसे चिपचिपे पदार्थ के चिन्ह, जो बाद में सूख जाता है ।'' मैंने कहा-''बलराज के अनुमानानुसार वो पदार्थ वार्निश होना चाहिए, लेकिन वो टेप का गम भी हो सकता है।''

डॉक्टर ने सर हिलोकर इन्कार कर दिया।

- ''नहीं हो सकता।'' वह बोला-''लाश के साथ भेजे गये बलराज के नोट के मुताबिक मैंने नथुनों पर खास ध्यान दिया था और फिर इस पदार्थ को नथुनों से छुड़ाकर लेबोरेटरी भिजवा दिया। मैं यकीनी तौर पर कह सकता हूं वो टेपं गम नहीं था, अगर उस

पदार्थ में टेप गम होने का मामूली-सा भी चिन्ह मिल जाता तो, एक बड़ी भारी समस्या हल हो जानी थी।"

-"क्या मतलब ?" मेंने जानना चाहा।

डॉक्टर मुस्कराया।

-"लाश के पोस्टमार्टम से साफ जाहिर है बवेजा की मृत्यु सफोकेशन यानी दम घुटने के कारण हुई थी, अगर नथुनों पर टेप गम का चिन्ह मिल जाता तो, पता लग जाना था उसका दम कैसे घुटा था।"

इस रहस्योद्घाटन से मैं उछल पड़ा।

-"दम घुटने की वजह से ?" मैंने पूछा -"यानी उसे गला घोंटकर मारा गया था ?"

डॉक्टर ने भौहें चढ़ाई।

-"गला घोंटने की बात बीच में कहां से आ गई ? मैंने कहा है उसकी मौत दम घुटने की वजह से हुई थी।"

-"मुंह एडहेसिव टेप से सील कर दिया गया था।" बलराज विचारपूर्वक बोला- "नथुनों पर लगा वो सूखा पदार्थ क्या था, डॉक्टर ?"

-"सबसे अच्छी क्वालिटी की एकदम साफ और वाटर-प्रूफ वार्निश।"

जब मैंने नथुनों पर टेप के निशान होने वाली बात कही थी तो मुझे यूं लगा था मैंने बहुत बड़ा तीर मारा था लेकिन हकीकतन वो मामूली तुक्का भी साबित नहीं हुआ।

वार्निश के बारे में भी मेरे मन में जो विचार था उसे मैंने प्रगट कर देना ही बेहतर समझा।

-"बवेजा के पलंग के पायों और फर्श पर पेचों के जो गोल सूराख थे उनमें वुड फिलर भरने के बाद उन्हें पालिश कर दिया गया था।" मैं बलराज से मुखातिब हुआ-"क्या यह नहीं हो सकता पालिश करने के बाद उन पर ऊपर से इस वार्निश का भी एक कोट कर दिया गया था ?" उसे गौर से सुनता पाकर मैं उत्साहित स्वर में बोला- "मुमकिन है वार्निश का कोट करने के बाद फौरन उसी व्यक्ति ने ही बवेजा के मुंह से टेप भी अलग किया था। उसके हाथ वार्निश से सने थे और टेप उतारते वक्त उसका एक हाथ नथुनों से छू गया था। इस तरह हाथों में लगी वार्निश नथुनों पर भी जा लगी।"

डॉक्टर ने दिलचस्पी भरी निगाहों से मेरी ओर देखा।

बलराज के चेहरे पर जो विचारपूर्ण भाव थे,उनसे साफ जाहिर था वह भी मेरे इस विचार से सहमत था।

मैं समझ गया इस दफा मेरी बात तुक्का नहीं ठीक साबित हुई थी।

-"यू आर राइट, बॉस।" बलराज बोला-"मैं बवेजा के पलंग और फर्श से सैम्पल लेबोरेटरी भिजवा दूंगा। वहां पता लग जाएगा दोनों वार्निश एक ही हैं या अलंग-अलग।" फिर उसने डॉक्टर की ओर देखा-"बवेजा की मृत्यु दम घुटने से हुई थी तो दम घुटने की वजह क्या रही होनी चाहिए ?"

-"इस काम के लिए न तो किसी प्रकार का हिंसक तरीका इस्तेमाल किया गया था और न ही कोई जहरीली चीज।" डॉक्टर ने जवाब दिया-"यह काम बड़े आराम के साथ मैकेनिकल ढंग से किया गया था। उसका मुंह टेप से सील्ड था। बस उसके दोनों नथुने धीरे से दबा दिए गए और उन्हें तब तक दबाकर रखा गया जब तक कि उसने दम नहीं तोड़ दिया।"

- "ऐसा भी तो हो सकता है जिस टेप से उसका मुंह सील किया गया था किसी लापरवाही की वजह से वो टेप सिर्फ मुंह तक ही सीमित नहीं रहा। मुंह के साथ-साथ उसने मृतक के नथुने भी ढंक लिए थे।" बलराज ने कहा, फिर यूं बोला मानो स्वयं से कह रहा था -"यह नहीं हुआ हो सकता क्योंकि नथुनों पर टेप लगाए जाने का कोई चिन्ह नहीं मिला।" फिर वह मुस्कराया- "इस सिलसिले में अब तक जो तस्वीर मेरे दिमाग में बनी है, उसमें तुम्हारा बताया 'मर्डर मैथडे' काफी हद तक फिट बैठता है। इसमें सिर्फ एक ही खराबी है। मर्डर प्लान के मुताबिक न किया जाकर सही वक्त से पहले और थोड़ा जल्दबाजी में किया गया था।"

-"यू मीन प्रीमेच्योर मर्डर ?" डॉक्टर ने पूछा।

-"नहीं।" बलराज ने जवाब दिया-"इस बात को इस आधार पर एक्सप्लेन किया जा सकता है कि योजना जब एक खास मुकाम पर पहुंची तो अचानक उसमें कोई विघ्न पैदा हो गया था, लेकिन मेरा मतलब है मर्डर की टाइम सीक्वेंसेज ही गलत है और इसे एक्सप्लेन करना निहायत मुश्किल है।"

-"मुझे तो यह सारा सिलसिला महज एक पेचीदी पहेली ही नजर आ रहा है ।" मैंने अपनी कनपटी सहलाते हुए कहा-"ऐसा लगता है मैं विचारों और तथ्यों की भूलभुलैया में फंसकर रह गया हूं, जिससे निकलने की कोई राह नहीं सूझ रही है।"

बलराज हंसा।

-"तुम लेखक हो,भारती । तुम्हें कल्पना-लोक में ही विचरना पसन्द है।"

-"अगर मैं सामाजिक उपन्यास लिखता होता तो, तुम्हारी यह बात मुझ पर लागू हो सकती थी।" मैंने कहा-"लेकिन मैं जासूसी उपन्यास लिखता हूं और जासूसी उपन्यास कल्पना के सहारे नहीं लिखे जाते, माई डियर इन्सपेक्टर। जासूसी उपन्यास लिखने वाले को उपन्यास लिखते वक्त किसी जासूस जैसा ही सजग रहना पड़ता है। प्रत्येक पात्र का चरित्र-चित्रण बड़े नपे-तुले ढंग से किया जाता है। हकीकत की बुनियाद पर कथानक की इमारत खड़ी की जाती है, जिसमें कानूनी दाव-पेंच,अपराधियों की चालें और चौकसी, और पलिस कार्य-प्रणाली को ध्यान में रखते हुए हर घटना का बारीकी से जिक्र करना होता है । घटनाक्रम पर हर पहलू से बराबर पूरी निगाह रखी जाती है। आसानी से पच जाने वाला सस्पेंस पैदा कराना होता है। असलियत के दायरे में रहकर ही चौंकाने वाला क्लाइमेक्स देना होता है। इसके अलावा भाषा और शैली के दम पर रवानगी बनाए रखनी पड़ती है । हर पल पाठकों की रुचि का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। इतने पापड़ पीटने के बाद लिखा जाता है जासूसी उपन्यास।"

-"मैं जानता हूं।" बलराज ने प्रशंसापूर्ण स्वर में कहा-"तुम्हारे उपन्यासों में वे तमाम खूबियां होती हैं, जिनकी अच्छे स्तर के बढ़िया और सही मायनों में जासूसी उपन्यास में होने की अपेक्षा की जा सकती है।"

-"तारीफ के लिए शुक्रिया।"

-"मैं तुम्हारी इस बात से भी सहमत हूं बवेजा की हत्या का मामला सचमुच एक पेचीदा पहेली है, लेकिन इस पहेली को हमने ही हल करना है। फिलहाल हमें दूसरे एवीडेंसेज का इन्तजार करना पड़ेगा। तभी किसी ठोस नतीजे पर पहुंच पाएंगे।"

-"ठोस नतीजा जब निकलेगा निकलता रहेगा।" मैंने कहा -"इस वक्त तुम यह बताओ मर्डरके टाइम सीक्वेंसेज से तुम्हारा क्या आशय है ?"

-"मेरा मतलब है बवेजा की मर्डर प्लान तीन हिस्सों में बंटी हुई थी। उसे कैद करना, टॉर्चर करना और उसका मर्डर कर देना।" बलराज ने जवाब दिया-"जाहिर है बवेजा को काफी पहले उसी के फ्लैट में कैद कर लिया गया। कैद किए जाने के बाद वह अपने फ्लैट से कभी बाहर नहीं निकला। उस पर वहीं हमला करके उसे बेहोश किया गया, फिर उसके हाथ-पैर बांध दिए गए और उसे टॉर्चर किया जाने लगा। यह सब एक योजना के तहत और पूरी तैयारियों के साथ किया गया था। जिस वक्त बवेजा को बेहोश किया गया मुंह पर लगाने को टेप, उसे बांधने के लिए चमड़े की पेटियां, पेटियों में पैडिंग के लिए मेमने की ऊन, पलंग को फर्श के साथ कसने के लिए लोहे के ब्रेकेट और पेंच, वगैरा सब-कुछ वहीं मौजूद था।"

-"और बवेजा को बेहोश करने से लेकर पलंग को फर्श के साथ कसने के बाद उसे पलंग पर डालकर बांधने तक के सारे काम बिना किसी आहट के चुपचाप हो गए थे ?" मैंने पूछा।

-"हां, क्योंकि यह सब दिन में उस वक्त किया गया था जब इमारत में कोई नहीं रहता, यानी इमारत एक प्रकार से खाली हो जाती है।" बलराज ने कहा-"उस इमारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति सुबह नौ बजे के आस-पास अपने काम पर चला जाता है । दस बजे विमला सफाई वगैरा करने आती है और अपना काम खत्म करके दो बजे तक इमारत से चली जाती है। उसके जाने के बाद वो इमारत शाम करीब छह बजे तक खाली रहती है। इसका मतलब यह हुआ छुट्टी वाले दिन को छोड़कर सप्ताह के शेष दिनों में वो इमारत एक घंटे के लिए सुबह और चार घंटों के लिए दोपहर बाद से शाम तक प्रायः खाली रहती है। उस वक्त अगर किसी फ्लैट में आहटें और आवाजें होती भी हैं तो कोई फर्क नहीं पडता, क्योंकि उन्हें सुनने के लिए इमारत में कोई मौजूद नहीं होता। तुम समझ रहे हो न ?" उसने पूछा और जब मैंने सहमतिसूचक सर हिला दिया तो वह बोला-"मैं समझता हूं दोपहर बाद ही किसी वक्त बवेजा के मुंह से टेप उतारकर उसे खिलाया-पिलाया जाता रहा होगा। उस वक्त वह चीखता भी था तो,उसकी चीखें सुनने वाला वहां कोई नहीं होता था। शेष सारा समय उसका मुंह टेप से सील रहता था, इसलिए चीखने का सवाल ही पैदा नहीं होता। अपने फ्लैट की ओर दूसरों का ध्यान आकर्षित करने के लिए वह पलंग द्वारा भी फर्श पर किसी प्रकार की खटपट नहीं कर सकता था, क्योकि पलग फर्श के साथ मजबूती से कस दिया गया था।"

मुझे याद था जब मैं और बलराज बवेजा के एकदम नीचे वाले फ़्लैट में मालती और सुधीर से बात कर रहे थे तो बवेजा के फ्लैट में फिंगर प्रिंट्स वालों, अश्विनी शर्मा वगैरा के चलने-फिरने की आहटें साफ सुनाई देती रही थीं।

-"बवेजा को टॉर्चर करते वक्त उसके फ्लैट में और भी तो एक या दो व्यक्ति मौजूद रहते होंगे ?" मैंने पूछा- "उनके चलने-फिरने की आहटें भी होती होंगी, जिन्हें और कोई सुने न सुने निचले फ्लोर पर रहने वाली मालती आसानी से सुन सकती थी। फिर उसे वे आहट क्यों नहीं सुनाई दी ?"

बलराज ने इस ढंग से मेरी ओर देखा मानो मैने कोई बचकाना बात कह दी थी।

-"बवेजा के पास मौजूद रहने वाले जरूर जानते होंगे कि उनके चलने-फिरने की आहटें नीचे सुनी जा सकती थीं, इसलिए उन्होंने पूरी सावधानी बरती होगी। मिसाल के तौर पर वे जूते उतारकर दबे पांव चलते होंगे ताकि आहट बिल्कुल न हो।" बलराज ने कहा, फिर तनिक रुकने के बाद बोला- "वे लोग क्योंकि ऐसा जाहिर करना चाहते थे बवेजा अपने

फ्लैट में मौजूद नहीं था। कहीं बाहर गया हुआ था। इसलिए शाम को अन्धेरा होने के बाद लाइट आँन करने से पहले खिड़कियों पर काला कपड़ा मजबूती से लगा देते थे ताकि अन्दर की रोशनी बाहर से दिखाई न दे।" उसने मेरी ओर देखा-"अब मैं जो कहने वाला हूं उसे ध्यान से सुनना ।" वह पलभर चुप रहा, फिर बोला-"हम जानते हैं बवेजा को बाकायदा योजनाबद्ध तरीके से कैद करके टॉर्चर किया गया था। उसी योजना के तहत उसे उस वक्त तक जिन्दा रखा जाना था जब तक कि उसके शरीर से टॉर्चर किए जाने के तमाम निशान गायब नहीं हो जाने थे। इस बात का सबसे बड़ा सबूत है मेमने की ऊन की पैडिंग का चमड़े की पेटियों में मौजूद पाया जाना । हम यह भी जानते हैं योजना के विपरीत उसे उसके जख्म भरने से पहले ही मार डाला गया था। अब सवाल यह पैदा होता हे कि उसे वक्त से पहले ही क्यों मार डाला गया ? उसकी हत्या मर्डर प्लान के मुताबिक क्यों नहीं की गई ?"

"सीधी-सी बात है।" मैंने मत व्यक्त किया- "मूल योजना में कोई ऐसा विघ्न पैदा हो गया था, जिसने हत्यारे को अपना प्लान बदलने पर मजबूर कर दिया था या वह किसी वजह से घबरा गया था और वार्निश से सने अपने हाथों को साफ किए बगैर उसे जल्दबाजी में बवेजा की हत्या करनी पड़ी।"

बलराज ने सर हिलाकर इन्कार कर दिया।

-"यह बात समझ में नहीं आती।" वह बोला-"अगर इसे मानकर चला जाए तो, सारा घटनाक्रम ही उलट जाता है। मैं नहीं मानता हत्या घबराहट या जल्दबाजी में की गई थी। हत्यारे की योजना की जो रूपरेखा. मेरे दिमाग में है उसमें वार्निश के दाग ने यकीनन बड़ी भारी पेचीदगी पैदा कर दी है।" वह उठकर कमरे में चहलकदमी करने लगा। कुछ देर खामोश रहने के बाद बोला, "मैं यकीनी तौर पर कह सकता हूं हत्यार ने मूल योजना में जान-बूझकर हेर-फेर किया था, और जान-बूझकर तब्दीली करने का मतलब है उसके पास किसी दूसरी ऐसी योजना का होना जो मूल योजना जैसी ही फूल प्रूफ होती। मगर तथ्य इस बात को गलत साबित करते हैं। तथ्यों ने उसकी योजना की पोल खोल दी है, जबकि हकीकत में ऐसा नहीं होना चाहिए था।"

मैंने असमंजसतापूर्वक उसकी ओर देखा।

-"मैं समझ नहीं पा रहा हूं तुम क्या कहना चाहते हो ?"

बलराज मेरे सामने आ रुका।

-"यह समझने के लिए तुम्हें इस सारे सिलसिले पर हत्यारे के नजरिए से गोर करना होगा।" वह बोला- उसकी मूल योजना क्या थी ? उसने बवेजा को कैद करके टॉर्चर करना था। उसे तब तक जिन्दा रखना था जब तक कि उसके शरीर से टॉर्चर किए जाने के तमाम

चिन्ह नहीं मिट जाते । फिर इस ढंग से हत्या करनी थी कि उसकी हत्या ज्यादा से ज्यादा साधारण दुर्घटना ही नजर आती।" उसने गहरी सांस ली-"मसलन नाक में रबर ट्यूब डालकर उसके पेट में ढेर सारी शराब पहुंचा दी जाती, फिर उसका दम घोंट दिया जाता। जब वह मर चुका होता तो उसे बन्धन-मुक्त कर दिया जाता, पलंग को फर्श से अलग करके वे तमाम सबूत मिटा दिए जाते जिनसे जाहिर होता कि फ्लैट में बवेजा के अलावा कोई और भी मौजूद रहा था। लाश को बिस्तर पर औंधा करके इस ढंग से डाल दिया जाता उसका चेहरा तकिए में गड़ा रहे फिर जब उसकी लाश बरामद होती हत्या का संदेह नहीं किया जा सकता था। बवेजा की मौत को दुर्घटना समझा जाता । यानी वह बेहद शराब पिए हुए था। नशे की झोंक में बिस्तर पर औंधा गिर गया था। तकिए में मुंह गड़ा होने की वजह से वह मुंह और नाक दोनों से ही सांस नहीं ले सका और दम घुटने के कारण मर गया। मेरे विचार से यह थी हत्यारे की मर्डर प्लान।"

-"लेकिन उस सूरत में भी मृतक के मुंह पर टेप चिपकाए जाने के निशान तो मुझे मिलने ही थे।" डॉक्टर ने दलील पेश की-"क्या उससे शक नहीं हो जाना था उसकी मौत दुर्घटना नहीं थी ?"

"जरूर होना था।" बलराज ने कहा-"लेकिन हम योजना पर हत्यारे के नजरिए से गौर कर रहे हैं। उसके विचार से उसका यह प्लान एकदम फूलप्रूफ था।" उसने मेरी ओर देखा-"मैं तुम्हारी इस बात से तो सहमत हूं अचानक किसी भारी विघ्न की वजह से उसे अपनी मूल योजना छोड़ देनी पड़ी, लेकिन यह बात समझ में नहीं आती उसने किस वजह से घबराकर जल्दबाजी में अपनी योजना बदल डाली थी, क्योंकि तमाम तथ्य इस बात की ओर संकेत करते हैं हत्यारा अपने काम में माहिर और पेशेवर था। वह घबरा जाने वाला व्यक्ति नहीं था और घबराहट में जल्दबाजी में कोई काम करने वाला तो हरगिज नहीं था।" मैं प्रतिवाद करना चाहता था, लेकिन उसने हाथ उठाकर रोक दिया-"यह ठीक है बवेजा की वक्त से पहले कर दी गई हत्या के कारण हत्यारे की मूल योजना पिटकर रह गई थी, लेकिन हत्या के बाद के बाकी सारे काम उसने उसी योजना के मुताबिक किए। मसलन फ्लैट की मुकम्मल सफाई, पलंग का फर्श से अलग किया जाना पलंग के पायों में पेचों द्वारा उत्पन्न छेदों को वुड फिलर से भरना और उन पर पालिश करना और मुंह से टेप उतारने के बाद बैंजीन से टेप चिपकाए जाने के सबूत मिटा देना। इन तमाम बातों से जाहिर है वह न तो घबराया था और न ही जल्दबाजी में था। अलबत्ता इसे उसकी दूसरी योजना का नाम दिया जा सकता है।"

-"इस नई योजना के पीछे उसका मकसद क्या रहा होगा ?"

मैंने जानना चाहा।

-"हमें गुमराह करना ।"

-"कैसे ?"

-"लाश बरामद होने पर उसकी हालत से साफ जाहिर हो जाना था उसकी पिटाई की गई थी। बाएं हाथ की हालत से यह भी स्पष्ट हो जाना था उसे बतनाएं दी गई थीं, क्योंकि इन दोनों बातों के चिन्ह मिटाना नामुमकिन था, लेकिन ऐसा कोई ठोस सबूत नहीं मिला था बवेजा को उसी के फ्लैट में दो हफ्ते तक कैद करके रखा गया था।"

-"लेकिन जब बवेजा की लाश बरामद हुई तो, उसके हाथ-पैर बंधे हुए थे और वह चमड़े की ही पेटी द्वारा पलंग के साथ भी बंधा हुआ था।" मैंने दलील पेश करते हुए कहा-"यह इस बात का साफ सबूत है उसे कैद करके रखा गया था। दूसरे अगर हत्यारा आतंकित नहीं था तो उसने बवेजा की लाश को बंधनमुक्त क्यों नहीं कर दिया ? जबकि दूसरे कामों की तरह वह इसे भी आसानी से कर सकता था।"

-"हालांकि नई योजना के तहत लाश को बंधनमुक्त करके बवेजा को कैद किए जाने का सबूत मिटाना जरूरी था, लेकिन ऐसा न किए जाने की बड़ी वजह यह हो सकती है। बवेजा की मौत के बहुत ज्यादा देर बाद योजना बनाने वालों को पता चला होगा वह मर चुका था। इस बीच लाश ठण्डी होकर अकड़ चुकी होगी। उस हालत में लाश को बंधनमुक्त करने का इकलौता तरीका यह था कि चमड़े की उन पेटियों को काटकर फेंक दिया जाता, लेकिन ऐसा करने का कोई फायदा नहीं होना था, क्योंकि अकड़ी हुई लाश ने उसी स्थिति में रहना था जिसमें कि उसे बांधा हुआ था। दूसरे चमड़े की पेटियों के कसाव के निशान लाश पर से मिटाए नहीं जा सकते थे वे उसकी कलाइयों और टखनों पर मौजूद ही पाए जाने थे और लाश, की हालत और कसाव के उन निशानों से साफ पता चल जाना था बवेजा को बांधकर रखा गया था। इसलिए मजबूरन लाश को उसी अवस्था में छोड़ देना पड़ा।"

मैं अभी भी भली प्रकार नहीं समझ पाया वह क्या कहना चाहता था।

-"तुम्हारा मतलब है।" मैंने पूछा-"बवेजा की हत्या के बाद नई योजना बनाने और उसे अमली जामा पहनाने की कोशिश में इतना ज्यादा वक्त लगा कि वह उसे पूरी तरह अमल में नहीं ला सका। यानी तब तक लाश बुरी तरह अकड़ चुकी थी।"

बलराज के होठों पर रहस्यपूर्ण मुस्कान तैर गई।

-"नहीं।" वह बोला-"मेरा मतलब है इस बखेड़े में कम से कम दो आदमी इनवाल्व हैं। एक योजना बनाने वाला और दूसरा हत्यारा । योजना बनाने वाले को बहुत देर बाद पता

चला हत्यारा बवेजा की हत्या कर चुका था और जब उसे पता चला तब तक बवेजा की लाश ठन्डी होकर अकड़ चुकी थी। इसलिए उसे लाश उसी तरह छोड़ देनी पड़ी।"

इस बात ने मुझे और डॉक्टर मुलगांवकर दोनों को पूरी तरह सन्तुष्ट कर दिया । हम दोनों चाहकर भी इसमें कोई खामी नहीं निकाल सके।

लेकिन खुद बलराज सन्तुष्ट नहीं था। वह अभी भी किसी भारी उलझन में फंसा नजर आ रहा था।

-"तुम अपनी थ्यौरी में तमाम एंगिल्स कवर कर चुके हो।" डॉक्टर ने आखिर टोक ही दिया-"फिर अब तुम्हें कौन-सी फिक्र खाए जा रही है ?"

-"बवेजा के नथुनों पर मौजूद पाई गई वार्निश ।" बलराज ने जवाब दिया-"उसकी मौजूदगी ने बड़ी भारी पेचीदगी पैदा कर दी। उसका कोई मुनासिब जवाब मुझे नहीं सूझ रहा है।"

-"तुम्हें, जो पेचीदगी परेशान कर रही है उसे खुलासा तौर पर बताओ।" डॉक्टर ने कहा।

-"इसमें कोई शक नहीं है वार्निश हत्यारे की उंगलियों से ही बवेजा के नथुनों पर लगी थी और हत्यारे की उंगलियों पर वो वार्निश तब लगी थी जब उसने पलंग को फर्श से अलग करने के बाद पायों के सुराखों में वुड फिलर भरके उस पर पालिश की थी। ठीक है ?"

डॉक्टर ने और मैंने तुरन्त सर हिलाकर सहमति दे दी।

-"इसका मतलब है।" बलराज ने कहा-"जब पलंग को फर्श से अलग किया गया और पायों के सुराखों को भरके उन पर पालिश की गई उस वक्त तक बवेजा जिन्दा था। अब सवाल यह है बवेजा के जिन्दा रहते हत्यारे ने ऐसा क्यों किया ? यह बात उसकी योजना से जरा भी मेल नहीं खाती । उसने पंलग को फर्श से अलग करने वगैरा के काम बवेजा की मौत के बाद करने थे।"

-"सुनो, हम यह मानकर चल रहे हैं जब हत्यारे ने बवेजा के नथुनों पर उंगलियां रखकर उसका दम घोंटा उस वक्त हत्यारे की उंगलियां वार्निश से सनी थीं, लेकिन यह जरूरी तो नहीं कि हकीकत में भी ऐसा ही हुआ होगा।" मैंने मत व्यक्त किया-"मुमकिन है, बवेजा की हत्या करते वक्त उसके हाथ साफ थे और हत्या के बाद जब हत्यारे या उसके साथी ने, जिसे तुमने योजना बनाने वाला कहा है,पलंग को फर्श से अलग करके सुराखों को भरकर पायों पर पालिश की तो, उसकी उंगलियों पर वार्निश लग गई, फिर उसने जब

बवेजा के मुंह पर चिपका टेप छुड़ाया तो, उसकी वार्निश सनी उंगलियां असावधानीवश बवेजा के नथुनों से छू गई और इस तरह वार्निश उसके नथुनों पर लग गई।"

-"यह नहीं हुआ हो सकता।" बलराज ने प्रतिवाद किया-"क्योंकि टेप को एकदम से उतारने की बजाय बड़ी अहतियात के साथ बैंजीन की सहायता से छुडाया गया था।" वह डॉक्टर से मुखातिब हुआ-"तुमने बताया है वार्निश वाटरप्रूफ थी। क्या वो बैंजीनप्रूफ भी हो सकती है ?"

-"सूख जाने के बाद हो सकती है।" डॉक्टर ने कहा-"वैसे इसका सही जवाब तो लेबोरेटरी वाले ही दे सकते हैं। अलबत्ता मैं भारती को पूरी तरह सन्तुष्ट कर सकता हूं मृतक के नथुनों पर जो, वार्निश पाई गई है वो उसके मरने के बाद नहीं बल्कि उसके दम घुटने के दौरान लगी थी।"

डॉक्टर ने बाकायदा डिमोस्ट्रेशन दिया।

उसने अपने हाथ से मेरा मुंह दबा लिया.फिर मुझसे कहा कि मैं अपने अंगूठे और पहली उंगली के सिरों से अपनी नाक के नथुनों के सूराख बन्द कर लूं। ज्योहि मैंने ऐसा किया सांस रुकने की वजह से मेरा दम घुटने लगा। मैंने अपनी नाक में मौजूद हवा को फेफड़ों में खींचा तो, मेरे नथुने स्वंयमेव अन्दर की ओर पिचक गए।

डॉक्टर ने मेरे मुंह से अपना हटा लिया ।

-"क्या समझे ?" उसने पूछा।

मैं समझा नहीं वह क्या समझाना चाहता था।

-"कुछ नहीं।" मैं गहरी सांस लेने के बाद बोला।

-"मुह भीचने के बाद नाक बन्द होते ही जिस तरह तुम्हारा दम घुटने लगा था वही हाल नाक बन्द करने के बाद मृतक का हुआ था, तुम्हारी तरह उसने भी नाक में मौजूद हवा को फेफड़ों में खींचना चाहा था। उस प्रक्रिया के दौरान वार्निश का कुछ अंश भी खिचकर उसकी नाक में पहुंच गया था। तुम दोनों ने सिर्फ मृतक के नथुनों के बाहरी सिरों पर ही वार्निश के दाग देखे थे. लेकिन मैंने अपनी जांच के दौरान पाया कि उसकी नाक के अन्दर भी वार्निश मौजूद थी।" डॉक्टर ने कहा, मुस्कराया और फिर नाटकीय स्वर में बोला-"और बताने की जरूरत नहीं, मुर्दे सांस नहीं लिया करते।"

मेरे अनुमान की धज्जियां उड़ गई।

साबित हो गया बवेजा के नथुनों पर वार्निश के दाग उसका दम घोंटने के दौरान ही लगे थे।

लेकिन बलराज की समस्या ज्यों की त्यों ही रही।

बवेजा की हत्या करने से पहले हत्यारे की उंगलियों में वार्निश कैसे लगी ?"

अन्त में बलराज ने कहा अन्य एवीडेंसेज मिलने के बाद ही इस सवाल का सही जवाब मिल सकेगा।

बलराज ने डॉक्टर का शुक्रिया अदा करने के बाद उससे विदा ली।

बलराज और मैं पुलिस हैडक्वार्टर्स पहुंचे।

एस. आई. अश्विनी शर्मा तब तक भी घटनास्थल से नहीं लौटा था।

बलराज ने अपने अन्य मातहतों को विभिन्न निर्देश दे दिए, जिनमें मृतक बवेजा सहित नीरा मलकानी, राकेश मोहन, विनोद, मालती वर्मा, सुधीर चौधरी वगैरा के बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी हासिल करना भी शामिल था।

सुबह तक कोई नतीजा निकलेगा। यह उम्मीद मन में संजोए हम अपने-अपने घर चले गए।

***

अगली सुबह.... ।

बलराज ने दूसरे एंगिलों से इस केस की इंक्वायरी की।

सबसे पहले हमने ठीक दस बजे विमला को जा घेरा। वह अपने घर से आने के बाद इमारत में दाखिल होने ही वाली थी -बलराज ने उसे रोक लिया।

बलराज ने मुझे पहले ही बता दिया था कि वह विमला से उसके सफाई करने के तरीकों के बारे में पूछताछ करना चाहता था। जब मैंने उससे पूछा इस तरह वह किस नतीजे पर पहुंचने की उम्मीद रखता था तो उसने अपना घिसा-पिटा जवाब दोहरा दिया था-"लैट दी टाइम कम,बॉस। यू विल नो इट यूअरसेल्फ।"

हम विमला सहित पास ही खड़ी पुलिस जीप के पिछले हिस्से में जा बैठे।

-"फ्लैटों में सफाई के लिए तुम क्या-क्या चीजें इस्तेमाल करती हो ?" बलराज ने सीधा सवाल किया।

विमला ने यूं उसकी ओर देखा मानो वह कोई बेतुका सवाल कर बैठा था।

-"वही चीजें जो आमतौर से इस्तेमाल की जाती हैं।" उसने जवाव दिया-"झाड़ू, ब्रुश, वैक्यूम क्लीनर वगैरा।"

-"ये चीजें तुम्हारी अपनी होती हैं या फ्लैट वाले ही देते हैं ?"

-"फ्लैट वाले ही देते हैं।"

बलराज तनिक मुस्कराया।

–"मेरे सवाल तुम्हें बेवकूफाना लग रहे हैं ?"

-"जी नहीं। अलबत्ता बेतुके जरूर लग रहे हैं।"

-"कोई बात नहीं। तुम बस सही-सही जवाब देती रहो।" बलराज ने कहा, फिर पूछा-"बवेजा भी तुम्हें ये सब चीजें देता था ?"

. -"जी हां। वह सबसे अच्छे किस्म की चीजें देता था।" विमला ने कहा-"मिसाल के तौर पर, ज्यादातर लोग झाड़न के नाम पर कोई पुराना कपड़ा थमा देते हैं, लेकिन बवेजा हमेशा बाजार से बढ़िया सूती कपड़े का बना झाड़न खरीदता था।"

-"वह बढ़िया ढंग से झाड़-पोंछ कराना पसन्द करता था।" बलराज ने कहा।

-"उस झाड़न से काम आसान भी हो जाता है।"

-"दरअसल मैं वैक्यूम क्लीनर्स के बारे में जानना चाहता हूं।" बलराज बोला-"बवेजा के फ्लैट में जो वैक्यूम क्लीनर है वो घटिया और पुराना है।"

विमला ने इस ढंग से उसकी ओर देखा मानो बवेजा की चीज को घटिया बताया जाना उसे अच्छा नहीं लगा था।

-"घटिया नहीं सिर्फ पुराना है।" वह बोली-"और अभी भी सही तरह काम करता है। मुझे उससे कभी कोई परेशानी नहीं हुई। वैसे भी वो आजकल के नए वैक्यूम क्लीनर्स से बेहतर है। ये इतनी जोर से धूल खींचते हैं कि धूल के साथ-साथ कारपेट वगैरा के रेशे भी साथ खिंच जाते हैं।

-"आई सी। तुम बवेजा के बगल वाले फ्लैट में भी काम करती हो ?"

विमला ने बुरा-सा मुंह बनाया।

-"नीरा मलकानी के यहां ?"

-"हां।"

-"करती हूं। वह छोकरी बस अपने चेहरे की टीमटाम और कपड़ों की टिचमिच पर ही खर्च करना जानती है। इन कामों पर तो वह हर महीने सैकड़ों खर्च करती होगी, लेकिन

नए झाडू के लिए पैसे तभी देती है जब पुराना झाडू हाथ में पकड़ने के काबिल भी नहीं रह जाता।''

बलराज मुस्कराया।

-''वह बाजार का बना झाड़न नहीं खरीदती ?''

-''सवाल ही नहीं पैदा होता । उसने काफी दिन से नाइलोन का एक फटा गाउन दिया हुआ है इस काम के लिए, जिससे धूल हटने की बजाय इधर-उधर फैलकर रह जाती है। उससे काम करते वक्त मैं मन-ही-मन कुढ़ती हुई सोचा करती हूं वो फटा कैसे होगा, क्योंकि पहनने से कोई नया कपड़ा इस ढंग से नहीं फट सकता जैसे वो फटा हुआ है।''

-''उसके पास भी वैक्यूम क्लीनर है ?'' बलराज ने मुस्कराकर पूछा।

-''जी हां।''

-''किस किस्म का ?''

-''एकदम गलत किस्म का।''

-''यानी धूल के साथ-साथ कारपेट के रेशे भी खींचता है।''

- ''वो सब-कछ खींच सकता है। पहले उसके पास कुछ भी नहीं था। मुझे एक पुराने टूटे ब्रुश से कारपेट वगैरा साफ करने पडते थे। यह वैक्यूम क्लीनर उसने पिछले हफ्ते ही खरीदा है । मैं नहीं जानती इसे उसने खरीदा क्यों.? जहां तक मेरा ख्याल है उसे बेचने वाला सेल्समैन नौजवान और किसी फिल्मी हीरो जैसा खूबसूरत रहा होगा और उस छोकरी का पूरा ध्यान क्लीनर की बजाय सेल्समैन पर रहा होगा। दरअसल वो क्लीनर खांसतौर से उन बड़ी जगहों के लिए है जहां फर्श पर मोटे कारपेट के साथ-साथ दीवारों पर भी वाल कारपेट लगे होते हैं, लेकिन उसके जैसे फ्लैट और हल्के कारपेट के लिए वो एकदम गलत चीज है। मैंने उसे सिर्फ एक ही बार इस्तेमाल किया है। उस छोकरी का सोफासैट टेपेस्टरी का हे। जलती सिगरेट गिर जाने की वजह से कई जगह उसमें छेद भी मौजूद हैं। भारी क्लीनर को चालू करते ही उन छेदों से भूसा बाहर झांकने लगा था। मैं समझ गई वो तमाम चीजों का सत्यानाश कर देगा और उसे बन्द कर दिया।''

आशा के अनुरूप बलराज की आंखों में चमक दिखाई दी।

-''उसे एक दफा इस्तेमाल के दौरान तुमने वैक्यूम क्लीनर को सिर्फ नीरा के फ्लैट में ही इस्तेमाल किया था या उसे बवेजा के फ्लैट में भी ले गई थीं ?''

-''सिर्फ नीरा के फ्लैट में ।'' विमला ने दृढतापूर्वक जवाब दिया-''किसी की चीज दूसरों के लिए इस्तेमाल करना मेरी आदत नहीं है और खुद बवेजा को भी किसी से कुछ

मांगना कतई पसन्द नहीं था।"

-"तुम बवेजा के फ्लैट में आखिरी दफा काम करने कब गई थीं ?"

-"आपको बताया तो था। कोई दो हफ्ते पहले।"

-"और नीरा मलकानी ने नया वैक्यूम क्लीनर कब खरादा था ?"

-"यह भी बता चुकी हूं। मुश्किल से एक हफ्ता पहले।"

-"आजकल इस इमारत में तुम नीरा के अलावा और किस-किस के फ्लैट में काम करती हो ?"

विमला ने बता दिया।

-"इससे पहले ?" बलराज ने पूछा।

विमला ने उनके नाम भी बता दिए।

उनमें मालती वर्मा का नाम नहीं था।

-"तुमने फर्स्ट फ्लोर पर बवेजा के ठीक नीचे वाले फ्लैट में कभी काम नहीं किया ?" बलराज ने सवाल किया।

-"मालती वर्मा के यहां ?" विमला ने पूछा।

-"हां ।"

-"नहीं । उसे मेरी जरूरत नहीं है ।" विमला के स्वर में प्रशंसा का पुट था-"वह बहुत मेहनती,समझदार और सलीके वाली लड़की है। जिससे शादी करेगी उसके घर को स्वर्ग बना देगी।"

-"वह अपने घर की सफाई वगैरा खुद ही करती है ?"

-"जी हां। घर को एकदम साफ-सुथरा रखती है। वहां आपको हर चीज करीने से रखी मिलेगी।"

-"तुम कभी उसके फ्लैट में गई हो ?"

-"सिर्फ एक बार। वह अपने फर्नीचर को खिसकाकर नए ढंग से सैट करना चाहती थी। उसी में मदद के लिए मुझे बुला लिया था।"

-"बता सकती हो उसके पास कैसा वैक्यूम क्लीनर है ?"

-"मैं बस उसके ड्राइंगरूम में ही गई थी। मैं नहीं जानती उसके पास कोई वैक्यूम क्लीनर है भी या नहीं।"

-"जिन फ्लैटों में तुम सफाई करने जाती हो उनकी डुप्लीकेट चाबियां तुम्हारे पास भी होती हैं ?"

-"चाबियां मुझे फ्लैट के बाहर एक खास जगह रखी मिलती हैं। काम खत्म करने के बाद फ्लैट लॉक करके मैं चाबियां वापस वहीं रख देती हूं।

-"तुम हमें अपने साथ नीरा के फ्लैट में ले जा सकती हो ?"

-"जी नहीं।" विमला ने साफ इंकार कर दिया-"पहली बात तो मैं उसके फ्लैट में सबसे बाद में काम करने जाती हूं। दूसरे यह मेरे उसूल के खिलाफ है। इसके लिए तो आपको मुरारीलाल की मदद लेनी होगी या फिर कोई दूसरा उपाय करना होगा। मैं आपको अपने साथ नहीं ले जाऊंगी।"

बलराज ने यह सवाल शायद विमला को परखने के लिए पूछा था, क्योंकि उसके चेहरे से ऐसा कुछ जाहिर नहीं हुआ, वह सचमुच नीरा के फ्लैट में जाना चाहता था।

-"धन्यवाद ।" वह बोला-"तुम जा सकती हो।"

विमला जीप से उतरकर चली गई।

हम वापस पुलिस हैडक्वार्टर्स पहुंचे।

वहां पुलिस लेबोरेटरी से आई वार्निश की रासायनिक जांच की रिपोर्ट और एस. आई. अश्विनी शर्मा द्वारा ली गई बवेजा के फ्लैट की तलाशी में मिली कुछ चीजें बलराज के डेस्क पर मौजूद थीं।

लेबोरेटरी रिपोर्ट के मुताबिक बवेजा की लाश के नथुनों पर पाई गई वार्निश में बेंजीन भी या किसी ऐसी चीज की मौजूदगी का कोई चिन्ह नहीं मिला था, जिसके बारे में कहा जा सके उसकी मदद से एडहेसिव टेप को छुड़ाया गया था। वार्निश एकदम साफ और वाटरप्रूफ थी।

लेबोरेटरी वालों ने उस पालिश की भी रासायनिक जांच की थी,जो बवेजा के पलंग के पायों के सुराखों पर मौजूद पाई गई थी। उसमें उस वाटरप्रूफ वार्निश का कोई अंश नहीं पाया गया ।

मुझे देखकर हैरानी हुई पिछली रात वार्निश की बात को लेकर बलराज जितना परेशान था, उसकी रिपोर्ट में उसने उतनी ही लापरवाही दिखाई थी।

रिपोर्ट पढ़ने के बाद वह बवेजा, की निजी चीजों की ओर आकर्षित हो गया।

उसने विभिन्न चीजों को उलटने-पलटने के बाद जिस चीज में ज्यादा दिलचस्पी ली वो थी-मृतक बवेजा की चैक बुक इन्डियन बैंक की स्टेशन रोड ब्रांच की थी।

चैक बुक सेविंग्स एकाउन्ट की थी। बलराज बड़ी गौर से उसे देख रहा था।

बवेजा का हस्ताक्षरयुक्त आठ सौ रुपये का एक चैक अभी भी उसमें मौजूद था। वो फ्लेट के किराए की रकम का चैक था जिस पर पिछले महीने की आखिरी तारीख पड़ी हुई थी,लेकिन उसे काउन्टर फॉयल से अलग नहीं किया गया था।

पच्चीस चैकों वाली उस चैक बुक में कई ऐसी काउन्टर फॉयल थीं जिनसे चैक अलग कर लिए गए थे। उनमें से कुछ पर पिछले महीने की आखिरी तारीख पड़ी हुई थी और तीन पर करेंट महीने की पहली तारीख । बलराज ने ध्यानपूर्वक उनका अध्ययन किया। बवेजा के एकाउन्ट की एक ही दिन में जो हालत हुई थी,उसने उसे मुस्कराने पर मजबूर कर दिया।

चैक बुक में मौजूद तमाम काउन्टर फॉयल्स में साफ-साफ पूरा ब्यौरा मौजूद था, लेकिन उन दोनों तारीखों की और पहली काउन्टर फॉयल्स में बड़ा भारी फर्क था। उनसे पहली तारीखों में बवेजा का बैंक बैलेंस हमेशा काफी मोटा और पांच अंकों की रकम में रहा था साठ से सत्तर हजार रुपये के बीच में।

लेकिन अन्तिम दोनों तारीखों में बैलेंस की हालत एकदम खस्ता हो गई थी। ऐसा लगता था मानो एकाएक बवेजा का दीवाला पिट गया था और वह पैसे-पैसे से मोहताज हो गया था। काउन्टर फॉयल्स के मुताबिक जिस दिन उसने किराए का आठ सौ रुपए का चैक भरा था उस रोज उसका बैलेंस सिर्फ सौ रुपया था।

अगले दिन उसी सौ रुपए के बैलेंस के अगेंस्ट उसने तीन चैक इशू किए थे-टेलीफोन बिल, इलेक्ट्रिसिटी बिल और पानी के बिल के भुगतान के लिए। बिजली और पानी के बिलों की कुल राशि चोरासी रुपये सत्तर पैसे थी। काउन्टर फॉयल्स से जाहिर था कि एकाउन्ट में पहली तारीख को इतनी ही राशि जमा कराई गई थी, ताकि दोनों चैक क्लीयर हो जाएं। सौ रुपये का जो पहला बैलेंस था उसे डिस्टर्ब नहीं किया गया। फिर उसी दिन यानी पहली तारीख को ही चार सौ छिहत्तर रुपये का चैक इशू किया गया था-टेलीफोन बिल के भुगतान के लिए और काउन्टर फॉयल्स के अनुसार उस चैक को क्लीयर कराने के लिए भी उतनी ही रकम नगद जमा कराई गई थी।

प्रत्यक्षत: बवेजा का बैंक बैलेंस अचानक साठ-सत्तर हजार से घटकर सिर्फ सौ रुपये रह गया था। उसने अपना एकाउन्ट क्लोज नहीं किया। वह अपने हर बिल का

भुगतान बैंक से करता रहा और हर चैक को क्लीयर कराने के लिए उतनी ही रकम अपने बैंक एकाउन्ट में जमा कराता रहा।

चैक बुक में मौजूद काउन्टर फॉयल्स की तरतीब और डिटेल्स से यह जाहिर था बिजली और पानी के बिल बवेजा को पहली तारीख की सुबह मिले थे। उसने कारपोरेशन के सम्बन्धित विभागों को डाक द्वारा दोनों बिलों के चैक भेज दिए और खुद अपने बैंकों की ओर दौड़ गया ताकि उन दोनों चैकों को क्लीयर कराने के लिए उतनी ही रकम नगद जमा करा सके। उसी दिन बाद में शायद दोपहर की डाक से उसे टेलीफोन का बिल मिला था। उसने उतनी ही रकम का चैक भर करके टेलीफोन विभाग को पोस्ट किया और फिर उस चैक को क्लीयर कराने के लिए अपने एकाउन्ट में उतनी ही नगद रकम जमा कराने एक ही दिन में दोबारा बैंक दौड़ गया था।

यह बात अपने आपमें खटकने वाली थी।

बलराज एक-एक करके तमाम एकाउन्ट फॉयल्स देखने लगा। यह जानने के लिए कि बवेजा के अच्छे-खासे बैंक बैलेंस की यह दुर्गति एक ही साथ मोटी रकम के भुगतान की वजह से हुई थी या कई भुगतानों की वजह से।

दुर्गति की वजह थी-एक ही भुगतान ।

पिछले महीने की बाईस तारीख को सज्जन कुमार बवेजा ने किसी हरचरनजीत सिंह ठुकराल को 68886-95 का चैक इशू किया था। वो चैक इशू करने से पहले बवेजा का बैलेंस 68986-95 था।

–"कितनी अजीब बात है।" मैं चौंकता-सा बोला।

बलराज के चेहरे पर संदेहपूर्ण भाव थे ।

-"तुमने भी तो सेविंग्स एकाउन्ट खोल रखा होगा।" उसने पूछा।

-"हां दो बैंकों में है।"

-"कितने असें से ?"

-"एक में करीब चौदह साल से है और दूसरे में आठ-नौ साल से।"

-"इस असें में तुम्हारे साथ ऐसा कितनी बार हुआ है कि एक चैक इशू करने के बाद तुम्हारे बैलेंस की रकम पूरे रुपयों में बचे। उसके साथ पैसा एक भी न हो ?"

-"याद नहीं कितनी बार हुआ है या हुआ भी है कि नहीं। वैसे ऐसा हो जाना ज्यादा बड़ी बात तो नहीं है। ऐसा हो सकता है।"

-"यानी इत्तफाक से एकाध बार हो सकता है ?"

-"हां ।"

-"इसी तरहं क्या तुम्हारे साथ कभी ऐसा भी हुआ है बैंक में तुम्हारा खास बैलेंस हो और एक ही चैक इशू करने के बाद वो सारा बैलेंस सिकुड़कर सौ रुपये रह गया हो ?"

-"कभी नहीं । मैं हमेशा बैलेंस को ध्यान में रखकर ही चैक काटता हूं।" मैंने कहा-"हालांकि मेरे दोनों एकाउन्ट बहुत बड़े कभी नहीं रहे, लेकिन इतने छोटे भी नहीं रहे हैं कि चैक काटने के बाद सिर्फ पूरा सौ रुपया बैलेंस बचे। वैसे ऐसा हो जाना भी बड़ी बात नहीं है।"

-"दैट्स दी प्वाइन्ट ।" बलराज विचारपूर्ण स्वर में बोला "सेविग्स बैंक एकाउन्ट वाले खातेदारों को चैक बुक इशू करते वक्त बैंक उनसे अपेक्षा करता है हर हालत में उनका बैलेंस कम-से-कम सौ रुपया जरूर रहे। आमतौर से खातेदार भी इसका ध्यान रखते है,

लेकिन किसी मजबूरी या अनजाने में कभी बैलेंस सौ रुपये से कम भी हो जाता है, मगर ऐसा छोटे खाते वाले खातेदारों के मामले में ही होता हे ओर बवेजा के बैंक एकाउन्ट को छोटा नहीं कहा जा सकता। उसके मामले में यह बात इस निगाह से और भी ज्यादा गौर-तलब है कि एक ही पेमेंट करने के बाद उसका अच्छा खासा बैलेंस पूरा सौ रुपया रह गया था, क्योंकि सौ रुपया वो कम-से-कम राशि हे जो चैक-बुक का.मालिक होने के नाते उसके खाते में रहनी जरूरी थी।"

मैंने बलराज से चैक-बुक लेकर उसमें मौजूद तमाम काउन्टर फॉयल्स को ध्यानपूर्वक देखा।

उनसे जाहिर था बवेजा के खाते में आमतौर पर बैलेंस साठ और सत्तर हजार के बीच में रहा था, लेकिन हरचरनजीत सिंह ठुकराल को इशू किए गए एक ही चैक ने उसके बैलेंस की दुर्गति कर दी थी। मैंने यह भी नोट किया उस चैक के अलावा पहले कभी इतनी मोटी रकम का चैक काटना तो दूर, इस रकम के दसवें हिस्से का चैक भी कभी नहीं काटा गया था।

-"इस अकेली काउन्टर फॉयल के अलावा अन्य किसी पर जरा-सा भी शक नहीं किया जा सकता।" बलराज कह रहा था -"बाकी सब चैक रोजमर्रा की जरूरतों की चीजों के बिलों के अगेन्स्ट इशू किए गए हैं। इनसे. जाहिर है बवेजा न सिर्फ ठाठबाट से रहता था बल्कि मार्किट में उसकी क्रेडिट भी अच्छी खासी थी। दूसरे, इस हरचरनजीत सिंह ठुकराल को बवेजा ने इस चैक बुक के मुताबिक इस अकेले चैक से पहले कभी दस रुपए का चैक

भी इशू नहीं किया था। ऐसा लगता है, यह हरचरनजीत सिंह किसी जादू के जोर से अचानक प्रगट हुआ और बवेजा की सारी रकम हड़प गया।''

-''यह भी तो हो सकता है।'' मैंने सम्भावना व्यक्त करते हुए कहा-''बवेजा इस हरचरनजीत का मोटी रकम का कर्जदार था। वह बवेजा पर अपना कर्जा चुकाने के लिए दबाव डाल रहा था और बवेजा ने कहा हो कि पूरी रकम चुकाने की स्थिति में वह नहीं था, लेकिन जितनी ज्यादा-से-ज्यादा रकम दे सकता है उसे देने में कोई ऐतराज नहीं, फिर बवेजा ने उसे अपनी चैक बुक दिखाई और हरचरनजीत ने कम-से-कम बैलेंस सौ रुपया छोड़कर बाकी रकम का चैक उससे ले लिया था।''

बलराज ने सर हिलाकर सहमति दी।

-''तुमने काफी हद तक सही अनुमान लगाया है, बॉस । वह बोला-''सिवाय इस बात के कि हरचरनजीत सिंह दबाव नहीं डाल रहा था बवेजा पर। उसने बवेजा के साथ पूरी जबरदस्ती की थी। बवेजा को कैद करके उसे इस हद तक टॉर्चर किया गया कि वह चैक देने से इंकार कर ही न सके । यही वजह है कि बवेजा का दायां हाथ पूरी तरह अपनी सही हालत में था। उसे जरा-सा भी नुकसान नहीं पहुंचाया गया, क्योंकि बवेजा द्वारा चैक भरवाकर उस पर उसके दस्तखत कराए जाने थे। अब सवाल यह उठता है जब हरचरनजीत ने अपनी रकम वसूलने की खातिर बकेजा को इतनी यातनाएं दीं तो. उसने बवेजा के एकाउन्ट में सौ रुपये भी क्यों छोड़ दिए ?''

मैंने सोचने की कोशिश की, लेकिन इसका कोई मुनासिब जवाब मुझे नहीं सूझ सका। फिर भी मैंने कहा-''हो सकता है, वह बवेजा को पूरी तरह कंगाल करना नहीं चाहता था।''

-''नहीं।'' बलराज बोला-''तुम्हें याद है, पिछली रात मैंने कहा था कि बवेजा की हत्या के मामले में कम-से-कम दो व्यक्ति इनवाल्व हैं-एक वह जिसने टॉर्चर और मर्डर की योजना बनाई थी और दूसरा वह जिसने बवेजा की हत्या की थी। चैक-बुक की इनकाउन्टर फॉयल्स से जाहिर है कि योजना बनाने वाला हरचरनजीत था। बवेजा को उसी के फ्लैट में कैद करके यातनाएं दी गईं और उसे मजबूर करके इतनी मोटी रकम का एक ही चैक उससे कटवा लिया गया, लेकिन हरचरनजीत को इतने पर ही सब्र नहीं हुआ। वह बवेजा से कुछ और भी हासिल करना चाहता था, क्योंकि बवेजा ने यह चैक पिछले महीने की बाईस तारीख को यानी जब वह लोगों को दिखाई देना बन्द हुआ था उसके ठीक फौरन बाद, इशू कर दिया था, मगर इसके बाद भी कई दिनों तक उसे टॉर्चर किया गया। इसका सीधा सा मतलब है, हरचरनजीत बवेजा से 68886-95 रुपये के अलावा भी कुछ हासिल करना चाहता था और वह नहीं जानता था कि उसे हासिल करने के लिए बवेजा को कब तक

जिन्दा रखना होगा। घटनास्थल की जांच से यह भी जाहिर है कि उसने बवेजा को कम-से-कम तब तक जिन्दा रखना था जब तक कि उसके शरीर से यातनाएं दिए जाने के तमाम निशान नहीं मिट जाने थे। उस पूरे दौर में हरचरनजीत ने हालात को पूरी तरह काबू में रखना था ताकि बवेजा के बारे में किसी को शक तक न होने पाए कि उसे उसी के फ्लैट में कैद करके टॉर्चर किया जा रहा था। यही वजह है कि हर बिल आने के बाद हरचरनजीत ने बवेजा से उतनी ही रकम का चैक कटवाया और फिर उस चैक को क्लीयर कराने के लिए उतनी ही नकद रकम बवेजा के बैंक में जमा कराई थी।''

इसमें कोई शक नहीं कि सारा सिलसिला इसी ओर संकेत करता था, मगर एक बात ऐसी भी थी जो बलराज की इस थ्यौरी से मेल नहीं खाती थी।

-''तो फिर फ्लैट के किराए का चैक सही वक्त पर मुरारीलाल को क्यों नहीं दिया गया ?'' मैंने पूछा-''जबकि बवेजा किराए के चैक को भरकर उसे साइन भी कर चुका था ?''

-''इसे चूक कहा जाएगा।'' बलराज ने जवाब दिया- ''तुम्हें याद होगां उस इमारत के केयर टेकर मुरारीलाल ने बताया था कि तमाम किराएदार महीने की दस तारीख तक किराया चुकाया करते हैं । इसलिए हरचरनजीत ने सोचा होगा कि बवेजा भी ऐसा ही करता होगा। उसने एहतियातन बवेजा से चैक तो साइन करा लिया था, लेकिन उसे उम्मीद रही होगी, जो कुछ वह बवेजा के साथ करना चाहता था वो दस तारीख से पहले ही खत्म हो जाएगा। इसलिए उसने बिना वजह आठ सौ रुपये गंवाना मुनासिब नहीं समझा।''

-''आठ सौ की खातिर उसने इतना बड़ा रिस्क लिया ?''

-''क्या मतलब ?''

-''बवेजा की लाश कल यानी तीन तारीख को बरामद हुई थी। मैंने कहा-''क्योंकि विमला की बातों से मुरारीलाल को शक हो गया था और वह बवेजा के फ्लैट पर जा पहुंचा था, लेकिन हमेशा की तरह पहली तारीख को चैक न मिलने के बाद किसी वजह से मुरारीलाल पहली की शाम या रात को भी तो उसके फ्लैट में जा सकता था। उस सूरत में लाश भी पहले ही बरामद हो जानी थी और बहुत मुमकिन है इस वक्त तक बवेजा की हत्या भी न की गई होती।''

-''तीन तारीख की बजाय पहली तारीख को लाश बरामद हो जाने से खास फर्क नहीं पड़ना था, सिवाय इसके कि बवेजा की मृत्यु का अनुमानित समय ज्यादा सही ढंग से निर्धारित किया जा सकता था।'' बलराज ने कहा-''जहां तक रिस्क लेने की बात है, वो तो, उसी वक्त लिया जा चुका था जब विमला को काम पर न आने के लिए चिट्ठी और सो रुपए

भेजे गए थे। यह महज इत्तफाक था कि विमला कल ही मुरारीलाल के पास पहुंची थी। वह चिट्ठी -मिलने के अगले दिन भी तो मुरारीलाल के पास जा सकती थी। उस सूरत में अगर मुरारीलाल तभी बवेजा के फ्लैट में जा पहुंचता तो, बवेजा पलंग पर बंधा पड़ा मिलता। उस वक्त अगर बवेजा फ्लैट में अकेला होता तो, हरचरनजीत की योजना बिल्कुल पिट जाती और अगर बवेजा के पास कोई और भी मौजूद होता तो, मुरारीलाल को भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ना था, क्योंकि बवेजा को उस हालत में देख चुकने के बाद मुरारीलाल को भी जिन्दा नहीं छोड़ा जाना था।''

तभी एस. आई. अश्विनी शर्मा ऑफिस में दाखिल हआ।

उसने हाथ में पकड़ी चैक-बुक्स की एक गड्डी बलराज के डेस्क पर रख दी।

-''अलग-अलग बैंकों की ये छ: चैक बुकें भी बवेजा के फ्लैट से ही मिली थीं, सर।'' वह बोला-''इन सबमें भी बवेजा का बैलेंस सत्तर हजार रुपये के आसपास था, लेकिन इन सबके मुताबिक भी पिछले महीने की ही बाईस तारीख को उसने सिर्फ सौ रुपया बैलेंस छोड़कर शेष मोटी रकम का एक ही चैक हरचरनजीत ठुकराल के नाम काटा था। इस तरह उसने एक ही दिन में एक ही आदमी को कुल मिलाकर चार लाख सैंतीस हजार आठ सौ सत्तानवें रुपये की पेमेंट की थी और खुद कंगाल हो गया था।''

बलराज ने डेस्क पर पड़ी चैक बुक एक-एक करके उठाई और गौर से देखने के बाद वापस रख दी।

उसने अश्विनी शर्मा को उन छहों बैंकों में जाकर पूछताछ करने की हिदायतें दी और पहले से पड़ी चेक बुक को उठाकर जेब में डालता हुआ खड़ा हो गया।

-''आओ भारती । स्टेशन रोड चलकर बैंक मैनेजर से मिलते हैं।''

मैं खड़ा हो गया।

बलराज के ऑफिस से निकलकर हम पुलिस हैडक्वार्टर की इमारत से बाहर आ गए।

पुलिस जीप में सवार होकर हम इण्डियन बैंक की स्टेशन रोड ब्रांच पहुँचे।

बलराज ने बैंक मैनेजर को चैंक बुक दिखाने के बाद बवेजा की मृत्यु के बारे में बताया ओर बवेजा का खाता. देखने की इच्छा व्यक्त की।

बैंक मैनेजर तुरन्त सहयोग के लिए तैयार हो गया।

लैजर मंगाकर उसने बवेजा का खाता चैक किया।

खाते के मुताबिक पिछले करीब आठ महीने से बवेजा का बैलेंस साठ ओर सत्तर हजार के बीच चल रहा था, लेकिन पिछले महीने की बाईस तारीख को एकाएक उसका बैलेंस सौ रुपए रह गया था। फिर पहली तारीख को उसके खाते में दो बार नगद रकम जमा कराई गई थी। चार तारीख को दो चैक क्लीयर होने के बाद बैलेंस पुनः सौ रुपया रह गया था।

-"बवेजा ने पिछले महीने की बाईस तारीख को हरचरनजीत सिंह ठुकराल के नाम चैक काटा था।" बलराज ने कहा-"उसी दिन चैक की रकम बवेजा के एकाउन्ट से ट्रांसफर हो गई। इसका क्या मतलब है ?"

-"हरचरनजीत सिंह ठुकराल का एकाउन्ट भी इसी ब्रांच में होना चाहिए।" बैंक मैनेजर ने जवाब दिया ।

-"उसका खाता मंगवाइए।"

बैंक मैनेजर ने दूसरी लैजर मंगवाई।

हरचरनजीत सिंह ठुकराल का एकाउन्ट सचमुच उसी बैंक में था। रिकार्ड के मुताबिक उसने पिछले महीने की बाइस तारीख को पांच सौ रुपये से खाता खोलकर बवेजा का चैक अपने खाते में जमा कराया था फिर उसी महीने की पच्चीस तारीख को सिर्फ सौ रुपया बैलेंस छोड़कर बाकी सारी रकम निकाल ली थी। यानी बड़ी सफाई से बवेजा की तमाम रकम हड़प ली गई थी।

बलराज के नेत्र सिकुड़ गए।

-"हरचरनजीत सिंह ने यहां अपना खाता खोलते वक्त अपना पता भी तो लिखा होगा ?"

-"बिल्कुल लिखा होगा।" मैनेजर ने जवाब दिया।

-"ओर उसे किसी ऐसे व्यक्ति ने ही आपके बैंक में इन्ट्रोड्यूस किया होगा जिसका आपके यहां पहले से एकाउन्ट है। तभी आपने उसका खाता अपने यहां खोला होगा ?"

-"ऐसा ही होता है। नियम ही यह है।"

-"जरा हरचरनजीत सिंह का वो रिकार्ड मंगवाइए और उस आदमी को भी बुलवाइए जिसने उसका खाता खोला था।"

मेनेजर ने घंटी बजाकर बाहर मौजूद चपरासी को अन्दर बुलाया और उसे आदेश दे दिया।

थोड़ी देर बाद इकहरे जिस्म का एक ऐनकधारी करीब पचासवर्षीय आदमी भीतर दाखिल हुआ।

उसने हरचरनजीत सिंह का रिकार्ड मैनेजर के डेस्क पर रख दिया। उस रिकार्ड के मुताबिक हरचरनजीत सिंह का नया खाता खोलने के फार्म पर इन्ट्रोड्यूस्ड बाई के आगे दस्तखत थे-सज्जन कुमार बवेजा।

हरचरनजीत सिंह ने बैंक में अपना जो पता लिखा था वो भी कोई और न होकर बवेजा के ही फ्लैट का पता था।

यानी बैंक रिकार्ड से हरचरनजीत सिंह का पता लगा पाना मुमकिन नहीं था।

बलराज उस ऐनकधारी की ओर आकर्षित हुआ जो रिकार्ड लेकर आया था।

-"हरचरनजीत सिंह का एकाउन्ट आपने ही खोला था ?"

-"जी हां।" ऐनकधारी वाला।

-"उसका हुलिया बता सकते हो ?"

- "मैं सिर्फ उसका कद-बुत ही बता सकता हूं।"

बलराज ने उसे घूरा।

-"क्या मतलब ?"

-"उसके तमाम सर पर पट्टियां लिपटी हुई थी। उसका करीब-करीब सारा चेहरा भी पट्टियों से ढंका हआ था। उसकी सिर्फ आंखें ही नजर आ रही थीं। यहां तक कि उसका मुंह भी पट्टियो से ढंका हुआ था। इसलिए उसकी आवाज भी ऐसी लगती थी मानो वह नकुए स्वर में बात कर रहा था ।"

-"और जब वह दोबारा पच्चीस तारीख को पैसा निकालने आया था उस वक्त भी उसके चेहरे की यही हालत रही होगी ?" बलराज ने कड़वे स्वर में पूछा।

-"इस बारे में तो उसका चेक रिसीव करके उसे टोकन देने वाला और केशियर ही बता सकते हैं।"

-"तुमने उससे पट्टियां बंधी होनी की वजह पूछी थी ?"

बलराज ने उसकी बात पर ध्यान देकर पूछा।

ऐनकधारी ने सहमतिपूर्वक सर हिलाया।

–"उसका कहना था कि किसी एक्सीडेंट में उसके चेहरे की चमड़ी जल गई थी और उसे स्किन ग्राटिंग (जिस्म के एक हिस्से की चमड़ी उतारकर दूसरी जगह लगाना) करानी पड़ी थी।"

-"इसे छोड़ो ! बाकी बातें बताओ। वह ऊंचे कद वाला था या ठिगना ? मोटा था या पतला ? और उसका रंग कैसा था ?"

ऐनकधारी ने चन्द पल सोचा, फिर बोला-"औसत कद स्वास्थ्य सामान्य, कंधे झुके हुए और रंग शायद गेहुआं था।"

-"लिंबास ?"

-"शानदार लेकिन तनिक ढ़ीला और लम्बा ।"

-"लिबास था क्या ?"

-"नीली-काली धारियों वाला सूट, वैसी ही धारीदार टाई और हल्की नीली कमीज।"

बलराज ने यूं मुंह बनाया मानो कोई कड़वी चीज मुंह में आ गई थी।

वजह साफ थी, मुझे अच्छी तरह याद था कि हूबहू वैसा ही सूट और टाई हमने बवेजा की वार्डरोब में देखे थे। यानी हरचरनजीत सिंह कपड़े भी बवेजा के ही पहने था।

बलराज ने ऐनकधारी से घुमा-फिराकर और कई सवाल किए लेकिन कोई कारामद जानकारी हासिल नहीं हो सकी।

फिर उसने कैशियर को बुलाया।

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

हरचरनजीत का जो हुलिया ऐनकधारी ने बताया था कैशियर ने भी उसकी पुष्टि कर दी।

उन दोनों के बाद बलराज मैनेजर से मुखातिब हुआ।

-"हरचरनजीत सिंह का इस ढंग से खाता खोलना,चैक जमा कराना और तीसरे दिन रकम लेकर चम्पत हो जाना, आपको अजीब नहीं लगा ?"

-"क्यों ? इसमें अजीब क्या है ?"

-"हरचरनजीत सिंह ने एकाउन्ट खोलते वक्त सज्जन कुमार बवेजा की इन्ट्रोडक्शन दी। अपने पते की जगह पता भी बवेजा का लिखाया था। बवेजा का ही दिया हुआ इतनी मोटी रकम का एक ही चैक अपने एकाउन्ट में जमा कराया कि बवेजा का बैलेंस सिर्फ सौ

रुपया बचा, फिर तीन दिन बाद सारी रकम निकालकर चलता बना। यानी एकाउन्ट खोलने का उसका इकलौता मकसद था-बवेजा का चैक कैश कराना।''

-''बैंकिंग सिस्टम के हिसाब से इसमें कुछ भी अजीब नहीं है।'' मैनेजर धैर्यपूर्वक बोला-''नया एकाउन्ट खोलने की हमारी जो औपचारिकताएं हैं वे सब हरचरनजीत सिंह ने पूरी की थीं,क्योंकि हर खातेदार अपने खाते में जमा रकम का खुद ही मालिक होता है, इसलिए बवेजा द्वारा दिया चैक दिया जाना, हरचरनजीत सिंह द्वारा उसे अपने एकाउन्ट में जमा कराना और फिर सारी रकम निकाल लेना भी अजीब नहीं है।''

-''क्या अक्सर ऐसा ही होता है ?''

-''नहीं, लेकिन ऐसा होता ही रहता है। जिस बैंक का चैक होता है उसी में एकाउन्ट खोलकर उसे जमा कराने का काम आसतौर से वो लोग करते हैं जो किसी दूसरे शहर में रहते हैं। इस तरह चैंक आनन-फानन कैश हो जाता है जबकि आउट स्टेशन क्लीयरेंस में दस-पन्द्रह दिन लग जाते हैं।

बलराज खड़ा हो गया।

-''थैक्यू वैरी मच ।'' वह मैनेजर से हाथ मिलाकर निराश स्वर में बोला।

हम दोनों बैंक से बाहर आ गए।

-''अब किधर चलना है ?'' मैंने जीप में सवार होते हुए पूछा।

बलराज ने गहरी सांस ली।

-''बवेजा के फ्लैट में चलते हैं।'' वह बोला-''उम्मीद तो नहीं कि वहां से भी हरचरनजीत सिंह के बारे में कोई सुराग लगेगा, फिर भी कोशिश तो करनी ही पड़ेगी। दूसरे, मैं नीरा मलकानी का नया वैक्यूम क्लीनर भी देखना चाहता हूं।''

जीप मन्जिल की ओर भागने लगी।

-''मेरा ख्याल है अश्विनी शर्मा भी हमारी तरह खाली हाथ ही लौटेगा।'' मैंने कहा-''हरचरनजीत सिंह की कार्य-प्रणाली अन्य बैंकों में भी यही रही होगी।''

-''यह तो जाहिर ही है।''

कोई पन्द्रह मिनट बाद हम जीप से उतरकर उसी इमारत में दाखिल हुए। उस वक्त एक बजकर दस मिनट हुए थे।

बलराज ने जेब से मुरारीलाल वाला चाबियों का गुच्छा निकाला, जिसमें मौजूद एक चाबी से कल बवेजा के फ्लैट का ताला खोला गया था, फिर मुरारीलाल उस गुच्छे को

वापस लेना भूल गया था। नतीजतन कल रात जब पुलिस तफ्तीश के बाद वापस लौटी तो, अश्विनी शर्मा फ्लैट को लॉक करके सील कराने के बाद गुच्छा भी साथ ले गया था। वही गुच्छा अब बलराज के पास था।

हम सीढ़ियां तय करके दूसरे खन्ड पर पहंचे।

लेकिन बलराज को चाबियों का गुच्छा इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं पड़ी।

नीरा मलकानी के फ्लैट का दरवाजा खुला था। हमारी ओर से पीठ किए दरवाजे में विमला और मुरारीलाल खड़े थे।

-"मैंने इसे छुआ तक नहीं है।" विमला कह रही थी-"यहां आते ही मेरी इस पर निगाह पड़ी ओर मैं तुम्हें बुलाने चली गई। तुम खुद भी देख सकते हो कि सोफे की क्या हालत हुई पडी है। मैं नहीं चाहती कि वह घमन्डी छोकरी अपनी इस करतूत के लिए मुझे जिम्मेदार ठहराए। यह न तो शराब है ओर न ही टमाटर की चटनी । इसे धोने की कोशिश भी की गई है, लेकिन यह छूट तो नहीं सका। हां, सोफा बुरी तरह गीला जरूर हो गया है। मेरा ख्याल है यह छूटेगा भी नहीं।"

"'क्या बात है ?" बलराज ने टोका-"तुम इस तरह दरवाजे में क्यों खड़े हो ?"

वे दोनों एक साथ पलटे।

-"ओह इन्सपेक्टर साहब, आप ?" मुरारीलाल थकी-सी आवाज में बोला।

विमला दरवाजे से अलग हट गई।

बलराज उसकी जगह खड़ा हो गया।

-"आप खुद देख लीजिए सोफे की क्या हालत हुई पड़ी है। मुरारीलाल झींकता हुआ-सा बोला-"सारी लापरवाही उस माडर्न लड़की की हे, लेकिन वह तोहमत लगाएगी इस बेचारी विमला पर।" और पीछे हट गया।

बलराज के पीछे-पीछे मैं भी ड्राइंगरूम में दाखिल हुआ।

सोफे की पुश्त पर एक काफी बड़ा सुर्ख दाग था, जो नीचे सीट तक पहुंचा हुआ था। उसे धोने की कोशिश की गई थी, लेकिन दाग छूटने की बजाय ज्यादा फैल गया था और सोफा काफी गीला हो गया था।

-"वह खून भी हो सकता है ।" बलराज विचारपूर्वक बोला।

-"ओह, नहीं !" बाहर खड़ा मुरारीलाल कराहता-सा बोला।

-"अगर यह खून है तो, उस छोकरी का नहीं हो सकता।" विमला तुरुफ जड़ती हुई बोली-"उसकी रगों में खून नहीं शराब बहती होगी।"

बलराज उनकी ओर ध्यान न देकर सीधा खड़ा जोर-जोर से सांस ले रहा था मानो कुछ सूंघने की कोशिश कर रहा था।

-"तुम्हें अजीब-सी गंध आ रही है ?" उसने चारों ओर निगाहें दौड़ाते हुए पूछा।

उसके पूछने पर ही मुझे लगा वहां सचमुच अजीब-सी कोई बू मौजूद थी।

- "हां ।" मैंने जवाब दिया।

-"बैंजीन की-सी लगती है।"

बलराज ने सोफे के गीले भाग को हाथ से छूकर अपनी उंगलियों को सूंघा।

-"सोफे से आ रही है ?" मैंने पूछा।

-"नहीं।"

बलराज पीछे हटा।

वह बेडरूम के सामने पहुंचा और बन्द दरवाजा भड़ाक से खोल दिया।

बेडरूम में वही अजीब-सी गंध अपेक्षाकृत कुछ तेज थी।

हम भीतर दाखिल हो गए।

नीरा मलकानी फर्श पर पड़ी थी। उसके सर के पृष्ठ भाग के बालों पर सूखा खून जमा था। पास ही वो काला रेशमी गाउन पडा था जो नीरा ने कल शाम पहना हुआ था। उस पर भी काफी खून लगा हुआ था।

नीरा की फटी-फटी सूनी आंखों से साफ जाहिर था कि वह मर चुकी थी।

बलराज कुछ क्षण खड़ा लाश को घूरता रहा, फिर बोला-"आओ ।"

***

हम दोनों फ्लैट से बाहर आ गए।

विमला और मुरारीलाल ने प्रश्नात्मक निगाहों से हमारी ओर देखा।

बलराज ने उन्हें नजरअंदाज करते हुए फ्लैट लॉक किया। वहीं ठहरने के लिए कहकर वह मुरारीलाल को साथ लेकर सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

मैं और विमला वहीं खड़े रहे।

बलराज करीब दस मिनट बाद वापस लौटा ।

-"मैंने फोन कर दिया है ।" वह बोला-"फिंगर प्रिंट्स वाले एम्बुलेंस वगैरा के आने तक मुझे यहीं ठहरना होगा।" वह विमला की ओर मुड़ा-"तुम जाओ। नीरा मर चुकी है।" ओर फ्लैट का ताला खोल दिया।

विमला चुपचाप सीढ़ियों की ओर बढ़ गई।

-"इससे कुछ पूछा नहीं तुमने ?" मैं फ्लैट में दाखिल होता हुआ बोला।

-"कोई फायदा नहीं।" बलराज ने कहा- "इस बेचारी ने भला क्या बताना था।" और अन्दर आ गया।

-"मुरारीलाल से कुछ पता चला ?"

-"उससे भी पूछताछ करना बेकार था।"

-"इसका मतलब हत्यारा वही है जिसने बवेजा की हत्या की थी ?"

-"अगर मेरा तजुर्बा और नालिज सही है तो, हत्यारा वही, होना चाहिए।"

-"क्या इस मामले में राकेश मोहन और विनोद को टटोलना ठीक नहीं रहेगा ?"

-"उन दोनों को ही नहीं उस लड़की रीटा खरे को भा।" बलराज बोला- "हालांकि राकेश के उकसाने पर उस लड़की ने भी साफ इंकार कर दिया था, लेकिन वह सचमुच बहुत ज्यादा भयभीत थी। मैंने उन तीनों को पूछताछ के लिए पकड़ने के बारे में आदेश दे दिए हैं।"

-"क्या उस लड़की के भयभीत होने की वजह विनोद नहीं था ?"

-"लगता तो यही था, लेकिन असली वजह वह खुद ही बताएगी। मुझे उस लड़की की नादानी और मासूमियत पर तरस आता है। में समझता हूं उसे पुलिस प्रोटेक्शन की जरूरत है।" बलराज ने कहा। तनिक रुककर बोला-"में उस वैक्यूम क्लीनर को देखना चाहता हूं जो,यहां आने का हमारा असली मकसद था।"

वैक्यूम क्लीनर काफी बड़ा और बिलकुल वैसा ही था जैसा कि विमला ने बताया था वो इतना नया था कि उस पर अभी तक भी उस दुकान का टैग लगा था जहां से उसे खरीदा गया था। प्रत्यक्षत: वो ऐसी दुकान से खरीदा गया था, जहां घरेलू इस्तेमाल के सामान की सेल लगी हुई थी।

मेरी समझ में नहीं आया कि बलराज नीरा की लाश की ओर खास तवज्जो क्यों नहीं दे रहा था ? लेकिन मैंने इस बारे में कहा कुछ नहीं।

फिर जब फिंगर प्रिंट्स वाले, फोटोग्राफर और एम्बुलेंस आ पहुंचे तो, बलराज ने बारी-बारी उन सबको हिदायतें दी।

अन्त में वह उस एस. आई. से मुखातिब हुआ,जो उसके बुलावे पर दो कांस्टेबलों सहित उन लोगों के साथ आया था।

-"जितना जल्दी हो सके तुम लाश को डॉक्टर मुलगांवकर के पास पहुंचा दो। मैं डॉक्टर से बातें कर चुका हूं। वह लाश का इन्तजार कर रहा है।"

-"राइट सर !" एस. आई. ने कहा।

- "आओ चलें।" बलराज ने मुझसे कहा।

मैं उसके साथ फ्लैट से निकला।

इमारत से बाहर आकर जीप में सवार हुए और उस दुकान की और रवाना हो गए जहां से वैक्यूम क्लीनर खरीदा गया था।

दुकान बहुत बड़ी थी। घरेलू इस्तेमाल की लगभग तमाम चीजें वहां उपलब्ध थीं। वहां अभी भी सेल लगी था और ग्राहक खासी तादाद में मौजूद थे।

हम सीधे मैनेजर के पास पहुंचे।

वहां एक हैड कांस्टेबल को पहले से ही मौजूद पाकर मैं हैरान रह गया।

उसे देखते ही बलराज के चेहरे पर सन्तुष्टिपूर्ण मुस्कराहट-उभरी।

मैं समझ गया । मुझे साथ रखने के बावजूद बलराज मुझे सिर्फ उतना ही बताता रहा था,जितना कि मैं पूछ बैठता था, या फिर जितना वह बताना चाहता था। असलियत यह थी-प्राप्त तथ्यों और अपने अनुमानो के आधार पर वह इस सिलसिले की खासी साफ तस्वीर बना चुका था।

मैनेजर के दफ्तर में जो हैड कांस्टेबल बैठा था, उसे पिछली रात मेरे ही सामने बलराज ने उस सोफासैट के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए कहा था, जो बवेजा के फ्लैट में बे-मेल और घटिया चीज के रूप में मौजूद था और जिसे बकौल विमला बवेजा ने पिछले दो हफ्तों के दौरान खरीदा था। यानी जब उसे उसी के फ्लैट में कैद करके टॉर्चर किया जा रहा था।

बलराज को देखते ही हैड कांस्टेबल बड़े अदब के साथ खड़ा हो गया।

-"कुछ बात बनी दौलतराम।" बलराज ने उससे पूछा।

दौलतराम मुस्कराया।

-"यस सर !" उसने जवाब दिया -"यहीं आकर बनी है। वह सोफासैट यहीं से खरीदा गया था।"

-"कब ?"

-"पिछले महीने की पच्चीस तारीख को ।"

-"खरीदार कौन था ?"

- "सज्जन कुमार बवेजा ।"

बलराज मुस्कराया।

-"यानी इस दुकान से सोफा खरीदने वाले ने सज्जन कुमार बवेजा के नाम की कैशमीमो बनवाई थी ?"

-"यस सर । मैंने उसी के नाम से पूछताछ की शुरूआत की थी। जो सेल्समैन फर्नीचर विभाग में है उसने कैशमीमो बुक देखकर बता दिया है कि इस नाम के आदमी को पच्चीस तारीख को सोफासैट बेचा गया था। दौलतराम उत्साहित स्वर में कह रहा था-"हालांकि यहां पिछले दो हफ्ते से सेल लगी हुई है ओर करीब पांच दर्जन उस किस्म के सोफासैट बेचे जा चुके हैं। रोज नए-नए ग्राहक आते हैं और चले जाते हैं। उनकी सूरतें याद रख पाना नामुमकिन है, लेकिन एक खास वजह से उस सेल्समैन को सज्जन कुमार बवेजा का पूरा हुलिया तक याद है।"

बलराज की मुस्कराहट गहरी हो गई।

-"मैं समझ गया।" वह बोला-"वह आदमी औसत कद और सामान्य स्वास्थ्य वाला था। उसके कंधे झुके हुए थे। उसके सर और तमाम चेहरे पर इस ढंग से पट्टियां लिपटी हुई थीं कि उसकी बस आंखें ही आंखें नजर आती थीं "और हाथों के आधार पर उसका रंग गेहुंआ था।"

दौलतराम ने अपार हैरानगी से उसकी ओर देखा।

-"यस सर। यही हुलिया था। मुंह पर भी पट्टियां होने की वजह से वह फंसी-सी आवाज में बोलता था।"

-"जरूर बोलता होगा।" बलराज ने कहा-"उसके जिस्म पर तनिक लम्बा और ढीला, नीली-काली धारियों वाला शानदार सूट भी होगा। वह वैसी ही धारियों वाली टाई और हल्की-नीली कमीज भी पहने होगा।"

-"यस सर !"

-"क्या उसने वैक्यूम क्लीनर भी खरीदा था ?"

-"पता नहीं, सर।"

बलराज मैनेजर की ओर आकर्षित हो गया।

-"आपके यहां वैक्यूम क्लीनर्स भी सेलं में शामिल हैं ?"

-"जी हां।" मैनेजर ने जवाब दिया।

-"जरा उस सेल्समैन को बुलाइए, जो उनकी सेल देख रहा है। उससे कहिए कि वह पिछले दो हफ्ते की सेल का रिकार्ड भो ले आए।"

मैनेजर उठा और बाहर निकल गया।

मुश्किल से दो मिनट बाद ही वह एक नवयुवक सहित वापस लौटा।

बलराज ने उस नवयुवक को उसी आदमी का हुलिया बताया, जिसने बैंक में खुद को हरचरनजीत सिंह ठुकराल बताया था और इस दुकान पर सोफा खरीदते वक्त सज्जन कुमार बवेजा।

नवयुवक ने साफ इंकार कर दिया कि ऐसा कोई आदमी कभी उससे कुछ खरीदने नहीं आया।

बलराज ने उस वैक्यूम क्लीनर के, जो हमने नीरा के फ्लैट में देखा था, साइज. वगैरा के बारे में बताने के बाद पूछा कि पिछले दस-बारह दिन में ऐसे कितने वैक्यूम क्लीनर्स बेचे गए थे ?

-"सिर्फ दो ।" नवयुवक ने जवाब दिया।

-"किस-किस को ?"

नवयुवक अपनी बगल में दबी कैशमीमो बुक निकालकर उसके पेज पलटने लगा।

-"एक बेचा गया था-क्लाथ सैंटर नामक कपड़े की एक दुकान को।" वह तनिक रुककर बोला और पुन: पेज पलटने लगा। अन्त में बोला-"दूसरा किसी नीरा मलकानी ने खरीदा था।"

-"उसका पता लिखा है ?"

नवयुवक ने जो पता बताया वो हत्प्राण नीरा मलकानी का ही पता था।

-"यह खरीदारी की कब थी उसने ?" बलराज ने पूछा।

-"पिछले महीने की पच्चीस तारीख को।"

-"नीरा मलकानी का हुलिया बता सकते हो ?"

नवयुवक ने चोर निगाहों से अपने मैनेजर की ओर देखा। फिर अपेक्षाकृत धीमे स्वर में बोला-"वह इंतिहाई खूबसूरत थी और उसमें गजब की सैक्स अपील थी । वह ।"

-"बस इतना ही काफी है।" बलराज ने हाथ उठाकर उसे रोका। फिर पूछा-"जो वैक्यूम क्लीनर तुमने उसे बेचा था, उसकी फरमाइश खुद उसी ने की थी या तुमने जबरदस्ती उसके गले मढ़ दिया था?"

-"उस जैसी माडर्न और खूबसूरत कस्टमर पहले कभी मेरे पास नहीं आई थी।" नवयुवक ने बड़ी साफगोई से कहा-"उसकी खूबसूरती के रौब में आकर मैंने बड़े अच्छे ढंग से उसे अटैंड किया था। मझे अच्छी तरह याद है उस वैक्यूम क्लीनर की फरमाइश उसी की थी। मैंने उसे अच्छी क्वालिटी के वे सभी वैक्यूम क्लीनर्स दिखाए थे, जिनका सक्शन अच्छा है और जो दो कमरों के फ्लैट के लिए एकदम सही चीज हैं। वे इतने हल्के हैं कि औरतें आसानी से उन्हें इस्तेमाल कर सकती हैं लेकिन वे उसे पसंद नहीं आए। उसका कहना था वैक्यूम क्लीनर चाहे जितना बड़ा और भारी हो, लेकिन वो ऐसा होना चाहिए, जो कारपेट को ही नहीं, बल्कि कारपेट के नीचे फर्श को भी अच्छी तरह साफ कर दे.।" सहसा उसके चेहरे पर मुस्कराहट पुत गई-"मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि इतना बडा और भारी वैक्यूम क्लीनर उसके लिए बेकार था। उसकी जिद देखकर मुझे यहां तक कहना पड़ा कि उसे इस्तेमाल करने में वह अपनी रीढ़ की हड्डी तुड़ा बैठेगी, लेकिन वह जोर-जोर हँसने लगी और पहलवानों की भांति अपनी बाहें मोड़ती हुई बोली कि ऐसा कुछ नहीं होगा।"

-"वैक्यूम क्लीनर को वह अपने साथ ले गई थी या बाद में डिलीवर किया गया था?"

नवयुवक ने पैड पर निगाह डाली।

-"उसने डिलीवरी चार्जिज दिए थे।" वह बोला-"इसका मतलब है उसे होम डिलीवरी दी गई थी।"

बलराज ने नवयुवक की अच्छी याददाश्त की तारीफ करते हुए उसे धन्यवाद दिया।

नवयुवक चला गया।

वैक्यूम क्लीनर और सोफा एक ही दिन, यानी पिछले महीने की पच्चीस तारीख को खरीदे गए थे। इसके सिवाय इन दोनों चीजों की खरीदारी में कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था।

नीरा को वैक्यूम क्लीनर की होम डिलीवरी दी गई थी जबकि सोफा खरीदने वाला खुद ही उसे अपने साथ लाई वैन में लदवाकर ले गया था।

दुकान के जिन दो आदमियों ने सोफा वैन में लदवाया था वे वैन का नम्बर तो नहीं बता सके, लेकिन वक्त उन्होंने जरूर बता दिया। उन्होंने ठीक ढाई बजे सोफा वैन में लदवाया था।

बलराज ने सहयोग के लिए मैनेजर को धन्यवाद दिया।

दुकान से बाहर आकर, हम पुन:पुलिस जीप में सवार हो गए।

जीप वापस पुलिस हैडक्वार्टर की ओर भागने लगी।

नीरा द्वारा ओवर साइज वैक्यूम क्लीनर की खरीदारी से जाहिर था कि उसका भी इस.बखेड़े से बड़ा पूरा ताल्लुक रहा था, लेकिन मेरे दिमाग में एक और सवाल इस संदर्भ में उभर रहा था।''

-''बवेजा के इस टॉर्चर एंड मर्डर के पीछे कोई मोटिव भी तो रहा होगा।'' मैंने कहा।

बलराज मुस्कराया।

-''तुम्हें मोटिव नजर नहीं आया ?''

-''एक्सटार्शन बाई टार्चर यानी बवेजा को यातनाएं देकर उसकी रकम हड़पना।''

-''यही था।''

-''लेकिन इसमें एक गड़बड़ है।''

-''क्या ?''

-''नए सोफे की खरीदारी।''

-''कैसे ?''

-''सोफा पिछले महीने की पच्चीस तारीख को ढाई बजे खरीदा गया था। उसी दिन दो बजे तक हरचरनजीत यानी वह आदमी, जिसका चेहरा पट्टियों से ढका हुआ था, बवेजा को लगभग बिल्कुल कंगाल कर चुका था। बवेजा के छोटे-छोटे बिलों का भुगतान उसने इसलिए किया था, ताकि उन बिलों का भुगतान लेने कोई फ्लैट मे न आ धमके, लेकिन बवेजा के फर्निश्ड फ्लैट के लिए नया सोफा खरीदने की जहमत उठाने और इस चक्कर में पूरे आठ सौ रुपए गंवाने की क्या तुक थी ?''

बलराज हँसा।

-"तुम भूल गए कि बवेजा के फ्लैट की खिड़कियों पर काले पर्दे लगाए गए थे। फ्लैट की बड़ी बारीकी से सफाई की गई थी। इतनी ज्यादा बारीकी से उसके लिए तगड़े सक्शन वाला ओवर-साइज वैक्यूम क्लीनर इस्तेमाल करना पड़ा था। पलंग को पेचों से फर्श के साथ कसा गया था, फिर पेचों को बड़ी होशियारी के साथ पलंग से अलग करके पेचों के सुराख भरने की हर मुमकिन कोशिश की गई थी।"

अपने सवाल के जवाब में यह सब सुनना मुझे अटपटा लगा, लेकिन मैंने ऐसा जाहिर नहीं किया । वार्तालाप के रुख की परवाह न करते हुए में बोला-"मैं कुछ नहीं भूला हूं। मुझे यह भी याद है कि पेचों के सूराख भरने के बाद उनके निशानों पर सिर्फ पालिश की गई थी। उन पर वार्निश नहीं लगाई गई थी।"

बलराज की आंखें सिकुड़ गयीं।

-"वार्निश का मसला सचमुच बड़ा पेचीदा है।" वह विचारपूर्ण स्वर में बोला-"यह ठीक है कि उसका रहस्य मेरी समझ में, भी नहीं आ रहा है, लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूं उसका रहस्य समझ में आते ही यह सारा केस आइने की तरह साफ नजर आने लगेगा।"

-"वार्निश का इतना ज्यादा महत्व है ?"

-"कम से कम मैं तो यही समझता हूं और वक्त आने पर साबित करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तुम खुद ही देख लोगे । मैं अभी भी अपने सवाल का जवाब जानना चाहता था।

-"ठीक है,फिलहाल हम वार्निश को भूल जाते हैं। सोफे के बारे में बताओ।"

-"सोफे की तब्दीली कोई रहस्य नहीं है।" बलराज ने लापरवाही से कहा। फिर बोला-"लेकिन वार्निश को नहीं भुलाया जा सकता । वो इस केस के सबसे अहम दो पहलुओं में से एक है।"

मैं तनिक चकराया।

-"दूसरा पहलू कौन-सा है ?"

-"बवेजा की वक्त से काफी पहले हत्या।"

-"इन दोनों बातों का जवाब जब मिलेगा,मिलता रहेगा!" मैं जिद भरे लहजे में बोला-"इस वक्त तुम मुझे यह बताओ कि बवेजा का सोफा क्यों बदला गया था ?"

-"इसका जवाब सुनने से पहले यह जान लो कि मैं तमाम एवीडेंसेज को इस नजरिए से दख रहा हूं कि योजना में किसी गड़बड़ी की वजह से बवेजा की हत्या उसके

जख्म भरने से पहले ही कर दी गई थी।" बलराज ने आत्मविश्वासपूर्वक कहा-"बवेजा के मुंह से बड़ी एहतियात के साथ एडहेसिव टेप हटाया जाना और उसके हाथ-पैरों में बंधी चमड़े की पेटियों में मेमने की ऊन की पैडिंग पाया जाना जैसे और भी सबूत हैं, जिनसे साफ जाहिर होता है कि मूल योजना के तहत बवेजा को उसके जख्म भरने तक जिन्दा रखा जाना था। हम यह भी मान चुके हैं कि बवेजा को अपने कब्जे में करने के लिए सबसे पहले उसके सर पर किसी कठोर चीज से प्रहार करके उसे बेहोश किया गया था और प्रहार इतना तगड़ा था कि उसके सर से खून भी काफी निकला था।" वह मुस्कराया, फिर पूछा-"तुमने नीरा के सोफे की हालत देखी थी ?"

मैंने सर हिलाकर हामी भरी।

-"हां... उस पर काफी बड़ा दाग मौजूद था, जो तुम्हारे विचार से खून का था और उसे धोकर पानी से छुड़ाने की असफल कोशिश की गई थी, जिसकी वजह से सोफा गीला हो गया था।"

-"बवेजा के सोफे पर भी वैसा ही खून का दाग लगा था, लेकिन उसे धोकर छुड़ाने की कोशिश नहीं की गई थी, क्योंकि खून के दाग को इस ढंग से नहीं मिटाया जा सकता था कि उसका निशान भी बाकी न रहे । उस सूरत में सिर्फ एक ही तरीका बाकी बचता था-उस सोफे को ही बदल दिया जाए।"

मैं प्रशंसापूर्वक बलराज को देखने लगा।

उसके जवाब से मैं पूरी तरह संतुष्ट था। सोफे की तब्दीली की इससे ज्यादा तर्कसंगत और तथ्यपूर्ण वजह और कोई हो ही नहीं सकती थी।

मुझे एक और भी बात खटक रही थी। मैंने उसे भी पूछ लेना ही बेहतर समझा।

-"तुम नीरा की हत्या के मामले में दिलचस्पी क्यों नहीं ले रहे हो ?"

बलराज हंसा।

-"यह वहम तुम्हें कैसे हो गया ? मेरी उसमें भी उतनी ही दिलचस्पी है जितनी कि बवेजा के केस में। उसके सोफे की हालत देखने के बाद ही तो मुझे सूझा था कि बवेजा के सोफे की भी वैसी ही हालत हुई होगी।

-"तुम्हारे विचार से नीरा की हत्या की क्या वजह हो सकती है ?"

-"वैक्यूम क्लीनर के बारे में जानने के बाद भी वजह तुम नहीं समझे.....?"

-"नहीं। मैं सिर्फ इतना समझ सका हूं कि बवेजा की हत्या से नीरा का कोई-न-कोई रिश्ता जरूर था।"

-"जब तुम इतना समझ गए हो तो, तुम्हें यह भी समझ जानां चाहिए था कि इन मामलों में ऐसा ही होता हे।

-"क्या मतलब ?"

-"बवेजा के साथ जो हुआ वो साझे की हंडिया के नतीजे के तौर पर हुआ था।" बलराज ने जवाब दिया-"साझे की हंडिया पककर तैयार होने के बाद उसे खाने का वक्त आया तो, खींचतान शुरू हो गई। मेरे कहने का मतलब है कि बवेजा से रकम ऐंठने के बाद जब बांटवारे की नौबत आई तो समस्या खड़ी हो गई । साझीदार रकम को बांटकर अपनी-अपनी राह नहीं पकड़ सकते थे। मामला ठंडा पड़ने तक चुपचाप सब्र के साथ बैठे रहना जरूरी था, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। किसी एक साझीदार के दिमाग में अपने साथियों को डबल क्रास करने की योजना बनने लगी। उसने सोचा हिस्सा बांटने के लफड़े में पड़ने से बेहतर है कि सारा माल खुद ही हड़प लिया जाए, अगर बवेजा की हत्या की मूल योजना सौ फीसदी कामयाब हो जाती तो ऐसा आसानी से किया जा सकता था लेकिन किसी एक साझेदार की वजह से योजना गड़बड़ा गई और बवेजा की हत्या जल्दी करनी पड़ी। बाकी हिस्सेदारों को यह अच्छा नहीं लगा, क्योंकि इस किस्म की साझेदारी में चूक के लिए कोई गुंजाइश नहीं होती और इन हालात में जब विनोद जैसा आदमी आसपास मौजूद होता है तो नतीजा खतरनाक ही निकलता है।"

-"इनका मतलब बवेजा की हत्या की योजना में गड़बड़ के लिए नीरा जिम्मेदार थी ?"

-"लगता तो यही है।"

-"और उसकी हत्या विनोद ने की थी?"

-"शायद !"

-"तो फिर तुम विनोद को पकड़कर उससे सच्चाई क्यों नहीं कबुलवा लेते ?"

-"विनोद को सिर्फ पूछताछ के लिए पकड़ा जा सकता है। उसका आदेश मैं दे ही चुका हूं।"

-"उस पर दबाव डालकर असलियत भी तो खुलवाई जा सकती है।"

-"तुम अच्छी तरह जानते हो कि खाली जोर-जबरदस्ती में मैं यकीन नहीं करता। मैं तथ्यों और सबूतों के आधार पर काम करता हूं।"

-"इसका मतलब विनोद के बारे में, जो तुमने कहा है वो महज तुम्हारा अनुमान है ?"

-"तुम्हें और क्या लगता है ?"

मैंने जवाब नहीं दिया।

हम पुलिस हैडक्वार्टर्स पहुंच गए।

बवेजा के केस से संबंधित जिन रिपोर्टों का बलराज को इन्तजार था, उनमें से कई आ चुकी थीं। एस० आई० अश्विनी शर्मा भी बलराज के ऑफिस में मौजूद था।

लेकिन बलराज ने उनकी ओर ध्यान देने की बजाय टेलीफोन उपकरण अपनी ओर खींचा और नम्बर डायल करने लगा।

-"किसे फोन कर रहे हो ?" मैंने पूछा।

बलराज मुस्कराया।

-"डॉक्टर मुलगांवकर को। नीरा के बेडरूम में बेंजीन की गंध मौजूद थी। मैं जानना चाहता हूं क्या उसके मुंह पर एडहेसिव टेप चिपकाए जाने के भी चिन्ह मिले हैं ?"

वह करीब दस मिनट तक फोन करने में व्यस्त रहा।

अन्त में रिसीवर वापस क्रेडिल पर रखने के बाद उसने मेरी ओर देखा तो उसके चेहरे पर संतुष्टिपूर्ण मुस्कराहट थी।

-"क्या रहा?" मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

-"नीरा की हत्या भी बवेजा की हत्या के पैटर्न पर ही की गई थी, लेकिन बड़े ही अनाडी ढंग से।" उसने जवाब दिया-"नीरा के सर पर कठोर चीज से तगड़ा प्रहार करके उसे बेहोश किया गया था। डॉक्टर के कथनानुसार प्रहार इतना तगड़ा था कि नीरा की खोपड़ी की हड्डी तक टूट गई थी।"

-"क्या उसकी मौत की वजह भी वही थी ?"

बलराज ने इस ढंग से मेरी ओर देखा, मानो मेरा हस्तक्षेप उसे बुरा लगा था।

-"नहीं।" उसने कहा फिर अपनी ही रौ में बोला-"डॉक्टर का अनुमान है कि जिस कठोर चीज से प्रहार किया गया था वो लोहे या पीतल की वो चीज भी हो सकती है जिसे आम बोल-चाल में घूंसा भी कहा जाता है। तुमने देखा है धातु का बना वो घूंसा ?"

- "हां।" मैंने जवाब दिया-"विभिन्न आकार-प्रकार में मिलने वाला वो घूसा वास्तव में लोहे या पीतल की करीब सात इंच लंबी एक मोटी रॉड होती है। उस पर उसी धातु की करीब-करीब उतनी ही मोटी एक मजबूत प्लेट लगी होती है। प्लेट की लम्बाई करीब पांच

इंच और चौड़ाई लगभग दो इंच होती है। प्लेट में उंगलियां फंसाने के लिए गोल छेद होते हैं जिनमें बाहर की ओर नोकें उथरी रहती हैं। उन छेदों में उंगलियां फंसाकर रॉड को मुट्ठी में भींच लिया जाता है। उस स्थिति में रॉड के दोनों सिरे मुट्ठी से करीब पौना-पौना इंच बाहर रहते हैं और प्लेट के गोल सुराखों की नोकें उंगलियों के मोड़ पर बाहर की ओर रहती हैं। वो घूंसा आसानी से जेब में छुप जाने वाला एक कारगर और खतरनाक हथियार है। उसका एक ही वार अच्छे-अच्छो की हुलिया टाइट कर देता है। सबसे बड़ी बात है कि सामान्य व्यक्ति भी इससे करारा प्रहार कर सकता है।"

बलराज मुस्कराया।

-"तुमने तो अच्छा-खास लैक्चर दे डाला । मैं उसी घूंसे की बात कर रहा था।" वह बोला-"नीरा के सर पर उससे प्रहार के अलावा शेष शरीर पर एक खरोंच का निशान भी नहीं मिला है।" वह पुनः मुस्कराया-"अलबत्ता होठों पर ऐसे निशान जरूर मिले हैं जिनके बारे में डॉक्टर का दावा है कि वे नीरा के मुंह से बेंजीन द्वारा एडहेसिव टेप छुड़ाने के निशान हैं।"

-"ओह !" मैं चौंकता-सा बोला-"इसीलिए नीरा के बेडरूम में बैंजीन की गंध मौजूद थी।"

–"हां और उसकी मौत भी बवेजा की भांति दम घुटने की वजह से हुई थी।"

मैंने बलराज को घूरा।

-"और बवेजा की भांति नीरा के नथुनों पर वार्निश के दाग भी मौजूद थे ?"

बलराज हँसा।

-"नहीं, इस दफा वार्निश के दाग नहीं पाए गए।"

-"नीरा की लाश के हाथ-पैर बंधे नहीं पाए गए थे।" मैंने मत व्यक्त किया-"इसलिए मैं समझता हूं हत्या करने के फौरन बाद उसे बंधन-मुक्त कर दिया गया था।"

-"हो सकता है ऐसा हुआ हो, लेकिन डॉक्टर को ऐसा कोई चिन्ह नहीं मिला, जिसके आधार पर कहा जा सके कि नीरा के हाथ-पैर बांधे गए थे।"

-"नीरा को टॉर्चर भी किया गया था ?"

-"इसका कोई चिन्ह उसके शरीर पर तो मिला नहीं है।"

-"अगर उसे टॉर्चर नहीं किया गया तो, उसके मुंह पर टेप चिपकाने की क्या जरूरत थी ?"

-"तुम्हारा क्या विचार है इस बारे में ?" बलराज ने इस ढंग से पूछा मानो मेरा इम्तहान ले रहा था।

-"नीरा के मुंह पर टेप चिपकाए जाने से जाहिर है कि उसे टॉर्चर किया गया था। मैंने जवाब दिया-"लेकिन बवेजा की भांति नहीं कि जिस्म पर यातनाओं के निशान छूट जाएं।"

-"फिर किस ढंग से ?"

-"नीरा की बाहें, उंगियां वगैरा मरोड़कर।"

बलराज मुस्कराया।

-"हो तो सकता है।" वह बोला-"लेकिन ऐसा हुआ नहीं था।"

-"यह तुम कैसे कह सकते हो ?"

-"डॉक्टर मुलगांवकर की रिपोर्ट के आधार पर।" बलराज बोला-"उसने विश्वासपूर्वक कहा है, सर में हुए फ्रेक्चर की वजह से नीरा तुरन्त बेहोश हो गई थी-और फिर आखिर तक होश में नहीं आई। फ्रेक्चर इतना गम्भीर था कि उसे तुरन्त हॉस्पिटल ले जाना निहायत जरूरी था, लेकिन उसे कोई डॉक्टरी सेवा मुहैया नहीं करायी गयी थी। उस सूरत में वो फ्रेक्चर भी निश्चित रूप से घातक सिद्ध होना था।"

-"लेकिन नीरा की मौत की वजह तो,वो फ्रेक्चर नहीं था ?"

-"नहीं। उसे भी बवेजा की भांति दम घोंटकर मारा गया था।"

-"लेकिन जब उसने फ्रेक्चर की वजह से ही मर जाना था तो उसका दम क्यों घोंटा गया ?"

-"यह डॉक्टर का विचार है कि डॉक्टरी चिकित्सा के अभाव में फ्रेक्चर घातक सिद्ध होना था। हत्यारे को इसकी जानकारी कैसे हो सकती थी।" बलराज ने कहा-"तुमने नीरा को टॉर्चर किए जाने की बात कही थी, लेकिन ऐसा नहीं किया गया था। इसकी एक और भी तगड़ी वजह है।"

-"क्या ?"

-"बकौल डॉक्टर सुलगांवकर सर पर प्रहार किए जाते ही नीरा बेहोश हो गई थी और आखिर तक बेहोश रही थी और किसी बेहोश औरत को टॉर्चर करने की कोई तुक नहीं होती।"

-"किसी बेहोश औरत के मुंह पर टेप चिपकाकर उसका मुंह बन्द करने की ही क्या तुक थी ?"

-"मैं यकीनी तौर पर तो कुछ नहीं कह सकता लेकिन मुंह पर टेप चिपकाए जाने की कई दूसरी वजह हो सकती हैं।"

-"तुम एक ही माकूल वजह बता दो।" मैंने चुनौती दी। बलराज ने चंद पल सोचा, फिर मुस्कराया।

-"सुनो, नीरा के सर के पृष्ठ भाग पर धातु के घूंसे से प्रहार किया गया था।" वह बोला-"नीरा तुरन्त बेहोश हो गई, लेकिन हमलावर के पास यह जानने का कोई साधन नहीं था कि वह कितनी देर बेहोश रहेगी, क्योंकि यह जानने का कोई तरीका है ही नहीं कि प्रहार द्वारा बेहोश हुआ व्यक्ति वास्तव में कितनी देर बेहोश रहेगा। इसलिए हमलावर को आशंका रही होगी कि नीरा उसके अपेक्षित समय से पहले होश में आकर चीखना-चिल्लाना शुरू कर सकती थी। उस स्थिति से बचने के लिए उसने सबसे आसान तरीका अपनाया और बेहोशी की हालत में ही टेप चिपकाकर नीरा का मुंह बन्द कर दिया।"

-"तुम्हारी इस बात में दम है।" मैंने सहमति जताते हुए कहा-"यह उस व्यक्ति की कार्य-प्रणाली पर भी खरी उतरती है जो खून से सने सोफे की जगह नया सोफा रखने की बात तक सोच सकता है।"

बलराज मुस्कराया।

-"शुक्र है कि तुम्हारी तसल्ली हो गई।" उसने कहा, फिर वह अश्विनी शर्मा से मुखातिब हो गया-"क्या खबर लाए हो सुपरमैन ?"

अश्विनी शर्मा ने बताया कि उन तमाम बैंकों में हरचरनजीत सिंह ठुकराल के नाम से जाना जाने वाले आदमी का सर और तमाम चेहरा पट्टियों से ढंका हुआ था। वह नीली-काली धारियों वाला सूट, वैसी ही मैचिंग टाई और हल्की नीली कमीज पहने था। उसने बाईस तारीख को उन बैंकों में खाता खोला, बवेजा के चैक जमा कराए और पच्चीस तारीख को सभी बैंकों में सौ-सौ रुपया बैलेंस छोड़कर बाकी तमाम रकम निकाल ली थी।

साबित हुआ कि बवेजा का मर्डर, एक्सटार्शन बाई टॉर्चर का केस था। हरचरनजीत सिंह ठुकराल ने अपनी योजना के तहत बवेजा के सभी बैंकों में मौजूद बैलेंस को बड़ी सफाई से हड़प लिया था।

बलराज ने अपने डेस्क पर पड़ी एक रिपोर्ट उठा ली। स्थानीय पुलिस की इस रिपोर्ट के मुताबिक सज्जन कुमार बवेजा पिछले दो सालों से बड़ी कुशलता के साथ हाई क्लास कॉल गर्ल्स रैकेट चला रहा था। पुलिस को उसके खिलाफ कोई ऐसा ठोस सबूत नहीं मिला था जिसके दम पर उसे रंगे हाथों पकड़ा जा सके, लेकिन पुलिस को किसी मुनासिब मौके की तलाश थी और वे लोग बराबर सज्जन कुमार बवेजा को वाच कर रहे थे। रिपोर्ट में आगे

कहा गया था कि बवेजा पिछले करीब दो हफ्तों से अपने निश्चित ठिकानों पर दिखाई देना बंद हो गया था।

बलराज कुछ देर चुपचाप बैठा सोचता रहा।

-"इसका मतलब मालती वर्मा ने बवेजा के बारे में ठीक ही कहा था।" अन्त में वह बोला- "बवेजा के विभिन्न बैंकों में बैलेंस से यह भी जाहिर है कि उसका धन्धा बहुत ही बढ़िया चल रहा था। मेरा ख्याल है,बैंकों में जमा राशि के अलावा बवेजा अपने फ्लैट में भी काफी मोटी नगद रकम रखता होगा, और हरचरनजीत सिंह ने उस रकम पर भी जरूर हाथ साफ किया होगा लेकिन मेरी दिलचस्पी उसकी कुल रकम की मोटाई में उतनी नहीं है जितनी कि तारीखों में है। बाईस तारीख को बवेजा ने चैक इशू किए थे और पच्चीस तारीख को उसकी तमाम रकम बैंकों से निकाल ली गई। इस सिलसिले की जो तस्वीर मेरे दिमाग में है उस पर ये बातें न सिर्फ पूरी तरह फिट बैठती हैं बल्कि इनसे वो तस्वीर और ज्यादा साफ हो गई है ।" कहकर वह तनिक रुका फिर बोला-"बवेजा को कैद करने के बाद टॉर्चर किया गया था ताकि वह सभी बैंकों में अपने बैलेंस के चैक काटकर दे-हरचरनजीत सिंह ठुकराल के नाम। फिर किराए की रकम, टेलीफोन, बिजली और पानी के बिलों के भुगतान के लिए भी उसे टॉर्चर करके ही चैक साइन कराए गए थे, क्योंकि उन हालात में खुद बवेजा ने तो, इस उम्मीद में वे चैक नहीं काटने थे कि उनकी अदायगी न होने की वजह से कोई उस तक ही आ पहुंचे तो, बेहतर था। यह करने और बवेजा की रकम हड़पने के बाद उसे टॉर्चर करने वालेने उसके जख्म भरने तक इन्तजार करना था ताकि कोई भी सबूत छोड़े बगैर उसकी हत्या को दुर्घटनात्मक मृत्यु का रूप दिया जा सके ।"

-"इस तस्वीर में दो ही खामियां हैं।" मैंने कहा।

-"क्या ?" बलराज ने पूछा ।

-"नम्बर एक, हत्यारे ने इन्तजार क्यों नहीं किया ? नंबर दो, बवेजा के नथुनों पर वार्निश की मौजूदगी की क्या वजह थी ?"

इससे पहले कि बलराज इन सवालों के जवाब देता एक एस० आई० भीतर दाखिल हुआ। उसने बताया कि राकेश मोहन ओर विनोद को पकड़कर लाया जा चुका था।

-"गुड ।" बलराज ने कहा-"उन्हें एक-एक करके मेरे पास लाओ। पहले विनोद को फिर राकेश को।"

चंद क्षणोपरांत विनोद को लाया गया।

वह पूरी तरह सामान्य था।

-"कैसे याद फरमाया, इन्सपेक्टर ?" उसने पूछा।

-"बैठो !" बलराज ने शुष्क स्वर में कहा।

विनोद लापरवाही से एक कुर्सी पर बैठ गया।

-"पिछली रात तुम कहां थे ?" बलराज ने पूछा।

-"राकेश से पूछो।" विनोद ने दो टूक स्वर में जवाब दिया।

-"मैं तुमसे पूछ रहा हूं।"

-"मुझसे पूछने का कोई फायदा नहीं । राकेश से पूछो।"

-"मैं उस ढंग से पूछताछ नहीं करता।"

-"यह आपका अपना नजरिया है, इन्सपेक्टर!"

-"नजरिया मेरा जरूर है लेकिन गर्दन तुम्हारी है, जो इस दफा पूरी तरह फंस चुकी है। तुम बच नहीं सकोगे।"

-"में कुछ नहीं जानता। राकेश से पूछो।"

-"मैं तुमसे पूछ रहा हूं, क्योंकि इस दफा कोई भी जज तुम्हें कमसिन समझकर तुम पर रहम नहीं खाने वाला।"

-"मैं किसी जज की रहमदिली का मोहताज नहीं हूं। मैंने कुछ नहीं किया है।"

-"मुझसे उड़ने की कोशिश मत करो। यह बताओ, पिछली रात तुम कहां थे ?"

- "राकेश से पूछो।"

अगर बलराज की जगह कोई ओर पुलिस इन्सपेक्टर होता तो, उसे ताव आ जाना था और उसने विनोद पर हाथ उठा देना था। लेकिन बलराज सामान्य बना रहा।

-"देखो, मैं न तो. तुमसे कोई वादा कर रहा हूं और न ही कोई सौदा।" वह विनोद को समझाता हुआ बोला-"सिर्फ तुम्हारी भलाई की खातिर तुम्हें बता रहा हूं।" अचानक उसका स्वर कड़ा हो गया- "अगर मेरा वश चलता तो, मैंने तुम्हें फांसी के फंदे पर पहुंचा देना था, क्योंकि तुम एकदम बेकार आदमी हो। तुम न तो अपना भला कर सकते हो न ही किसी और का, लेकिन मुझे अफसोस है कि यह मेरे वश की बात नहीं अदालत का काम है ।"

-"मुझे किसी अदालत से कोई मतलब नहीं। में बता चुका हूं, मैंने कुछ नहीं किया।"

"तुम पिछली रात कहां थे ?"

"राकेश से पूछो।"

-"राकेश भी इस बखेड़े में तुम्हारे साथ गले तक फंसा हुआ है। बताने की जरूरत नहीं कि इस सिलसिले में उसी के दिमाग ने काम किया था। तुमने सिर्फ वही किया जो उसने तुमसे करने को कहा था।"

-"पता नहीं आप क्या कह रहे हो । मैं इतना जानता हूं हम दोनों ने कुछ भी नहीं किया है।"

मैं विनोद की बात पर यकीन नहीं कर सका, लेकिन जिस तरह वह इत्मीनान से बैठा बातें कर रहा था, उसे देखते हुए उस पर यकीन न करने की भी कोई वजह दिखाई नहीं दी। प्रत्यक्षतः वह इस स्थिति से पूरी तरह एनज्वॉय करता प्रतीत हो रहा था। बातचीत करने का उसका लहजा जिद भरा था। उसके चेहरे पर बेफिक्री और लापरवाही के स्पष्ट भाव थे । वह जरा भी व्याकुल या चिंतित नजर नहीं आ रहा था।

-"अगर तुम किसी चमत्कार या संयोग की आशा कर रहे हो तो, यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है।" बलराज ने धैर्यपूर्वक कहा-"इस दफा तुम्हारे लिए कोई चांस नहीं है ।"

-"मैं अच्छी तरह जानता हूं मेरे लिए कितने चांस हैं।"

-"सिर्फ एक मामूली-सा चांस है,अगर उसे चांस कहा जाए।"

–"क्यो ?"

-"अगर तुम अपनी मर्जी से सब-कुछ सच कबूल कर लेते हो तो मुमकिन है अदालत को तुम पर थोड़ा रहम आ जाए। हालांकि इस बात की भी गारंटी तो नहीं की जा सकती, लेकिन समझदारी इसी में है कि तुम अपना जुर्म कबूल कर लो।"

विनोद हँसा।

-"सलाह के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया, इन्सपेक्टर। फिलहाल तो मुझे ऐसी सलाह की जरूरत हे नहीं, हां, आइंदा के लिए जरूर याद रखूगा।"

-"तुम पिछली रात कहां थे ?"

-"राकेश से पूछो ।"

-"क्या राकेश ने तुमसे यही कहने के लिए कहा था कि जो भी सवाल पूछा जाए उसके जवाब में बस यही कहते रहा-राकश से पूछो ।"

विनोद मुस्कराया।

-"राकेश से ही पूछो।"

बलराज ने भौहें चढ़ाकर उसे घूरा।

-"तुम्हारी नादानी पर मुझे गुस्सा नहीं तरस आता हे ।" वह बोला- "तुम हद दर्जे के बेवकूफ आदमी हो । तुम्हें अपना भला-बुरा सब दिखाई दे रहा है, फिर भी तुम इस बारे में कुछ सोचना नहीं चाहते । तुमने अपने दिमाग से काम लेना बन्द कर दिया है, क्योंकि तुम्हारे लिए यह काम कोई और कर रहा है। तुम दूसरे के इशारों पर नाचने वाली कठपुतली बन गए हो। मेरे सामने बैठकर बेफिक्री जाहिर करने का अभिनय भी तुम इसी वजह से कर रहे हो । तुम खुद को महफूज समझ रहे हो, क्योंकि इस दफा तुम्हारे साथ एक बेहद सुलझा हुआ दिमाग है।" उसने तनिक रुककर यूं विनोद की ओर देखा मानो अपनी बात का प्रभाव जानना चाहता था, लेकिन विनोद पर इसका रत्ती भर भी प्रभाव हुआ नजर नहीं आया। बलराज ने पुन: कहना आरम्भ किया-"तुम्हारी बदकिस्मती है, तुम नहीं जानते कि जब किसी जुर्म में बेहद सुलझा हुआ दिमाग शरीक होता है तो, वह तुम जैसे आदमी को सिर्फ मोहरा ही बनाता है। तुम जैसे आदमी की फिक्र करने की बजाय वो सिर्फ अपनी फिक्र करता है और सिर्फ अपनी ही महफूजियत के बारे में सोचता है। तुम जैसे आदमी को अपने मतलब के लिए इस्तेमाल करने के बाद वह उसे उसी के हाल, पर छोड़ देता है।" वह पुन: तनिक रुका फिर बोला-"तुम अपनी इस राकेश से पूछो'- 'राकेश से पूछो' रट की असलियत नहीं समझ पा रहे हो, लेकिन में बाखूबी समझता हूं, क्योंकि इस किस्म की स्थिति सैकड़ों दफा मेरे सामने से गुजर चुकी है। सुलझा हुआ दिमाग इस तरीके से तुम जैसे बेवकूफ को फांसी के फंदे पर पहुंचाकर खुद को साफ बचा जाता है । तुम्हें अपना मुंह बन्द रखने की हिदायत देते वक्त समझा दिया गया था कि कुछ न कहने ही में तुम्हारी खैरियत है, इसीलिए तुम जिद पकड़ बेठे हो, लेकिन तुम नहीं जानते ऐन वक्त पर वह अपनी जुबान खोलेगा और इस ढंग से खोलेगा कि सारा दोष तुम्हारा ही साबित होगा ओर जब तक तुम उसकी इस चाल को समझोगे, तब तक इतनी ज्यादा देर हो चुकी होगी कि तुम अपनी गलती को सुधारना चाहकर भी नहीं सुधार सकोगे।"

-"मानना पड़ेगा आप लैक्चर अच्छा दे लेते हैं,इन्सपेक्टर।"

विनोद उपहासपूर्वक बोला।

-"तुम अपने इस दोस्त राकेश मोहन के भरोसे बैठे हो।" बलराज उसी के स्वर में बोला-"लेकिन क्या तुम वाकई इस कदर बेवकूफ हो, जो इतना भी नहीं जानते कि तुमसे उसका मतलब पूरा हो चुका हे ? अब उसे तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। पिछली रात नीरा के फ्लैट में मैंने साफ नोट किया था कि वह तुमसे किनारा कर चुका है। अब उसे तुम्हारी

जरा भी परवाह नहीं है। वह तुम्हारा पुलन्दा बंधवा चुका है ओर तुम हो कि उसी की आस लगाए बैठे हो।''

बलराज ने जिस तरह मनोवैज्ञानिक ढंग से हमला किया था आमतौर पर उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप आदमी या तो बेचैनी से पहलू बदलना शुरू कर देता है या घबगहट में उसके चेहरे का रंग उड़ जाता है या फिर वह एकाएक गुस्स में चिल्ला पड़ता है, लेकिन विनोद पर ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह पूर्णतया सामान्य बना बैठा रहा।

-''आप समझते हैं, मेरा पुलंदा बंध चुका है ?'' उसने लापरवाही से पूछा।

बलराज मुस्कराया।

-''मैं समझता नहीं यकीनी तौर पर जानता हूं।'' उसने बड़े इत्मीनान से कहा-''योजना बहुत अच्छी थी और उसके तहत होने वाली उपलब्धि बहुत बड़ी थी। योजना का हर एंगिल से ठोक-बजाकर जांचने-परखने के बाद ही लागू किया गया था। किसी चूक की कोई गुंजाइश बाकी नहीं छोड़ी गई थी। प्लान सौ फीसदी कामयाब होना था ओर कोई उंगली तक भी नहीं उठा सकता था, लेकिन वो हंडरेड़ परसैंट फूलप्रूफ प्लान पिटकर रह गया था। किसलिए ? इसलिए नहीं कि प्लानिंग करने वाले ने कोई कमी छोड़ी थी, बल्कि इसलिए कि तुमने उस प्लान को चौपट कर दिया था। अपनी बेवकूफी से । तुम सैडिस्ट हो। दूसरों को यातनाएं पहुंचाकर लुत्फ उठाने के अपने शौक को पूरा करने का कोई भी मौका छोड़ना तुम्हारे वश की बात नहीं है। राकेश तुम्हारी इस कमजोरी को अच्छी तरह जानता है। इतना ही नहीं तुम्हारे इस शौक को बतौर खूबी इस्तेमाल करना भी उसे आता है। इस मामले में कब तुम पर अंकुश लगाना जरूरी है इस बात की जानकारी भी उसे है, लेकिन वह नहीं जानता कि अपने इस शौक को पूरा करने की तुम्हारे अन्दर कितनी प्रबल इच्छा है । लाख रोकने और अंकुश लगाए जाने के बावजूद अपनी इस इच्छा को पूरा करने से बाज आना तुम्हारे वश की बात नहीं है। अपनी इस इच्छा-पूर्ति के लिए तुम्हें जल्दबाजी करनी पड़ी। नतीजा यह हुआ कि सारा खेल बिगड़ गया और राकेश की योजना पिटकर रह गयी, क्योंकि तुम्हारी बेवकूफी की वजह से राकेश की योजना का सत्यानाश हुआ है, इसलिए तुम खुद भी अंदाजा लगा सकते हो कि तुम्हारा क्या अंजाम होगा ? राकेश तुम्हें ओर कितनी देर बरदाश्त करेगा ? और सबसे बड़ी बात है. खुद को बचाने के लिए क्या वह करगा तुम्हें बलि का बकरा नहीं बनाएगा

विनोद हँसा। ?''

-राकेश से पूछो।''

-"ठीक है, अगर तुम जान देने का फैसला कर ही चुके हो तो मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा।" बलराज उसे सर्द निगाहों से घूरता हुआ बोला-"मैं तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहने का एक मौका दे रहा था, लेकिन तुम उस मौके का फायदा नहीं उठाना चाहते।" फिर दरवाजे के पास खड़े दो कांस्टेबलों की ओर देखा-"इस बेवकूफ को वापस ले जाओ । जब इसका दोस्त और सरपरस्त अपना रिकार्ड सुना चुकेगा तब मैं इससे बातें करूंगा।"

विनोद खड़ा हो गया।

-"थेंक्यू, इन्सपेक्टर।" वह व्यंग्यात्मक स्वर में बोला-"एण्ड विश य गुड लक ।"

दोनों कांस्टेबल विनोद को लेकर चले गए।

मैंने बलराज की ओर देखा-

-"क्या वह सचमुच उतना ही बेवकूफ है जितना कि तुम उसे साबित करने की कोशिश कर रहे थे ?"

बलराज मुस्कराया

-"तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

-"लगता है राकेश ने उस पर तगड़ा ही जादू कर रखा है।"

-"विनोद उन आदमियों में से है जिन पर हर एक रंग आसानी से चढ़ जाता है। जहां तक जादू की बात है, सबसे बड़ा जादू तो उस. पर अपनी जिस्मानी ताकत का चढ़ा रहता है।"

-"अब मैं समझ सकता हूं कि राकेश ने कहां गलती की थी।"

बलराज ने मुझे घूरा।

-"अच्छा ! मुझे भी बताओ।"

-"मेरे विचार से राकेश खुद पर जरूरत से ज्यादा भरोसा कर बैठा था कि वह विनोद को हर हालत में कंट्रोल कर सकता है।"

-"क्या मतलब ?"

-"जब तक मामला टॉर्चर स्टेज में था, सैडिस्ट होने के नाते विनोद मशीनी ढग से काम करता रहा और उस मशीन का कंट्रोल राकेश के हाथ में था। वह जरूरत के मुताबिक इच्छानुसार विनोद का स्विच ऑन-ऑफ कर सकता था। वह विनोद से बवेजा को उतनी ही यातनाएं दिलाता रहा था, जितनी कि बवेजा से अपनी बात मनवाने के लिए जरूरी थीं।

दूसरी ओर वह इस बात का भी ध्यान रखता रहा होगा कि कम से कम इतनी यातनाएं जरूर दी जाएं कि यातनाएं देने में विनोद का भी पूरा मनोरंजन हो सके। उस स्टेज के बाद वो दौर आया जब उन लोगों ने बवेजा के जख्म भर जाने का इन्तजार करना था, क्योंकि उस दौरान विनोद को अपना मनपसन्द खेल खेलने का मौका नहीं मिला था, इसलिए राकेश ने उसे लालच दिया होगा कि अगर वह सब्र से काम लेगा तो, राकेश उसे हत्या करने का निहायत आसान और अचूक तरीका आजमाने का मौका भी देगा। जाहिर है, उस सूरत में विनोद ने उस तरीके के बारे में जरूर जानना चाहा होगा। राकेश ने उसे बताया होगा हाथ-पैर बंधे और मुंह पर टेप चिपके बवेजा के दोनों नथुनों को उंगलियों से दबाकर उसे मार डालना कितना आसान था । जान लेने के एकदम नए, आसान और कारगर तरीके की जानकारी मिलने के बाद विनोद खुशी से नाचने लगा होगा। वह जल्दी से जल्दी इस तरीके को अजमाने का मौका पाने की तलाश में रहने लगा, लेकिन राकेश को उसकी इस नीयत का आभास तक नहीं मिला। वह इसी गलतफहमी का शिकार रहा कि विनोद पर उसका पूरा कंट्रोल था। अपनी जरूरत के मुताबिक वह जब तक चाहे विनोद से इन्तजार करा सकता था।''

बलराज ने सिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

-''नहीं।'' वह बोला-''राकेश बेवकूफ नहीं है। इस सीधी-सी बात को वह भी बाखूबी समझता है। उसे मालूम है कि विनोद पर उसका कितना कंट्रोल है। प्रत्यक्षत:विनोद पर इस मामले में भरोसा करने में बड़ा भारी रिस्क था और राकेश रिस्क ले नहीं सकता था, क्योंकि वह रिस्क लेने वाला आदमी नहीं है। विनोद को उसका मनपसन्द काम राकेश ने सिर्फ उसे खुश रखने के लिए सौंपा । था।''

''क्या मतलब?'' मैंने जानना चाहा-''जब बवेजा की हत्या की गई थी, क्या उस वक्त वे लोग उसके जख्म भरने का इन्तजार नहीं कर रहे थे ?''

-''कर रहे थे।''

''तो फिर उस हालत में राकेश विनोद को इस बात की इजाजत कैसे दे सकता था कि वह महज अपने मनोरंजन के लिए बवेजा को टॉर्चर करता रहे ?''

-''हालात इसी बात की ओर संकेत करते हैं कि विनोद को इजाजत दी गई थी और वह बवेजा को टॉर्चर करता रहा था।''

-''तो फिर टॉर्चर के ताजा जख्म बवेजा की लाश पर क्यों नहीं पाए गए ?''

बलराज मुस्कराया-

-"तुम शायद नहीं जानते कि टॉर्चर करने के ऐसे भी कारगर तरीके हैं जिनके द्वारा टॉर्चर किए जाने वाले व्यक्ति पर असर तो पूरा होता है, लेकिन कोई निशान नहीं छूटता।" वह बोला-"ऐसी जूडो ट्रिक हैं कि किसी नस विशेष पर हल्का-सा दबाव पड़ते ही व्यक्ति दर्द से बिलबिला उठता है, अगर विनोद को ऐसी किसी ट्रिक की जानकारी नहीं है तो, राकेश को जरूर होगी। उसने विनोद को भी ऐसी दो-चार ट्रिक जरूर सिखाई होंगी। बवेजा उनके कब्जे में था ही और वक्त की कमी भी उनके पास नहीं थी। राकेश ने प्रेक्टिकल ट्रेनिंग देकर विनोद को माहिर बना दिया होगा, ताकि आइन्दा भी उससे फायदा उठाया जा सके।" वह तनिक रुका, फिर बोला-"विनोद कितना संगदिल और बेरहम हैं इस बात को मैं अच्छी तरह जानता हूं। मौजूदा हालात में क्योंकि उसके साथ एक सुलझा हुआ दिमाग भी है, इसलिए वह सब-कुछ कर सकता है।"

तभी राकेश भीतर दाखिल हुआ। उसके साथ आए दो कांस्टेवल दरवाजों के बाहर ही रुक गए थे।

राकेश, बलराज के डेस्क के सम्मुख पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठ गया।

-"हमें यहां क्यों बुलाया गया है, इन्सपेक्टर ?" उसने पूछा।

बलराज ने उसे घूरा

-"तुम्हें और विनोद को ?"

-"जी हां।"

-"विनोद को बुलाने की वजह तो तुम जानते ही हो। जहां तक तुम्हारा सवाल है, तुम्हें उसका दोस्त और सरपरस्त होने की वजह से बुलाया गया है।"

राकेश के चेहरे पर ऐसे भाव उत्पन्न हुए मानो बलराज की बात सुनकर उसे बहुत ज्यादा दुःख हुआ था।

-"आप एक मेहनती, ईमानदार और कार्य-कुशल अफसर हैं, इन्सपेक्टर।" वह व्यथित स्वर में बोला-"इसलिए मुझे ताज्जुब है कि आप जैसा आदमी भी विनोद के चक्कर में खामखाह अपना वक्त बरबाद कर रहा है।"

-"मेरे वक्त की बरबादी की फिक्र तुम मत करो।" बलराज लापरवाही से बोला-"सिर्फ इतना जान लो कि पुलिस विभाग में एक जिम्मेदार पद पर होने वाले की भी कुछ सीमाएं होती हैं। उन सीमाओं में रहने की वजह से मेरे हाथ बंधे हुए हैं, अगर ऐसा नहीं होता तो मैंने वही सब-कुछ करना था जो विनोद जैसे आदमी के साथ सही मायनों में करना

चाहिए।" उसने राकेश को घूरा-"खैर, इन बातों को छोड़ो, यह बताओ, तुम पिछली रात कहां थे ?"

राकेश के चहरे पर ऐसे भाव उत्पन्न हुए मानो वार्तालाप का विषय बदल जाने पर उसे भारी राहत महसूस हुई थी।

-"विनोद के साथ।" उसने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया।

-"पूरी रात ?"

-"हां, पूरी रात ।"

-"यानी तुम दोनों रात भर जागते रहे थे ?"

राकेश मुस्कराया-

-"जी हां।"

-"और हर पल एक-दूसरे के साथ रहे थे ?"

-"जी हां।"

बलराज ने कड़ी निगाहों से घूरा।

-"तुम और विनोद इस तरह अगर एक-दूसरे के लिए एलीबी जुटाने की कोशिश कर रहे हो तो, तुम्हारी यह चाल चलेगी नहीं।"

राकेश चौंका।

-"क्या मतलब ?"

-"मैंने सीधी बात कही है। फारसी या संस्कृत नहीं बोली है। मेरी बात का मतलब तुम अच्छी तरह से समझ रहे हो ।"

-"लेकिन मुझे या विनोद को एलीबी जुटाने की क्या जरूरत है ?"

-"जरूरत है।"

राकेश के चेहरे पर गहन असमंजसतापूर्ण भाव थे।

-"पिछली रात के लिए ?"

-"हां।"

-"लेकिन आपका वो मर्डर वाला किस्सा पिछली रात तक तो निपट चुका था।"

-"वो मर्डर वाला किस्सा मेरा नहीं तुम्हारा है।"

राकेश ने भौहें चढ़ाई।

-"यह क्या बात हुई।?"

-"बात जो भी है मैं समझ चुका हूं।" बलराज बोला-"उसे समझने के लिए मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं है । मैं जानना चाहता हूं तुम पिछली रात कहां थे ? पिछली रात, जब हमने तुम्हें नीरा के फ़्लैट में छोड़ा था तब से लेकर आज उस वक्त तक की कैफियत बयान करो जब तुम्हें और विनोद को यहां लाया गया था।"

राकेश के चेहरे पर बोरियत भरे भाव नजर आने लगे।

-"मेरी समझ में नहीं आता, आप इससे क्या नतीजा निकालना चाहते हैं ?" वह लापरवाही से बोला-"यह खामखाह वक्त जाया करने वाली बात है।"

-"मेरे सवाल का जवाब दो।"

-"पिछली रात आपके चले जाने के करीब आधा घण्टा बाद तक हम नीरा के फ्लैट में ही रहे थे।"

-"तुम चारों ?"

राकेश सहमतिसूचक सिर हिलाकर बोला-"रींटा, नीरा, विनोद और मैं।"

-"उसके बाद ?"

-"हम चारों ने डिनर लिया।"

-"कहां ?"

-"शुद्ध शाकाहारी में।"

-"उस रेस्टोरैण्ट का कोई वेटर तुम्हारी इस बात की पुष्टि कर सकता है ?"

-"बिल्कुल ! हम वहां अक्सर जाते रहते हैं। वहां के लगभग सभी वेटर और मैनेजर हमें अच्छी तरह जानते हैं।"

-"शुद्ध शाकाहारी में डिनर लेने के बाद तुम कहां गए ?"

-"नीरा को वापस उसके फ्लैट पर छोड़ने।"

-"उस वक्त नीरा के अलावा तुम्हारे साथ विनोद और वह लड़की रीटा भी थी ?"

-"जी हां, लेकिन हम तीनों में से कोई भी इमारत में दाखिल नहीं हुआ।"

-"यानी तुम तीनों इमारत के प्रवेश द्वार के बाहर ही नीरा को छोड़कर चले गए थे, फिर वह अकेली ही ऊपर अपने फ्लैट में गई ?"

-"हम तीनों तो इमारत के प्रवेश-द्वार पर ही रुक गए थे, लेकिन नीरा अपने फ्लैंट तक अकेली नहीं गई।"

बलराज ने प्रश्नात्मक निगाहों से उसे घूरा।

-"फिर किसके साथ गई थी ?"

-"आपके एक पुलिसमैन के साथ। आपके आदमी उस वक्त भी इमारत में ही मौजूद थे।" राकेश ने जवाब दिया-"अपनी आदत के मुताबिक नीरा मजाकिया तौर पर कह रही थी कि वह अकेली ऊपर नहीं जाएगी। उसे डर था कि सीढियों में कहीं बवेजा का भूत न मिल जाए। इत्तफाक से ऊपर जाते एक पुलिसमैन ने उसकी बात सुन ली और उसे अपने साथ ऊपर लिवा ले गया।"

उसने उस पुलिसमैन का हुलिया बताने के बाद कहा-"आप चाहें तो उससे तस्दीक कर सकते हैं।"

-"ठीक है। नीरा को छोड़ने के बाद तुम तीनों ने क्या किया ?"

-"वहीं चौथे ब्लॉक के सिरे पर रीटा को उसके फ्लैट वाली इमारत के पास ड्राप करके मैं और विनोद चले गए।"

-"कहां ?"

-"जीवन विहार । मेरा एक दोस्त भगवती जागरण करा रहा था।"

-"यानी तुम और विनोद सारी रात जागरण में बैठे रहे ?"

-"जी हां। सुबह करीब छह बजे प्रसाद लेने के बाद हम अपने फ्लैट पर पहुंचे। नित्यकर्मों से निपटने के बाद हमने नाश्ता किया, फिर अपने गैराज चले गए। वहीं जब आपके आदमी पहुंचे तो हम उनके साथ यहां आ गए।"

-"जीवन विहार वाले तुम्हारे उस दोस्त का नाम-पता क्या है ?"

राकेश ने बता दिया।

-"जागरण में आए लोगों में से कोई और भी तुम्हें जानता है ?" बलराज ने पूछा-"तुम्हारे दोस्त के अलावा?"

जवाब में राकेश ने करीब एक दर्जन व्यक्तियों के नाम गिना दिये।

-"ये सब विनोद को भी जानते हैं ?" बलराज ने पूछा।

-"दो-तीन को छोड़कर बाकी सब जानते हैं।"

बलराज मुस्कराया।

-"क्या तुमने यहां आते वक्त विनोद को समझाया था कि वह मेरे किसी सवाल का जवाब न दे ?"

राकेश हँसां।

–"जी नहीं।"

-"तो फिर उसने यह सब क्यों नहीं बताया ?"

-"सीधी-सी बात है। वह जानता है कि आप उस पर यकीन नहीं करेंगे।"

प्रत्यक्षतः ऐसा प्रतीत हुआ कि राकेश का नीरा की हत्या से कोई रिश्ता होना तो दूर रहा, उसे हत्या की जानकारी तक भी नहीं थी, क्योंकि शव परीक्षा करने वाले डॉक्टर के अनुसार नीरा की मृत्यु रात एक बजे के करीब हुई थी और बकौल राकेश उस वक्त वह और विनोद जागरण में थे।

बलराज ने तरह-तरह से घुमा-फिराकर सज्जन कुमार बवेजा के बारे में उससे पूछताछ की।

जवाब में राकेश ने बार-बार पूरा यकीन दिलाया कि हत्या जैसा जघन्य अपराध करने वाले हर व्यक्ति से उसे सख्त नफरत थी और वह इन्सपेक्टर को पूरा-पूरा सहयोग देना चाहता था, लेकिन दिक्कत यह थी कि वह कुछ नहीं जानता था। काश वह कुछ जानता होता।

संक्षेप में उसका आशय था कि नीरा मलकानी उसकी महिला मित्रों में से एक थी। विनोद उसका दोस्त था और उसके यहां काम करता था। यह मात्र संयोग ही था कि नीरा मृतक बवेजा के बगल वाले फ्लैट में रहती थी। नीरा की मृतक बवेजा से जान-पहचान मात्र औपचारिक 'हैलो' से ज्यादा नहीं थी। वह खुद और विनोद भी मृतक के बारे में कुछ नहीं जानते थे इसलिए इन्सपेक्टर को कुछ भी न बताना उनकी मजबूरी थी।

उसने खुद को एक शरीफ शहरी और कानून का पाबन्द नागरिक साबित करने में भी कोई कमी बाकी नहीं छोड़ी।

-"आप यकीन मानिए इन्सपेक्टर।" अन्त में वह बोला-"मुझे बेहद अफसोस है कि मृतक बवेजा की हत्या के रहस्य को सुलझाने में मैं आपकी कोई मदद नहीं कर पा रहा हूं।

अलबत्ता मैं आपके हर सवाल का जवाब देने के लिए तैयार हूं, क्योंकि मुझे या विनोद को आपसे कुछ भी छुपाने की जरूरत नहीं है।" वह तनिक रुका.फिर मुस्कराता हुआ बोला-"वैसे में जानता हूं आप समझ रहें हैं कि मैं विनोद को बचाने की कोशिश कर रहा हूं। इसलिए मैं जान-बूझ कर आपकी मदद नहीं कर रहा, लेकिन असलियत यह नहीं है।"

-"फिर असलियत क्या है ?"

-"अगर मैं मृतक बवेजा या उसकी हत्या के बारे में कुछ भी जानता होता या फिर मेरी जानकारी में मेरे किसी दोस्त का मृतक या उसकी हत्या से जरा-सा भी रिश्ता होता तो मैंने बिना किसी लिहाज के यकीनन आपको सबकुछ बता देना था।" राकेश गम्भीरतापूर्वक कह रहा था-"अगर आप हमारे बारे में इस नजरिए से सोचें कि हम आपको इसलिए कुछ नहीं बता पा रहे हैं, क्योंकि हम कुछ जानते ही नहीं तो मैं समझता हूं आपको हमसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। मुझे यह कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि उस सूरत में मौजूदा हालात को देखते हुए आप भी मेरी इस बात से सहमत होंगे कि दुर्भाग्यपूर्ण घटना से विनोद को बचाने का मुझे पूरा-पूरा हक है।"

–"यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना नहीं हत्या है।"

-"जानता हूं, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण इसलिए है, क्योंकि यह सब नीरा के बगल वाले फ्लैट में हुआ था और हम अक्सर नीरा के पास जाते रहे हैं।"

-"ठीक है।" बलराज उसके चेहरे पर निगाहें जमाता हुआ बोला-"तुमने शरीफ और कानून का पाबन्द शहरी होने का दावा किया है। मैं तुम्हारे उसी दावे की सच्चाई देखना चाहता हूं।"

-"मैं तैयार हूं।" राकेश बेहिचक बोला-"बताइए मुझे क्या करना होगा ?"

-"मेरे साथ सहयोग।"

-"किस रूप में ?"

-"मैं तुम्हें अपने साथ कहीं ले जाना चाहता हूँ।"

-"ठीक है।" राकेश ने नि:संकोच सहमति दे दी। उसने यह नहीं पूछा कि इन्सपेक्टर उसे कहां और किसलिए ले जाना चाहता था।

बलराज, एस० आई० अश्विनी शर्मा, राकेश, एक हैड कांस्टेबल और मैं ऑफिस से निकले।

पुलिस हैडक्वार्टर्स की इमारत से बाहर आकर हम सब जीप में सवार हो गए।

हम एक-एक करके उन तमाम बैंकों में गए, जहां मृतक सज्जन कुमार बवेजा का एकाउन्ट था और जिसे हरचरनजीत सिंह ने बड़ी सफाई से एक ही झटके में खाली कर दिया था।

बलराज के कहने पर राकेश ने प्रत्येक बैंकं में हरचरनजीत सिंह के विभिन्न ढंग से हस्ताक्षर किए. लेकिन उसके द्वारा किए गये दस्तखतों और बैंक में मौजूद हरचरनजीत सिंह के स्पेसीमेन सिग्नेचर में जरा-सी भी समानता नहीं पाई गई।

फिर बलराज के कहने पर राकेश ने अपने कंधे झुकाए और कन्ठ से धीमी फंसी-सी आवाज निकालने की कोशिश की, मगर इस कोशिश में वह खास कामयाब नहीं हो सका।

-"सॉरी, इन्सपेक्टर।" वह क्षमा-याचनापूर्वक बोला-"मैं एक्टर नहीं हूं।"

तत्पश्चात् हम उस दुकान पर पहुंचे, जहां बवेजा के फ्लैट के लिए नया सोफा खरीदा गया था। वहां भी बलराज ने राकेश से कंधे झुकाने और फंसी-सी आवाज में बोलने को कहा।

राकेश ने पुन: कोशिश की मगर नतीजा वही रहा जो बैंकों में रहा था।

उन तमाम बैंकों और उस दुकान पर जिन व्यक्तियों ने सर पर पट्टियां लिपटे आदमी को देखा था वे राकेश को देखने के बाद सिर्फ इतना ही कह सके कि उसका कद-बुत उस आदमी जैसा ही था लेकिन इस बात से कुछ भी फायदा नहीं हुआ। राकेश जैसे औसत कद-बुत वाले व्यक्ति हजारों की तादाद में पूरे शहर में मौजूद थे।

इस पूरे दौर में बलराज की निगाहें राकेश के चेहरे और उसके प्रत्येक एक्शन पर जमी रही थी, लेकिन प्रत्यक्षत: उसने कोई सन्देहजनक बात नोट की थी ऐसा प्रतीत नहीं हुआ।

हम सब वापस पुलिस हैडक्वार्टर्स की ओर लौट पड़े ।

मैं सोचने पर मजबूर था-या तो राकेश वास्तत्र में उतना ही बेगुनाह था जितना कि वह खुद को जाहिर कर रहा था या फिर वह इतना ज़्यादा धाध था कि उसने जान-बूझ कर अपने किसी एक्शन या हाव-भाव से यह जाहिर नहीं होने दिया जिससे उस पर पट्टियां लिपटा आदमी होने का शक भी किया जा सके।

बलराज जीप में अगली सीट पर मेरी बगल में ही बैठा था।

-"इस भाग-दौड़ से कुछ फायदा हुआ ?" मैंने धीमे स्वर में पूछा।

-"नहीं।" उसने जवाब दिया।

-"तुम्हें उम्मीद थी कि फायदा होगा ?"

-"मामूली उम्मीद थी।" बलराज ने जवाब दिया-"मेरा ख्याल था बैंकों में या फर्नीचर वाली दुकान में उन लोगो से सामना होने पर राकेश घबराहट महसूस करेगा या बौखला जाएगा या फिर उस पर किसी और तरह की ऐसी कोई प्रतिक्रिया होगी, जो उसकी पोल खोल देगी।"

-"तुमने ऐसा कुछ नोट किया ?"

बलराज ने गहरी सांस ली।

-"नहीं, कुछ भी नहीं।" वह पूर्ववत् धीमे लेकिन सपाट स्वर में बोला-"यह सब भी बाकी सिलसिले की तरह ही रहा।" उसने जीप के पृष्ठ भाग में बैठे राकेश की ओर सर हिलाकर संकेत किया- "इसका हर एक एक्शन पहले से ही सोच-समझकर तय किया हुआ था। लगता है जो कुछ इसने किया उसकी यह बाकायदा रिहर्सल कर चुका था। यह जानता था कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए इसने अपनी ओर से शानदार अभिनय करने की बड़ी पूरी कोशिश थी।"

-"कुल मिलाकर मुद्दा यह निकला कि इस सारी भाग-दौड़ में बेकार ही वक्त बरबाद हुआ।"

-"नहीं, भारती।" ऐसा नहीं है। इस भाग-दौड़ से काफी फायदा भी हुआ है। अब मैं बाखूबी समझ गया हूं कि राकेश के रूप में वास्तव में मेरा मुकाबला किस किस्म के शख्स से है। यानी, इस तरह मुझ राकेश का असली रूप दिखाई दे गया है । मैं इसे वही समझूंगा जो यह है । उससे कम समझने की गलती नहीं करूंगा। साथ ही मुझे उम्मीद है राकेश को यकीन हो चला है कि वह मुझे अपने कुशल अभिनय से बेवकूफ बनाने में कामयाब रहा है । मेरे बारे में उसका खुद पर यह विश्वास ही उसका बन्टाधार कर देगा।"

मैंने असमंजसतापूर्वक उसकी ओर देखा ।

-"मैं समझा नहीं। साफ-साफ बताओ।"

-"सीधी-सी बात है। मेरे पास ऐसी कोई ठोस वजह नहीं, जिसके आधार पर राकेश और विनोद को रोककर रखा जा सके। मुझे उनको छोड़ना पड़ेगा और मेरा तजुर्बा कहता है, उस सूरत में राकेश या विनोद से ऐसी कोई चूक जरूर होगी, जिसके दम पर इनमें से किसी एक या दोनों को दबोचा जा सके, क्योंकि मेरे विचार से इस सारे रोग की जड़ राकेश है, इसलिए चूक भी उसी से होगी।"

-"यह तुम बवेजा की हत्या के संदर्भ में कह रहे हो या नीरा की हत्या के ?"

-"दोनों की।"

-"मेरा ख्याल है नीरा की हत्या के मामले में तुम इन दोनों को उठाकर बन्द कर सकते हो।"

-"कैसे ?"

-"राकेश ने पिछली रात की अपनी ओर विनोद की एलीबी की जो कैफियत दी है उसे चैक करके।"

बलराज ने गहरी सांस ली।

-"पिछली रात की उनकी एलीबी एकदम ठोस है। उसमें ऐसा कुछ नहीं है, जिसकी वजह से उन पर शक किया जा सके।"

-"यानी तुम राकेश द्वारा बताई गई बातों को चैक नहीं कराओगे ?"

-"कराऊंगा.क्योंकि ऐसा करना पुलिस रूटीन है, लेकिन मैं जानता हूं राकेश के बयान का एक-एक लफ्ज सही साबित होगा।"

-"जरूरी तो नहीं कि ऐसा ही हो।" मैंने प्रतिवाद किया।

-"जरूरी है।"

बलराज के स्वर में ऐसी दृढ़ता थी कि मैं चाहकर भी बात को आगे नहीं बढ़ा सका।

हम पुलिस हैडक्वार्टर्स पहुंच गये।

बलराज ने अपने दो मातहतों को सारी डिटेल्स देकर राकेश का पिछली रात सम्बन्धी बयान चैक करने भेज दिया।

बलराज को अपने तर्कों ओर तजुर्बे पर इतना विश्वास था कि उसने राकेश और विनोद को बुलवाकर कह दिया कि वह उन्हें छोड़ रहा था। इतना ही नहीं, उसने इस चक्कर में उन्हें हुई असुविधा के लिए खेद भी प्रकट किया। इससे भी बड़ी बात थी उसने सफाई दी कि मौजूदा हालात में यह सब करना उसकी मजबूरी थी।

-"तुम दोनों को इस तरह यहां बुलवाकर मैंने सचमुच गलती की है।" वह बोला-"मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

विनोद ने तो कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की, लेकिन राकेश विजयी भाव से मुस्कराया।

-"कोई बात नहीं, इन्सपेक्टर। देर.आयद दुरुस्त आयद ।"

बलराज भी मुस्कराया।

-"ठीक कहते हो।" वह बोला-"लेकिन तुम्हारे साथ सचमुच ज्यादती हुई है। असलियत सिर्फ इतनी है कि तुम उस लड़की को जानते थे, जिसके बगल वाले फ्लैट में एक आदमी की हत्या कर दी गई थी। महज इस वजह से तुम दोनों को परेशानी उठानी पड़ी, जबकि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।"

-"मुझे यकीन है, आप आइंदा ध्यान रखेंगे।" राकेश ने कहा-"बिना किसी ठोस वजह के शरीफ नागरिकों को परेशान नहीं करेंगे।"

बलराज मुस्कराया।

-"दरअसल मेरे सामने जो वजह थी, में उसे ठोस ही समझ बैठा था।"

-"मैं वो वजह जान सकता हूं।"

-"जरूर ! मेरे पास ऐसा सबूत है कि बवेजा की हत्या के बाद उसके फ्लैट की सफाई के लिए जो वैक्यूम क्लीनर इस्तेमाल किया गया था, वो नीरा मलकानी का था।"

राकेश मुस्कराया। उसकी वो मुस्कराहट ऐसी थी मानो वह चाहकर भी उसे रोक नहीं पाया था या फिर अपनी हँसी दबाने की कोशिश में उसके होठ खुद-ब-खुद मुस्कराहट की मुद्रा में खिंच गए थे।

-"मैं नहीं जानता कि आपकी यह बात किस हद तक सही है।" वह बोला-"मगर यह बिल्कुल तय बात है कि नीरा को अपने नए वैक्यूम क्लीनर से उतना ही लगाव हे जितना कि किसी बच्चे को अपने मनपसंद नए खिलौने से होता है। इसलिए मेरी समझ में नहीं आता कि कोई उसके वैक्यूम क्लीनर तक कैसे पहुंच गया ?"

-"कोई और भले ही न पहुंच सकता हो, मगर नीरा के दोस्त उसके वैक्यूम क्लीनर तक न सिर्फ पहुंच सकते थे, बल्कि उसे उसके फ्लैट से बाहर भी ले जा सकते थे।"

राकेश हँसा।

-"नीरा अपने दोस्तों को ड्रिंक्स और गपशप के लिए फ्लैट में बुलाती है, इन्सपेक्टर। अपने नए वैक्यूम क्लीनर से खेलने के लिए नहीं।"

बलराज ने बारी-बारी से उन दोनों को गौर से देखा, फिर लापरवाही से बोला-"मुझे अफसोस है अब तुम्हें ड्रिंक्स के लिए नीरा कभी नहीं बुलाएगी।"

राकेश के नेत्र सिकुड़ गए।

-"क्या मतलब ?"

-"नीरा की पिछली रात हत्या कर दी गई।" बलराज उन दोनों पर निगाहें जमाए बोला- "पहले नीरा के सर पर धातु के घूंसे से प्रहार करके उसकी खोपड़ी चटका दी गई थी, फिर उसके मुंह पर एडहेसिव टेप चिपकाया गया था और फिर उसकी हत्या कर दी गई। ये सभी काम बड़ी सफाई से किए गए थे। उसकी मौत दम घुटने की वजह से हुई थी ....।" वह तनिक रुका, फिर कहा-"खोपड़ी चटका दी जाने की वजह से नीरा बेहोश थी। उसके मुंह पर टेप चिपका हुआ था। हत्यारे ने बस थोड़ी देर के लिए उसके दोनों नथुने दबा दिए और नीरा ने दम तोड़ दिया। हत्या करने का यह तरीका वाकई दिलचस्प था। खासतौर से उस सूरत में, क्योंकि यह तरीका हू-ब-हू उस तरीके की नकल था, जिससे बवेजा की हत्या की गई थी। नीरा का मर्डर भी प्रिप्लान्ड था। बवेजा की भांति उसकी हत्या भी एक मर्डर प्लान के तहत की गई थी। दोनों की हत्याओं में इकलौता फर्क यह था कि नीरा की हत्या बहुत ही जल्दबाजी में की गई थी।"

नीरा की हत्या के समाचार की राकेश और विनोद पर अलग-अलग प्रतिक्रिया हुई।

विनोद के चेहरे पर बोरियत के भाव छाए रहे थे। मानो उसे नीरा की हत्या के समाचार में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन जब बलराज हत्या के तरीके के बारे में बता रहा था, विनोद के होठों पर हल्की-सी मुसकान पैदा हो गई थी और आंखे तनिक मुंद-सी गई थीं, मानो वह अपने किसी मनपसंद विषय की चर्चा सुनकरमन-ही-मन खुश हो रहा था।

इसके विपरीत राकेश के चेहरे पर एकाएक ऐसे भाव उत्पन्न हो गए थे, मानो नीरा की मृत्यु का समाचार सरासर अनपेक्षित था और सुनकर उसे तेज झटका लगा था। वह हैरानगी, अविश्वास, दुःख वगैरा उन तमाम प्रतिक्रियाओं के दौर से गुजर गया प्रतीत हुआ...जिनसे गुजरना किसी घनिष्ट मित्र की मृत्यु का समाचार सनने के बाद स्वाभाविक ही था, फिर वह सामान्य नजर आने लगा मानो सदमे को बरदाश्त कर चुका था -- और फिर उसने विनोद की ओर देखा । विनोंद को मुस्कराता देखकर उसका मुंह बन गया।

-"नीरा ने पिछली रात जो कहा वो गुस्से में कह दिया था, विनोद ।" उसने तीव्र स्वर में झिड़की दी-"वह वो सब कहना नहीं चाहती थी, लेकिन उस वक्त बेचारी परेशान थी। अब वह मर चुकी है, इसलिए तुम्हें सिर्फ उसका अच्छा व्यवहार ही याद रखना चाहिए ।"

विनोद ने अपने बालों में अंगुलियां घुमायीं और होठों पर जीभ फिराई,फिर उसकी मुस्कराहट गायब हो गई। उसके चेहरे पर पुन: बोरियत के भाव परिलक्षित होने लगे।

-"हां।" वह धीरे से बोला-"वह दिलचस्प लड़की थी।"

राकेश के चेहरे पर ऐसे संतुष्टिपूर्ण भाव पैदा हुए, मानो उसे यकीन हो गया था कि उसका पालतू कुत्ता उसके सामने दुम हिलाने लगा था । वह निश्चितापूर्वक पुनः इन्सपेक्टर

से मुखातिब हो गया।

-"लगता है उस इमारत में कोई पागल है ।" वह बोला-"जो सिलसिलेवार लोगों की हत्या कर रहा है।"

राकेश के लहजे से जाहिर था, वह बड़ी सफाई से इन्सपेक्टर को बता रहा था,कि बवेजा और नीरा की हत्याएं किसी पागल खूनी ने की थी और इन्सपेक्टर विनोद के प्रति अपनी पुरानी खुंदक की वजह से खामखाह उसके पीछे पड़ा हुआ था, जबकि विनोद पूरी, तरह सुधर चुका था।

-"और वह पागल ऐसा व्यक्ति है, जो अपने पागलपन भरे स्टंट से लाखों बना चुका है।" बलराज ने उसी के स्वर में कहा।

-"मैंने सिर्फ अपनी राय जाहिर की थी, इन्सपेक्टर । इस बारे में मैं आपसे बहस नहीं करूंगा।" राकेश ने लापरवाही से कहा और विनोद को घूरता हुआ बोला-"नीरा बहुत अच्छी लड़की थी। क्या उस मरने में बहुत ज्यादा तकलीफ हुई होगी इन्सपेक्टर ?"

-"बेचारी नीरा सचमुच बहुत अच्छी लड़की थी।" बलराज के जवाब देने से पहले ही विनोद बोल पड़ा।

-"नीरा को जरा भी तकलीफ नहीं हुई थी जिस वक्त उसकी हत्या की गई वह बेहोश थी।" बलराज ने कहा-"तुम्हें इस बारे में फिक्र नहीं करनी चाहिए, क्योंकि नीरा की हत्या के वक्त की विनोद के पास तगड़ी एलीबी है। नीरा की मृत्यु रात एक बजे के करीब हुई थी और उस वक्त तुम और विनोद नीरा के फ्लैट से कई मील दूर जीवन विहार में जागरण में मौजूद थे।"

-"भगवान का लाख-लाख शुक्र है।" राकेश बोला-"वरना नीरा की हत्या के मामले में भी आपने विनोद पर ही चढ़ दौड़ना था।"

बलराज रहस्यमय ढंग से मुस्कराया, फिर बोला-"तुम जा सकते हो।"

राकेश और विनोद खड़े हो गए।

-"थैंक्यू वैरी मच, इन्सपेक्टर !" राकेश ने कहा और विनोद की बांह पकड़े बाहर निकल गया।

बलराज ने अपने डेस्क पर रखे इंटरकाम का रिसीवर उठाकर एक स्विच दबाया।

-"वे दोनों बाहर जा रहे हैं।" उसने माउथपीस में कहा और रिसीवर वापस रख दिया।

-"उनका पीछा करा रहे हो ?" मैंने पूछ।

बलराज ने कड़ी निगाहों से मुझे घूरा।

-"तुम क्या सोचते हो ?" वह गुर्राकर बोला-"मैं उन्हें बिल्कुल खुला छोड़ दूंगा, ताकि रीटा खरे की जान भी जाती रहे ?"

मैं रीटा खरे को बिल्कुल भूल गया था। मुझे याद आया रीटा खरे मासूम-सी नजर आने वाली वह लड़की थी, जो बदहवासी की-सी हालत में पिछली रात विनोद के साथ नीरा के फ्लैट में दाखिल हुई थी।

-"तुम्हारे विचार से रीटा की जान को खतरा है ?" मैंने पूछा।

-"पिछली रात वह लड़की बेहद डरी हुई थी। आज सुबह नीरा अपने फ्लैट में मरी पाई गई और रीटा का कोई पता हमारे आदमी नहीं लगा पाए हैं।"

-"मुमकिन है, रीटा को पहले ही ठिकाने लगा दिया गया था।"

-"ऐसा नहीं हुआ होगा।"

-"क्यों ?"

-"राकेश और विनोद के पास पिछली रात की तगड़ी एलीबी है और नीरा मर चुकी है। इसलिए मैं नहीं समझता रीटा की भी हत्या की जा चुकी है।" बलराज ने कहा-"अब देखना यह है कि अपना पीछा किए जाने के दौरान वे दोनों क्या करते हैं।" उसने अपनी रिस्ट वाच पर निगाह डाली-"इस झमेले में आज लंच की छुट्टी हो गई, लेकिन फिलहाल थोड़ी फुरसत है। आओ,घर चलते हैं।" उसने एस० आई० अश्विनी शर्मा की ओर देखा-"तुम यहीं रहना, अगर कोई रिपोर्ट आए तो मेरे घर फोन कर देना।" और खड़ा हो गया।

-"राइट, सर!" अश्विन शर्मा बोला।

-"आओ, भारती।"

मैं उठा और बलराज के साथ उसके ऑफिस से बाहर आ गया।

***

इन्सपेक्टर बलराज कनवर की पत्नी मंजू पढ़ी-लिखी सुसंस्कृत महिला थी। गोरा रंग, औसत से कुछ कम कद, तनिक मांसल जिस्म और नेन-नक्श सुन्दर । आदत से मिलनसार और कुशल गृहिणी मंजू का प्यार का नाम गुड्डी था, जो उसके सादगी भरे बेतकल्लुफाना स्वभाव की वजह से उस पर पूरी तरह फिट बैठता था।

जब हम घर पहुंचे वह घरेलू काम-काज निपटाने के बाद इत्मीनान से अपने नाखूनों की दुरुस्तगी में लगी थी। उसे अपने नाखूनों को हर वक्त साफ और चमकीले बनाए रखने का शौक था।

मेरे अभिवादन का जवाब देने और कुशल-क्षेम पूछने के बाद उसने अपने पति की ओर देखा।

-"आप आज फिर लंच के लिए लेट हो गए ?" उसके स्नेहपूर्ण स्वर में शिकायत का पुट था।

-"हां, गुड्डी।" बलराज अपनी पी-कैप उतारता हुआ बोला-"क्या करूं पुलिस की नौकरी जो ठहरी । उसमें न तो वक्त पर खाना मिलता है और न ही सोना।" वह मुस्कराया-"लेकिन आज तुम्हें शिकायत नहीं होनी चाहिए।"

-"क्यों?" गुड्डी ने पूछा।

-"इसलिए मैडम, कि देर होने की वजह से मुझे भूख कुछ ज्यादा ही लग रही है।" बलराज ने कहा-"दूसरे देर होने की वजह से ही आज भारती को भी साथ पकड़ लाने का मौका मिल गया। अब तुम फटाफट खाना गर्म करो। तब तक हम दोनों हाथ-मुह धो लेते हैं। बाई दी वे, तुम खाना खा चुकी हो ?"

-"हां ।" गुड्डी ने जवाब दिया- "क्योंकि मैं जानती हूं, वर्दी पहनकर घर से जाने के बाद आपको वापस वक्त पर घर लौटना याद नहीं रहता।" और उठकर किचन की ओर बढ़ गई।

बलराज हँसा।

-"यही इकलौती ऐसी बात है जिससे दुनियाभर के तमाम पुलिस अफसरों की बीवियों को न चाहते हुए भी समझौता करना पड़ता है।"

दस मिनट बाद मैं और बलराज डाइनिंग टेबल पर बैठे खाना खा रहे थे।

गुड्डी पुनः अपने नाखूनों को दुरुस्त करने लगी थी।

-"आप अपने नाखूनों का बहुत ज्यादा ध्यान रखती हैं, भाभीजी।" मैं कुछ कहने की गरज से बोला।

गुड्डी ने नेल कटर नीचे रखकर छोटी-सी फाईल उठा ली।

-"इसकी वजह भी पुलिस इन्सपेक्टर की बीवी होना है।" वह मजाकिया लहजे में बोली।

-"मुझे बीच में मत घसीटो।" बलराज ने कहा-"यह क्यों नहीं कहती कि मैनोक्योरिंग तुम्हारा अपना शौक...?"

-"मुझे मजबूरन इसे अपना शौक बनाना पड़ा है, इन्सपेक्टर साहब । तुम्हारे पास पूरी एक दर्जन वर्दियां है। उन्हें रोज-रोज धोने, प्रेस करने के चक्कर में मेरे नाखूनों की हालत ऐसी हो जाती है कि इनका खास ध्यान रखना ही पड़ता है। नेल पालिश भी वाटरप्रूफ इस्तेमाल करनी पड़ती है, ताकि वो ज्यादा दिन तक चल सके।"

-"वर्दिया लांड्री से न धुलवाने की जिद भी तो तुम्हारी ही है .....।"

-"क्योंकि लांड्री वाले कपड़ों को धोते नहीं, फाड़ते हैं।" गुड्डी ने कहा-"दूसरे लांड्री के धुले कपड़ों में वो चमक और शान नहीं आ पाती, जो घर में धुले और प्रेस किए कपड़ों में आती है।" वह हँसी-"यह मेरे हाथ की धुली वर्दियों का ही कमाल है कि आप इतनी जल्दी तरक्की पाकर इन्सपेक्टर बन गए, अगर लांड्री की धुली वर्दियां पहनते तो अभी तक एस. आई. ही बने रहते।"

बलराज हँसा।

-"दैंट आई डु एग्री, यार। यू आर ए ग्रेट गर्ल। आई एम प्राउड आफ यू।"

-"मस्का मत मारो। मैंने वर्दियां धोने से इन्कार तो नहीं किया है।"

-"करोगी भी नहीं क्योंकि तुम मुझे और भी तरक्की दिलाना चाहती हो।"

तभी टेलीफोन की घंटी बजने लगी।

गुड्डी फाईल रखकर नेल पालिश की ओर हाथ बढ़ा रही थी। वह अपना हाथ पीछे खींचकर खड़ी हो गई।

-"आप लोग खाना खाओ। मैं अटेंड कर लेती हूं।"

वह बेडरूम की ओर बढ़ गई।

वह करीब दो मिनट बाद वापस लौटी।

-"आपके असिस्टेंट अश्विनी शर्मा का फोन था। उसने कहा है कुछ रिपोर्ट आ गई हैं।"

-"तुमने फोन डिसकनेक्ट कर दिया ?" बलराज ने पूछ।

-"हां।"

बलराज हाथ पोंछकर खड़ा हो गया।

-"कम ऑन, भारती।" वह बोला-"वी मस्ट गो !"

-"श्योर।" मैंने कहा।

-"आप लोगों ने खाना भरपेट खा लिया है ?" गुड्डी ने पूछा।

-"यस बॉस ।" बलराज पी-कैप उठाकर सर पर जमाता हुआ बोला-"बस अब तुम थोड़ा पान मसाला और खिला दो।"

-"क्या? आप पान मसाला कब से खाने लगे ?"

-"मैं अपने लिए नहीं, भारती के लिए कह रहा हूं।"

पान मसाला खाने की शौकीन गुड्डी ने डब्बा उठाकर मेरी ओर बढ़ा दिया।

-"थैंक्यू भाभीजी....।" मैं पान मसाला फांकने के बाद बोला-"खाना वाकई जायकेदार था।"

-"शी इज ए वैरी गुड कुक ।" बलराज भी तारीफी लहजे में बोला।

-"नो मोर, मस्का प्लीज ।" गुड्डी ने टोका।

-"ओ. के. बॉस।"

बलराज और मैं दरवाजे की ओर बढ़ गए।

हम वापस हैडक्वार्टर्स पहुंचे।

अश्विनी शर्मा बलराज के ऑफिस में ही मौजूद था।

-"तमाम रिपोर्टें आ चुकी हैं, सर।" उसने डेस्क पर रखे कई कागजों की ओर संकेत करते हुए कहा।

बलराज अपनी डेस्क-चेयर पर बैठ गया।

उसने सबसे ऊपर रखा कागज उठाकर पढ़ा और मुस्कराते हुए मेरी ओर खिसका दिया।

-"लो, खुद ही देख लो, मेरा अनुमान कितना सही निकला है।" वह बोला।

मैंने पढ़ा। वो राकेश के बयान पर आधारित उसकी और विनोद की पिछली रात की एलीबी की चेकिंग की रिपोर्ट थी। बलराज का अनुमान सौ फीसदी सही साबित हुआ। राकेश और विनोद की एलीबी वाकई पूरी तरह ठोस निकली। राकेश ने जो बयान दिया था-चैक किए जाने पर उसका एक-एक लफ्ज सच निकला।

किशनलाल नामक कांस्टेबल ने इस बात की पुष्टि की थी कि नीरा के दोस्त इमारत के बाहर ही रह गए थे। नीरा को प्रवेश द्वार से उसके फ्लैट तक उसी ने पहुंचाया था।

राकेश के इस बयान की तो कोई पुष्टि नहीं हो सकी कि वह और विनोद रीटा को उसके फ्लैट वाली इमारत के बाहर छोड़ने के बाद ही अपने दोस्त के यहां भगवती जागरण में गए थे, लेकिन इस बात के करीब एक दर्जन गवाह जरूर मिल गए कि राकेश और विनोद पूरी रात जागरण में मौजूद रहे थे और सुबह प्रसाद पाने के बाद ही वहां से आए थे।

उस रिपोर्ट से जाहिर था कि नीरा को इमारत के बाहर छोड़ने के बाद वे दोनों उसके फ्लैट के पास फटके भी नहीं थे।

मैंने वो कागज वापस डेस्क पर रख दिया।

-"तुम पिछली रात बवेजा के फ्लैट में किस वक्त तक रहे थे. अश्विनी।" बलराज पूछ रहा था।

-"करीब साढ़े ग्यारह बजे तक ।" अश्विनी शर्मा ने जवाब दिया।

-"तुम्हारी रिपोर्ट में लिखा है।" बलराज बोला-"जब तुम वहां से चले बवेजा के नीचे वाले फ्लैट में रोशनी थी और सुधीर चौधरी नामक युवक खुले दरवाजे में खड़ा था।"

-"यस, सर।" अश्विनी शर्मा ने जवाब दिया-"मैं सीढ़ियां उतरकर नीचे आ रहा था। उसे फ्लैट के दरवाजे में अधिकारपूर्वक खड़ा देखकर मैं पूछ बैठा कि इतनी रात गए वह वहां क्या कर रहा था। उसने बताया कि उसका नाम सुधीर चौधरी है और वो फ्लैट उसकी मंगेतर मालती वर्मा का है।"

-"कमाल है।" बलराज बड़बड़ाया-"एक ओर तो वे दोनों नैतिकता और सामाजिक मान्यताओं की दुहाई देते हैं, दूसरी ओर शादी से पहले आधी-आधी रात तक एक ही फ्लैट में बन्द रहते हैं....।"

-"उन्होंने यह भी तो बताया था कि वे दो-एक रोज में शादी करने वाले हैं।" मैंने कहा।

बलराज कुछ नहीं बोला।

वह राकेश मोहन के बारे में पुलिस जांच की रिपोर्ट पढ़ने लगा था।

-"राकेश मोहन की रिपोर्ट में लिखा है।" कुछ देर बाद वह बोला-"पुरानी कारों की खरीद-फरोख्त का धन्धा करता है । उसका धन्धा ठीक-ठाक चल रहा है। पुलिस को उससे कभी कोई शिकायत नहीं हुई। उसके पड़ोसियों का कहना है कि वह एक अच्छा और

मिलनसार आदमी है। विनोद भी उसी के साथ रहता है और रीटा खरे अक्सर उसके फ्लैट में जाती रहती है। उसे हर कोई शरीफ शहरी समझता है।''

-''जबकि तुम उसे ऐसा नहीं समझते।''

-''मैं उसे क्या समझता हूं तुम्हें अच्छी तरह मालूम है।''

फिर बलराज ने सुधीर चौधरी और मालती वर्मा सम्बन्धी रिपोर्ट पढ़कर सुनाई।

सुधीर चौधरी इलेक्ट्रिकल अप्लाइन्सेज बनाने वाली एक मशहूर कम्पनी में इन्जीनियर था। वह ईमानदार, मेहनती और अपने कार्य में दक्ष था। मालती वर्मा भी उसी कम्पनी में मैनेजिंग डायरेक्टर की स्टेनो थी। अपने सहकर्मियों और बॉस की निगाहों में वह भी कार्यकुशल, ईमानदार और भरोसेमन्द थी। उन दोनों के प्यार और मंगनी के बारे में सब जानते थे।

नीरा मलकानी की रिपोर्ट में साफ लिखा था कि वह नौकरी करने के साथ-साथ माडलिंग की आड़ में वेश्यावृत्ति भी करती थी। करीब चार साल पहले वह एक पांच सितारा होटल में पुलिस रेड के दौरान तीन अन्य लड़कियों के साथ पकड़ी भी गई थी, लेकिन सबूतों और गवाहों के अभाव में उसे छोड़ देना पड़ा। रेड डालने वाली पुलिस पार्टी के इन्चार्ज के मुताबिक वह हाई प्राइस्ड काल गर्ल थी और सरकारी तथा राजनीतिक क्षेत्रों में बड़े-बड़े लोगों से उसके रसूख थे।

जिस इमारत में वह रहती थी, वहां रहने वाले अन्य किरायेदारों के मुताबिक राकेश, विनोद और रीटा खरे अक्सर उसके पास आते रहते थे।

-''बवेजा लड़कियां सप्लाई करने का धन्धा करता था और नीरा हाई प्राइस्ड कार्लगर्ल थी।'' मैंने कहा-''जरूरी बात है कि उन दोनों का आपस में भी रिश्ता रहा होगा।''

-''जरूरी तो और भी बहुत-कुछ है।'' बलराज बोला ''लेकिन उसे साबित करने के लिए सबूतों का होना भी उतना ही जरूरी है। मसलन, नीरा की रिपोर्ट में यह भी लिखा है कि पिछले करीब चार सालों के दौरान नीरा की गतिविधियां ऐसी नहीं रही कि पुलिस का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो। इसका सीधा-सा मतलब यह है कि वह अपने धन्धे में एक्टिव नहीं रही थी, जबकि हकीकतन ऐसा नहीं था। नीरा का ठाठदार रहन-सहन इस बात का पक्का सबूत था कि उसके पास अपनी नौकरी के अलावा भी मोटी आमदनी का कोई तगड़ा जरिया था और उसकी हिस्ट्री को देखते हुए वो जरिया सिर्फ वेश्यावृत्ति ही हो सकता था, लेकिन इसे साबित नहीं किया जा सकता।''

-''मुमकिन है उसे एक ही कोई ऐसा चाहने वाला मिल गया था, जो हर महीने एक बंधी मोटी रकम के रूप में उसके जिस्म की कीमत चुकाता रहा था।'' मैंने राय जाहिर की।

-"बिल्कुल मुमकिन है और रकम चुकाने वाला राकेश भी हो सकता है, लेकिन राकेश वो रकम नीरा के जिस्म की एवज में उसे नहीं देता रहा होगा।"

-"फिर ?"

-"वो रकम नीरा के सहयोग की उजरत रही होगी।"

-"क्या मतलब ?"

-"नीरा ने बवेजा की तमाम जमा-पूंजी हथियाने में राकेश की मदद की थी। यह बात तो हम दावे के साथ कह सकते हैं, लेकिन पिछले चार सालों के दौरान राकेश ने कितने बवेजाओं को नीरा की मदद से अपना शिकार बनाया था इसकी कोई जानकारी कम-से-कम इस शहर की पुलिस को तो है नहीं, क्योंकि स्कीम सॉलिड और मर्डर प्लान फुलप्रूफ रही है । इस दफा बवेजा के मामले में जो चूक हो गई थी वो पहले कभी नहीं हुई होगी। नतीजतन यह शक तक भी नहीं किया जा सका कि राकेश के शिकार अपनी मौत नहीं मरे थे।"

-"तुम्हारी यह थ्यौरी काफी हद तक तर्क-संगत है।" मैं हिचकिचाता-सा बोला-"मगर इसमें एक खामी मुझे साफ नजर आ रही है।"

-"क्या ?

-"अगर नीरा चार साल से राकेश की पार्टनर थी तो, अभी ऐसी कौन-सी मुसीबत टूट पड़ी थी कि उसे ठिकाने लगाना जरूरी हो गया था। अब से पहले कभी पुलिस का ध्यान राकेश की ओर नहीं गया तो, नीरा को भी अबसे पहले ही क्यों नहीं ठिकाने लगा दिया गया ? मौजूदा हालात में जब बवेजा के मामले में पुलिस का दखल हो चुका था और तुम्हारी नजर राकेश, विनोद वगैरा पर जमी थी, तभी नीरा की हत्या का रिस्क क्यों लिया गया ?"

-"पता नहीं।" बलराज सर हिलाता हुआ बोला-"सिर्फ इतना कहा जा सकता है, जिस तरह हम यह नहीं जानते कि पिछले चार सालों से राकेश ने कितने आदमियों को अपना शिकार बनाया, उसी तरह हमें इस बात की जानकारी भी नहीं है कि राकेश ने इस अर्से में कितनी लड़कियों को बतौर पार्टनर इस्तेमाल किया और उनमें से कब और कितनी लड़कियों को ठिकाने लगाया गया। अलबत्ता एक सम्भावना जरूर हो सकती है।"

-"क्या?"

-"मैं समझता हूं नीरा को ठिकाने लगाने की कमोबेस वजह पार्टनरों की तादाद कम करना थी,ताकि बाकी बचे पार्टनरों के हिस्से में आने वाली रकम की मोटाई बढ़ सके।"

बलराज इस सम्भावना को पहले भी व्यक्त कर चुका था और मैं भी इससे सहमत था।

-"लेकिन यह तो मेरी बात का जवाब नहीं हुआ।"

-"तुम्हारी बात का जवाब यह है।" बलराज ने कहा-"क्योंकि इस दफा बवेजा के मामले में गड़बड़ हो गई थी, क्योंकि इस मामले में पुलिस का दखल हो गया था। शायद इसीलिए यह सोचा गया कि जो पुलिस की निगाह में आ चुका है उसकी छुट्टी कर दी जाए और इस नई योजना की शिकार सबसे पहले नीरा हुई, क्योंकि वह हमारी निगाह में आ चुकी थी। उसकी जगह ऐसी किसी नई लड़की को पकड़ना कोई मुश्किल नहीं है जिसकी तरफ आसानी से पुलिस का ध्यान न जा सके।"

मैंने गौर से उसकी ओर देखा।

-"नई लड़की से तुम्हारा आशय कहीं रीटा खरे से तो नहीं है ?"

बलराज ने जवाब नहीं दिया।

उसने रीटा खरे के बारे में प्राप्त रिपोर्ट उठा ली।

-"रीटा खरे एक कस्बाई लड़की है, जो महानगरीय ग्लेमर से आकर्षित होकर करीब तीन साल पहले यहां आई थी।" बलराज रिपोर्ट पढ़ता हुआं बोला-"दो साल तक वह छोटी-मोटी नौकरियां करती रही, जिनमें टाइपिस्ट, रिसेप्शनिस्ट से लेकर कैबे डांसिंग तक शामिल हैं। एक साल से वह प्रत्यक्षत: काम कोई नहीं कर रही है, लेकिन रहती ठाठ-बाट से है।" उसने रिपोर्ट वापस डेस्क पर रख दी-"जाहिर है उसके तमाम खर्चे एक साल से राकेश ही उठा रहा है। रीटा खुद को बड़े फख्र के साथ राकेश की 'छोकरी' कहती है। और राकेश भी उसे बाकायदा अपनी मिल्कियत समझता है ।"

तभी फोन की घन्टी बजने लगी।

बलराज ने रिसीवर उठा लिया।

-"हैलो....यस स्पीकिंग.....हूं.....ठीक है.....अच्छा.....तुम वहीं ठहरो.....मैं पहुंच रहा हूं।"

वह सम्बन्ध-विच्छेद करके खड़ा हो गया।

-"आओ, भारती।" उसने कहा फिर अश्विनी से बोला-"तुम राकेश के गैराज पर पहुंचकर विनोद को वाच करो। हैड कांस्टेबल सुखदेव भी वहीं है।"

-"राइट, सर !" अश्विनी ने उठकर कहा और बाहर निकल गया।

-"कहां चलना है ?" मैंने पूछा।

-"उसी इमारत में जहां यह बखेडा शुरू हआ था।"

-"अब वहां क्या हो गया ?"

-"पता नहीं।" बलराज बोला-"मैंने अपने जिन दो आदमियों को राकेश और विनोद के पीछे लगाया था, उन्हीं में से एक ने फोन किया है। विनोद ओर राकेश यहां से सीधे अपने गैराज कम ऑफिस गए थे। विनोद तो वहीं रहा, लेकिन राकेश जल्दी ही पुन: बाहर आ गया। मैंने जिन दो आदमियों को उनके पीछे लगाया था वो ऐसे कामों में माहिर हैं। फोनकर्त्ता का कहना है जाहिरा तौर पर ऐसा तो नहीं लगा कि राकेश को अपना पीछा किए जाने का पता चल गया था, लेकिन गैराज से बाहर आते ही उसने पूरी एहतियात बरतनी शुरू कर दी। वह लम्बा चक्कर काटने और तीन बार टैक्सियां तथा दो बार ऑटोरिक्शा बदलने के बाद उस इमारत पर पहुंचा था।"

-"मगर वह वापस उस इमारत में क्यों गया ?" मैंने पूछा "कहीं ऐसा तो नहीं उसे अपना पीछा किए जाने का पता चल गया था और वह पीछा करने वाले को डॉज देने में कामयाब हो गया था ?"

-"नहीं।" बलराज सर हिलाकर इंकार करता हुआ बोला-"अपनी ओर से पूरी कोशिश करने के बाद भी वह ऐसा नहीं कर सका। मेरे विचार से वह इमारत में या तो यह पता करने गया है कि क्या नीरा की सचमुच हत्या कर दी गई है या फिर यह देखने कि काम तसल्लीबख्श ढंग से हुआ था या नहीं।"

मैं समझ नहीं पाया कि बलराज वहां किसलिए जाना चाहता .था ?

-"तुम वहां किसलिए जाना चाहते हो ?"

-"राकेश को इमारत में गए करीब आधा घंटा हो गया है, लेकिन वह बाहर नहीं निकला।"

मैंने अपनी रिस्टवाच पर निगाह डाली-साढ़े चार बजे थे।

-"इस वक्त तो वो इमारत भी खाली होगी। वह वहां अन्दर घुसा क्या कर रहा है?"

-"यही पता लगाने तो हम वहां चल रहे हैं।"

***

बलराज धीमी रफ्तार से जीप ड्राईव कर रहा था।

सड़क लगभग सुनसान थी और उस पूरे ब्लाक में सन्नाटा था।

अनायास ही मुझे याद आया। तीसरे पहर के ऐसे ही सन्नाटे में सज्जन कुमार बवेजा को टॉर्चर करके मर्डर करने की प्लान को कामयाब बनाया गया था। तीसरे पहर के इसी सुनसान वातावरण और खामोशी में, जब इस ब्लाक में रहने वाले अपने-अपने काम पर गए हुए थे, सिर्फ अकेले बवेजा के फ्लैट में ही आवाजाही रही होगी। बवेजा के फ्लैट से खून से सना सोफा ऐसे ही वक्त में बाहर लाया गया होगा और जब नया सोफा फ्लैट में पहुंचाया गया था तब भी यही वक्त रहा होगा। बवेजा पर उसी के फ्लैट में हमला करके उसे बेहोश भी ऐसे ही किसी वक्त किया गया था, फिर उसके हाथ-पैर बांधकर मुंह पर टेप चिपका दिया गया था और पलंग को फर्श के साथ कसकर उसे यातनाएं दी जाने लगी थीं।

बलराज ने इमारत से कोई पचास गज पहले ही अपने आदमी के संकेत पर जीप रोक दी !

-"कोई नई खबर महावीर?" उसने पूछा।

-"जी नहीं।" महावीर ने जवाब दिया-"अगर वह दूसरे किसी रास्ते से बाहर नहीं निकल गया है तो, अभी भी इमारत में ही होना चाहिए।"

-"जहां तक मेरा ख्याल है इस इमारत में आने-जाने का प्रवेश द्वार के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। हां अगर वह छत के रास्ते बाहर निकल गया हो तो बात दूसरी है।"

-"मेरे विचार से वह अभी अन्दर ही है सर।" वह बड़ा लम्बा चक्कर काटने और कई सवारियां बदलने के बाद यहां पहुंचा था। मैं यकीनी तौर पर कह सकता हूं ऐसा उसने एहतियातन ही किया था। उसे इस बात का शक भी नहीं हो सका था कि उसका पीछा किया जा रहा था। यहां पहुँचने के बाद वह ऑटोरिक्शा से उतरा और बेफिक्री के साथ चलता हुआ सीधा जाकर इमारत में दाखिल हो गया था।"

-"खैर, हम इमारत में जाकर देख लेते हैं।" बलराज ने कहा

-"तुम जीप में बैठो।"

महावीर जीप में सवार हो गया।

बलराज ने जीप आगे बढ़ाई और ठीक इमारत के सामने ले जाकर रोक दी।

हम तीनों नीचे उतरकर प्रवेश-द्वार पर पहुंचे।

बलराज ने दरवाजा खोला। वो लॉक्ड नहीं था।

हम भीतर दाखिल हुए और सीढ़ियां चढ़ने लगे। बलराज सबसे आगे था और महावीर पीछे।

प्रत्यक्षत: हमारी मन्जिल दूसरे खण्ड पर स्थित नीरा मलकानी का फ्लैट था । पहले खण्ड पर पहुंचने के बाद हम लैडिंग पर मालती वर्मा के फ्लैट के बन्द दरवाजे के आगे से गुजरकर दूसरे खण्ड की सीढ़ियां चढ़ने के लिए मुड़े ही थे कि अचानक बलराज ठिठक गया।

दूसरे खण्ड की लैंडिंग पर सजी-संवरी रीटा खरे बैठी थी।

रीटा खरे की सर्वथा अप्रत्याशित उपस्थिति ने हम सबको चकराकर रख दिया। खुद रीटा भी हमारे आगमन से असमंजस में पड़ गई प्रतीत हुई।

कई क्षण तक गहरी खामोशी छाई रही,फिर रीटा ने ही मौन भंग किया।

-"ओह !" वह चौंकती-सी बोली-"इन्सपेक्टर, आप ?"

उसके पूछने का ढंग ऐसा था मानो हम लोगों का आगमन उसके लिए सर्वथा अप्रत्याशित था।

बलराज पुनः सीढ़ियां चढ़ने लगा।

मैंने और महावीर ने भी उसका अनुकरण किया।

बलराज लैडिंग पर रीटा के सामने पहुंचकर रुका।

-"तुम यहां बैठी क्या कर रही हो ?" उसने पूछा।

-"इन्तजार।" रीटा ने जवाब दिया।

-"किसका ?"

-"राकेश का।"

-"तुम उसका इन्तजार इसी तरह सीढ़ियों में बैठकर ही किया करती हो ?"

-"नहीं।"

-"लेकिन, सीढ़ियों में क्यों बैठी हो ?"

-"मैं नीरा के फ्लैट पर गई थी।" रीटा सहज भाव से बोली-"उसका फ्लैट लॉक्ड है और काफी देर तक दरवाजा खटखटाने पर भी कोई जवाब नहीं मिला। वह कहीं चली गई लगती है । इसलिए. मैं यहां बैठी इन्तजार कर रही हूं।"

-"नीरा का ?"

-"नीरा का भी और राकेश का भी।"

बलराज असमंजस में पड़ गया।

-"राकेश यहां नहीं है ?" उसने निरर्थक-सा प्रश्न किया।

रीटा ने खीसें निपोर दीं।

-"अगर राकेश यहां होता तो,क्या मैं इस तरह अकेली बैठी नजर आती ?"

यह बात उसने इस ढंग से कही थी मानो राकेश की 'छोकरी' होने के नाते राकेश की मौजूदगी में उसका इस तरह अकेली बैठना, उसके लिए बड़ी भारी हिमाकत की बात होनी थी।

-"हो सकता है राकेश यहां आकर चला गया हो।" बलराज ने कुरेदने वाले अन्दाज में पूछा।

-"नहीं हो सकता,अगर वह यहां आता तो उसने मेरा इन्तजार जरूर करना था।"

-"तुम्हें कैसे पता चला कि राकेश ने यहां आना था ?"

-"मुझसे फोन पर कहा गया था कि मैं उसे यहां मिलूं।"

-"सीढ़ियों पर ?"

-"नहीं, नीरा के फ्लैट में। मेरी समझ में नहीं आता कि वह भी कहां चली गई, अगर उसके फ्लैट में पार्टी होनी थी तो, उसे यहीं होना चाहिए था।"

-"तुमसे फोन पर यही कहा गया था कि नीरा के फ्लैट में पार्टी है ?"

-"नहीं,मुझसे कहा गया था मैं नीरा फ्लैट में पहुंचकर राकेश का इन्तजार करू ।"

-"फिर तुमने पार्टी के बारे में कैसे सोच लिया ?"

-"और क्या सोचना था मुझे ? अगर यहां पार्टी नहीं होती तो, राकेश मुझे इस तरह बुलाता क्यों ? सीधी-सी बात है यहां पार्टी ही होनी है। नीरा ने राकेश के साथ मिलकर प्रोग्राम बनाया होगा, लेकिन भुलक्कड़ होने की वजह से वह भूल गई कि उसने ऐसा कोई प्रोग्राम बनाया था और हमें यहां आने के लिए कहा था। पहले भी कई बार ऐसा हो चुका है, इन्सपेक्टर।"

-"तुम्हारे विचार से क्या राकेश भी भूल गया ?"

-"राकेश नहीं, वह कभी कुछ नहीं भूलता। वह जरूर आएगा।"

-"तुम्हें फोन कब किया गया था ?"

-"करीब डेढ़ घण्टे पहले। मैं सीधी यहां आ गई और उसका इन्तजार कर रही हूं।"

बलराज ने प्रश्नात्मक निगाहों से महावीर की ओर देखा मानो कुछ पूछ रहा था क्या तुमने इस लडकी को इमारत में आते देखा था।

महावीर ने सर हिलाकर इंकार कर दिया, जिसका मतलब था उसने रीटा को यहां आते नहीं देखा था।

बलराज पुनः रीटा से मुखातिब हुआ।

-"क्या उसने तुमसे सीधी यहीं पहुंचने के लिए कहा था ?"

-"किसने ?"

-"राकेश ने फोन पर ।"

-"ओह, नहीं। दरअसल उसने खुद मुझे फोन नहीं किया था। ऑफिस के अपने किसी आदमी से कराया था। वह बहुत मसरूफ रहने वाला आदमी है और अक्सर ऐसा ही करता है।"

रीटा ने बड़े फख्र के साथ इस ढंग से कहा मानो राकेश कोई बहुत ही बड़ा आदमी था।

-"तो फिर उसने फोन किससे कराया था ?" बलराज ने पूछा-"विनोद से ?"

रीटा ने पुनः खीसें निपोर दीं।

-"पता नहीं।" ऑफिस में मौजूद किसी और आदमी से कराया होगा।" वह बोली-"फोनकर्ता विनोद नहीं था। आइंदा राकेश कभी उससे मुझे फोन कराएगा भी नहीं। हालांकि पिछली रात राकेश ने जाहिर तो नहीं किया, लेकिन मेरे विनोद के साथ चले जाने की वजह से वह बहुत खफा था। विनोद के साथ मुझे देखकर उसे बड़ी भारी ईर्ष्या हुई थी।"

-"जब तुम्हें राकेश की ओर से फोन किया गया तुम थीं कहां ?"

-"राकेश के फ्लैट में । मैं सारा दिन वहीं रही हूं।"

-"क्या उसने तुमसे वहीं जाने के लिए कहा था ?"

-"मुझसे कहा था ? कब ?"

-"पिछली रात या आज सुबह ?"

-"नहीं, उसने तो मुझसे ऐसा कुछ नहीं कहा, क्योंकि नीरा अपने फ्लैट में नहीं थी इसलिए मैं वहां गई थी।"

-"लेकिन तुमने तो कहा था कि तुम यहीं सीढ़ियों में रहकर इन्तजार करती रही हो।"

-"यह अबकी बात है । मैं पहले की बात कर रही हूं।"

-"पहले कब की ?"

-"पिछली रात विनोद के साथ नीरा के फ्लैट में आने के बाद, की।"

रीटा की वहां मौजूदगी अपने आपमें जितनी अजीब पहेली लग रही थी इससे कहीं ज्यादा अजीब और उलझन भरी उसकी बातें। थीं।

-"मेरा ख्याल है, अन्दर चलकर बातें करना ठीक रहेगा।" बलराज ने कहा।

रीटा अपना पर्स उठाकर खड़ी हो गई।

हम चारों नीरा के बन्द फ्लैट के सम्मुख पहुंचे।

बलराज ने मुरारीलाल वाले गुच्छे में से एक चाबी छांटकर की-होल में फंसाई और ताला खोला फिर उसने दरवाजा खोल दिया।

-"आओ।" वह अन्दर की ओर इशारा करता हुआ बोला।

रीटा आंखें फैलाए बलराज को ताक रही थी।

-"आपके पास नीरा के फ्लैट की चाबी है, इन्सपेक्टर ?" उसने गहन उत्सुकतापूर्वक पूछा-"यह चाबी नीरा ने आपको दी थी ?" फिर वह रहस्यमय ढंग से मुस्करा दी। उसकी उस मुस्कराहट का सिर्फ एक ही मतलब था कि नीरा और इन्सपेक्टर के गहरे ताल्लुकात थे।

-"नीरा ने काफी पहले मुझे यह चाबी दी थी।" बलराज ने सफेद झूठ बोला।

-"आई सी। आप पर नीरा खासतौर से मेहरबान है।" रीटा बलराज के पीछे भीतर दाखिल होती हुई बोली, फिर एकाएक वह थमककर रुक गई। उसने अन्दर पड़े खून से सने सोफे की ओर इशारा किया-"अरे, यह क्या ? इस दफा उसने यह क्या किया है ?" वह चहकती हुई बोली-"नीरा वाकई बेहद लापरवाह है। और राकेश को उसकी ये बेहूदा हरकतें कतई पसन्द नहीं हैं।"

बलराज ने उसकी तरफ ध्यान न देकर महावीर को संकेत किया।

महावीर अन्दर आया और दूसरे कमरे की ओर बढ़ गया।

मैं दरवाजे में ही खड़ा रहा।

-"तुम पिछली रात कहां थीं ?" बलराज ने रीटा से पूछा।

रीटा ने पलकें झपकाईं।

-"यहां, आपको याद नहीं। उस वक्त आप भी तो नीरा के साथ यहीं थे। पहले मैं और विनोद आए थे, फिर राकेश भी आ पहुंचा था।"

-"मुझे याद है। यह भी याद है कि उस वक्त नीरा भी यहीं थी, लेकिन तुमने बताया था जब तुम यहां आई तो नीरा यहां नहीं थी।"

-"ओह, वह। वह बाद की बात थी।"

-"बाद की, यानी तुम बाद में दोबारा भी यहां आई थीं ?"

-"हां।"

-"अकेली ?"

-"हां।"

-"पिछली रात जब हम यहां से गए तुम विनोद, राकेश और नीरा के साथ यहीं रह गई थीं, फिर क्या हुआ था?"

-"सच-सच बताओ, इन्सपेक्टर । क्या आप नीरा की तलाश में यहां आए हैं ? क्या उसने कोई गलत काम कर दिया है ?"

-"तुम्हारा क्या ख्याल है इस बारे में ?"

-"मैं कुछ नहीं कह सकती। कोई छह महीने पहले नीरा की एक सहेली ने मुझे बताया था कि नीरा अच्छी लड़की नहीं है। मैंने यह बात राकेश को बताई तो, उसने मुझे झिड़क दिया था कि मुझे दूसरों की बातों पर कान नहीं देने चाहिएं।"

-"और तुमने राकेश की बात मान ली ?"

-"ऑफकोर्स।"

तभी महावीर उस कमरे में आया। उसने सर हिलाकर इन्कार कर दिया। यानी राकेश नीरा के फ्लैट में नहीं था।

अजीब बात थी। राकेश इमारत में दाखिल हुआ और गायब हो गया।

लेकिन बलराज ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। उसने रीटा से बातें करना जारी रखा।

-"खैर, इस बात को छोड़ो।" वह कह रहा था-"यह बताओ पिछली रात यहां से हमारे जाने के बाद तुमने क्या-क्या किया ?"

-"हम चारों कुछ देर यहीं रहे।" रीटा सामान्य ढंग से बोली -"फिर शुद्ध शाकाहारी में डिनर लिया। वहां से वापसी पर हमने नीरा को इस इमारत के बाहर छोडा, फिर विनोद और राकेश मुझे मेरे फ्लैट वाली इमारत के बाहर ड्राप करके चले गए।"

-"उसके बाद ?"

-"मैं अपने फ्लैट में जाकर सोने की तैयारी करने ही वाली था कि अचानक मुझे वह आदमी याद आ गया, जो यहीं बगल वाले फ्लैट में रहता था।" रीटा सहमी-सी आवाज में बोली-"आपने टार्चर करके मर्डर किए जाने का जो किस्सा सुनाया था उसका एक-एक लफ्ज मुझे याद आता रहा और मुझ पर दहशत सवार होती गई। मैं अकेली थी। मेरे फ्लैट का दरवाजा भी ज्यादा मजबूत नहीं है। उसे तोड़कर कोई भी आसानी से भीतर दाखिल हो सकता है।"

-"खासतौर पर विनोद जैसा तगड़ा नौजवान ।" बलराज सहानुभूतिपूर्वक बोला।

-"विनोद में वाकई सांड जैसी ताकत है।"

-"इसीलिए तुम उससे डरती हो ?"

-"विनोद से ?" नहीं, राकेश की वजह से वह मुझे छू भी नहीं सकता ।"

-"लेकिन पिछली रात जंब तुम यहां आई तो, भयभीत थी।" एक पल के लिए ऐसा लगा मानो रीटा । इन्कार करने वाली थी, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसके चेहरे पर शर्मिंदगी भरे भाव पैदा हो गए।

-"हां, मैं कुछ देर के लिए जरूर डरी थी।" वह पलकें झपकाती हुई बोली-"लेकिन इसकी वजह सिर्फ इतनी थी कि राकेश जल्दी नहीं आया था। वह बार-बार बेवकूफ कहकर मुझे मेरी निगाहों में भी बेवकूफ साबित करना चाहता था। उसकी इस हरकत पर मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसे बुरा-भला कहा और गुस्से में ही विनोद के साथ चली गई,अगर मुझे पता होता कि राकेश फौरन मेरे पीछे नहीं आएगा तो, मैंने हरगिज भी ऐसा कदम नहीं उठाना था, लेकिन राकेश को भी,क्योंकि मेरी इस हरकत से खुंदक आ गई थी इसलिए उसने जान-बूझकर आने में देर कर दी।"

-"तो फिर तुम अपने फ्लैट में पहुंच जाने के बाद क्यों डरी थी ?" बलराज ने जान-बूझकर फिर वही सवाल दोहराया।

-"इसकी वजह मैं आपको बता चुकी हूं । बगल वाले फ्लैट में रहने वाले आदमी के मर्डर के बारे में जो कुछ आपने बताया वो इतना खौफनाक है कि अकेले में उसे याद करके मैं जिन्दगी भर डरती रहूंगी। नीरा के साथ मैंने भी बहुत बार उस आदमी को आते-जाते देखा था। नीरा उसे प्रिंस चार्मिंग कहा करती थी। हालांकि वह राकेश जैसा हैंडसम तो नहीं था, लेकिन देखने में अच्छा और भला लगता था। उसके हौलनाक अन्त के बारे में सोच-सोच कर मैं इस बुरी तरह डर गई थी कि अपने फ्लैट में अकेली रात गुजारने की, हिम्मत नहीं कर सकी। काफी देर तक सोचती रहने के बाद मैंने नीरा के साथ रात गुजारने का निश्चय किया और यहां आ पहुंची।"

-"इसका मतलब पिछली रात तुमने इसी फ्लैट में गुजारी थी ?"

-"नहीं।" रीटा सर हिलाकर इन्कार करती हुई बोली-"मैं बाहर खड़ी दस्तक देती रही, लेकिन दरवाजा नहीं खुला। उस वक्त तक तमाम पुलिसमैन भी यहां से जा चुके थे। नीरा का दरवाजा न खुलने से जाहिर था कि वह यहां नहीं थी। कहीं चली गई थी।"

-"रात में तुम यहां किस वक्त पहुंची थी ?"

-"शायद बारह बजे थे।"

-"तुमने यह नहीं सोचा कि रात में बारह बजे नीरा कहां गई होगी ?"

-"मैंने उसे जाते नहीं देखा इसलिए मैं नहीं कह सकती कि वह बारह बजे कहीं गई थी। यहां आने के बाद जब उसका दरवाजा नहीं खुला तो मैंने सोचा कि वह घर में नहीं थी। नीरा की सहेली के मुताबिक, क्योंकि नीरा अच्छी लड़की नहीं है इसलिए उसके बेवक्त कहीं चले जाने को भी बड़ी बात नहीं कहा जा सकता। मेरा ख्याल था....।"

-"अपना ख्याल छोड़ो।" बलराज उसे टोकता हुआ बोला- "यह बताओ नीरा के फ्लैट का दरवाजा न खुलने के बाद तुमने क्या किया ?"

-"मैं सारी रात बाहर रहकर तो गुजार नहीं सकती थी और वापस अपने फ्लैट पर लौटने का हौसला मुझमें था नहीं, इसलिए मैं राकेश के घर चली गई।"

-"और नीरा भी तुम्हें वहीं मिली ?"

-"नहीं। वहां कोई नहीं था। फ्लैट को ताला लगा था। मैंने कुछ देर इन्तजार किया, लेकिन राकेश और विनोद वहां नहीं लौटे। अन्त में मैं अन्दर जाकर राकेश के बिस्तर में सो गई । वे लोग सारी रात वापस नहीं लौटे।"

-"तुम्हारे लिए राकेश के फ्लैट का दरवाजा किसने खोला था ?"

-"फ्लैट में कोई था ही नहीं तो दरवाजा कौन खोलता ? मैंने खुद दरवाजा खोला था।"

-"तुम्हारे पास उसके फ्लैट की चाबी है ?" बलराज ने अर्थपूर्ण स्वर में पूछा।

रीटा ने बेवकूफों की भांति पलकें झपकाई, फिर शरमाकर गर्दन झुका ली।

-"हां, लेकिन मेरे पास चाबी होने का मतलब वो नहीं है, जो आप समझ रहे हैं।" वह बोली-"मैं रोज दिन में राकेश के फ्लैट में आती हूं। वहां सफाई करती हूं, नाश्ते के बरतन साफ करती हूं और राकेश के कपड़े धोकर प्रेस करती हूं। राकेश के पास दर्जनों जोड़े कपड़े हैं और वह आदतन दिन में तीन बार कपड़े बदलता है, अगर दो दिन भी कपड़े न धुलें तो वहां ढेर लग जाता है । जब राकेश का बाहर खाने का मूड नहीं होता तो, मुझे उसके लिए रात का खाना भी बनाना होता है। मेरा बनाया बटर चिकन उसे बेहद पसन्द है।"

बलराज की आंखें सिकुड़ गयीं । वह चन्द पल खामोशी से उसे घूरता रहा, फिर मुस्कराया।

-"तुम्हें उससे बहुत ज्यादा लगाव है।" वह बोला-"शायद इसीलिए तुम्हें उससे फ्लैट में अकेले रात गुजारने में भी डर नहीं लगा।"

-"डरने की कोई वजह ही नहीं थी।"

-"क्यों ? राकेश के फ्लैट में तो विनोद का खतरा और भी ज्यादा था। खासतौर से उस सूरत में जबकि तुम वहां अकेली थीं और विनोद मुस्तकिल तौर पर वहीं रहता है।"

-"विनोद से मुझे कोई खतरा नहीं। वह मेरे साथ उलझने की हिम्मत नहीं कर सकता। पिछली रात राकेश ने उसके भेजे में अच्छी तरह यह बात बैठा दी थी कि मुझ पर उसी का एकाधिकार है, इसलिए विनोद मेरे पास फटकने की भी कोशिश न करे और विनोद में इतना हौसला नहीं है कि राकेश की बात पर पूरा-पूरा अमल न करे।"

-"अच्छा, लेकिन राकेश अब कहां है ?"

-"वह बस यहां पहुंचने ही वाला होगा।" रीटा जोरदार स्वर में बोली-"मुझे खामखाह परेड कराने या इन्तजार कराने वाला आदमी वह नहीं है। ऐन वक्त पर उसके पास कोई कस्टमर आ गया होगा या फिर उसे अचानक कोई जरूरी काम आ गया होगा, जिसकी, वजह से उसे आने में देर हो रही है। दूसरे उसे इस बात की भी कोई जानकारी नहीं है कि मैं यहां अकेली हूं। वह समझ रहा होगा मैं नीरा. के साथ हूं।"

बलराज ने उसे घूरा।

-"मैंने तुमसे पूछा था राकेश इस वक्त कहां है ?"

-"पता नहीं। शायद अपने ऑफिस में होगा।"

-"वह ऑफिस में नहीं है।"

-"तो फिर यहां पहुंचने वाला होगा।"

-"यहां पहुंच चुका है। वह यहीं है।"

रीटा बुरी तरह चौंकी।

-"क्या मतलब ?" उसने पलकें झपकाते हुए पूछा।

-"मेरे दो आदमी बराबर उसका पीछा करते रहे हैं। उनमें से एक यह है।" बलराज महावीर की ओर इशारा करता हुआ बोला-"इस आदमी ने उसे अपने ऑफिस से निकलकर यहां आते और इस इमारत में दाखिल होते देखा था।"

-"तब तो जरूर वह मेरे पहुँचने से पहले यहां आया होगा।"

-"नहीं, वह तुम्हारे पहुंचने के बाद यहां आया था, क्योंकि मेरे आदमी ने तुम्हें यहां आते नहीं देखा।"

-"नामुमकिन ! यहां आने के बाद मैं या तो फ्लैट के बाहर - खड़ी रही थी या फिर सीढ़ियों में बैठी रही थी।"

-"और तुम्हें वह नहीं मिला ?"

-"अगर वह मुझे मिला होता तो क्या आप मुझे सीढ़ियों में अकेली बैठी पाते ?"

-"मैं तुमसे पूछ रहा हूं क्या वह तुम्हें नहीं मिला ?"

-"मेरी समझ में नहीं आता आप क्या कहना चाहते हैं और मुझसे क्या कहलवाने की कोशिश कर रहे हैं।" रीटा खीजती हुई-सी बोली-"आखिर बात क्या है ? आप क्यों बार-बार कह रहे हैं कि राकेश मेरी मौजूदगी में यहां आया था।"

बलराज ने जवाब नहीं दिया। वह नीरा के फ्लैट से बाहर आ गया।

हमने भी उसका अनुकरण किया।

बलराज गुच्छे से चाबी निकालकर बवेजा के फ्लैट का ताला खोल रहा था।

-"राकेश इस फ्लैट में नहीं है।" रीटा ने कहा-"मैं पूरा वक्त यहीं रही हूं। वह मुझे दिखाई दिए बगैर इस फ्लैट में नहीं घुस सकता था। इससे भी बड़ी बात है कि वह इस

फ्लैट में घुसा कैसे। यहां वह आदमी रहता था जिसकी हत्या कर दी गई थी। राकेश ने उसके फ्लैट में क्या करने आना था ?"

बलराज ताला खोलकर फ्लैट में दाखिल हुआ।

उसने एक-एक करके दोनों कमरे,किचिन,बाथरूम और लैट्रिन सब देख डालें,लेकिन राकेश वहां नहीं मिला।

बलराज ने बाहर आकर पुनः फ्लैट लॉक किया और सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

रीटा,महावीर और मैंने भी उसका अनुकरण किया।

वह निचले फ्लोर पर लैडिंग के एकदम पास वाले दरवाजे के सामने रुक गया। वो मालती वर्मा का फ्लैट था। उसके दरवाजे में दोहरा ताला था । मुरारीलाल के गुच्छे की मदद की जरूरत यहां नहीं पड़ी, क्योंकि उससे खुलने वाला ताला तो पहले से ही खुला पड़ा था। वह दूसरा ताला खोलने की कोशिश करने लगा।

-"आप यह क्या कर रहे हैं, इन्सपेक्टर ?" रीटा ने आपत्तिजनक स्वर में पूछा।

-"तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा।" बलराज ने लापरवाही से कहा

-"मैं इस फ्लैट का ताला खोल रहा हूं।"

-"लेकिन क्यों ? आप समझते हैं मुझे ऊपर सीढ़ियों पर इन्तजार करती छोड़कर खुद राकेश इस फ्लैट में बेठा होगा, जबकि यहां रहने वाली लड़की को वह जानता तक भी नहीं है। क्या आपकी निगाहों में राकेश पागल है ? मैं कहती हूं आप बेकार वक्त जाया कर रहे हैं। राकेश के ऑफिस में फोन करके क्यों नहीं पूछ लेते कि वह कहां है ?"

-"मेरी निगाहों में राकेश बेहद होशियार किस्म का आदमी हैं।" बलराज विभिन्न चाबियों से ताला खोलने की कोशिश करता हुआ बोला-"और उसके ऑफिस में फोन करके पूछने की जरूरत मैं इसलिए नहीं समझता, क्योंकि मैं जानता हूं वह इसी इमारत में है।"

-"और इस फ्लैट में।" रीटा कड़वे स्वर में बोली-"अगर ऐसा है तो आप दस्तक क्यों नहीं देते ? चोरों की तरह ताला खोलने की कोशिश क्यों कर रहे हैं ?"

बलराज ने ताला खोलने की कोशिश करना जारी रखा।

-"हम पुलिस वालों को कभी-कभी चोरों जैसी हरकतें भी करनी पड़ती हैं।" वह मुस्कराकर बोला।

रीटा बल खाकर रह गई। उसके हाव-भाव से ज़ाहिर था कि बलराज की यह हरकत उसे जरा भी पसन्द नहीं आ रही थी।

-"समझ नहीं आता क्या होने वाला है।" वह विवश स्वर में बोली।

-"और मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि हुआ क्या है।" बलराज ने कहा।

रीटा होठ चबाने लगी। वह बेहद चिन्तित नजर आ रही थी। बलराज की बातों से वह बुरी तरह उखड़ चुकी थी।

थोड़ी और कोशिश के बाद बलराज को कामयाबी मिल गई।

आखिरकार एक चाबी ने ताला खोल ही दिया।

बलराज ने दरवाजे का पल्ला भीतर की ओर धकेला । दरवाजा सिर्फ थोड़ा-सा खुलकर रह गया। ऐसा लगता था मानो अन्दर काइ चीज अड़ी हुई थी जिसने दरवाजा खुलने से रोक दिया था।

बलराज ने सावधानीपूर्वक जोर लगाते हुए पुन: पल्ला पीछे धकेला । धीरे-धीरे दरवाजा खुल गया।

मैं और महावीर बलराज के ठीक पीछे थे । सहसा एक परिचित गन्ध हमारे नथुनों से टकराई।

बैंजीन की उस गन्ध को मैं फौरन पहचान गया।

बलराज ने अपनी सर्विस रिवाल्वर होलेस्टर से बाहर खींच ली।

वह सतर्कतापूर्वक भीतर दाखिल हुआ।

मुझे एक तरफ धकेलकर महावीर ने भी उसका अनुकरण किया।

मैं और रीटा बाहर ही खड़े रहे।

अन्दर वे दोनों शायद फ्लैट की तलाशी ले रहे थे।

चंद क्षणोपरांत बलराज पुन: दरवाजे पर प्रगट हुआ।

-"अन्दर आओ।" वह बोला।

-"मैंने कहा था न आप बेकार वक्त जाया कर रहे हैं।" रीटा मुझे एक तरफ धकेलकर भीतर दाखिल होती हुई बोली,फिर अचानक वह ठिठकी और चिल्लाई- "राकेश!" और फिर वह फूट-फूट कर रोने लगी।

मैं फ्लैट में दाखिल हुआ और जो नजारा सामने आया उसने एक पल के लिए मेरी बुद्धि भी कुंठित कर दी।

फर्श पर दरवाजे के पीछे राकेश फैला पड़ा था। नीरा की तरह उसके सर के पृष्ठ भाग पर भी चोट का निशान था, लेकिन नीरा की भांति उसके सर से ज्यादा खून नहीं बहा था। उसकी खोपड़ी किस चीज से चटकाई गई थी इस दफा यह अनुमान लगाने की जरूरत नहीं पड़ी,क्योंकि फर्श पर ही उसकी बगल में पीतल का एक भारी घूंसा पड़ा था। घूंसे की बगल में ही एक शीशी रखी थी जिस पर चिपका बेंजीन का लेबल साफ नजर आ रहा था।

राकेश की फटी-फटी सूनी आंखें उसके मुर्दा होने की सूचना दे रही थीं। पीतल का 'घूंसा' और बैंजीन की शीशी की मौजूदगी यह बताने के लिए काफी थे कि मृत्यु कैसे हुई थी।

बवेजा और नीरा की भान्ति प्रत्यक्षत: उसकी भी हत्या की गई थी और उसी ढंग से की गई थी। सर पर प्रहार करके उसे बेहोश किया गया, मुंह पर टेप चिपका दिया गया और फिर नथुनों को धीरे से तब तक दबाए रखा जब तक कि दम घुटने की वजह से वह मर नहीं गया।

एक ही जैसे ढंग से की गई वह तीसरी हत्या थी। मर्डर करने का एक ही तरीका तीसरी दफा अपनाया गया था। एक ही मर्डर प्लान को तीसरी बार इस्तेमाल में लाया गया था।

ऐसा लगता था कि हत्यारे को हत्या करने के लिये अपने इसी तरीके से भारी लगाव था।

बलराज उसी कमरे में मौजूद टेलीफोन उपकरण के पास बैठा डायरेक्ट्री के पेज पलट रहा था।

रीटा राकेश की लाश के पास बैठी जार-जार रो रही थी।

बलराज ने रिसीवर उठाकर नम्बर डायल किया।

सम्बन्ध स्थापित होने पर वह बोला-"कुड आई स्पीक टू मि. विनोद कुमार.....इन्सपेक्टर बलराज कनवर स्पीकिंग.....पुलिस हैडक्वार्टर्स से आने के बाद तुम बराबर ऑफिस में ही रहे हो या कहीं गए भी थे.....क्या.....मेरे सवाल का जवाब दो.....ओह, गो टू दी हैल!" और रिसीवर वापस क्रेडिल पर पटक दिया।

-"क्या कहा विनोद ने ?" मैं पूछ बैठा।

-"तुम खुद अन्दाजा नहीं लगा सकते ?"

-"उसने कहा होगा कि वह बराबर वहीं मौजूद रहा है । कहीं नहीं गया।"

-"उसने अपना वहीं घिसा-पिटा जुमला दोहराया है-राकेश से पूछो।" बलराज कड़वे स्वर में बोला-"लेकिन अब उसे अपनी यह टयून बदलनी पड़ेगी" और पुनः रिसीवर उठाकर नम्बर डायल करने लगा।"

इस दफा उसने इलेक्ट्रिक एप्लायंसेज बनाने वाली उस कम्पनी से सम्बन्ध स्थापित किया जहां सुधौर चौधरी और मालती वर्मा काम करते थे।

उन दोनों में से कोई ऑफिस में उपलब्ध नहीं था। सिर्फ इतनी जानकारी मिल सकी कि सुबह ही उन दोनों ने फोन करके एक दिन की छुट्टी ले ली थीं।

बलराज ने कम्पनी से सुधीर चौधरी के स्कूटर का नम्बर पूछा और सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

फिर वह पुलिस हैडक्वार्टर्स को फोन करने में व्यस्त हो गया। राकेश की लाश के बारे में औपचारिक निर्देश देने के बाद उसने सुधीर चोंधरी के स्कूटर का नम्बर बताते हुए यह भी कहा कि कट्रोल रूम के माध्यम से तमाम गश्ती कारों और ट्रैफिक पुलिसमैनों को हिदायत दे दी जाए कि उस नम्बर के स्कूटर को रोककर फौरन उसे सूचित किया जाए।

इस काम से फारिग होने के बाद उसने हाथों से चेहरा ढंके रोती हुई रीटा को देखा, फिर राकेश की लाश को घूरने लगा।

-"मानना पड़ेगा कि रीटा कपड़े धोने और प्रेस करने में माहिर है।" अन्त में वह धीमे स्वर में बोला-"देखो, राकेश का सफारी सूट कैसा चमक रहा है।"

मैंने उसकी इस बेतुकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया। जब से राकेश की लाश बरामद हुई थी मुझे एक सवाल बराबर परेशान कर रहा था। मैंने पूछ लेना ही बेहतर समझा।

-"यह बताओ।" मैं बोला-"राकेश को इसी फ्लैट में देखने की बात तुम्हें कैसी सूझी ?"

बलराज मुस्कराया।

-"मुझे इल्हाम हुआ था, बॉस ।"

-"मजाक छोड़ो। मेरे सवाल का जवाब दो ।"

-"जवाब बिल्कुल सीधा है । राकेश इमारत में दाखिल हुआ था,लेकिन न तो वह वापस बाहर गया और न ही वह ऊपर पहुंचा। अगर बाहर जाता तो, महावीर को दिखाई देता और ऊपर आता तो रीटा को जरूर मिलता, मगर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। इस इमारत में कोई दूसरा दरवाजा भी नहीं है। इसका मतलब उसे इमारत में ही होना चाहिए था और

सबसे ज्यादा सम्भावित स्थान फर्स्ट फ्लोर था इसलिए मैं पहले यहीं पहुंचा, फिर यह संयोग की बात थी कि पहला फ्लैट खोलते ही वह मिल गया।''

मैं बलराज का मुंह ताकने लगा। मैं तय नहीं कर पाया कि उसकी तारीफ करूं या फिर इस सीधी-सी बात को न समझ पाने के कारण खुद को कोसना शुरू कर दूं।

बलराज मेरी हालत को भांपकर मुस्करा दिया।

रीटा से पूछताछ के लिए वो जगह और माहौल माकूल नहीं था। इसलिए बलराज ने महावीर को जरूरी हिदायत देकर वहीं छोड़ दिया।

बलराज, रीटा और मैं जीप द्वारा पुलिस हैडक्वार्टर्स पहुंचे।

फिर रीटा से पूछताछ का लम्बा सिलसिला शुरू हुआ।

रीटा ने बताया कि उसका ज्यादातर वक्त राकेश के फ्लैट में गुजरता था। वह, राकेश और विनोद नीरा के फ्लैट में अक्सर जाते । रहते थे। पिछले दो हफ्तों के दौरान भी यही सब होता रहा था।

-''नीरा के फ्लैट में तुम सब शाम को या रात में ही जाते थे ?'' बलराज ने कहा।

-''जरूरी नहीं था।'' रीटा ने जवाब दिया-''हम किसी भी वक्त चले जाते थे। दरअसल नीरा के यहां जाना नीरा, राकेश और विनोद के पास फुर्सत होने पर निर्भर था।''

-''पिछले दो हफ्तों के दौरान भी ऐसा ही रहा था ?''

-''हां।''

-''जब राकेश या विनोद या वे दोनों नीरा के पास जाते थे तुम हमेशा उनके साथ होती थीं ?''

-''ऐसी कोई शर्त तो नहीं थी, लेकिन हम तीनों साथ ही होते थे।''

-''राकेश और विनोद तुम्हें साथ लिए बगैर भी तो वहां जा सकते थें ?''

-''बिल्कुल जा सकते थे।''

-''क्या वे जाते भी रहे थे ?''

-''पता नहीं।''

-''नीरा के फ्लैट में आमतौर से तुम चारों क्या क्रिया करते थे ?''

-''गप-शप, हंसी-मजाक, पीना-पिलाना, वगैरा।''

-“बस ?”

रीटा ने भौहें चढ़ाई।

-“क्या मतलब ?”

-“कुछ नहीं।” बलराज जल्दी से बोला-“नीरा और विनोद के आपसी सम्बन्धों के बारे में बताओ।”

-“उनके सम्बन्ध सामान्य हैं।”

नीरा की हत्या की बात को गोल ही रखते हुए बलराज ने पूछा -“क्या उनके बीच ऐसा-वैसा भी कुछ है ?”

-“पता नहीं।”

“राकेश और नीरा के ताल्लुकात कैसे थे ?”

-“दोस्ताना।”

-“श्योर!”

रीटा का चेहरा कठोर हो गया।

-“राकेश अब इस दुनिया में नहीं है। बेहतर होगा कि आप उसके बारे में ऐसी बातें न करें।”

-“तुम राकेश से बेइन्तिहा प्यार करती थीं ?”

-“हां।

-“राकेश भी तुमसे उतना ही प्यार करता था ?”

-“हां।”

-“और राकेश के नीरा से भी दोस्ताना ताल्लुकात थे ?”

-“हां।”

-“लेकिन नीरा तुमसे ज्यादा खूबसूरत आकर्षक और पूरी आधुनिका है। क्या तुम्हें कभी ऐसा शक नहीं हुआ कि दोस्ताना ताल्लुकात का सहारा लेकर वह राकेश को तुमसे छीन सकती थी या फिर राकेश ही उसकी ओर आकर्षित हो सकता था ?”

-“मुझे राकेश पर पूरा भरोसा था।” रीटा दृढ़तापूर्वक बोली-“नीरा जैसी गिरी हुई लड़की के चक्कर में फंसने वाला आदमी वह नहीं था।”

-"तुम राकेश को कब से जानती थी ?"

- "करीब डेढ़ साल से।"

-"ओर नीरा को ?"

- "लगभंग इतने ही अर्से से।"

-"और राकेश और नीरा के दोस्ताना ताल्लुकात कब से थे ?"

-"पता नहीं।" रीटा कड़वे स्वर में बोली।

-"नीरा से तुम्हारा परिचय राकेश ने ही कराया था ?"

-"हां।"

-"अगर राकेश और नीरा के बीच ऐसा-वैसा कुछ रहा होता तो क्या तुम्हें पता चल जाना था ?"

-"प्लीज, इन्सपेक्टर ! आप बार-बार इस बात को मत दोहराइए।"

-"सॉरी।" बलराज ने क्षमायाचनापूर्वक कहा.फिर पूछा-"क्या तुम्हें कभी ऐसा शक हुआ कि राकेश तुमसे कुछ छुपा रहा था.-"

-"नहीं।"

-"कभी ऐसा भी नहीं लगा कि राकेश और विनोद मिलकर कोई खिचड़ी पका रहे थे और तुम्हें उससे अलग रखना चाहते थे ?"

रीटा ने जवाब नहीं दिया।

बलराज ने पुन: अपना सवाल दोहराकर कहा-"जवाब दो।"

-"ऐसा तो मुझे नहीं लगा।" नीरा हिचकिचाती-सी बोली-"लेकिन हाल ही में तीन-चार बार एक और बात मैंने जरूर नोट की थी। हालांकि राकेश के धंधे को देखते हुए उसे अजीब तो नहीं कहा जा सकता,मगर....।"

-"क्या नोट किया था ?" बलराज ने उसे टोककर पूछा।

-"मैं करीब-करीब सारा दिन राकेश के फ्लैट में गुजारती थी। इस वक्त वह अपने ऑफिस कम गैराज में होता था। विनोद भी उसके साथ रहता था। मैं दिन में कम-से-कम दो बार फोन राकेश को जरूर किया करती थी। आमतौर से वह ऑफिस में नहीं होता था तो, उसके आदमियों को जानकारी रहती थी कि वह कहां गया हुआ था। उसकी गैरमौजूदगी में विनोद सारा काम सम्हालता था। मेरे कहने का मतलब है कि राकेश ओर

विनोद ऑफ़िस टाइम में साथ-साथ बाहर नहीं जाते थे। उनमें से एक की ऑफिस में मौजूदगी जरूरी होती थी, लेकिन तीन-चार बार ऐसा हुआ कि वे दोनों कई-कई घंटे के लिए ऑफिस टाइम में ही ऑफिस से गायब रहे और ऑफिस का कोई आदमी नहीं बता सका कि वे कहां गए थे ?"

-"यह कब की बात है ?"

-"सही दिन तो मुझे अब याद नहीं, लेकिन पिछले करीब पन्द्रह दिनों में तीन-चार दफा ऐसा हुआ था।"

-"तुम्हें बाद में तो राकेश ने बताया ही होगा कि वह और विनोद कहां गए थे ?"

-"उसने हर बार बस एक ही बात कही कि वे अपने धंधे के सिलसिले में गए थे।"

-"और तुम्हें उसकी इस बात पर यकीन नहीं आया ?"

-"ऐसा तो मैंने नहीं कहा। अलबत्ता उन दोनों का एक साथ ऑफिस से जाना और कई-कई घंटे बाहर रहना और किसी को भी उनके बारे में पता न होना मुझे अजीब जरूर लगा था।"

-"तुमने राकेश से इस बारे में नहीं पूछा ?"

-"धन्धे के सिलसिले में जाने की बात कहकर उसने मेरे कुछ पूछने की गुंजाइश ही नहीं छोड़ी थी।"

-"तुम्हारे विचार से क्या राकेश ने यह झूठ बोला था ?"

-"उसने झूठ भले ही न बोला हो, मगर मुझे यकीन नहीं आया था।"

-"आई सी।" बलराज ने कहा-"बाई दी वे, राकेश की हत्या के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

रीटा ने असमंजसतापूर्वक इन्सपेक्टर की ओर देखा।

-"मेरा ख्याल ? क्या मतलब।"

-"राकेश की हत्या किसने की हो सकती है ?"

-"पता नहीं। मेरी जानकारी में राकेश का कोई दुश्मन तो था नहीं।"

-"विनोद के बारे में तुम्हारी जाती राय क्या है ?"

-"मैं उसे पसन्द नहीं करती।"

-"क्यों ?"

-"यह जानते हुए भी कि मैं सिर्फ राकेश से प्यार करती रही हूं वह मुझ पर बुरी नजर रखता है। पिछली होली के मौके पर गुलाल लगाने की आड़ में वह शराफत की हद से गुजरकर मेरे साथ कुचेष्टा कर बैठा था।"

-"शायद इसीलिए तुम उससे डरती हो ?"

-"मैं उससे नहीं डरती।"

-"लेकिन पिछली रात जब तुम नीरा के फ्लैट में आई तो. भयभीत थी और तुम्हारा भय तभी दूर हुआ था जब राकेश वहां पहुंच गया था।"

-"यह तब की बात है जब तक कि राकेश ने उससे नहीं कहा था कि वह आइन्दा मुझे छूने की कोशिश भी न करे। जब राकेश ने उससे कह दिया तो मैं निश्चिन्त हो गई।"

- "लेकिन विनोद ने पिछली रात तुम्हारे साथ ऐसा क्या कर दिया था कि तुम इतनी ज्यादा डर गई थीं ?"

-"मेरे डरने की असली वजह राकेश का मुझसे बहुत ज्यादा नाराज हो जाना था, मुझे डर था कि कहीं राकेश हमेशा के लिए तो. नाराज नहीं हो गया था, अगर ऐसा हो जाता तो विनोद ने जबरदस्ती मुझ पर अपना अधिकार जमा बैठना था, लेकिन भगवान का शुक्र है कि ऐसा नहीं हुआ। नाराजगी के बावजूद राकेश मुझे मनाने दौड़ा चला आया था।"

-"लेकिन अब तो हालात बदल चुके हैं। अब क्या होगा ?"

-"मतलब ?"

-"राकेश मर चुका है। क्या अब विनोद तुम पर जबरन अधिकार नहीं जमाएगा ?"

-"मेरा अब उससे कोई वास्ता ही नहीं रहेगा।"

-"मान लो वह तुम्हारे साथ जबरदस्ती करता है ?"

-"नहीं करेगा।"

-"तुम इस कदर यकीनी तौर पर कैसे कह सकती हो ?"

-"क्योंकि राकेश ने पिछली रात उसे मना कर दिया था।"

-"लेकिन राकेश तो अब मर चुका है।"

-"फिर भी।"

-"फिर भी क्या ?"

-"विनोद मेरे साथ कोई गलत हरकत नहीं करेगा। पिछली बार उसने बहन कहकर बाकायदा मुझसे माफी मांगी थी।"

-"ओह, आई सी।" बलराज उसे गौर से देखता हुआ बोला

-"बस एक आखिरी सवाल और है, पिछली रात तुम्हारा राकेश से झगड़ा किस बात पर हुआ था ?"

रीटा ने सर झुका लिया।

-"हमारी आपसी बातें थीं। माफ कीजिए, मैं आपको नहीं बता सकूंगीं।"

-"इतना तो बता सकती हो कि क्या झगड़े की वजह नीरा या कोई दूसरी लड़की थी ?"

-"नहीं, ऐसा कुछ नहीं था।"

बलराज कुछ देर चुप बैठा सोचता रहा, फिर पूछा-"अब तुम कहां जाओगी ?"

-"अपने घर।"

-"यानी अपने फ्लैट में ?"

-"हां।"

-"अगर तुम्हें विनोद से या किसी और वजह से डर लग रहा है तो, तुम्हारी सुरक्षा के लिए मैं दो आदमी तुम्हारे साथ भेज सकता है।"

-"जी नहीं धन्यवाद । मुझे किसी की जरूरत नहीं है ।"

-"पिछली रात की तरह अगर आज भी तुम्हें डर लगा तो, क्या करोगी ?"

रीटा खड़ी हो गई।

-"कुछ नहीं। अब मुझे डर नहीं लगेगा।" उसने कहा, फिर अचानक उसकी आंखों में आंसू छलक आए। वह भर्राए-से स्वर में, बोली-"राकेश की मौत से बड़ा शॉक मेरे लिए और नहीं हो सकता। मैं सबकुछ बरदाश्त करूंगी।"

रोटा आंफिस से निकल गई।

बलराज उसके कथन से संतुष्ट नहीं था। उसने अपने दो आदमियों को बुलाया और रीटा का पीछा करने तथा उसे वाच करते रहने का आदेश दे दिया।

***

मृतक राकेश मोहन का ऑफिस कम गैराज सड़क के आखिरी सिरे पर था। आदमकद चारदीवारी से घिरा वो एक करीब दो सौ गज का प्लाट था जिसकी पूरी चौड़ाई में एक काफी बड़ा शेड और दो ऑफिसनुमा कमरे थे।

बलराज ने ज्योंही जीप रोकी, गैराज की निगरानी करते एस० आई० अश्विनी शर्मा और हैड कांस्टेबल आ पहुंचे।

-"विनोद वहीं है ?" बलराज ने पूछा।

-"यस, सर।" सुखदेव ने जवाब दिया-"वह और राकेश सीधे यहीं आए थे। फिर कुछ देर बाद राकेश बाहर निकला और चला गया। मैंने महावीर को उसके पीछे भेज दिया, लेकिन विनोद यहां पहुंचने के बाद से बाहर नहीं निकला।"

-"वह बराबर यहीं मौजूद रहा है ?"

-"लगता तो ऐसा ही है।"

-"क्या मतलब ?"

-"यहां दो एंट्रेसेज हैं।" अश्विनी शर्मा ने जवाब दिया-"एक यह है।" उसने हाथ से एक छोटे गेट की ओर संकेत किया-"और दूसरा उधर एक बड़ा गेट है।" उसने पुनः हाथ से संकेत किया-"वो कारों के अन्दर आने-जाने के लिए है।"

जिस जगह जीप खड़ी थी वहां से दोनों गेट साफ नजर आ रहे थे।

बलराज ने बड़े गेट की ओर इशारा किया।

-"तुमने उधर से किसी कार को आते-जाते देखा था ?"

-"चार कारें अन्दर गई थीं।" सुखदेव ने जानकारी दी--"वे ही चारों बाहर निकलीं, लेकिन दोबारा उनमें से सिर्फ तीन ही वापस लौटी थीं और उनमें से किसी में भी विनोद नहीं था।"

-"मैंने सिर्फ तीन-तीन कारें आती-जाती देखी थीं।" अश्विनी शर्मा बोला-"एक कार मेरे आने से पहले ही गुजर गई थी।"

बलराज ने गहरी सांस ली।

-"हो सकता है विनोद उनमें से किसी एक कार की डिग्गी में बन्द होकर बाहर आया हो और फिर उसी तरह कार में छुपकर अन्दर चला गया हो।"

-"हम उन्हें रोककर उनकी तलाशी लेना चाहते थे।" अश्विनी शर्मा हिचकिचाता-सा बोला-"लेकिन हमने जान-बूझ कर ऐसा नहीं किया, क्योंकि इस तरह विनोद को पता चल जाना था कि गैराज को वाच किया जा रहा था।"

-"कारों की तलाशी न लेकर तुमने ठीक ही किया।" बलराज ने कहा-"विनोद को सावधान करना ठीक नहीं था।

-"मैं नहीं समझता कि विनोद कार में छुपकर या किसी और तरह से बाहर आया और फिर उसी तरह वापस अन्दर चला गया था।" मैंने मत व्यक्त किया।

-"क्यों ?" बलराज ने पूछा।

-"राकेश सामान्य ढंग से बाहर निकला था और फिर उसे अपना पीछा किए जाने वाले से पीछा छुड़ाने की जहमत उठानी पड़ी।" मैंने जवाब दिया-"लेकिन उसे बाहर आने का यह बढ़िया और आसान तरीका नहीं सूझ सका तो फिर विनोद को यह तरीका कैसे सूझ सकता था जबकिं तुम खुद ही कह चुके हो कि हर बात को सोचने की जिम्मेदारी राकेश की थी। विनोद का काम सिर्फ उसका आदेश पालन करना था।"

बलराज मेरे इस तर्क से जरा भी प्रभावित नहीं हुआ।

-"ऐसा कोई नियम तो नहीं है कि जो बात राकेश को नहीं सूझी वह विनोंद को भी नहीं सूझ सकती थी।" वह बोला-"फिर भी हो सकता है राकेश के निर्देश पर ही विनोद कार में छुपकर बाहर आया था और फिर उसी तरह वापस अन्दर ऑफिस में पहुंच गया था।"

बलराज के इस तर्क ने उसके मातहतों को तो सन्तुष्ट कर दिया, क्योंकि वे नहीं जानते थे कि राकेश की हत्या की जा चुकी थी, लेकिन मैं उससे कतई सहमत नहीं था।

-"तुम कहना चाहते हो ।" मैंने प्रतिवाद किया- "राकेश ने जान-बूझ कर खुद ही अपनी मौत का सामान किया था। यानी उसने विनोदं को कार में छुपकर बाहर आने और वापस अन्दर जाने की यह तरकीब इसलिए बताई थी ताकि एक तरफ तो, विनोद इस तरह उसकी हत्या करने का मौका पा सके और दूसरी ओर यह भी साबित कर सके कि राकेश की हत्या के वक्त वह गैराज में ही मौजूद रहा था।"

-"राकेश की भी हत्या की जा चुकी है ?" अश्विनी शर्मा ने चौंककर पूछा।

-"हां, राकेश मर चुका है।" बलराज ने संक्षेप में उसकी हत्या के बारे में बताने के बाद कहा-"लेकिन मरने से पहले उस जैसा मास्टर माइन्ड भी किस मुसीबत में फंस चुका था इसका अन्दाजा सहज ही लगाया जा सकता है। उस जैसे उन तमाम लोगों के साथ, जो अपने दिमाग से दूसरों को अपने इशारों पर नचाते हैं, यही होता है। वे इस गलतफहमी का

शिकार हो जाते हैं कि हमेशा दूसरों को कठपुतलियों की भाँति नचाते रहेंगे। वे भूल जाते हैं कि कठपुतलियों की जो डोरियां उनके हाथों में होती हैं उन्हें उनकी जगह कोई दूसरा भी थाम सकता है।''

बलराज के इस गोलमोल जवाब से मैं सन्तुष्ट नहीं था, मगर बहस करने की बजाय मैं धैर्यपूर्वक सुनता रहा।

-''पिछली रात हमने देखा था।'' वह कह रहा था- ''राकेश ने विनोद से साफ कहा था कि विनोद की कहानी खत्म हो चुकी थी, लेकिन हमारे पास यह जानने का कोई साधन नहीं था कि राकेश की इस बात का असली मकसद क्या था ? उसका इशारा रीटा के साथ फ्लर्ट करने की ओर था या फिर किसी और बड़ी बात की ओर।'' वह तनिक रुका, फिर बोला, मैंने आज सुबह विनोद की जुबान खुलवाने की कोशिश की, मगर कामयाब नहीं हुआ, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि विनोद मेरी तरफ से बेफिक्र है। वह जानता है बवेजा के मामले में गड़बड़ हो जाने की वजह से मैं उसके पीछे पड़ चुका हूं। इस हालत में विनोद को अपनी बेहतरी इसी में दिखाई दी कि वह राकेश के साथ चिपका रहकर उसकी बात मानता रहे, क्योंकि उसके विचारानुसार राकेश हर प्रकार की स्थिति से निपटने में सक्षम था, मगर विनोद को इस बात का भी एहसास है कि राकेश उसे उसके हाल पर ही छोड़ देना चाहता था। राकेश को ऐसा करने से सिर्फ यह असलियत रोके हुई थी कि पुलिस की विनोद के साथ उस पर भी नजर थी। इस तरह वक्ती तौर पर उनको स्थिति बचेंगे तो साथ-साथ डूबेंगे तो साथ-साथ जैसी थी। हालांकि नीरा की हत्या कर दी जाने के बाद मैं नहीं समझता कि उनकी स्थिति ऐसी है, मगर विनोद यही समझता है। इससे भी दिलचस्प बात यह है कि विनोद यकीनी तौर पर नहीं कह सकता कि इस सिलसिले में राकेश भी उसी की तरह गर्दन तक फंसा हुआ था। बहरहाल उसे अपनी भलाई राकेश के साथ चिपका रहने में ही दिखाई दी थी और उसके पास निश्चित रूप से यह जानने का कोई साधन नहीं था कि वक्त आने पर राकेश उसे मंझधार में फंसा छोड़कर, खुद को साफ बचा जाएगा।''

-''लेकिन इससे भी यह कहां जाहिर होता है कि राकेश ने ही विनोद को ऐसा तरीका सुझाया था जिसे विनोद राकेश के ही मर्डर को कवर करने वाली अपनी एलीबी के रूप में इस्तेमाल कर सकता था ?'' मैंने पूछा।

-''राकेश इस भ्रम का शिकार था विनोद पूरी तरह उसकी 'मुट्ठी' में था।'' बलराज धैर्यपूर्वक बोला-''हालांकि बवेजा के मर्डर में हुई चूक की वजह से वह विनोद पर कुपित भी था, लेकिन वो एक खास किस्म की चूक थी, जिसे दोबारा नहीं दोहराया जाना था। राकेश जानता था विनोद ने अक्षरश: उसका आदेश पालन करना था और वह उसे बराबर आदेश देता रहा था। राकेश ने विनोद को कार में छुपकर बाहर जाने का तरीका सुझाकर अपनी

हत्या को कवर करने वाली एलीबी विनोद को प्रदान नहीं की थी। मेरे कहने का मतलब है कम-से-कम राकेश का यह इरादा नहीं रहा होगा। मैं समझता हूं कोई ऐसा काम था, जिसे राकेश विनोद से कराना चाहता था। राकेश जैसा मास्टरमाइन्ड इस बात को भी बाखूबी जानता था, मैंने उसे और विनोद को वाच जरूर करना था। विनोद को वह तरीका सुझाते वक्त उसने सोचा होगा इस तरह पुलिस की निगाहों में धूल झोंकी जा सकती थी।''

-''आपका मतलब है कि इस तरह राकेश तो महावीर से उलझा रहा और आखिर में उस इमारत में चला गया और इस बीच विनोद एक कार में छुपकर यहां से बाहर निकला और अपना काम करके उसी तरह वापस लौट आया।'' अश्विनी शर्मा ने पूछा।

बलराज ने सहमतिसूचक सर हिलाया।

-''अगर इस मामले में तुम्हारी इस थ्यौरी को सही मान लिया जाये तो, फिर रीटा खरे कहां से बीच में आ टपकी थी ?'' मैंने पूछा- ''राकेश ने उसे फोन कराकर उस इमारत में क्यों बुलाया था ?''

-''मैं समझता हूं यह भी उसकी योजना का हिस्सा रहा, होगा।'' बलराज ने जवाब दिया-''उसने किसी से रीटा को फोन कराकर कहलंवा दिया था कि रीटा उसे नीरा के फ्लैट पर मिले। फिर वह यहां से बाहर निकला और लम्बा चक्कर काटने तथा सवारियां बदलने के बाद इमारत में पहुंच गया। उसका इरादा रहा होगा कि इमारत में पहुंचने के बाद वह अपनी और रीटा की ओर पुलिस का ध्यान आकर्षित कराएगा, अगर वह जिन्दा रहा होता तो, उस हालत में उसने बहुत ही बढ़िया कहानी सुनानी थी। उसने साफ कबूल करना था उसने अपना पीछा करने वाले से पीछा छुड़ाने की कोशिश की थी। उसकी कहानी होती- क्योंकि उसका या विनोद का किसी की हत्या से कोई ताल्लुक नहीं था और वे नहीं जानते थे नीरा मलकानी वाकई मर चुकी थी। उन्होंने समझा मैंने उन्हें ब्लफ किया था, मगर ब्लफ के बावजूद वे चिंतित हो गए थे, इसलिए राकेश अपनी गर्ल फ्रेन्ड और नीरा से मिलना चाहता था। इस बात के लिए राकेश को दोष भी नहीं दिया जा सकता था कि उसने पीछा करने वाले को डॉज देने की कोशिश क्यों की, क्योंकि कोई भी आदमी नहीं चाहता कि जब वह अपनी गर्ल फ्रेंड से मिले तो, पुलिस की निगाह उन पर रहे। कुल मिलाकर मुद्दा यह है उसने ऐसी कहानी सुनानी थी जिस पर जरा भी शक नहीं किया जा सकता था ?''

मैंने सर हिलाकर सहमति देते हुए पूछा-''तुम्हारा मतलब है रीटा को राकेश ने इमारत में इसलिए बुलाया था ताकि राकेश तुम्हारे आदमी की डॉज देने की अपनी कोशिश की सफाई दे सके।''

-''हां, और मेरे आदमी को डॉज देने की कोशिश करने का नाटक उसने इसलिए किया था ताकि हम लोग यह समझें कि अगर विनोद ने गैराज से बाहर आना होता तो, वह

भी राकेश की तरह खुले-आम बाहर आता और उसी की तरह अपना पीछा करने वाले को डॉज देने की कोशिश करता। यानी हम लोग सोच ही न पाए कि विनोद गैराज से बाहर निकला भी था।''

-''अब सवाल यह है कि विनोद ने राकेश की हत्या क्यों और कैसे की ?''

-''विनोद की तस्वीर भी साफ है।'' बलराज बड़े इत्मीनान से बोला-''विनोद जानता है वह गर्दन तक फंस चुका है। उसके सामने राकेश के साथ चिपके रहने और उसका आदेश पालन करने के अलावा कोई चारा नहीं था। आज मेरी बात सुनने के बाद उसने जाहिर तो नहीं किया परंतु उस पर वाकई फिक्र सवार हो गई थी। हालांकि इस सिलसिले में उसका नजरिया वो नहीं है, जो सही मायने में होना चाहिए। वह समझता है राकेश पहले तमाम जुर्मों को पूरी तरह कवर कर चुका है। मसलन, नीरा की हत्या के मामले में उसकी और राकेश की एलीबी भले ही झूठी रही हो लेकिन थी मास्टरपीस। इसलिए विनोद समझता है पिछले जुर्मों की वजह से कोई खतरा नहीं है लेकिन इस असलियत से भी नावाफिक वह नहीं था कि पुलिस की कड़ी नजर उन दोनों पर है। पुलिस उस पर किसी भी क्षण हाथ डाल सकती है और उस सूरत में राकेश खुद को बचाने की कोशिश करेगा। राकेश खुद अपनी गर्दन फंसाकर विनोद को बवेजा के मोटे माल से ऐश करने के लिए नहीं छोड़ेगा, क्योंकि बवेजा का मामला विनोद की वजह से ही बिगड़ा था, राकेश की वजह से नहीं ! राकेश का फूलभूफ प्लान क्योंकि विनोद की वजह से ही चौपट हुआ था इसलिए भी विनोद इस बात की अपेक्षा नहीं कर सकता कि राकेश सारा इल्जाम अपने ऊपर ले लेगा। इस किस्म के पार्टनरशिप वाले जुर्मों में इस बात की बड़ी गुंजाइश रहती है कि खुद छोटा-सा इल्जाम अपने सर लेकर बडे इल्जाम में दूसरे पार्टनर को फंसाया जा सके। राकेश जेसे शातिर आदमी के लिए यह गुंजाइश हमेशा बनी रहती थी।''

–''विनोद इसका फायदा नहीं उठा सकता था।''

-''नहीं।''

-''क्यों ?''

-''इसलिए कि पहली बात तो उसमें इतना हौसला नहीं है कि वह पुलिस को सच्चाई बता देता। दूसरे अगर वह ऐसा करता भी तो भी नतीजा वो नहीं निकलना था, जो वह चाहता था।''

-''क्या मतलब ?''

-''विनोद की कहानी सुनने के बाद हमने सीधा राकेश को जा दबोचना था, फिर राकेश ने अपना रिकार्ड चालू करना था। जाहिर है कि राकेश के रिकार्ड ने विनोद के बचने

की जरा-सी गुंजाइश बाकी नहीं छोड़नी थी। विनोद जानता है कि इस किस्म के मुकाबले में वह राकेश से कभी नहीं जीत सकता था। विनोद के नजरिए से कुल मिलाकर विनोद के बचाव की एक ही सूरत थी राकेश की मौत। यानी राकेश की हत्या कर दी जाए। साथ ही विनोद के लिए एक नई समस्या पैदा हो गई-हत्या की कैसे जाए? क्योंकि इरादा बना लेने के बाद किसी की हत्या कर देना-मुश्किल काम नहीं रहता लेकिन सफाई से हत्या करना निहायत मुश्किल और बेहद पेचीदा काम है। इसके लिए बाकायदा योजना बनानी पड़ती है। यही एक एसा काम था,जो विनोद के लिए नामुमकिन था। उसके लिए जरूरी था कि वह राकेश से ही योजना बनवाए।''

-''तुम्हारा मतलब है अपनी हत्या की योजना भी राकेश ने ही बनाई थी ?'' मैंने पूछा-''यू मीन राकेश प्लान्ड हिज ऑन मर्डर ?''

हम सब चौंक गए।

बलराज मुस्कराया।

-''हां, लेकिन उस ढंग से नहीं जैसे तुम सोच रहे हो ?''

-''मतलब..... ?''

-''दरअसल राकेश ने उस काम को कराने की योजना बनाई थी जो वह विनोद से कराना चाहता था। उसने विनोद को बारीकी से सब-कुछ समझा दिया था। विनोद ने किस तरह कार में छुपकर गैराज से बाहर आना था और फिर वापस गैराज में लौटना था। उसने यह भी बता दिया होगा वह खुद किस तरह अपना पीछा करने वाले को डॉज देने की कोशिश करेगा ताकि कार द्वारा डॉज दिए जाने के बारे में कोई सोच भी न सके । उसने विनोद से यह भी जरूर कहा होगा वह खुद नीरा के फ्लैट पर रीटा से मुलाकात का इंतजाम कर चुका था ताकि पुलिस की यकीन दिलाया जा सके उसे नीरा की हत्या की कोई जानकारी नहीं थी और अपना पीछा करने वाले को डॉज देने की कोशिश करने की उसकी वजह कुछ ओर न होकर, अपनी गर्ल फ्रेंड से मिलना था। इतना सब-कुछ जान चुकने के बाद विनोद को सेफ चांस नजर आना स्वाभाविक ही था । वह किसी की निगाहों में आए बगैर आसानी से राकेश की हत्या कर सकता था। राकेश ने उसके लिए ठोस एलीबी का इन्तजाम कर दिया था। विनाद ने राकेश की हिदायतों पर पूरा अमल किया, लेकिन जिस काम से राकेश उसे भेजना चाहता था, वहां जाने की बजाय वह सीधा उस इमारत में जा पहुंचा,फिर जब राकेश वहां पहुंचा तो उसने उसी पुराने ढंग से अचानक राकेश पर हमला करके उसे बहोश किया, उसके मुंह पर टेप चिपकाया और दम घोटकर उसे मार डाला।''

बलराज की इस थ्यौरी में कई बातें खटकने वाली थीं, लेकिन इससे पहले कि में कुछ पूछता एस० आई० अश्विनी शर्मा पूछ बैठा-"कार की डिग्गी में छुपकर विनोद हमारी निगाहों से बच सकता था, लेकिन उसकी गैर-मौजूदगी में यहां भी तो कोई मौजूद रहा होगा। उससे यह बात कैसे छुपी रही होगी कि विनोद यहां नहीं था ?"

-"इसका सही जवाब तो, इस जगह का भूगोल जानने के बाद ही मिलेगा।" बलराज ने जवाब दिया-"वैसे मोटे तौर पर अनुमान लगाया जा सकता है। मान लो जिस कमरे में विनोद बैठता है उसमें दो दरवाजे हैं। एक आम लोगों के लिए दूसरा उसके ओर राकेश के व्यक्तिगत प्रयोग के लिए, क्योंकि विनोद की हैसियत राकेश की गैरमौजूदगी में यहां मालिक जैसी होनी चाहिए, इसलिए अगर वह कड़ी हिदायत दे देता है कि एक घंटे तक उसे किसी भी कीमत पर डिस्टर्ब न किया जाए, तो मैं नहीं समझता कि कोई उसके कमरे के पास फटकने की भी जुर्रत करेगा।"

-"इस तरह वह पिछले दरवाजे से निकलकर चुपचाप किसी कार की डिंग्गी में घुसने में तो कामयाब हो सकता है लेकिन.....।"

-"किसी कार की डिग्गी में नहीं।" बलराज हाथ उठाकर अश्विनी शर्मा को रोकता हुआ बोला-"सिर्फ उस कार की डिग्गी में जिसका ग्राहक वहीं मौजूद था और जो ट्रायल के लिए जाने वाली थी। मत भूलो कि राकेश यहां पुरानी कारों की खरीद-फरोख्त का काम किया करता था।"

-"ठीक है, फिर वो कार किसी क्रासिंग पर रेड लाइट पाकर रुकी और विनोद डिग्गी से बाहर फिसल गया, वहां से वह किसी टैक्सी द्वारा इमारत तक भी पहुंच गया।" कहकर अश्विनी शर्मा ने पूछा-"लेकिन राकेश की हत्या करके इमारत से निकलने के बाद वह वापस यहां कैसे पहुंचा ? उस वक्त कार की डिग्गी में छुपने वाली सहूलियत तो, उसे हासिल होने से रही।"

-"इमारत से निकलकर टैक्सी द्वारा इस गैराज तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।" बलराज गैराज की दिशा में देखता हुआ बोला-"फिर चाहरदीवारी के उस तरफ वाले हिस्से से उसने उस दीवार की ओर संकेत किया जिसके पीछे खाली प्लॉट पड़ा था, अन्दर कूद आना भी मुश्किल नहीं है।"

बलराज जो भी कह रहा था वो महज उसकी थ्यौरी थी, लेकिन उसने इस ढंग से तर्क दिए थे मानो हकीकत में भी ऐसा ही हुआ था और वह इस सारे वाकए का चश्मदीद गवाह रहा था। उसकी इस थ्यौरी में व्यावहारिक कमियां तो जरूर थीं, मगर इसे बेबुनियाद या नामुमकिन नहीं कहा जा सकता था। अलबत्ता मेरे दिमाग में दो शंकाएं जरूर पनप रही थीं।

-"राकेश की हत्या करने के बाद जब विनोद इमारत से निकला उस वक्त महावीर बाहर खड़ा इमारत को वाच कर रहा था।" मैंने कहा- "फिर बाहर निकलता विनोद उसे क्यों नहीं दिखाई दिया ?"

ऐसा हो जाना मामूली बात थी इसलिए मैंने बहस नहीं की।

-"ठीक है ।" मैं सहमति देता हुआ बोला-"लेकिन विनोद मालती वर्मा के फ्लैट में कैसे पहुंच गया ?"

बलराज मुस्कराया।

-"इस सवाल का जवाब तो विनोद ही देगा।" वह बोला-"और उसके जवाब की पुष्टि मालती वर्मा और उसके आशिक तथा मंगेतर सुधीर चौधरी को करनी होगी। इस दफा जब भी वे मेरे हाथ पड़ेंगे मैं उनका दिमाग दुरुस्त कर दूंगा।" और जीप से उतर गया।

मैंने भी उसका अनुसरण किया।

सुखदेव को वहीं छोड़कर बलराज, अश्विनी शर्मा और मैं गैराज में दाखिल हुए।

कम्पाउन्ड पार करके हम सीधे उस कमरे में पहुंचे, जिसके दरवाजे पर राकेश मोहन के नाम की पीतल के अक्षरों वाली नेम-प्लेट लगी थी।

दो दरवाजों वाला वो कमरा, बड़ा और शानदार ऑफिस के अनुरूप सजा था । लम्बे-चौड़े डेस्क के पीछे एग्जीक्यूटिव चेअर पर विनोद मौजूद था।

हमें देखने के बावजूद वह इत्मीनान से बैठा रहा। उसके चेहरे पर किसी प्रकार के भाव उत्पन्न नहीं हुए।

-"हैलो, इन्सपेक्टर ।" वह लापरवाही से बोला।

-"खड़े हो जाओ।" बलराज पुलिसिया स्वर में बोला।

विनोद ने उठने का उपक्रम नहीं किया।

-"क्यों ?" उसने लापरवाही से पूछा।

-"आई सैड स्टैंड अप!"

विनोद ने चुनौतीपूर्ण निगाहों से बलराज को घूरा, फिर खड़ा हो गया।

-"बात क्या है आखिर ?"

बलराज ने जवाब नहीं दिया।

-"इसकी जेबें टटोलो।" वह अश्विनी शर्मा से बोला।

अश्विनी आगे बढ़ा और विनोद के सफारीसूट की जेबें एक-एक करके थपथपाईं।

-"तुम्हारी कोई चीज खो गई है इन्सपेक्टर ?" विनोद ने उपहासपूर्वक पूछा।

-"मुझे अपनी नहीं, तुम्हारी ही किसी चीज की तलाश है।" बलराज बोला।

-"किस चीज की ?"

-"पीतल के चूंसे की।"

विनोद ने अपने भारी हाथ ऊपर उठाए और उन्हें मजबूत मुट्ठियों की शक्ल में भींच लिया।

-"मुझे अपने इन घूंसों पर पूरा भरोसा है।" वह बोला "पीतल या लोहे के घूसे की मुझे कोई जरूरत नहीं।"

अश्विनी ने इंकार में सर हिलाया और विनोद से अलग हट गया।

-"मैं उस घूंसे की बात कर रहा हूं।" बलराज बोला-"जिसे तुम घटनास्थल पर ही छोड़ आए थे।"

विनोद की आंखें सिकुड़ गईं।

-"घटनास्थल पर.... ?"

-"हां।"

-"लेकिन मैं सारी रात राकेश के साथ भगवती जागरण में रहा था।"

-"मैं आज की बात कर रहा हूं। मुश्किल से ढाई-तीन घंटे पहली, उस वक्त तुम कहां थे ?"

-"राकेश से पूछो।"

-"बको मत, सीधा जवाब दो। पुलिस हैडक्वार्टर्स से आने के बाद तुम कहां-कहां गए थे ?"

-"मैंने बताया तो है। राकेश से पूछो ।"

-"राकेश कहां है ?"

-"कहीं गया है। आने ही वाला होगा।"

-"मुझे घिसने की कोशिश मत करो। तुम अच्छी तरह जानते हो वह वापस नहीं आएगा।"

-"वह जरूर आएगा। करीब आधे घन्टे बाद उसका एक कस्टमर आने वाला है।"

-"तुम मालती वर्मा से आखिरी दफा कब मिले थे ?"

-"किससे ?"

-"मालती वर्मा से।"

-"वह कौन है ?"

-"तुम नहीं जानते ?"

-"नहीं।"

-"वह सज्जन कुमार बवेजा के नीचे वाले फ्लैट में रहती है ।"

-"अच्छा ।"

-"कब मिले थे उससे तुम ?"

-"राकेश से पूछो।"

-"वह कुछ नहीं बता पाएगा।"

-"क्यों ?"

-"इसलिए कि बवेजा और नीरा की तरह राकेश भी मर चुका है। उसकी मौत भी उन दोनों की तरह ही हुई है और उसी इमारत में हुई है।"

विनोद देर तक इन्सपेक्टर को घूरता रहा । उसका चेहरा कठोर था और आंखों में अविश्वास के गहन भाव थे।

-"तुम झूठ बोल रहे हो ।" अचानक वह चिल्लाया।

-"उसकी लाश देखना चाहते हो ?"

-"हां ! दिखाओ।"

-"जरूर दिखाऊंगा।"

विनोद डेस्क के पीछे से बाहर निकल आया।

-"चलो।"

-"चलता हूं। पहले यहां का थोड़ा-सा काम निपटा लूं।" [फिर रूटीन कार्यवाही शुरू हुई।]

बलराज के आदेश पर अश्विनी शर्मा ने वहां मौजूद स्टाफ को एक जगह इकट्ठा किया। उनमें एक टाइपिस्ट थी, एक सेल्समैन, दो मैकेनिक और एक चपरासी।

बलराज ने एक-एक करके उन सबसे पूछताछ की, लेकिन कोई कारामद जानकारी हासिल नहीं हो सकी। उन सबका कहना था विनोद और राकेश सुबह से ऑफिस में मौजूद थे। दोपहर में एक पुलिस जीप आई थी और वे उसमें बैठकर चले गए थे। करीब तीन घन्टे बाद वे वापस लौटे, फिर थोड़ी देर बाद राकेश तो, कहीं चला गया, लेकिन विनोद तब से बराबर ऑफिस में ही मौजूद रहा था, अगर विनोद कहीं बाहर गया होता तो, बाहर जाता हआ उन्हें जरूर दिखाई देना था।

इस बीच बलराज उस स्थान के भूगोल का भी अध्ययन कर चुका था। उसके मुताबिक विनोद किसी की निगाहों में आए बगैर अपने कमरे के पिछले दरवाजे से निकलकर चुपचाप कार की डिग्गी में आसानी से घुस सकता था और चारदीवारी फांदकर चुपचाप वापस अपने कमरे में भी पहुंच सकता था।

लेकिन स्टाफ के व्यक्तियों के बयान पर शक करने की भी जाहिरा तौर पर कोई वजह नहीं थी। उन्होंने सामान्य ढंग से सवालों के जवाब दिए थे। ऐसा बिल्कुल नहीं लगा कि वे झूठ बोल रहे थे या कुछ छुपाने की कोशिश कर रहे थे। प्रत्यक्षत: उन सबने वही बताया था, जो वे जानते थे। अलबत्ता इस सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता था कि ज्यादा कुछ नहीं जानते थे।

बलराज ने पूछताछ द्वारा उस व्यक्ति का पता लगाने की कोशिश की, जिसने रीटा खरे को फोन करके राकेश का मैसेज दिया था और जिसकी वजह से रीटा राकेश से मिलने नीरा के फ्लैट पर पहुंची थी, लेकिन ऐसे व्यक्ति का पता नहीं चल सका। उनमें से किसी ने भी रीटा को फोन नहीं किया था। प्रत्येक ने स्पष्ट इंकार कर दिया। उनमें से किसी को इस बात की जानकारी भी नहीं थी कि राकेश कहां गया था। कोई नहीं जानता था कि वह रीटा से मिलने गया था।

बलराज ने इस बारे में जब विनोद से सवाल किया तो, उसने अपना घिसा-पिटा जवाब दोहरा दिया-"राकेश से पूछो।"

बलराज ने स्टाफ की प्रतिक्रिया जानने के लिए सबको बता दिया कि राकेश मर चुका था। ऑफिस से जाने के बाद एक घंटे बाद ही उसकी हत्या कर दी गई थी।

स्टाफ पर वही सामान्य प्रतिक्रिया हुई, जो कि अपेक्षित थी। उन सबको अचानक शॉक-सा लगा और वे सब गहन अविश्वास-पूर्वक इन्सपेक्टर का मुंह ताकने लगे, फिर धीरे-धीरे उनके चेहरे गमगीन हो गए। अलबत्ता आंखों में अविश्वास के ही भाव मौजूद रहे।

विनोद ने खुद तो यकीन किया ही नहीं स्टाफ से भी अपील की कि वे इन्सपेक्टर की इस बात पर यकीन न करें। इसमें कोई चाल थी। इस तरह इन्सपेक्टर अपना कोई और मकसद पूरा करना चाहता था। वह खुलेआम इन्सपेक्टर को झूठा कहता रहा।

विनोद क्योंकि राकेश के सबसे ज्यादा करीब था, इसलिए स्टाफ पर उसकी बात का असर हुआ। धीरे-धीरे स्टाफ की भी समझ में आ गया कि इन्सपेक्टर के आगमन और पूछताछ की असली वजह क्या थी ? फलस्वरूप उनके शॉक पर पुनः अविश्वास हावी होने लगा। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अगर राकेश की हत्या हुई भी थी तो भी, विनोद पर हत्या करने का शक करना भी विनोद के साथ सरासर ज्यादती, नाइन्साफी और अंधेर था। विनोद पूरा वक्त ऑफिस में ही मौजूद रहा था। वे यह मानने के लिए कतई तैयार नहीं थे विनोद राकेश की हत्या कर सकता था। विनोद और राकेश में सगे भाइयों जैसा प्यार था। राकेश का जरा भी अहित करने तक के बारे में विनोद सोच भी नहीं सकता था।

वहां ठहरे रहना बेकार था।

विनोद के कहने पर बलराज ने उसे इतनी मौहलत दे दी कि वह ऑफिस लॉक करा दे।

इस बीच बलराज ने फोन करके पता लगा लिया कि राकेश की लाश मोर्ग में पहुंचाई जा चुकी थी।

विनोद सहित हम सब जीप में सवार हुए और वहां से चल दिए।

विनोद रास्ते भर तना बैठा रहा। उसके कठोर चेहरे पर ऐसे भाव थे मानो वह कहना चाहता था इन्सपेक्टर, तुम्हारी ऐसी चालों को मैं अच्छी तरह समझता हूं। तुम मुझे बौखला देना चाहते हो, मगर मैं तुम्हारे झांसे में आने वाला नहीं।

जीप मोर्ग के सम्मुख पहुंचकर रुकी।

हम सब नीचे उतरे।

विनोद के कठोर चेहरे पर उस वक्त भी बेफिक्री भरे भाव थे ।

जब हम मोर्ग में दाखिल हो गए तब पहली बार उसका माथा ठनका । उसकी आंखें चिंतापूर्ण मुद्रा में सिकुड़ गईं। धीरे-धीरे उस पर बेचैनी सवार होने लगी। वह बार-बार अपने

होठों पर जुबान फिराने लगा। अचानक उसकी चाल इतनी धीमी हो गई मानो पैर मन-मन के भारी हो गए थे।

बलराज और अश्विनी को एक प्रकार से जबरन उसे धकेल-कर वहां तक ले जाना पड़ा जहां राकेश की लाश रखी हुई थी।

मोर्ग अटेंडेंट ने लाश के ऊपर पड़ी सफेद चादर हटा दी।

लाश पर निगाह पड़ते ही विनोद का चेहरा एकदम सफेद पड़ गया। उसने अपनी आंखें बन्द कर ली। उसके माथे पर पसीना फूट निकला और सांसें अव्यवस्थित हो गईं।

-"आंखें खोलो।" बलराज कठोर स्वर में बोला-"अच्छी तरह देख लो यह राकेश की ही लाश है।"

विनोद ने आंखें खोली। वह अपलक राकेश के मुर्दा चेहरे को घूरने लगा।

-"देख लिया ?" बलराज ने पूछा-"यह राकेश की ही लाश है ?"

अचानक विनोद के जबड़े भिंच गए। उसके शरीर की समस्त मांस-पेशियां तन गई प्रतीत हुईं। उसने सर झुका लिया और फंसी-सी आवाज में बोला-"हां ।"

बलराज और अश्विनी उसे उस कमरे से निकालकर मोर्ग के ऑफिस में ले गए। उसकी तमाम अकड़-फूं गायब हो चुकी थी।

बलराज ने उसे एक कुर्सी में धकेल दिया।

वह निढाल-सा बैठा हांफता रहा।

-"राकेश की हत्या किसने की थी ?" बलराज ने गोली की तरह प्रश्न दागा।

-"पता नहीं।" विनोद मरी-सी आवाज में बोला।

-"झूठ मत बोलो। उसकी हत्या तुमने ही की थी।"

-"नहीं।" विनोद ने आर्तनाद-सा किया-"मैं कसम खाता हूं ।"

-"राकेश की हत्या क्यों की तुमने ?"

-"मैंने नहीं की।"

-"तुम झूठ बोल रहे हो। हत्या तुम्हीं ने की थी।"

-"नहीं। मैं शेरांवाली माता की कसम खाता हूं।"

-"तुम अपने ऑफिस से उस इमारत तक कैसे पहुंचे ?"

-"मैं कहीं नहीं गया। ऑफिस में ही रहा था।"

बलराज ने घुमा-फिराकर पूछा, लेकिन विनोद इंकार ही करता रहा।

-"सज्जन कुमार बवेजा से तुम्हारा क्या रिश्ता था ?" बलराज ने पूछा।

-"कुछ नहीं ।"

-"फिर तुम उसके फ्लैट में किसलिए जाते थे ?"

-"मैं वहां कभी नहीं गया।"

-"तुमने बवेजा की हत्या क्यों की ?"

-"मैंने किसी की हत्या नहीं की।"

-"बवेजा की हत्या किसने की थी ?"

-"मुझे नहीं पता।"

-"नीरा का बवेजा से क्या रिश्ता था ?"

-"पता नहीं।"

-"नीरा की हत्या किसने की थी ?"

-"पता नहीं।"

-"नीरा की हत्या क्यों की गई ?"

-"पता नहीं।"

-"तुमने उसकी हत्या नहीं की ?"

-"नहीं।"

-"मालती वर्मा से तुम्हारा क्या ताल्लुक है ?"

-"कुछ नहीं। मैं उसे नहीं जानता।"

-"और सुधीर चौधरी को ?"

-"उसे भी नहीं।"

-"फिर तुम मालती के फ्लैट में कैसे पहुंचे ?"

-"मैं वहां कभी नहीं गया।"

-"हरचरनजीत सिंह कौन है ?"

-"पता नहीं।"

-"हरचरनजीत बनकर बवेजा के बैंकों से रुपया तुमने नहीं निकाला ?"

- "नहीं।"

-"और राकेश ने।"

-"उसने भी नहीं।"

-"बवेजा से कुल कितना रुपया ऐंठा था तुम लोगों ने ?"

-"हम बवेजा को जानते भी नहीं थे।"

विनोद ने हर बात से साफ इन्कार कर दिया।

बलराज ने उसे धमकी दी। दो-चार हाथ भी.जमाए, मगर कोई फायदा नहीं हुआ।

विनोद हर बात के जवाब में घिसे-पिटे जुमले दोहराता रहा।

-"मैं कुछ नहीं जानता..... मैंने कुछ नहीं किया.....मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा....बवेजा से मेरा कोई वास्ता नहीं था.....नीरा की हत्या मैंने नहीं की.....राकेश के हत्यारे को मैं जिन्दा नहीं छोडूंगा.....राकेश मेरा दोस्त था .....मेरा भाई था....मेरा भगवान था !"

बलराज ने हर मुमकिन कोशिश की, लेकिन विनोद नहीं टूटा।

-"ठीक है, अगर राकेश तुम्हारे लिए भगवान था तो, मैं फिर तुम्हें उसकी लाश के पास ले जाता हूं।" बलराज ने कहा-"तुम अपने भगवान की लाश के सिरहाने खड़े होकर ही ये तमाम बातें दोहराना। इससे तुम्हारे उस भगवान की आत्मा को भी शांति मिलेगी।"

विनोद ने कुर्सी के दोनों हत्थे मजबूती से पकड़ लिए।

-"नहीं।" उसने आर्तनाद सा किया और बिलख-बिलख कर रोने लगा।

प्रत्यक्षतः यह उसका मनोबल टूट जाने की निशानी थी, लेकिन कुछ देर बाद जब वह शांत हुआ और बलराज ने पूछताछ शुरू की। तो फिर वही मुर्गे की डेढ़ टांग सामने आई। उसने पहले की भांति पुनः हर बात से इन्कार कर दिया।

बलराज और अश्विनी शर्मा ने उसे जबरन कुर्सी से उठाया और बलपूर्वक घसीटते हुए वापस उसी कमरे में ले गए, जहां लाशें रखी हुई थीं।

विनोद ने पूरी ताकत से प्रतिरोध आरम्भ कर दिया। वह चीखने-चिल्लाने लगा। खुद को छुड़ाकर बाहर भागने की पुरजोर कोशिश करने लगा।

उसे सम्हालने में मुझे भी बलराज और अश्विनी शर्मा की मदद करनी पड़ी।

हमने जबरदस्ती उसे राकेश, नीरा और बवेजा की लाशें दिखाईं।

लेकिन व्यर्थ।

वह चीख-चीख कर हर बात से इन्कार ही करता रहा।

हम उसे घसीटकर पुन: बाहर ले आए।

उसे जीप में सवार कराकर, हम वहां से चल दिए।

पुलिस हैडक्वार्टर्स पहुंचकर बलराज के आदेश पर लॉकअप में बन्द कर दिया गया।

बलराज ने हार नहीं मानी थी । उसे उम्मीद थी देर-सवेर विनोद जरूर टूट जाएगा और बाकायदा सुर में अपना रिकार्ड चालू करेगा।

-"तुम इसके साथ सख्ती से पेश क्यों नहीं आए ?" मैंने उत्सुकतापूर्वक पूछा।"

-"उसके लिए अभी काफी वक्त पड़ा है।" बलराज विचारपूर्वक बोला-"वो हम पुलिस वालों का आखिरी हथियार है और मुझे उस पर ज्यादा भरोसा नहीं है, अगर विनोद कबूल नहीं करता और किसी भी एंगिल से कोई बात सामने नहीं आती तो, मैं, विनोद को बतौर मेटेरियल विटनेस इस्तेमाल करूंगा।"

-"तुम्हारे सामने कोई और भी एंगिल है ?"

-"हां ।"

-"कौन ?"

-"मालती वर्मा और सुधीर चौधरी ।"

-"लेकिन वे हैं कहां ?"

-"आओ, ऑफिस चलते हैं। शायद उनके बारे में कोई सूचना मिली हो।"

***

बलराज के ऑफिस में कदम रखते ही मुझे चौंक जाना पड़ा। मालती वर्मा और सुधीर चौधरी वहीं मौजूद थे। दोनों नए लिबास में सजे-संवेरे बैठे थे। सुधीर के चेहरे पर खीज-मिश्रित बोरियत के भाव थे। इसके विपरीत मालती शांत थी। उसका गम्भीर रहने

वाला चेहरा चमक रहा था। मानो हाल ही में उसे बड़ी भारी कोई ऐसी खुशी हासिल हुई थी जिसे वह सम्भाल नहीं पा रही थी। एक ही रात में उसके समूचे व्यक्तित्व में एक नया निखार आ गया था।

-"इन्सपेक्टर !" सुधीर कड़वे स्वर में बोला-"मैं जान सकता हूं हमें इस तरह यहां क्यों बुलाया गया है ?"

बलराज अपने डेस्क के पीछे जा बैठा।

-"किस तरह ?" उसने बारी-बारी से दोनों को घूरते हुए पूछा।

-"अन्जान मत बनो, इन्सपेक्टर !" सुधीर पूर्ववत स्वर में बोला-"हम लोग शरीफ शहरी हैं अपराधी नहीं। हमें जबरदस्ती बुलवाने और यहां रोके रखने का आपको कोई हक नहीं है।"

-"ताव मत खाओ !" बलराज शुष्क स्वर में बोला-"सीधी तरह बात करो ।"

-"डोंट बी सिली, सुधीर !" मालती ने उसे मीठी झिड़की दी, फिर वह बलराज से मुखातिब हो गई - "मैं बताती हैं, इन्सपेक्टर। करीब पौना घंटे पहले हम दोनों अपने स्कूटर पर लिंक रोड़ से गुजर रहे थे। पुलिस की एक पैट्रोल कार ने हमें रोका और एक प्रकार से जबरन हमें यहां पहुंचाकर छोड़ दिया गया। करीब बीस मिनट से हम यहां बैठे आपका इन्तजार कर रहे हैं। रास्ते में और यहां पहुंचने के बाद भी हमारे हर सवाल के जवाब में सिर्फ एक ही बात कही जाती रही है कि आपको हमारी जरूरत है। आखिर बात क्या है ? आपने हमें इस तरह यहां क्यों बुलवाया है ?"

-"किसी व्यक्ति को जबरन कहीं ले जाना और उसकी मर्जी के खिलाफ रोके रखना अपहरण कहलाता है।" सुधीर ने कहा-"जो कि कानूनन जुर्म है।"

-"कानून की जानकारी तुमसे ज्यादा मुझे है, मिस्टर।" बलराज बोला-"तुम शायद नहीं जानते कि मर्डर केस के इनवेस्टीगेटिंग ऑफिसर को कानून ने क्या-क्या अधिकार दे रखे हैं, लेकिन मैंने यहां तुम्हें कानून पर बहस करने के लिए नहीं बुलवाया है। मैं मानता हूं तुम्हें यहां आने और इन्तजार करने में थोड़ी असुविधा का सामना करना पड़ा होगा, लेकिन तुम बार-बार एक शरीफ शहरी होने का दावा करते रहे हो और कानून की मदद करना हर शरीफ शहरी का कानूनन हक और सामाजिक कर्तव्य है। मैंने यह जानने के लिए तुम्हें बुलवाया है कि आज दिनभर तुम कहां रहे थे ?"

-"अगर आप सिर्फ मुझसे यह पूछना चाहते हो तो, मालती को यहां क्यों बुलवाया ?" सुधीर ने पूछा।

-"मिस वर्मा से भी मैंने यही बात पूछनी है।" बलराज ने कहा।

सुधीर मुस्कराया।

-"किससे ?"

बलराज ने मालती की ओर संकेत किया।

-"मिस मालती वर्मा से।"

सुधीर की मुस्कराहट गहरी हो गई।

-"यह मिस मालती वर्मा नहीं है।"

बलराज ने उसे घूरा।

-"क्या मतलब ? कोई और भी नाम है ?"

-"यह मिसेज मालती चौधरी हैं, इन्सपेक्टर । मेरी अर्धांगिनी मेरी पत्नी, मेरी बीवी, मेरी शरीकेहयात । हम दोनों शादी कर चुके हैं।"

सबकी निगाहें एक साथ मालती की ओर घूम गयीं। उसने लजाकर सर झुका लिया था। उसके गालों पर शर्म की लाली उभर आई थी। जिस बात की ओर हमने पहले ध्यान नहीं दिया था, वही अब साफ नजर आ रही थी। मालती की मांग में सिंदूर भरा हुआ था। वह गले में मंगलसूत्र और हाथों में लाल चूडा पहने थी।

-"अगर आपको अब भी यकीन नहीं आया हो तो, हम कागजी सबूत भी दिखा सकते हैं।" सुधीर ने कहा, फिर मालती से बोला-"इन्सपेक्टर को मैरिज सर्टिफिकेट दिखाओ डार्लिंग।"

मालती ने उसी तरह सर झुकाए गोद में रखा अपना हैंडबैग खोला और एक रोल किया हआ कागज निकालकर डेस्क पर रख दिया।

बलराज ने कागज का रोल खोला।

वो मैरिज सर्टिफिकेट था। उसके मुताबिक उन दोनों ने उसी दिन रजिस्ट्रार ऑफ मैरिज के सामने कोर्ट मैरिज की थी।

-"कांग्रेचुलेशन्स ।" बलराज ने मशीनी अन्दाज में कहा।

-"थैक्यू, इन्सपेक्टर ।" सुधीर बोला।

मालती ने सर्टिफिकेट उठाकर वापस हैंडबैग में रख लिया।

-"अब हम जा सकते हैं, इन्सपेक्टर ?" सुधीर बोला-"हमने ताजी-ताजी शादी की है। आज हमारा हनीमून का पहला दिन है।"

-"मझे अफसोस है कि अब तुम हनीमून नहीं मना सकोगे।"

सुधीर और मालती बुरी तरह चौंके । उन्होंने पहले एक-दूसरे की ओर देखा, फिर इन्सपेक्टर को यूं घूरा मानो उसकी बात या तो वे ठीक से सुन नहीं पाए थे या फिर उस बात का मतलब समझमे में दिक्कत पेश आ रही थी और फिर अचानक सुधीर का चेहरा गुस्से से तमतमा गया।

-"यह क्या बेहूदगी है, इन्सपेक्टर ?" वह भड़ककर बोला।

-"यह सच्चाई है, मिस्टर।" इन्सपेक्टर बोला।

- "केसी सच्चाई ? साफ-साफ क्यों नहीं बताते ?"

-"साफ-साफ जानने के लिए ही तुम दोनों को यहां बुलाया गया है।"

-"किस बारे में जानना चाहते हैं आप ? बवेजा के बारे में ?"

-"बवेजा के बारे में और नीरा मलकानी के बारे में।"

-"नीरा मलकानी उस लडकी का नाम है सुधीर।" मालती हस्तक्षेप करते हुए बोली-"जो सैकिंड फ्लोर पर बवेजा की बगल में रहती है।"

-"जानता हूं ।" सुधीर बोला- "वह लड़की खुद अच्छा-खासा सैक्सबम भी है और हर चीज को सैक्स के नजरिए से ही देखती हैं।"

-"उस लड़की के अलावा राकेश मोहन के बारे में भी मैं जानना चाहता हूं।" बलराज ने कहा-"और कुछ और भी सवाल हैं, जिनके जवाब तुम्हें देने हैं।"

मालती और सुधीर के चेहरों पर आश्चर्य-मिश्रित असमंजसतापूर्ण स्पष्ट भाव थे।

-"कैसे सवाल ?" सुधीर ने पूछा।

-"मतलब पीतल का घूंसा तुम्हारा था या विनोद का ?"

-"पीतल का घूंसा ?" मालती ने दोहराकर पूछा-"वो क्या होता है ?"

बलराज ने बता दिया।

मालती का चेहरा फक्क पड़ गया।

-"ऐसी किसी खतरनाक चीज से सुधीर का कोई वास्ता नहीं है।" वह फंसी-सी आवाज में बोली।

-"फिर किसका वास्ता है ? तुम्हारा ?"

-"म... मेरा ! नहीं।"

-"तुम्हारे फ्लैट से पीतल का एक घूंसा खुद मैंने बरामद किया है, जिस पर खून के दाग मौजूद थे, जो इस बात का सबूत है। कि उसे इस्तेमाल किया गया था।"

मालती कांप गई।

-"ओह, नहीं !" वह कराहती-सी बोली।

-"डोंट वरी, डार्लिंग।" सुधीर ने स्नेहपूर्वक अपनी पत्नी का कंधा थपथपाया, फिर इन्सपेक्टर से पूछा-"और आप समझते हैं उस घूंसे को मैंने इस्तेमाल किया था ?"

-"मैं जानना चाहता हूं।"

-"ठीक है, मैं सिलसिलेवार बताता हूं।" सुधीर ने कहा-"बवेजा के बारे में हम जो कुछ जानते थे पिछली रात ही आपको बता दिया था। उसे फिर से दोहराने की कोई तुक नहीं। जहां तक नीरा मलकानी का सवाल है, उसके बारे में मैं सिर्फ इतना जानता हूं वह ऊपर बवेजा के बगल वाले फ्लैट में रहती है। उसमें जबरदस्त सैक्स-अपील है। शायद इसलिए वह हर चीज को सैक्स के नजरिए से देखती है। कई बार उसे कहते सुना गया था कि उसकी निगाहों में बवेजा प्रिंस चार्मिंग था। बस इससे ज्यादा उसके बारे में मैं कुछ नहीं बता सकता और किसके बारे में पूछा आपने ?"

-"राकेश मोहन ।"

-"राकेश मोहन ।" सुधीर विचारपूर्वक दोहराकर बोला-"इस नाम के किसी आदमी को मैं नहीं जानता।" उसने मालती की ओर देखा-"तुम जानती हो,डार्लिंग ?"

मालती ने सर हिला दिया।

-"नहीं।" वह बोली।

-"सॉरी इन्सपेक्टर।" सुधीर बोला- "हम किसी राकेश मोहन को नहीं जानते और क्या नाम लिया था आपने?"

-"विनोद कुमार।"

सुधीर ने पुन: मालती की और देखा।

मालती ने सर हिलाकर इन्कार कर दिया।

-"सॉरी, इन्सपेक्टर।" सुधीर ने जवाब दिया-"उसे भी हम नहीं जानते।"

-"हरचरनजीत सिंह को जानते हो ?" बलराज ने पूछा।

-"यह तो नाम ही मैं पहली बार सुन रहा हूं।"

-"यह उस आदमी का नाम है, जिसके सर और चेहरे पर इस कदर पट्टियाँ लिपटी हुई थीं कि उसकी बस आंखें ही नजर आती थीं। वह फंसी-सी आवाज में बोलता था। वह औसत कद-बुत वाला आदमी था और उसके कथनानुसार एक दुर्घटना में उसका चेहरा इस बुरी तरह झुलस गया था कि उसे स्किन ग्राफ्टिग करानी पड़ी थी।"

इन्सपेक्टर की ओर एकटक देखती मालती की आंखें फैल गयीं। वह हैरान और सहमी-सी नजर आने लगी।

-"उस आदमी के बारे में भी आप जानना चाहते हैं मैं आपको बता सकता हूं।" सुधीर शान्त स्वर में बोला-"बताइए,कहां से शुरू करूं।"

-"नाम से। क्या नाम है उसका ?"

-"सुधीर चौधरी।"

बलराज ने उसे गौर से देखा।

-"यानी तुम ही वह आदमी हो ?"

-"हूं नहीं, था।"

-"मतलब ?"

-"मेरे ही सर और चेहरे पर पट्टियाँ इस तरह लपेटी गई थीं कि बस मेरी आंखें ही नजर आती थीं। इतना ही नहीं, मेरे हाथों पर भी पट्टियां लपेटी गई थीं।"

-"लेकिन क्यों ?" ऐसी नौबत क्यों आई ?"

-"आग दुर्घटना में मेरा चेहरा और हाथ बुरी तरह झुलस गए थे। बिजली का शार्ट सर्किट हो जाने की वजह से हमारी फैक्टरी में आग लग गई थी। आग पर काबू पाए जाने तक एक आदमी उसमें बुरी तरह घिर गया था। बस उसी को बचाने के चक्कर में, मैं भी आग की चपेट में आ गया था।"

-"यह कब की बात है ?"

-"कोई तीन महीने पहली।"

-"तुम्हें वे पट्टियां कितने दिन बांधे रहना पड़ा ?"

-"करीब एक महीना।"

-"यानी दो महीने पहले तुम्हारी पट्टियां खोल दी गई थीं ?"

-"हां।"

-"फिर दोबारा तुमने वे पट्टियां कब लपेटी थीं ?"

-"क्या मतलब ?" दोबारा मैंने किसलिए पट्टियां लपेटनी थीं ?"

-"भेष बदलने के लिए।"

-"और मैंने भेष किसलिए बदलना था ?"

-"इसका जवाब तुम दोगे।"

-"मुझे भेष बदलने की जरूरत कभी नहीं पड़ी और अगर पड़ती तो भी ऐसा बेहूदा और झंझट वाला तरीका मैंने हरगिज नहीं अपनाना था।"

-"साफ-साफ बताइए. इन्सपेक्टर।" मालती हस्तक्षेप करती हुई बोली-"आखिर आप इस बात को क्यों तूल दिए चले जा रहे हैं ?"

-"एक आदमी, जिसका सर और चेहरा पट्टियों से ढंके थे और जो धीमी फंसी-सी आवाज में बोलता था, बवेजा के बैंकों में गया था,पट्टियों की आड़ में अपनी असलियत छुपाकर वह उन बैंकों से करीब पांच लाख रुपया बड़ी सफाई से निकालकर ले गया।"

-"ओह, नो!" मालती ने तुरन्त प्रतिवाद किया-"वह आदमी सुधीर नहीं हो सकता इन्सपेक्टर।"

-"आप कहना क्या चाहते हैं कि पिछले चार महीनों के दौरान बवेजा के बैंकों से रुपया निकालने वाला मैं था, इन्सपेक्टर ?" सुधीर ने सीधा सवाल किया।

-"पिछले चार महीनों के दौरान नहीं पिछले पन्द्रह दिन के दौरान ।" बलराज ने कहा- "मैं तुम्हें सही तारीख भी बता सकता हूं ।"

-"उसकी ज़रूरत नहीं है।" सुधीर मुस्कराया-"आप मेरी बात ध्यान से सुनिए फिर, आप खुद ही फैसला कर देंगे कि यह काम मैंने किया था या नहीं।"

-"सुन रहा हूं। कहो, क्या-क्या कहना चाहते हो ?"

-"करीब तीन महीने पहले आग की चपेट में आने के बाद मुझे फौरन सिविल हॉस्पिटल ले जाया गया। मैं एक हफ्ता हॉस्पिटल में रहा। उस दौरान मेरे चेहरे और हाथों

पर पट्टियां बंधी रहीं फिर, जब मुझे डिस्चार्ज किया गया तो,मेरे चेहरे और हाथों पर जगह-जगह जलन के निशान मौजूद थे। उन निशानों की वजह से मुझे स्किन ग्राफ्टिंग करानी पड़ी। स्किन ग्राफ्टिंग के बाद मेरे चेहरे और हाथों पर पुन: पट्टियां लपेट दी गईं जो करीब तीन हफ्ते लिपटी रहीं। क्योंकि मुझे शारीरिक या मानसिक रूप से कोई परेशानी नहीं थी, इसलिए तीन हफ्ते के उस अर्से में भी मैं बराबर अपने ऑफिस जाता रहा था। फर्क सिर्फ इतना पड़ा कि पहले मैं अपने बॉस के केबिन के बाहरी भाग में बैठता था फिर, मुझे एक अलग केबिन दे दिया गया। तब से अब तक मैं उसी केबिन में बैठता आ रहा हूं। केबिन में मेरे साथ मेरी सेक्रेटरी भी बैठती है। उसी दौरान मुझे एक अलग चपरासी की खास सहूलियत भी मुहैया कराई गई थी जो आज तक भी कायम है। वह सुबह दस बजे से शाम छह बजे तक मेरे केबिन के बाहर ही मौजूद रहता है । आप मेरे बॉस, मेरी सेक्रेटरी, मेरे चपरासी, मेरे कुलीग वगैरा से जाकर पूछिए तो, वे बताएंगे कि मैं सुबह दस बजे से शाम छह बजे तक बराबर ऑफिस में अपने या बॉस के केबिन में ही रहता हूं। अपनी साढ़े तीन साल की नौकरी में मैंने अभी तक सिर्फ दो बार छुट्टी ली है। एक हफ्ता तब जब मुझे हॉस्पिटल में रहना पड़ता था और एक दिन की आज जब मैंने शादी की है। अब आप खुद ही फैसला कर सकते हैं कि बवेजा के बैंकों से मैंने पैसा निकाला था या नही।"

अगर सुधीर का बयान सही था तो, जाहिर था कि उसने बवेजा के बैंकों से पैसा नहीं निकाला हो सकता था, क्योंकि बवेजा के तमाम बैंकों से एक ही दिन में पैसा निकाला गया था। उसके लिए कम-से-कम चार घन्टे यानी सुबह दस से दो बजे तक का वक्त दरकार था। जिस ढंग से सुधीर ने ऑफिस में अपनी स्थिति बयान की थी उससे स्पष्ट था कि ऑफिस में अपनी चार घन्टे की गैर-मौजूदगी को वह किसी प्रकार भी छुपा नहीं सकता था

बलराज ने विचारपूर्वक उसे घूरा।

-"तुमने अचानक शादी कर ली ?" उसने पूछा-"पिछली रात तो तुमने बताया नहीं कि आज ही शादी करने वाले थे ?"

पट्टियों के बारे में पूछताछ करने की वजह से घबरा गई मानती अब तक स्वयं को संयत कर चुकी थी।

-"मैं बताती हूं।" वह बोली-"बवेजा की हत्या ने सबकुछ बदल दिया। उसकी हत्या से पहले हमारे सामने समस्या थी कि अपने दोस्तों और परिचितों को एकाएक प्रोग्राम बदल जाने की सफाई कैसे देंगे, लेकिन बवेजा की हत्या हो जाने के कारण सफाई देने की कोई जरूरत बाकी नहीं रह गई। सीधी-सी बात है अपने फ्लैट के एकदम ऊपर रहने वाले आदमी की खौफनाक हत्या के बाद मेरे लिए वहां एक रात भी ठहर पाना मुमकिन नहीं था और दूसरी किसी जगह जाकर अकेले रहने से बेहतर था कि शादी करके सुधीर के साथ ही

रहने लगूं। इसलिए हम दोनों ने आज दफ्तर से छुट्टी ली, रजिस्ट्रार ऑफ मैरिज़ के यहां गए और शादी कर ली। हम बाकी फार्मेलिटिज पहले ही पूरी कर चुके थे। रजिस्ट्रार ने हमारी शादी की तारीख भी निश्चित कर दी थी। रजिस्ट्रार से मिलकर निश्चित तारीख से पहले शादी करने में हमें खास दिक्कत पेश नहीं आई।"

-"पिछली रात हम लोग जब तुम्हारे फ्लैट से चले आए थे, बलराज ने पूछा-"उसके बाद तुम दोनों ने क्या-क्या किया ?"

-"आप लोगों के आने से पहले मैं और सुधीर घर में ही खाना बनाकर खाने के बारे में बातें कर रहे थे।" मालती ने जवाब दिया-"लेकिन बवेजा की हत्या के समाचार ने मेरा मूड ऑफ कर दिया। घर में पकाने-खाने का विचार छोड़कर हमने बाहर ही डिनर लेने का फैसला किया। डिनर के बाद वापस घर लौटने पर हमने पाया कि पुलिस तब तक भी इमारत में ही मौजूद थी। हम देर तक बवेजा के बारे में ही बातें करते रहे। बातचीत के दौरान ही मुझे महसूस होने लगा कि मैं अकेली वहां रात नहीं गुजार पाऊंगी। मुझ पर एक अनजानी-सी दहशत हावी होने लगी। तभी हमें इस बात का भी अहसास हुआ कि हम चाहें तो अगले दिन ही शादी करके अपना घर बसा सकते थे, फिर पुलिस वहां से चली गई और इमारत में खामोशी छा गई। वो खामोशी मुझे और भी डरावनी लगी। तब तक काफी देर हो चुकी थी। हमने और देर करना मुनासिब नहीं समझा। मैंने अपनी चन्द चीजें पैक की और सुधीर के साथ वहां से चली आई। सुधीर मुझे अपने फ्लैट में छोड़कर खुद होटल में रात बिताने चला गया। सुबह सुधीर वापस फ्लैट में लौटा। हमने पुनः सलाह की,ऑफिस से छुट्टी ली और कोर्ट मैरिज करने चले गए।"

-"रात में अपने फ्लैट से आने के बाद तुम वापस वहां नहीं गई ?" बलराज ने पूछा।

-"नहीं और अभी जाऊंगी भी नहीं।"

-"तुम्हारे फ्लैट के दरवाजे में दोहरा ताला है ?"

-"यह तो हम आपको बता ही चुके हैं।" सुधीर ने कहा-"बवेजा द्वारा मालती को परेशान किए जाने के बाद मैंने दूसरा ताला वहां लगवाया था।"

-"उस दूसरे ताले की कितनी चाबियां हैं ?"

-"दो ।"

-"उसमें से तुम दोनों के पास एक-एक है ?"

-"हां ।"

-"इस वक्त भी वे दोनों चाबियां तुम्हारे पास हैं ?"

-"आफकोर्स।"

सुधीर ने अपनी जेब से की रिंग निकाला। उसमें पड़ी कई चाबियों में से एक अलग करके उसने इन्सपेक्टर को दिखा दी।

बलराज ने मालती की ओर प्रश्नात्मक निगाहों से देखा।

मालती ने अपना हैंडबैग खोलकर अन्दर झांका, एक पल के लिए वह चकराई, फिर उसके चेहरे पर क्षमा-याचनापूर्ण भाव उत्पन्न हो गए।

-"सॉरी, मेरी चाबियां दूसरे हैंडबैग में रह गईं।"

-"और तुम्हारा दूसरा हैंडबैग कहां है ?"

-"मेरे फ्लैट में। मुझे तो ख्याल तक भी नहीं था चाबियां वहीं रह गई हैं।"

-"तुम यकीनी तौर पर कह सकती हो चाबियां अपने फ्लैट में ही छोड़ी थी ?"

-"हां, और कहां छूट सकती थीं। मेरी सारी चाबियां एक ही रिंग में हैं। ऑफिस की मेरी केबिनेट की चाबी भी उन्हीं में है। मुझे अच्छी तरह याद है कल केबिनट लॉक करते वक्त चाबियां मेरे पास ही थीं फिर उन्हें मैंने अपने बैग में डाल लिया था। बाद में उन्हें निकालने का मौका ही नहीं आया। कल शाम सुधीर मेरे साथ था। ऑफिस से घर पहुंचने पर सुधीर ने ही अपनी चाबियों से फ्लैट खोला था। मेरी चाबियां जरूर मेरे फ्लैट में ही हैं।"

बलराज खड़ा हो गया।

-"मैं चाहता हूं तुम मेरे साथ चलकर चाबियां ढूंढो।"

मालती ने सहमतिसूचक सर हिलाया।

-"ठीक है। ऑफिस की केबिनेट की चाबी की वजह से चाबियां तो वैसे भी ढूंढनी ही पड़ेंगी।"

-"ऑल राइट । लैट्स गो।"

-"नहीं। सुधीर ने प्रतिवाद किया-"मैं आपके साथ चलूंगा। मुझे पता है मेरी बीवी को बैग कहां रखा होता है ?"

-"मैं तुम दोनों को साथ ले चलूंगा।"

-"सॉरी, इन्सपेक्टर । मेरी बीवी पहले ही बिना वजह काफी परेशान हो चुकी है।"

-"मुझे कोई परेशानी नहीं होगी सुधीर । मैं साथ चलूंगी।"

-"नहीं।" सुधीर जिद भरे स्वर में बोला-"हर बात की हद होती है। पहले ही काफी रंग में भंग हो चुका है।"

-"बेशक, हर बात की हद होती है।" बलराज रूखाई के स्वर में बोला-"इस बात की भी हद है कि तुम किस हद तक खुद को मर्डर से अनजान जाहिर कर सकते हो। बात सिर्फ बवेजा की हत्या की नहीं है। नीरा मलकानी की भी उसके फ्लैट में हत्या की जा चुकी है और नीरा के एक दोस्त राकेश मोहन की लाश तुम्हारी बीवी यानी मालती के फ्लैट से बरामद हुई है। ये तीनों हत्याएं एक ही इमारत में और एक ही तरीके से की गई थीं।"

सुधीर और मालती एकदम उछल पड़े।

-"क्या ?" मालती ने आतंकित स्वर में पूछा-"मेरे फ्लैट से लाश बरामद हुई है ?"

-"न सिर्फ लाश बरामद हुई है, बल्कि हत्या भी वहीं की गई थी।" बलराज ने कहा।

-"समझने की कोशिश करो, इन्सपेक्टर।" सुधीर बौखलाता-सा बोला-"यह हमारी शादी का पहला दिन है। मैं आपके साथ चलने के लिए तैयार हूं, फिर आप.....।"

-"उस फ्लैट के किराएदार तुम नहीं तुम्हारी बीवी है । इसलिए उसे साथ ले जाना जरूरी है।"

सुधीर अकड़ गया।

-"मेरी बीवी नहीं जाएगी।"

-"तुम शायद नहीं जानते कि मैं तुम्हारी बीवी को इसी वक्त हिरासत में ले सकता हूं।" बलराज सपाट स्वर में बोला।

-"किस जुर्म में ?"

-"बतौर मैटिरियल विटनेस।"

-"किस बात की मैटिरियल विटनेस ?"

-"बवेजा के मामले में। मुझे अभी भी ऐसे व्यक्ति की तलाश है, जिसके बवेजा से नजदीकी ताल्लुकात थे ।"

सुधीर की सारी अकड़ गायब हो गई। उसने हथियार डाल दिए।

-"आल राइट । हम दोनों आपके साथ चलेंगे।"

बलराज के ऑफिस से निकलकर हम सब पुलिस हैडक्वार्टर्स की इमारत से बाहर आ गए।

बलराज, अश्विनी शर्मा और मैं पार्किंग की ओर बढ़े।

सुधीर और मालती हमारे पीछे थोड़े फासले पर थे।

मैंने यूं ही गर्दन घुमाकर देखा।

पति-पलि जल्दी-जल्दी एक-दूसरे से कुछ कहते नजर आए। उनके हाव-भाव से जाहिर था। वे प्यार-मोहब्बत या घर गृहस्थी की बातें नहीं कर रहे थे।

मैंने बलराज को इशारा किया।

उसने बड़ी सफाई से गर्दन घुमाकर देखा, फिर पलटकर मुस्करा दिया।

-"वे शायद समझदारी दिखाने का फैसला कर रहे हैं।"

-"कैसी समझदारी ?"

-"अगर अब तक कुछ छुपाया है तो, उसे खुद ही जाहिर कर देने की।"

-"तुम्हारे विचार से वे कुछ छुपा रहे हैं ?"

-"हां, ऐसा है।"

-"तुम चाबियों को इतनी अहमियत क्यों दे रहे हो ?"

-"ताकि मालती के फ्लैट में राकेश की हत्या की जाने के रहस्य का कोई ओर-छोर नजर आ सके।"

-"क्या चाबियां वहीं मिलेंगी जहां मालती बता रही है ?"

बलराज रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

-"यही तो मैं जानना चाहता हूं।

हम जीप के पास जा रुके।

चन्द क्षणोपरांत मालती और सुधीर भी आ पहुंचे।

हम सब जीप में सवार होकर इमारत की ओर रवाना हो गए।

अश्विनी शर्मा जीप ड्राइव कर रहा था । हम चारों पीछे बैठे थे।

सुधीर के चेहरे पर व्याप्त खीज भरे भावों से स्पष्ट था कि वह मन-ही-मन ताव खा रहा था। विवाहित जीवन का पहला ही दिन मनहूस साबित हो रहा था।

मालती अपेक्षाकृत सामान्य थी। वह विचारपूर्वक इन्सपेक्टर की तरफ ताक रही थी।

-"आपने तीन व्यक्तियों के बारे में बताया था इन्सपेक्टर!" अचानक उसने पूछा-"बवेजा,नीरा और नीरा का एक दोस्त जो मेरे फ्लैट में मृत पड़ा पाया गया ?"

-"हां ।" बलराज ने जवाब दिया-"उसका नाम राकेश मोहन था।"

-"लेकिन एक लड़की और भी तो थी। कमसिन और भोली नजर आने वाली,वह लड़की अक्सर नीरा के पास आती रहती थी।"

प्रत्यक्षतः वह रीटा खरे के बारे में पूछ रही थी, लेकिन बलराज ने अनभिज्ञता प्रगट करते हुए पूछा-"किसकी बात कर रही हो ?"

-"वह पिछली रात भी आई थी।" मालती ने कहा-"जब आप मेरे फ्लैट से चले गए थे। वह लड़की और नीरा दो युवकों के साथ आई थी। मैं और सुधीर उस वक्त अपनी खिड़की में खड़े थे। वे चारों आपस में हँस-हँस कर बातें कर रहे थे। नीरा एक पुलिसमैन से भी मजाक कर रही थी। पिछली रात के इमारत के माहौल में हमें यह सब-कुछ अजीब-सा लगा, फिर नीरा उस पुलिसमैन के साथ ऊपर आ गई और वह लड़की उन दोनों के साथ चली गई थी।"

-"ओह,वह लडकी ! तम उसके बारे में क्यों पूछ रही हो ?"

-"यूं ही। उस भोली और कमसिन लडकी की नीरा जैसी लड़की के साथ घनिष्टता मुझे बेमेल और अजीब लगती थी। नीरा जितनी चालाक, माडर्न और सक्षम नजर आती थी वह लड़की उतनी ही सीधी और असहाय-सी लगती थी।"

-"अगर कोई पीछे से तुम्हारे सर पर पीतल के घूंसे से वार करके तुम्हारी खोपड़ी चटका दे तो, तुम भी जल्दी ही असहाय और लाचार हो जाओगी।" बलराज जान-बूझ कर अपने स्वर में हिंसा का पुट देता हुआ बोला, फिर पूछा-"तुम्हें उस लड़की की बहुत फिक्र है ?"

मालती को कोई जवाब सूझता प्रतीत नहीं हुआ।

-"हां, मेरी बीवी फिक्रमन्द है इन्सपेक्टर | सुधीर ने जवाब दिया-"आपकी वजह से।"

-"लेकिन उस लड़की का जिक्र मैंने तो नहीं किया ?"

-"लेकिन आपने नीरा मलकानी के बाकी दोस्तों का जिक्र तो किया था। वह लड़की हमें उन सबमें शरीफ, सीधी और अच्छी लगी थी।"

-"खुद को उस लड़की जैसा जाहिर करना कोई मुश्किल काम नहीं है।" बलराज ने सपाट स्वर में कहा फिर रहस्पूर्ण ढंग से मुस्कराया-"लगता है तुम दोनों को उस लड़की से खास ही हमदर्दी रही है ?"

-"न.....नहीं।" मालती हिचकिचाती-सी बोली-"ऐसी तो कोई बात नहीं है।"

वार्तालाप का सिलसिला खत्म हो गया। बलराज खामोश बैठा मुस्कराता रहा। उसकी वो मुस्कराहट ऐसी थी मानो पहली बार किसी ठोस नतीजे पर पहुंचा था।

जीप इमारत के सम्मुख पहुंचकर रुक गई।

हम सब नीचे उतरे।

सुधीर और मालती के पीछे इमारत में दाखिल होने के बाद हम सीढ़ियां चढ़ने लगे।

अपने फ्लैट के सम्मुख पहुंचकर मालती पीछे हट गई। शायद वह सोच रही थी कि लाश अभी भी अन्दर मौजूद होगी।

सुधीर ने अपनी चाबियों द्वारा ताले खोले।

बलराज ने आगे बढ़कर भड़ाक से दरवाजा खोल दिया।

मालती आगे आई और तेजी से भीतर दाखिल हो गई। उसने सैंटर टेबल पर पड़ा हैंडबैग उठाकर खोला और उसके अन्दर झांका। फिर ज्योंहि उसमें हाथ घुसेड़ना चाहा, बलराज ने उसके हाथ से हैंडबैग खींच लिया और उसे मेज पर उल्टा कर दिया।

हैंडबैग से चाबी का एक गुच्छा निकलकर मेज पर आ गिरा। गुच्छे के अलावा उसमें कुछ नहीं था।

-"ये तुम्हारी ही चाबियां हैं ?" बलराज ने पूछा।

-"हां।" मालती ने कहा और गुच्छे की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन बलराज ने उसे रोक दिया।

-"ये चाबियां तुम्हें अभी नहीं मिलेगी।" वह बोला-"फिलहाल ये एवीडेंस हैं।"

-"किस बात की एवीडेंस ?" सुधीर ने जानना चाहा।

-"बेहतर होगा कि इस बात का जवाब तुम दोनों ही दो।"

-"हम ?" हमें क्या पता ?"

-"क्या तुमने ये चाबियां किसी को दी थीं ?"

-"न.....नहीं।" सुधीर ने तुरन्त जवाब दिया-"बिल्कुल नहीं। हम भला किसी को चाबियां क्यों देने लगे ?"

-"वैसे तुम्हें अच्छी तरह याद है।" बलराज ने पूछा-"पिछली रात जब तुम यहां से गए तो दरवाजे के दोनों ताले बंद करके गए थे ?"

-"हां, फ्लैट खुद मैंने ही लॉक किया था।" सुधीर ने पूछा-"क्यों ?"

-"इसलिए कि जब मैंने फ्लैट खोला तो दरवाजे का स्थायी ताला, जिसकी डुप्लीकेट चाबी मुरारीलाल के गुच्छे में भी मौजूद रहती है. पहले से ही खुला पड़ा था। मुझे सिर्फ वही ताला खोलने की जहमत उठानी पड़ी जो तुमने बाद में लगवाया था और जिसे बन्द करने के लिए चाबी की जरूरत नहीं होती।"

-"नहीं, मैं इन मामलों में पूरी एहतियात बरतता हूं।" सुधीर दृढ़तापूर्वक बोला-"मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने दोनों ही ताले बन्द किए थे।"

बलराज मुस्कराया।

-"थैक्यू मिसेज एन्ड मिस्टर चौधरी।" वह प्रसन्नतापूर्वक बोला-"यू हैव हैल्पड मी ए लॉट।"

-"अब तो हमें इजाजत है ।" सुधीर जले-कटे स्वर में बोला- "या आप कुछ और चाहते हैं ?"

-"चाहता तो और भी बहुत-कुछ हूं ।"

-"हमसे ?"

-"हां ।"

-"लेकिन हम तो सबकुछ बता चुके हैं ।"

बलराज ने चन्द क्षण विचारपूर्वक उनको घूरा, फिर सर हिला दिया।

-"आल राइट, फिलहाल आप जा सकते हैं।" वह बोला।

-"फिलहाल यानी आपको दोबारा भी हमारी जरूरत पड़ेगी ?"

-"शायद ! और मैं जानना चाहता हूं जरूरत पड़ने पर तुम लोग कहां मिलोगे ?"

-"अपने फ्लैट पर।" सुधीर कड़वे स्वर में बोला-"लेकिन आपकी बड़ी मेहरबानी होगी, अगर आप आज रात हमें और तंग न करें।"

-"मैं कोशिश करूंगा।"

वे दोनों चले गए।

बलराज किचन में गया और प्लास्टिक का एक बड़ा-सा लिफाफा लेकर लौटा। उसने अपने रुमाल द्वारा सावधानीपूर्वक चाबियों का गुच्छा पकड़कर वापस हैंडबैग में डाला और फिर हैंडबैग को प्लास्टिक के लिफाफे में डाल लिया।

-"अब सारा किस्सा मेरी समझ में आ गया है।" बलराज रहस्यपूर्ण ढंग से बोला-"सिर्फ ठोस सबूत की कमी है और वो सबूत जुटा कर देगा-विनोद । मैं सुधीर को छोड़कर खुद उसका पीछा करूंगा.।"

अश्विनी शर्मा और मैंने गावदियों की भांति पलकें झपकाईं ।

हमारी समझ में कुछ भी नहीं आया था। बलराज की आदत से वाकिफ होने की वजह से हम यह भी जानते थे कि अभी वह कुछ भी बताने वाला नहीं था, फिर भी मैं पूछ ही बैठा-"तुम जान गए हो हत्यारा कौन है ?"

-"किसका ?"

-"बवेजा, नीरा और राकेश का।"

-"हां ।"

"यानी तीनों का हत्यारा एक ही है ?"

"हाँ |"

-"कौन ?"

बलराज हंसा।

-"इतनी जल्दबाजी नहीं भारती साहब ।" वह बोला-"थोड़ा और सब्र करो। तुम्हें इस बखेड़े की शुरूआत से ही अपने साथ रखा है तो क्लाइमेक्स तक भी पहुंचाएंगे। अभी क्लाइमेक्स की स्टेज तैयार करनी है।"

मैं समझ गया । वह टाल रहा था। इसलिए जिद करने में भी कोई फायदा नजर नहीं आया।

हम मालती के फ्लैट से बाहर आ गए।

फ्लैट को लॉक करके इमारत से निकलकर हम जीप में सवार हो गए।

इस दफा बलराज खुद जीप ड्राइव कर रहा था।

थोड़ी देर बाद उसने जीप उस इमारत से, कोई पचास-गज दूर रोकी, जिसमें रीटा का फ्लैट था।

इमारत को वाच कर रहे दोनों आदमी लपकते हुए आ पहुंचे।

-"क्या रिपोर्ट है ?" बलराज ने पूछा-"लड़की सुरक्षित है ?"

-"यस सर।" वह सीधी अपने घर आई थी और तब से यहीं मौजूद हैं।" एक आदमी ने रिपोर्ट दी-"उसका फ्लैट सामने की तरफ है। खिड़की खुली और अन्दर रोशनी है।"

-"गुड ।" फिलहाल यहां एक ही आदमी काफी है। तुम हमारे साथ आओ, अमोलक राम।"

अमोलक राम नामक कांस्टेबल जीप में सवार हो गया।

जीप पुनः चल पड़ी।

करीब आधा घन्टा बाद बलराज ने एक पीली इमारत के सामने जीप रोकी।

-"यहां आठ नम्बर प्लैट में विनोद के साथ राकेश मोहन रहता था।" वह अश्विनी शर्मा से बोला-"तुम और अमोलकराम जाकर अच्छी तरह चैक करो, फ्लैट के अन्दर या. आसपास कोई मौजूद तो नहीं है ?"

अश्विनी शर्मा और अमोलकराम जीप से उतरकर इमारत में दाखिल हो गए।

वे करीब आठ मिनट बाद वापस लौटे।

-"फ्लैट बाहर से लॉक्ड है।" अश्विनी शर्मा ने जानकारी दी-"उसके आसपास भी कोई नहीं है।"

बलराज ने सन्तुष्टिपूर्वक सिर हिलाया।

-"ठीक है।" वह बोला-"अमोलकराम, तुम यही रहकर फ्लैट की निगरानी करो, अगर कोई फ्लैट में घुसता है तो, तुमने फौरन ही हैडक्वार्टर्स को सूचित करना है और अगर फ्लैट में जाने वाला वापस बाहर कहीं जाता है तो, तुमने उसका पीछा करना है । उस सूरत में जितना जल्दी हो सके हैडक्वार्टर्स से सम्पर्क करना।"

-"राइट, सर।" अमोलकराम बोला।

-"अब तुम जीप ड्राईव करो, सुपरमैन ।" बलराज ड्राईविंग सीट से एक तरफ खिसकता हुआ बोला-"हमने वापस हैडक्वार्टर्स चलना है।"

अश्विनी शर्मा ड्राईविंग सीट पर बैठा और जीप ड्राईव करने लगा।

बलराज धीमे स्वर में उसे समझाता रहा और वह जवाब में यस सर, राइट सर कहता रहा।

अन्त में, पुलिस हैडक्वार्टर्स की इमारत के सामने सड़क पर साइड में जीप रुकी।

बलराज के संकेत पर मैं नीचे उतरा। फिर बलराज भी नीचे आ गया।

अश्विनी शर्मा ने जीप आगे बढ़ाई और हैडक्वार्टर्स के अन्दर ले गया।

बलराज और मैं गेट से तनिक फासले पर एक मोटे पेड़ की आड़ में खड़े होकर इन्तजार करने लगे।

वहां तक पहुंच रही स्ट्रीट लाइट की धीमी रोशनी में मैंने अपनी रिस्टवाच पर दृष्टिपात किया।

नौ बजकर बाईस मिनट हुए थे।

करीब बीस मिनट बाद विनोद इमारत से निकलता दिखाई दिया। वह गर्दन ताने अकड़कर चल रहा था। उसके हाथ मुट्ठियों की शक्ल में भिंचे हुए थे।

सड़क पर आते ही वह हमारी दिशा में घूमा और सीधा चल दिया। उसकी चाल इतनी तेज थी मानो उसे कहीं पहुंचने की बड़ी भारी जल्दी थी।

वह स्ट्रीट लाइट के नीचे से गुजरा तो, उसके चेहरे पर निगाह पड़ते ही मैं चौंक गया। उसका चेहरा एकदम कठोर था और जबड़े भिंचे हुए थे। उसकी आंखों में क्रोध एवं हिंसा की ऐसी चमक थी मानो वह किसी का खून करने जा रहा था।

एक बार भी पीछे मुड़कर देखने की कोशिए किए बगैर वह सीधा चलता रहा।

हम उसका पीछा करने लगे।

विनोद जिस ढंग से अपनी ही धुन में चला जा रहा था, उससे हमें उसका पीछा करने में न तो कोई दिक्कत पेश आई और न ही किसी किस्म की विशेष सावधानी बरतनी पड़ी। हम आसानी से उसका पीछा करते रहे।

तिंलक रोड पर पहुंचकर उसने सड़क पार की और दायीं ओर घूमकर एक गली में घुस गया।

जाहिर था कि वह उस फ्लैट की ओर नहीं जा रहा था जहां राकेश के साथ रहता था, क्योंकि वहां जाने के लिए उसे न तो दायीं ओर घूमने की जरूरत थी और न ही गली में घुसने की।

वह एक के बाद दूसरी गली से गुजरता रहा।

बलराज और में बराबर उसका पीछा करते रहे।

ज्योंहि वह गोखले स्ट्रीट पर घूमा, बलराज ने हाथ पकड़कर मुझे रोक लिया। हम दोनों वापस घूमे और एक प्रकार से दौड़ते हुए निकटतम रोड पर पहुंच गए।

संयोगवश, फौरन ही एक खाली गुजरती टैक्सी हमें मिल गई।

बलराज और मैं आनन-फानन उसमें सवार हो गए।

रीटा के फ्लैट का पता बताने के बाद बलराज अधिकारपूर्वक बोला- "तेज चलो डाईवर।"

अगले ही क्षण टैक्सी तेजी से भाग चली।

मुश्किल से पांच मिनट बाद हम अपनी मन्जिल पर पहुंच गए। बलराज ने इमारत से कोई साठ गज पहले ही टैक्सी रुकवा दी थी।

हम टैक्सी से उतरे, बलराज ने मीटर देखकर भाड़ा चुकाया, फिर हम चार मन्जिल इमारत की साइड में रहकर सावधानीपूर्वक चलते हुए प्रवेश-द्वार की ओर बढ़े।

टैक्सी जा चुकी थी।

रीटा की खिड़की के सामने से न गुजरने की एहतियात बरतते हुए इमारत में दाखिल होते वक्त मैंने यूं ही बायीं ओर निगाह डाली तो दूर मोड़ पर घूमकर आता विनोद दिखाई दे गया।

मैंने बलराज का हाथ दबाकर उसे संकेत दे दिया।

-"जल्दी करो।" वह बोला।

हम सीढ़ियों की ओर लपके और दबे पांव तेजी से ऊपर चढ़ने लगे।

बन्द दरवाजों के पीछे से रेडियो, टी. वी. वगैरा की धीमी आवाजों के अलावा अन्य कोई आवाज सुनाई नहीं दी।

टॉप फ्लोर पर पहुंचकर बलराज ठिठका। उसने चारों ओर निगाहें दौड़ाई । दायीं ओर पहला फ्लैट रीटा का था। उसके बगल वाले फ्लैट के बन्द दरवाजे पर मोटा-सा ताला झूल रहा था। दरवाजे के आगे रेलिंग के साथ दो बड़े-बड़े गमले रखे थे। उनमें उगे हरे-हरे मनीप्लांट घने और इतने ऊंचे थे कि उनकी बेलें ऊपर छत तक पहुंची हुई थीं।

बलराज ने जेब से रुमाल निकाला और लैडिंग के ऊपर जलते इकलौते शेडविहीन बल्ब को रुमाल की तह से पकड़कर होल्डर से बाहर निकाल लिया।

पूरे फ्लोर पर बन्द फ्लैटों के बाहर अन्धेरा छा गया।

बलराज और मैं मनीप्लांट के गमलों के पीछे छिपकर बैठ गए। निचले खण्डों से वहां पहुंचती रोशनी इतनी अपर्याप्त थी कि हम एकाएक दिखाई नहीं दे सकते थे।

ज्यादा देर इन्तजार नहीं करना पड़ा।

मुश्किल से पांच मिनट बाद सीढ़ियों पर धड़धड़ाते कदमों की आहट सुनाई दी। आहट हर पल नजदीक आती जा रही थी।

-"वही है ।" मैं फुसफुसाकर बोला।

-"अगर वह नहीं हुआ तो, सुधीर और मालती अपना हनीमून नहीं मना सकेंगे।" बलराज भी फुसफुसाकर बोला-"उनकी जुबान खुलवाने के लिए मुझे मजबूरन सख्ती करनी पड़ेगी।"

-"क्या मतलब ?"

–"मतलब बाद में समझ जाओगे। अभी सिर्फ इतना जान लो कि इस सारे रहस्य की चाबी वार्निश के वे दाग हैं, जो बवेजा के नथुनों पर पाए गए थे। उनका रहस्य मेरी समझ में आ गया है। आज दिन में गुड्डी को नेल पालिश लगाती देख चुकने के बाद और फिर रीटा से मिलने पर ही मेरा ध्यान इस तरफ गया था।"

तब धड़धडाते कदमों की आहट एकदम नीचे वाले फ्लोर पर सुनाई दी। हम दोनों दम साधे इन्तजार करने लगे।

चन्द क्षणोपरांत लैडिंग पर जो आकृति प्रगट हुई, उसे अंधेरे की अभ्यस्त हो चुकी हमारी आंखों ने साफ पहचाना।

वह विनोद ही था।

विनोद सीधा रीटा के फ्लैट के बन्द दरवाजे की ओर झपटा। वह बुरी तरह हांफ रहा था। वह एक क्षण के लिए दरवाजे के सामने ठिठका, फिर पीछे हटा और अपनी सांड जैसी ताकत से कंधे का भरपूर प्रहार दरवाजे पर कर दिया।

प्रहार इतना जोरदार था कि दरवाजे का पल्ला कब्जों समेत चौखट से अलग उखड़ जाना चाहिए था, मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

दरवाजे का पल्ला भड़ाक से खुला। अपने ही वेग के कारण विनोद पलभर के लिए तेजी से भीतर जाता दिखाई दिया, फिर हमारी आंखों से ओझल हो गया।

तत्क्षण एक घुटी-सी चीख सुनाई दी, फिर कोई धड़ाम से नीचे गिरा, फिर इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता बलराज फुर्ती से उठा और अपनी रिवॉल्वर निकालता हुआ एक ही छलांग में दरवाजे पर जा पहुंचा। उसने हवाई फायर करते हुए चेतावनी दी।

-"हैंड्स अप।"

मैं हड़बड़ाकर उठा और तेजी से दरवाजे पर पहुंचा।

कमरे में अंधेरा था, लेकिन इतना ज्यादा नहीं कि अन्दर का दृश्य नजर ही न आ सके।

विनोद फर्श पर निश्चल पड़ा था। उसके पास ही रीटा दोनों हाथों में कोई चीज लाठी की तरह ताने खड़ी थी।

पूरी इमारत में दरवाजे-खिड़कियां खुलने की आवाजें गूंज रही थीं। सीढ़ियों पर भागते कदमों की आहटें सुनाई देने लगी थीं।

-"पीछे हटो।" बलराज ने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा-"लाइट ऑन करो।"

लेकिन रीटा उसी तरह बुत बनी खड़ी रही।

तभी एस० आई० अश्विनी शर्मा चार कांस्टेबलों सहित नीचे से सीढ़ियों पर दौड़ता हुआ आ पहुंचा।

बलराज के आदेश पर अश्विनी शर्मा ने लाइट ऑन कर दी।

सारा दृश्य साफ दिखाई देने लगा।

विनोद औंधे मुंह नीचे निश्चल पड़ा था। उसका सर फट गया था। सर से भल-भल बहता खून फर्श पर बिछे कारपेट को रंगे जा रहा था।

रीटा लोहे की करीब डेढ़ गज लम्बी एक मोटी छड़ दोनों हाथों में सर से ऊपर लाठी की तरह ताने खड़ी थी। उसका भोला और मासूम नजर आने वाला चेहरा कठोर और हिंसक बना हुआ था। उसकी आंखों से नफरत की चिंगारियां-सी छूट रही थीं।

अश्विनी शर्मा ने उसके हाथों से लोहे की छड़ खींचकर अलग फेंक दी।

रीटा ने प्रतिरोध नहीं किया। बलराज विनोद के ऊपर झुककर मुआयना कर रहा था।

-"अभी यह सिर्फ बेहोश है, लेकिन अगर खून इसी तरह बहता रहा तो जरूर मर जाएगा।" वह सीधा खड़ा होकर बोला-"इसे फौरन हॉस्पिटल पहुंचाओ, अश्विनी।"

अश्विनी शर्मा ने दो कांस्टेबलों से विनोद को उठवाया और उनके साथ नीचे चला गया।

फायर की आवाज सुनने के बाद इमारत में रहने वाले अधिकांश व्यक्ति अपने-अपने घरों से निकलकर अब तक रीटा के फ्लैट के सामने आ खड़े हुए थे । हर कोई जानना चाहता था कि क्या हो गया था, लेकिन पुलिस की मौजूदगी के कारण वे फ्लैट में घुसने का साहस नहीं कर पा रहे थे।

बलराज ने दरवाजा बन्द कर दिया ।

उसके सकेत पर दोनों कांस्टेबल फ्लैट की तलाशी लेने लगे।

रीटा एक साफाचेअर पर बैठ चुकी थी।

बलराज ने ड्राइंगरूम के अनुरूप सजे कमरे में निगाहें दौड़ाईं, फिर ठीक रीटा के सामने खड़ा हो गया।

-"यह सब क्या किस्सा है ?" उसने पूछा।

रीटा ने उनके सवाल की ओर ध्यान न देकर दूसरे कमरे की ओर इशारा किया।

-आपके आदमी मेरे बेडरूम में घुसे क्या कर रहे हैं ?" उसने क्षुब्ध स्वर में पूछा ।

-"कुछ नहीं ।" बलराज लापरवाही से बोला-"इन्हें थोड़ी रकम की तलाश है ।"

-"रकम ? कैसी रकम ?"

-"यही कोई पांच लाख रुपये । ज्यादा भी हो सकते हैं।"

रीटा की आंखें हैरानगी से फट पड़ी नजर आने लगीं।

-"इतने रुपये और यहां ?"

-"हां, यहीं।" बलराज न कहा- "तुम मेरे सवाल का जवाब दो। यह सब क्या किस्सा है ?"

-"विनोद मेरी जान लेने के इरादे से यहां आया था।" रीटा ने जवाब दिया--"अपने बचाव की खातिर मुझे उस पर हमला करना पड़ा अगर आप नहीं आते तो, मैंने उसकी जान ले लेनी थी।"

-"विनीद तुम्हें मारना चाहता था ?"

-“हा जैसे उसने राकेश को मार डाला था।”

-“अच्छा।” बलराज ने कृत्रिम आश्चर्य प्रकट किया- “राकेश की हत्या उसने की थी ?”

-“हां ।”

-“तो तुमने यह बात राकेश की लाश बरामद होने के बाद ही मुझे क्यों नहीं बता दी थी ?”

-“तब तक मैं खुद नहीं जानती थी। मैंने सोचा तक भी नहीं था कि वह इतना कमीनां और नीच निकलेगा। राकेश के अहसानों और मेहरबानियों का बदला उसकी जान लेकर चुकाएगा। यहां तक कि.राकेश की लाश देखने के बाद भी मुझे ख्याल तक नहीं आया कि हत्यारा विनोद हो सकता है, लेकिन अब में दावे के साथ कह सकती हूं राकेश की हत्या विनोद ने ही की थी।”

-“वजह ?”

—“राकेश ने विनोद से साफ कह दिया था कि वह आइन्दा मेरे पास फटकने की कोशिश भी न करे।” इसके बावजूद वह मेरी छाती पर आ चढ़ा, अगर उसने राकेश की हत्या नहीं की होती तो, वह मेरे पास नहीं आता।”

-“यही वजह है ?”

-“हां ।”

-“और तुम समझती हो, मैं इस पर यकीन कर लूंगा ?”

–“यह सौ फीसदी सच है, इन्सपेक्टर।”

-“सच तो दूर रहा, इसे अच्छे झूठ का दर्जा भी नहीं दिया जा सकता।”

-“फिर यह क्या है ?”

-“बेसिर-पैर की बकवास ।”

-“तो फिर सच्चाई क्या है ?”

बलराज ने जवाब देने की बजाय टी. वी. सैट के ऊपर पड़ा हैंडबैग उठा लिया।

रीटा एकदम उछलकर खड़ी हुई और उसके हाथ से हैंडबैग झपटना चाहा।

-“चुपचाप बैठ जाओ।” बलराज सर्द लहजे में बोला।

रीटा ने आग्नेय नेत्रों से उसे घूरा और पुन: बैठ गई।

बलराज ने हैंडबैग खोला। उसमें से एडहेसिव टेप का एक रोल निकालकर दूसरी सोफा चेयर पर डाल दिया, फिर उसने हैंडबैग से एक छोटा-सा खूबसूरत लैदरकेस निकाला । उसे खोलकर अन्दर झांका और मुस्कराते हुए सोफाचेयर पर उलट दिया। उसमें नेल कटर, विभिन्न प्रकार की छोटी-छोटी फ़ाइलें खास किस्म का ब्लेड, तीन अलग-अलग शेड की नेल पालिश, एक रंगहीन गाढ़े तरल पदार्थ की छोटी-सी शीशी और नाखूनों की सफाई-सजावट में काम आने वाली और भी कई चीजें मौजूद थीं। साफ नजर आ रहा था कि वे तमाम चीजें खासी महंगी और आयातित थीं।

-"यह है सच्चाई ।" बलराज रंगहीन गाढ़े तरल पदार्थ वाली शीशी पर लगा लेबल पढ़ने के बाद बोला।

इससे पहले कि रीटा प्रतिवाद करती, एक पुलिसमैन बेडरूम से निकला। उसके हाथ में औसत आकार की एक अटैची थी।

-"इसमें नोट भरे हैं, सर।" वह बोला-"गिने तो मैंने नहीं लेकिन अन्दाजन दस-बारह लाख जरूर होंगे" और अटैची खोल दी।

रीटा ने उधर देखा तक नहीं।

-"यह तमाम रकम बवेजा की है।" बलराज ने कहा-"करीब पांच लाख उसके बैंकों से निकाली गई थी, बाकी उसके फ्लैट में मौजूद रही होगी।" फिर रीटा से पूछा-"तुम्हें यह रकम कहां से मिली ?"

-"यह सारा पैसा राकेश का था।" वह लापरवाही से बोली -"उसने मेरे पास रख छोड़ा था।"

-"अच्छा !" बलराज व्यंग्यात्मक स्वर में बोला-"बड़ा भरोसा था उसे तुम पर । खासतौर से उस सूरत में भी जबकि बवेजा के मामले में तुमने उसके फूलप्रूफ मर्डर प्लान को चौपट कर दिया था।"

-"पता नहीं आप किस मर्डर प्लान की बात कर रहे हैं।" रीटा अविचलित स्वर में बोली- "मैं आपको बता चुकी हूं कि बवेजा से मेरा कोई वास्ता नहीं था। मैंने कभी उसके फ्लैट में कदम भी नहीं रखा था।"

तभी दूसरा कांस्टेबिल बेडरूम के दरवाजे में प्रगट हुआ।

-"सर, जरा इधर आइए।"

बलराज खड़ा हो गया।

-"मैडम का ध्यान रखना।" वह वहां मौजूद कांस्टेबल से बोला-और बेडरूम में चला गया।

करीब पांच मिनट बाद जब वह वापस लौटा तो, उसका चेहरा चमक रहा था। मैं समझ गया उसे कोई और तगड़ा क्लू मिल गया था।

सोफाचेयर पर बिखरी चीजों को एक कोने में खिसकाकर वह इत्मीनान से बैठ गया।

-"तुम इस बात से इन्कार करती हो कि तुमने सज्जन कुमार बवेजा, नीरा मलकानी और राकेश मोहन की हत्याएं की थीं ?" उसने पूछा।

-"मैं बिल्कुल इन्कार करती हूं।" रीटा ने दो टूक जवाब दिया -"मैंने किसी की हत्या नहीं की।"

-"ठीक है, तुम आराम से बैठकर सुनो। मैं तुम्हें बताता हूं कि तुमने क्यों और कैसे ये हत्याएं की थीं।" बलराज ने कहना आरम्भ किया- "तुम्हें बवेजा के पास उसकी निगरानी के लिए छोड़कर राकेश, विनोद और नीरा दूसरे काम निपटाने गए हुए थे। तुमने करना कुछ नहीं था, बस एहतियातन बवेजा के पलग के पास बैठे रहना था। बाकी हर काम पहले ही किया जा चुका था। बवेजा पलंग पर बंधा पड़ा था। उसके मुंह पर टेप चिपका हुआ था और वह बेहोश था। वक्त गुजारने के लिए तुम अपने नाखूनों की सफाई, पालिश वगैरा करने में लगी थीं, क्योंकि तुम जैसी मामूली शक्ल-सूरत वाली लड़की को आकर्षक नजर आने के लिए खुद को हर लिहाज से बना-संवारकर रखना जरूरी है। खासतौर से अपने हाथों और नाखूनों की ओर तो विशेष ध्यान देना और भी जरूरी है, क्योंकि तुम्हें राकेश के फ्लैट में जाकर खाना बनाना, सफाई करना, बर्तन और कपड़े धोने जैसे झंझट वाले काम करने पड़ते थे।" वह मुस्कराया-"मेरी बीवी भी घर के तमाम काम खुद ही करती है और वह भी अपने हाथों और नाखूनों की देखभाल का खासतौर पर ध्यान रखती है । फुरसत के क्षणों को वह भी इसी तरह इस्तेमाल करती है, लेकिन मैं क्योंकि सीमित वेतन वाला सरकारी नौकर हूं इसलिए मंहगे आयातित प्रसाधन उसके लिए नहीं जुटा सकता। वह ज्यादा-से-ज्यादा देशी वाटरप्रूफ नेल पालिश प्रयोग कर सकती है।" उसने सोफाचेयर पर अपनी बगल में पड़ी रंगहीन गाढ़े तरल पदार्थ वाली शीशी उठा ली-"तुम्हारी तरह यह क्लियर वार्निश नहीं । तुम नेल पालिश लगाने और उसके सूख जाने के बाद नाखूनों पर ऊपर से इसका भी एक कोट करती हो ताकि नाखूनों की पालिश में ज्यादा चमक आ जाए और वो जल्दी उखडे नहीं।"

-"मैं क्योंकि अपने नाखूनों की अच्छी देखभाल करती हूं....।"

-"क्योंकि तुम उस वक्त भी अपने नाखूनों की देखभाल में लगी थीं।" बलराज उसकी बात काटता हुआ बोला-"जब बवेजा को होश आया और उसने आंखें खोलकर निरीह भाव से तुम्हारी ओर देखा, तुम उसकी निगाहों का सामना नहीं कर सकीं, क्योकि बवेजा ही वह शख्स था जिसने तुम जैसी मामूली शक्ल-सूरत वाली लड़की को भी हाई प्राइस्ड कॉलगर्ल बना दिया था। तुम्हारा उसके साथ विशुद्ध व्यापारिक समझौता था। उसके पास तुम और नीरा जैसी दर्जनों लड़कियां थीं। उसकी वजह से तुम मोटा पैसा कमा रही थीं, लेकिन तुम्हें सब्र नहीं था। तुम मीरा की तरह अपने हालात में मस्त रहने वाली नहीं हो । तुम एक साथ मोटा पैसा हासिल करना चाहती थीं । बवेजा खुद भी तुम्हारा चाहने वाला था। इसलिए उसकी हैसियत का पता तुम्हें था। उसे राकेश और विनोद भी बाखूबी जानते थे, लेकिन उन्हें उसकी माली हालत की असली जनकारी नहीं थी । उन्हें यह जानकारी नीरा और तुमने दी। राकेश क्रिमिनल माइन्डेड आदमी था। उसने फुलप्रूफ प्लान बनाया। तुमने, नीरा और विनोद ने उस प्लान को अमली जामा पहनाने में उसकी मदद की । एक दिन दो बजे के बाद तुम राकेश और विनोद को बवेजा के फ्लैट में ले गई। विनोद ने अचानक उसके सर पर वार करके उसे बेहोश कर दिया। राकेश ने उसके मुंह पर टेप चिपकाकर उसे खास ढंग से बंधवाकर डलवा दिया, फिर राकेश के निर्देशानुसार विनोद ने तब तक उसे यातनाएं दी जब तक कि उसने तमाम चैक साइन नहीं कर दिए। फिर विनोद ने उसे और यातनाएं दी ताकि वह अपने पास मौजूद नगद रकम का पता भी बता दे । राकेश ने या तो तुम्हारे दोस्त सुधीर चौधरी को पट्टियों में लिपटा देख लिया था या उसके बारे में सुना था। उससे उसे भेष बदलने का कारगर आइडिया मिल गया।

-"सुधीर चौधरी कौन है ?" रीटा ने पूछा-"मैंने तो यह नाम कभी नहीं सुना ।"

-"सब्र करो, उसके बारे में भी बताऊंगा।" बलराज ने कहा- "राकेश ने अपने चेहरे और सर पर पट्टियां लपेटकर बवेजा के तमाम बैंकों से पैसा निकलवा लिया। उस वक्त तक बाकी सब काम भी निपटाए जा चुके थे। बस एक ही काम बाकी था। आराम से बैठकर बवेजा की निगरानी करते हुए उस वक्त का इन्तजार किया जाए जब यातनाओं के दौरान बवेजा के जिस्म पर आए सारे जख्म पूरी तरह भर जाएं और उसकी हत्या की जा सके। हत्या किस ढंग से की जानी थी,यह मास्टर माइन्ड राकेश पहले ही तय कर चुका था लेकिन राकेश का मर्डर प्लान धरा ही रह गया। तुमने बवेजा की हत्या वक्त से पहले और बहुत ही आसानी से कर डाली।"

-"यह सब कोरी बकवास है ! मैं न तो बवेजा को ठीक से जानती ही थी और न ही कभी उसके फ्लैट में गई ! हां, नीरा जरूर उसकी दीवानी थी।"

-"नीरा हर उस मर्द की दीवानी थी जिसकी गांठ में पैसा होता था। जहां तक बवेजा को जानने का सवाल है तुम,नीरा, राकेश और विनोद सभी बार-बार इन्कार करते रहे कि बवेजा से कोई वास्ता था, लेकिन मेरे पास ठोस सबूत है तुम चारों का बवेजा से वास्ता था। नीरा से उसकी यारी थी और तुम से गहरी यारी।" बलराज ने प्रभावपूर्ण स्वर में कहना जारी रखा-"पहले तुम बवेजा की हत्या के बारे में सुन लो । जब बवेजा ने होश में आने के बाद तुम्हारी ओर देखा उस वक्त तुम अपने नाखूनों पर नेल पॉलिश लगाने और उसे सुखा चुकने के बाद, उस पर इसका कोट कर रही थी।" उसने हाथ में पकड़ी छोटी-सी शीशी हिलाई-"बवेजा की उस हालत के लिए तुम्हीं जिम्मेदार थीं। उसने तुम्हें हाई प्राइस्ड कालगर्ल का दर्जा दिलाया और तुमने उसके साथ वैसा सलूक किया। तुम एकाएक अपराध भावना के बोझ से इस कदर दब गई, तुम्हारा सारा वजूद हिल गया। तुम उससे निगाहें मिलाने की ताब नहीं ला सकीं। अचानक तुमने उसकी आंखों से जीवन-ज्योति बुझाने का फैसला कर लिया। उस वक्त तुम्हें यह भी होश नहीं रहा कि तुम्हारी उंगलियां क्लियर वार्निश से सनी हुई थीं। तुमने बवेजा के नथुनों पर उंगलियां रख दी और उन्हें दबाए रखा। बवेजा का दम घुटने लगा। अपनी उस असहाय स्थिति में उसने जोर से सांस खींचने की कोशिश की। उस चक्कर में तुम्हारी उंगलियों में लगी वार्निश का कुछ अंश उसकी नाक में घुस गया, फिर उसने तड़प-तड़प कर जान दे दी। जब वह मर गया तो, तुमने उसके नथुनों से उंगलियां हटाकर उसकी मुर्दा आंखे बन्द कर दी, ताकि दूर से देखने में यही प्रतीत हो कि बवेजा बेहोश था या सो रहा था, फिर विनोद और नीरा वहां पहुंचे थे । वे दोनों तुम्हारे इस झांसे में आ गए, लेकिन जब अन्त में राकेश आया तो, वह समझ गया बवेजा मर चुका था। यह भी समझ गया तुमने बवेजा की हत्या कर डाली थी। अपनी योजना पूरे तौर पर कामयाब न होने देने की वजह से उसे तुम पर बेहद गुस्सा आया। हालांकि उसने, फिर भी अपनी ओर से पूरी कोशिश की कि हालत बदतर न हों, लेकिन तुमने जो हरकत की थी, उसकी सजा भी वह तुम्हें देना चाहता था। इसके लिए उसने तुम्हें विनोद के हवाले करने का फैसला कर लिया।"

-"राकेश ने विनोद को मेरे पास फटकने भी नहीं देना था। उसने विनोद को साफ-साफ कड़ी चेतावनी दे दी थी ।"

-"वो बाद की बात थी।" बलराज ने कहा-"वे दोनों तुम्हें किसी ऐसी जगह ले जा रहे थे, जहां तुम्हें अच्छा सबक सिखाया जा सके। अचानक तुम्हें भी सूझ गया तुम्हारे साथ क्या होने वाला था। तुम घबराकर भाग खड़ी हुई ओर भाग्यवश नीरा के फ्लैट पर पहुंचने में कामयाब भी हो गई। विनोद तुम्हारे पीछे था, मगर वह भी तुम्हें नीरा के दरवाजे पर पहुंचने से पहले नहीं पकड़ सका। संयोगवश उस वक्त नीरा के फ्लैट में हम भी मौजूद थे। नीरा तुम्हें अन्दर नहीं आने देना चाहती थी, लेकिन हमारी मौजूदगी की वजह से मजबूर हो गई।

उसने तुम्हें और विनोद को दरवाजे के बाहर रोके रखा ताकि विनोद को हमारी मौजूदगी से खबरदार कर सके। विनोद समझ गया अन्दर उसकी तलाशी ली जा सकती थी। इसलिए उसने अपना पीतल का घूंसा अपनी जेब से निकालकर तुम्हारे हैंडबैग में डाल दिया। यह उस की बड़ी भारी गलती थी, लेकिन उसके पास इसके अलावा और चारा भी नहीं था। राकेश इमारत के बाहर ही रह गया था। हमारी मौजूदगी की वजह से अपने बचाव के लिए विनोद को उसकी जरूरत थी। कमरे में घुटन और गर्मी के बहाने उसने खिड़की खोली और राकेश को इशारा कर दिया। फलस्वरूप राकेश को भी नीरा के फ्लैट में आना पड़ा। वह तुम्हें बचाने नहीं आया था। वह नीरा के फ्लैट में हमारी मौजूदगी और तुम्हारे तथा विनोद के पहुंच जाने से पैदा हो गई स्थिति को सम्हालने आया था। उसने बड़ी सफाई से अपना काम किया। साथ ही विनोद को चेतावनी देने को अभिनय करते हुए तुम पर भी जाहिर कर दिया कि तुमसे उसे कोई शिकायत नहीं थी। तुम उसी की थी और वह तुम्हारा ही था।"

-"नहीं, राकेश मुझे दिलोजान से प्यार करता था।"

-"राकेश को सिर्फ तुम्हारे जिस्म और तुम्हारे द्वारा की जाने वाली सेवा की जरूरत थी। राकेश बेहद चालाक और मक्कार था। तुम एक बार गलती कर चुकी थी और तुम्हें दोबारा गलती करने का मौका वह हरगिज नहीं देना चाहता था। तुम्हें बहका-फुसलाकर तब तक शांत रखना चाहता था जब तक बवेजा का मामला ठंडा नहीं पड़ जाता । उसके बाद उसने तुम्हें निश्चित रूप से विनोद के ही हवाले करना था।"

-"नहीं, राकेश को मुझसे बेइन्तहा मुहब्बत थी।"

बलराज हँसा।

-"मुहब्बत ? मुहब्बत तो राकेश को नीरा से भी नहीं थी, जो तुमसे हर लिहाज से कई गुनाह बेहतर थी । जिससे तुम्हें सौतिया डाह थी और जिसकी वजह से हर वक्त तुम्हें फिक्र सताती रहती थी वह राकेश को तुमसे न छीन ले।"

-"यह झूठ हैं।"

-"कोई बात नहीं। थोड़ा झूठ और सुन लो।" बलराज ने कहा-"उसी रात डिनर के बाद नीरा को उसके फ्लैट पर छोडकर राकेश और विनोद तुम्हें तुम्हारे फ्लैट पर छोड़ने गए। रास्ते में राकेश ने तुम्हें बताया वे दोनों भगवती जागरण में जाएंगे और सारी रात वहीं रहेंगे। अपने घर पहुंचने के बाद तुम पर चिन्ता सवार हो गई। तुम्हें यकीन नहीं आया राकेश जागरण में जाएगा। तुमने सोचा उसने नीरा के साथ रात गुजारने के लिए बहाना बनाया था। सौतिया डाह ने तुम्हें चैन नहीं लेने दिया । तुम असलियत जानने के लिए नीरा के फ्लैट पर जा पहुंची। नीरा वहां अकेली थी। वह तुम्हें जरा भी पसन्द नहीं करती थी, क्योंकि उसमें वे

तमाम खूबियां थीं जो एक हाई प्राइस्ड कॉलगर्ल में होनी चाहिये, जबकि तुममें एक भी खूबी नहीं है। तुम्हें बवेजा ने जबरदस्ती पुश करके वो दर्जा दिला दिया था। उसे यह बात गवारा नहीं थी। बेवक्त तुम्हें पहुंची देखकर उसे गुस्सा आ गया। तुम दोनों में झड़प हुई। उसी झड़प के दौरान नीरा ने तुम पर यह असलियत जाहिर की कि राकेश ने तुमसे कोई वास्ता नहीं रखना था, तुम्हें विनोद को सौंप दिया जाएगा और नीरा राकेश की सहेली बन जाएगी। इस बात से तुम गुस्से में आपे से बाहर हो गई। तुम नीरा को राकेश के साथ नहीं देख सकती थीं। तुमने फौरन फैसला कर लिया नीरा को जिन्दा नहीं छोड़ोगी फिर तुमने किसी प्रकार नीरा को शांत किया। उसे इस बात के लिए मनाया वह तुम्हें वहीं रात गुजार लेने दे। नीरा तुम्हारे इरादे को भांप नहीं सकी। तुमने अपने कपड़े उतारकर उसका काला गाउन पहन लिया, फिर मौका पाकर तुमने सोफे पर बैठी नीरा के सर पर विनोद के पीतल वाले घूंसे से वार करके उसकी खोपड़ी चटका दी। उसके मुंह पर टेप चिपकाया और बवेजा की भांति उसके भी नथुने दबाकर उसकी हत्या कर दी। फिर बैंजीन से टेप छुड़ाया, फ्लैट की यथासम्भव सफाई की, नीरा का काला गाउन, जो खून से काफी सन चुका था,वहीं उतार फेंका और अपने कपड़े पहन लिए । यही वजह थी कि नीरा का काला गाउन भी खून से सना पाया गया था, क्योंकि नीरा की हत्या भी तुमने बवेजा की हत्या के तरीके से की और वो तरीका राकेश का ईजाद किया हुआ था, इसलिए तुम निश्चिंत थी, लेकिन तुम नादान और नातजुर्बेकार हो, इसलिए तुम्हें यह नहीं सूझा बवेजा की इस ढंग से हत्या करने के लिए राकेश ने दुनिया भर के दूसरे इन्तजामात करने क्यों जरूरी समझे थे, लेकिन तुम्हारी निगाहों में यह तरीका आसान और कम-से-कम झंझट वाला था इसलिए तुम इसे अपनाती चली गई।"

-"मेरी समझ में नहीं आता आप मुझे क्यों खूनी साबित करने पर तुले हुए हो ?"

-"नीरा की हत्या के बाद तुम्हें अपने अगले कदम के बारे में सोचना पड़ा।" उसके हस्तक्षेप की परवाह किए बगैर बलराज ने कहना जारी रखा-"दो-दो हत्याएं कर चुकने के बाद तुम्हारे अन्दर चालाकी और हौसला पैदा हो गए थे। तुम्हें यह भी साफ नजर आने लगा, अगर राकेश की हत्या कर दी जाए तो,बवेजा से प्राप्त सारी रकम को अकेली हथिया सकती थी, क्योंकि राकेश की हत्या के इल्जाम में विनोद को आसानी से फंसाया जा सकता था। तुम नीरा के फ्लैट से निकली, लेकिन जब तुम सीढ़ियों द्वारा नीचे आ रही थीं तो तुम्हारा सामना मालती वर्मा और सुधीर चौधरी से हो गया। वे दोनों उस वक्त वहां से जाने ही वाले थे। उन्होंने तुम्हें नीचे आते देख लिया था और तुम जानती थी तुम्हारे हक में यह बेहद खतरनाक था, इसीलिए तुमने खुद को उनके सामने एक लाचार, नादान, बेसहारा और भयभीत लड़की के रूप में पेश किया। बवेजा से घनिष्टता की वजह से तुम जानती थीं बवेजा ने एक बार मालती को भी फुसलाने की कोशिश की थी। उसी आधार पर तुम उनकी

हमदर्दी हासिल करने की नीयत से मालती के फ्लैट में चली गई और उनकी हमदर्दी पाने में कामयाब भी हो गई।''

-''नहीं! यह झूठ है।'' रीटा तीव्र स्वर में बोली-''वे झूठ बोलते हैं। मैंने उनसे कभी बात नहीं की !''

-''वे दोनों झूठे नहीं भावुक किस्म के हैं । बलराज मुस्कराकर बोला-''उन्हें तुम्हारे बेचारगी और भोलेपन के अभिनय पर तरस आ गया था। वे तुम्हें बचाने के लिए तुम्हारी मदद करना चाहते थे।''

- ''यह झूठ हैं।''

-''तुम्हें परेशान और भयभीत देखकर उन्होंने तुम्हें अपने फ्लैट में रात गुजारने के लिए कहा।'' बलराज उसके हस्तक्षेप को नजर अन्दाज करके कहता गया-''उन्होंने तुम्हें यह भी बता दिया वे अगले दिन शादी करने वाले थे, इसलिए जल्दी वापस नहीं लौटेंगे, लेकिन तुमने वहां ठहरने से इन्कार कर दिया, क्योंकि तुम्हारा असली मकसद पूरा हो चुका था। तुमने उन्हें बातों में लगाए रखकर मौका पाकर मालती के बैग से उसकी चाबियां पार कर दी थीं। जब वे दोनों फ्लैट से निकले अपना दरवाजा लॉक करके इमारत से बाहर आए तब तुम भी उनके साथ थीं। तुम्हारा हौसला बढ़ता जा रहा था और तुम हर पल ज्यादा चालाक होती जा रही थीं। हर बात में कामयाब होती जाने की वजह से तुम एक से दूसरा रिस्क लेती चली गई। तुम समझ बैठी हर प्रकार की स्थिति से निपट सकती थीं। वहां से तुम सीधी राकेश के फ्लैट पर गयीं, नोटों की अटैची वहां से लाकर यहां रखी और वापस मालती के फ्लैट में पहुंच गई। अब तुम्हें अपनी आखिरी चाल का इन्तजार था।''

-''कौन-सी आखिरी चाल ?''

-''इससे पहले कि राकेश और विनोद तुम तक पहुंचते, तुम उन तक पहुंच जाना चाहती थीं। तुम जानती थी नीरा की मौत की खबर पाते ही उन्होंने तुम्हें ढूंढ़ना शुरू कर देना था, लेकिन उन्हें ख्वाब में ख्याल नहीं आना था कि तुम मालती के फ्लैट में छुपी होंगी। मालती के फ्लैट में तुम पूरी तरह महफूज थी। बवेजा के मामले में शुरू से आखिर तक शामिल रहने की वजह से तुम जानती थीं महरी विमला के जाने के बाद वो इमारत पूरी तरह खाली और सुनसान हो जाती है। इसीलिए तुमने राकेश को फोन किया और उसे नीरा के फ्लैट पर मिलने के लिए बुला लिया। राकेश दोबारा तुम्हें अपने काबू में करके पुलिस की सरगर्मी खत्म होने तक तुम्हारी जुबान बन्द रखना चाहता था, इसलिए मजबूरन उसे आना पड़ा। वह इमारत में दाखिल हुआ और सीढ़ियां चढ़ने लगा। मुमकिन है उसे आशंका रही हो कि नीरा के फ्लैट पर उस पर छुपकर हमला किया जा सकता था, लेकिन वहां तक तो वह पहुंच ही नहीं पाया। तुमने निचले फ्लोर पर ही उस पर हमला कर दिया। तुम मालती के

फ्लैट के दरवाजे की आड़ में छुपी खड़ी थी। ज्योंहि राकेश दरवाजे के सामने से गुजरकर ऊपर जाने के लिए मुड़ा, तुम दरवाजे के पीछे से दबे पांव बाहर निकली और पीतल के घूंसे से उसके सर पर वार कर दिया। इस दफा तुमने नपा-तुला वार किया था ताकि राकेश बेहोश भी हो जाए और खून भी ज्यादा नहीं निकले। बेहोश राकेश को घसीटकर तुम मालती के फ्लैट में ले आई, उसके मुंह पर टेप चिपकाया, नथुने दबाकर उसकी हत्या की और फिर बेंजीन से टेप छुड़ा दिया। पीतल का घूंसा और बेंजीन की बोतल तुमने जान-बूझ कर वहीं छोड़ दी, ताकि मैं पीतल के घूंसे के बरामद होते ही सीधा विनोद की छाती पर जा चढ़ूं और वह नीरा और राकेश की हत्याओं के अपराध में बुरी तरह फंस जाए और तुम तीन-तीन हत्याएं करने के बाद भी चैन से बवेजा के माल पर ऐश कर सको।" बलराज रुका,फिर बोला-"राकेश की हत्या के बाद तुमने अपना मेकअप किया और मालती की चाबियां वापस उसके पर्स में डालकर फ्लैट से निकलीं, क्योंकि अब चाबियां तुम्हारे पास नहीं थीं। इसलिए दरवाजे को सिर्फ वही ताला लगाया जो बगैर चाबी लग जाता है, फिर तुम ऊपर सीढ़ियों में जा बैठी और इन्तजार करने लगी।"

-"किसका ?"

-"विनोद का। उसके पहुंचते ही तुमने शोर मचा देना था। भीड़ इकट्ठी होती और पुलिस पहुंचती। तुम अनजान और भोली बनी रहनी थी। तुमने सिर्फ एक ही बात बार-बार दोहरानी थी तुम नहीं जानती राकेश, विनोद और नीरा के बीच क्या चक्कर था। तुम्हारी स्कीम तो बुरी नहीं थी, लेकिन तकदीर खराब थी। विनोद की जगह वहां हम पहुंचे। तुमने हमें कहानी सुनाई। बड़ी सफाई के साथ यह भी जाहिर कर दिया कि राकेश और विनोद किसी गलत फेर में थे। विनोद मेरी निगाहों में कैसा आदमी है यह तुम पिछली रात नीरा के फ्लैट में देख चुकी थी। इसलिए तुम्हें उम्मीद थी कि मैं सीधा विनोद की छाती पर जा चढ़ूंगा। साथ ही तुमने दूसरा दांव भी अपने हाथ में रखा । तुमने बार-बार कहा कि तुम्हें अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस की जरूरत नहीं है, क्योंकि राकेश ने विनोद को चेतावनी दे दी थी कि वह आइन्दा तुम्हारे पास फटकेगा भी नहीं, ताकि विनोद अगर तुम्हारे पास आ पहुंचे तो, कोई तुम्हें दोष न दे सके कि तुमने उसके बारे में गलत अन्दाजा क्यों लगाया। फिर तुम इत्मीनान से वहां अपने घर में बैठकर इन्तजार करने लगीं। दो ही बातें होनी थीं तुम्हारे विचार से या तो विनोद को गिरफ्तार करके उस पर राकेश की हत्या का इल्जाम लगाया जाता या फिर उसे पूछताछ के बाद छोड़ दिया जाता। उस सूरत में सीधा विनोद ने तुम्हारे पास आना था और तुम उसके लिए तैयार थीं ही। तुम अपनी खिड़की खोले सड़क पर निगाहें जमाए बैठी थीं। तुमने खिड़की से विनोद को आते देखा और लोहे की छड़ लेकर दरवाजे की आड़ में खड़ी हो गई। दरवाजा सिर्फ भिड़ा था और तुम लोहे की छड़ लिए दरवाजे के पीछे मौजूद थी। विनोद को आदत वाकिफ होने की वजह से तुम जानती थी कि

वह सीधा आकर दरवाजे पर प्रहार करेगा। दरवाजा भिड़ा होने की वजह से उसे सम्हलने का मौका तक नहीं मिलेगा और वो सीधा तुम्हारे जाल में आ फंसेगा । विनोद जैसे शक्तिशाली, हिंसक सजाफ्यता आदमी की तुम जैसी भोली ओर कमसिन लड़की के हाथों की गई हत्या को देखकर हर किसी ने यही सोचना था कि तुमने जो किया आत्मरक्षा के लिए किया। ‘‘बलराज ने उसके चेहरे पर निगाहें जमा दीं-‘‘क्या तुम अब भी इन्कार करती हो कि बवेजा, नीरा और राकेश की हत्या तुमने नहीं की ?’’

-‘‘हां ।’’ रीटा ने कहा, मगर अब उसका स्वर पहले जैसा दमदार नहीं था।

-‘‘तुम शायद नहीं जानती कि यहां आने से पहले विनोद अपराध स्वीकार कर चुका है।’’ बलराज ने सफेद झूठ बोला-‘‘इसीलिए मुझे तुम्हारे और इस किस्से के बारे में इतना मालूम है। विनोद को तुम्हारे पास आने के लिए भी मैंने कहा था, क्योंकि में तुम्हें रंगे हाथों पकड़ना चाहता था।’’

रोटा का चेहरा फक्क पड़ गया।

-‘‘ओह, दैट बास्टर्ड !’’

-‘‘तुम्हारा पुलंदा बांधने का और भी ढेर-सा इन्तजाम है।’’ बलराज ने कहा-‘‘नोटों की भरी अटैची,एडहेसिव टेप रोल, क्लीयर नेल वार्निश,सुधीर और मालती की गवाही, विनोदं पर किया गया घातक हमला और तुम्हारे बेडरूम में रखी फोटो अलबम ।’’

रीटा ने जवाब नहीं दिया। उसने हाथों से अपना चेहरा ढंका और फफक-फफक कर रो पड़ी।

यह उसकी अपने अपराधों की स्वीकारोक्ति की शुरूआत थी।

‘‘यह फोटो एलबम का क्या किस्सा है ?’’ मैंने जानना चाहा ।

बलराज ने कांस्टेबल से कहकर बेडरूम से फोटो एलबम मंगवा दी।

मैंने एलबम खोली।

उसमें नीरा, राकेश, विनोद और बवेजा के साथ रीटा करीब एक दर्जन अलग-अलग और ग्रुप फोटोज में मौजूद थी। बाकी फोटुएं शराब और शबाब की पार्टियों की थीं, जिनमें नीरा तथा अन्य लड़कियों समेत रीटा भी बहुत ही अल्प लिबास में पुरुषों का मनोरंजन कर रही थी।

जाहिर था बलराज ने रीटा, नीरा, राकेश, विनोद और बवेजा के बारे में जो व्यक्तिगत बातें बताई थीं उनका अन्दाजा उसने इन्हीं, फोटुओं से लगाया था।

तभी अश्विनी आ पहुंचा।

उसने बताया कि विनोद के सर में ज्यादा गहरी चोट नहीं आई थी। वह पूरी तरह होश में था और राकेश द्वारा बनाई गई बवेजा की मर्डर प्लान के तहत बवेजा को टॉर्चर करने का अपना अपराध स्वीकार कर चुका था।

रीटा के सामने भी अन्य कोई चारा नहीं था। उसने सबकुछ कबूल कर लिया।

करीब आधा घन्टा बाद पुलिस हैडक्वार्टर्स की ओर लौटते वक्त बलराज ने मुझसे पूछा-"अब तुम क्या करोगे, बॉस ?"

मैं चौंक गया।

-"क्या मतलब ?" मैंने क्या करना है ?"

-"तुम इस पूरे किस्से पर उपन्यास लिखोगे ?"

-"जरूर, मेरा पेशा ही यह है।"

-"यानी तुम्हें मुफ्त में ही एक उपन्यास के लिए पूरा और बढिया मसाला मिल गया है ?"

मैंने गौर ने उनकी ओर देखा। उसकी आंखों में शरारतपूर्ण चमक देखकर मैं समझ गया वह मुझे बातों में फंसाकर किसी बात के लिए हां कराना चाहता था। मैंने तय कर लिया उसके वाकजाल में नहीं फंसूंगा।

-"मुफ्त में ?" मैंने सावधानीपूर्वक पूछा।

-"तो और क्या ? तुमने इसके लिए कुछ खर्च किया है ?"

-"नहीं, मैंने सिर्फ अपना वक्त खर्च किया है।"

-"वक्त तो तुम्हें नावल लिखने में भी खर्च करना पड़ेगा।"

-"जाहिर ही है।"

बलराज मुस्कराया।

-"जाहिर तो यह भी है जो नावल तुम लिखोगो उसे बेचोगे और खासी रकम बनाओगे।"

मैं और ज्यादा सावधान हो गया। मैंने निश्चय कर लिया उसकी बातों में हरगिज नहीं आऊंगा।

-"तुम कहना क्या चाहते हो ?" मैंने मुस्कराकर पूछा।

-"कुछ खास नहीं।"

-"फिर भी ?"

-"मेरी बात मानोगे ?"

-"हां ।"

-"नावल का नाम मर्डर प्लान रखोगे।"

-"मंजूर है।"

-"नावल में बढ़ा-चढ़ा कर कुछ नहीं लिखोगे।"

-"मंजूर ।"

-"कोई फालतू घटना नहीं जोड़ोगे ।"

-"मंजूर ।"

-"प्रत्येक व्यक्ति को उसी ढंग से पेश करोगे जैसे कि तुमने देखा है।"

- "मंजूर ।"

-"नावल छपने के बाद मुझे और अश्विनी शर्मा को उसकी एक-एक कापी जरूर दोगे ?"

-"यह भी मंजूर ।"

-"हमें अपने घर में शानदार पार्टी भी दोगे।"

-"मंजूर।" स्वंयमेव ही मेरे मुंह से निकल गया।

बलराज कनवर और अश्विनी शर्मा जोर से हँस पड़े ।

तब मैं चोंका और अपनी भूल का अहसास हुआ । आखिरकार इस बार भी मुझे अपनी बातों में फंसा ही लिया।

मजबूरन मुझे भी उनकी हँसी में योग देना पड़ा।

समाप्त